उपोद्घात

प्रगट हो कि जब हमने इस ग्रंथ को आरंभ करने के लिये लेखनी उठाई तो मन का यह संकल्प था कि एक छोटी सी पुस्तक ऐसी रचें, जिससे बालकों को यह सारा भूगोल हस्तामलक होजाय ; पर होते होते विस्तार बहुत बढ गया, चार सौ पृष्ट की इतनी बड़ी पुस्तक मे भी पूरा न पड़ा, और केवल एशिया का वर्णन होनेपाया. यदि शरीर वर्त्तमान है, और ईश्वरेच्छा अनुकूल, तो दूसरा भाग भी शीघ्र बनकर छप जायगा, और फ़रिंगस्तान अफ़रीका अमरिका और टापुओं का जो शेष रह गए हैं उस से वर्णन होगा. यदि बालक भिन्न युवा और वृद्ध भी इस ग्रंथ को पढेंगे तो निश्चय है कि उन का परिश्रम व्यर्थ न जायगा ; वरन हमारे देश के राजा बाबू और महाजनों को, जो हिन्दी छोड़कर और कुछ भी नही जानते, और न उन की ऐसी अवस्था है कि पाठशाला से जाके अब अंगरेजी और पारसी सीखें, यह ग्रंथ बड़ा ही उपकारी होगा ; परंतु जहां कहीं इस मे कोई बात लड़कपन की देखने से आवे तो ग्रंथकर्त्ता को न हंसें, क्योंकि वास्तव से यह पुस्तक लड़कों ही के लिये लिखीगई.—हमने इस ग्रंथ से कवियों की नाईं बढ़ावा अथवा अत्युक्ति अरु वाक्यबाहुल्य कहीं नही किया, जैसी जो बात है वैसा ही लिखदिया, इहां तक कि जो

कहीं लिखा देखो कि ऐसी जगह सारे संसार मे नही है तो निश्चय जानना कि दूसरी नही है, अत्युक्ति और बढ़ावा कभी मत समझना.—मानचित्रों मे हमने उतने ही नाम लिखे जो ग्रंथ मे हैं, अधिक नही लिखे, परंतु ग्रंथ मे जितने नाम हैं, वह मानचित्र मे सब आगए कुछ भी शेष नही छोड़े; ऐसा नहोने से पुस्तक के लिखे हुए नाम चित्रों मे ढूंढ़ने के समय बड़ा कष्ट पड़ता है.—ग्रंथ के अंत मे वर्ण-माला के क्रम से भी सब नाम लिखदिए हैं, और जिस जिस पृष्ठ मे उनका वर्णन आया है उस का अंक भी लिखदिया है; जिस नाम के पहले दो लकीरें खिची हैं जानो कि उस स्थान को हमने अपनी आंखों से देखा है जिस पृष्ठांक के पीछे दो लकीरें लिखी हैं जानो कि उस पृष्ठमे उस नाम का पूरा वर्णन है और दूसरी पृष्ठों मे केवल किसी कारण से नाम मात्र आगया है; जिस नदी पहाड़ भील नगर गांव घर राजा इत्यादि का कुछ विवरण देखना हो, कोश की रीति वर्णमाला के क्रम से इस अनुक्रमणिका मे उसका नाम निकालकर उसके साम्हने लिखेहुए पृष्ठांकों के अनुसार समुदित वृत्तांत देखलो. लड़कों की परीक्षा लेने मे परीक्षकों को इस अनुक्रमणिका से बड़ा सुभीता पड़ेगा.

कितने मित्रों की सम्मति थी, कि यह पुस्तक छुट हिन्दी बोली से लिखीजावे, पारसी का कुछ भी पुट न आनेपावे, परंतु हमने जहांतक बनपड़ा बैतालपचीसी की चाल पर

सूचीपत्र।

पृष्ठ

भूगोल १
एशिया १४
हिन्दुस्तान १९
पहाड़ २२
नदी २८
नहर ३७
झील ३७
बनस्पति ३८
जीवजन्तु ४६
धातुविशेष ५५
मौसिम ५६
चालचलन और व्यवहार ५६
मजहब ६२
बिद्या ६३
भाषा ६४
कारीगरी ६६
तिजारत ६६
तवारीख ७१
पहले और हाल के राज्य का मुकाबला ८७
महारानी, सेक्रिटरी अव स्टेट फार इंडिया, कौंसल अव इंडिया, गवर्नमिंट १०७
फ़ौज १०८
आमदनी और कर्ज़ १०९
स्वाभाविक और राजकीय विभाग १११

पश्चिमोत्तरदेश की लेफ्टिनंट गवर्नरी के जिले ११२
बंगाले की डिपटी गवर्नरी १३७
पंजाबकी लेफ्टिनंट गवर्नरी १७२
अवधकी चीफ़ कमिश्नरी १८२
मंदराजहाते के जिले १८७
बम्बईहाते के जिले २१३
उत्तराखण्ड के रजवाड़े २२७
मध्यदेश के रजवाड़े २५०
दक्षिण के रजवाड़े २८८
दूसरे बादशाहों की अमलदारी ३०१
समाप्ति ३०४
लंका ३१२
बर्म्मा ३१६
स्याम ३२४
मलाका ३२६
कोचीन ३२८
चीन ३३१
जापान ३५७
एशियाई रूस ३६४
अफ़्ग़ानिस्तान ३७१
तूरान ३८०
ईरान ३८३
अरब ३८१
एशियाई रूम ३८५
अनुक्रमणिका
शुद्धाशुद्ध पत्र

रखा, और इस से यह लाभ देखा, कि पारसी शब्दों के जानने से लड़कों की बोलचाल सुधर जावेगी, और उर्दू भी जो अब इस देश की मुख्य भाषा है सीखनी सुगम पड़ेगी.

एशियाटिकजर्नल और सैक्लोपीडिया के व्यतिरिक्त जिन ग्रंथकारों के ग्रंथों से इस पुस्तक से बहुत बातें लीगई हैं उन के नाम नीचे लिखे जाते हैं

हमिल्टन। रीनोल्ड। थारंटन। मीयर। टाड। टर्नर। मालकाम। मकफर्सन। मकफार्लेन। हम्बोल्ट। मालब्रन। बाल्बी। ईवार्ट। निकल्स। ह्यूजल। वाइन। मूर्क्राफ्ट। जिराडे। टेवर्नियर। एलियट। प्रिंसिप। कनिङ्गहम्। हीबर। मरे। मार्शमेन। वालेंशिया इत्यादि।

सोरठा

जे जन होउ सुजान। लीजो चूक सुधार धरि॥
बालक अति अज्ञान। हौं अजान जानत न कछु॥

शि०

—०००—
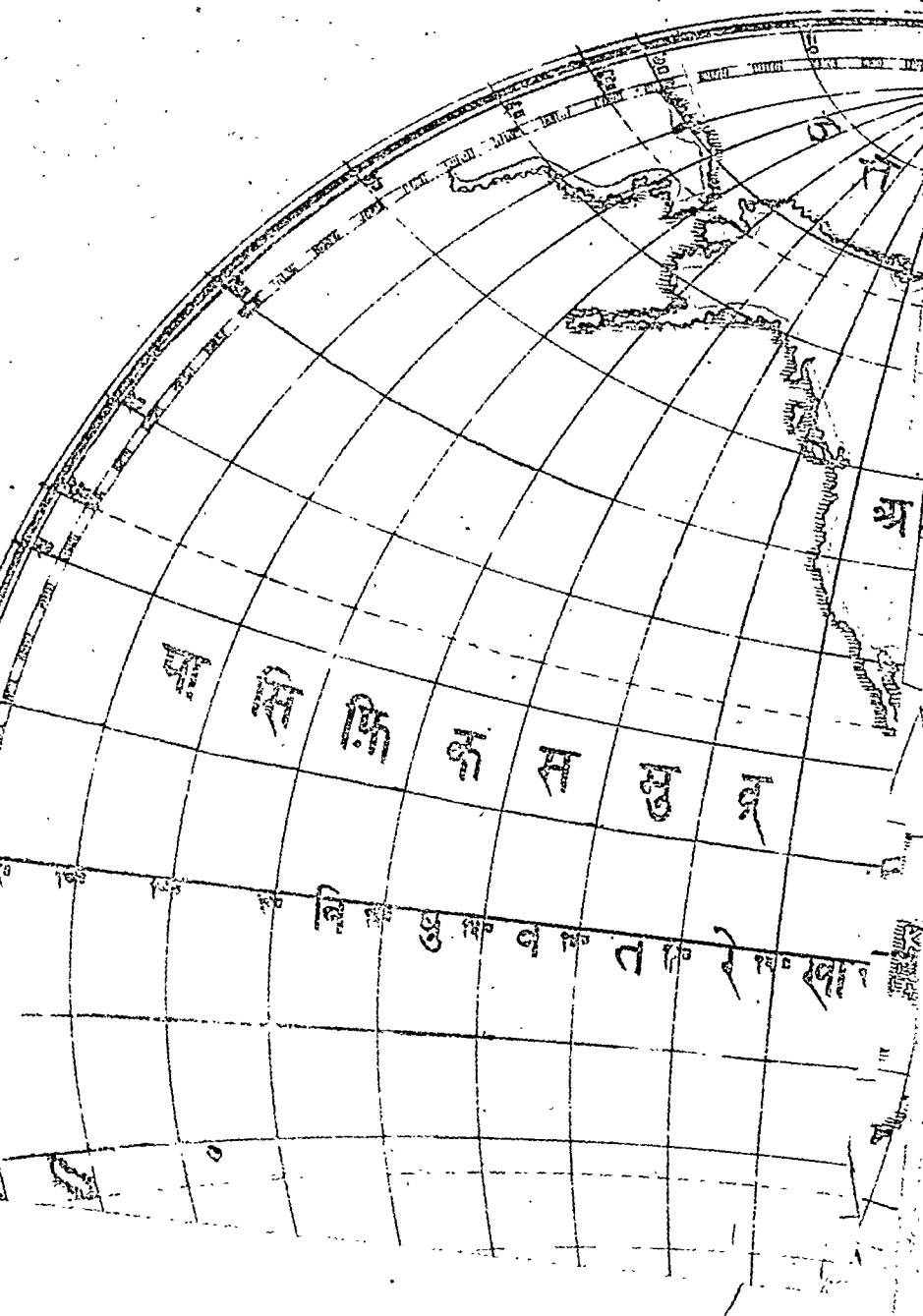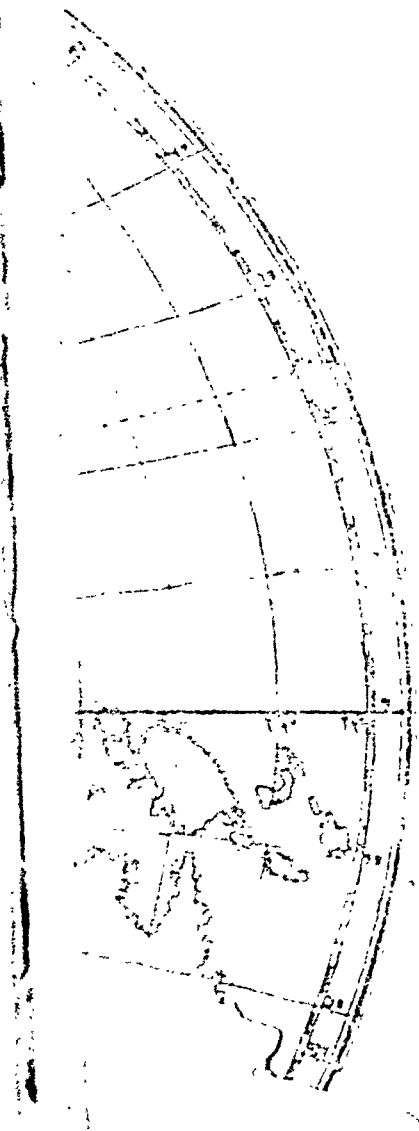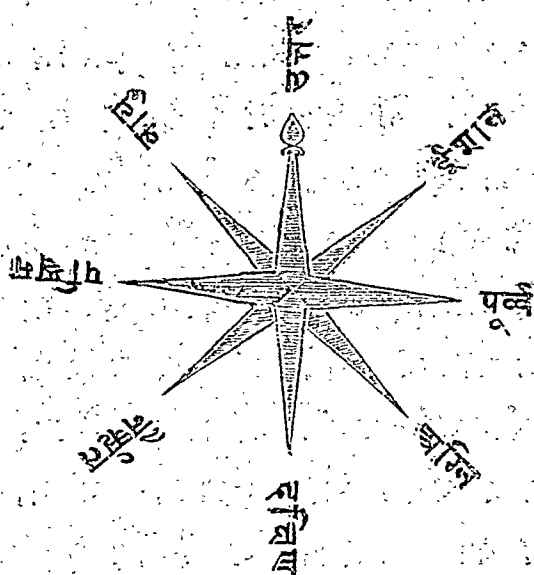
भूगोल हस्तामलक

जो कभी कोई आदमी किसी बड़े आलीशान मकान के दर्मियान जा निकले, तो क्या उसका दिल इस बात को न चाहेगा, कि उस मकान के एक एक कमरे और कोठरी को घूम घूम कर देखे, और उनमे जो बस्तु अद्भुत और अपूर्व रक्खी हों सब को अच्छी तरह ध्यान करे? लेकिन सोचो कि यदि उस मकान मे बहुत से कमरे ऐसे हों, जिनमे अजनबी आदमियों के जाने की रोकटोक और मनाही रहे, या इसी सैरकरनेवाले को बिलकुल कमरों मे जाकर हरएक चीज देखने की फुर्सत न हो, और कोई आदमी उस मकान की बातों से जानकार इस सैरकरनेवाले को उन सब कमरों

का हाल ब्योरेवार बतला देना कबूल करे, तो क्या यह सैर-करनेवाला खुश होकर इस बात को ग़नीमत न समझेगा? निदान सब लोगों को मकानों के कमरों का हाल मालूम होने से उन का दिल इतना खुश होता है, जो हम उनको इस दुनिया के सब मुल्क पहाड़ नदी झील और शहर और उन मुल्कों मे जो पदार्थ उत्पन्न होते हैं, या जो जो बातें ऐसी अनोखी और चमत्कारी हैं, कि न कभी कानों सुनीं न आंखों देखीं, सारे उनके समाचार और वहां के लोगों की भाषा चाल चलन और व्यवहार पतेवार बतलादेवें तो क्या उन का मन प्रसन्न न होवेगा? ऐसा तो कोई बिरला ही सुस्त और अल्पबुद्धी आदमी होगा जिसका दिल ऐसी बातों की खोज करने को न चाहे, या जो कोई पुरुष उसको उन्हें बतला दे तो वह उसका उपकार न माने। मतलब हमारा इस भूमिका के बांधने से यह है, कि अब हम इस ग्रन्थ मे कुछ बर्णन भूगोल का करते हैं, परन्तु जैसे उस मकान के कमरों का हाल सुनने से पहले सैरकरनेवाले को मकान के हिस्सों के नाम और उनकी सूरत जानलेनी बहुत अवश्य है, कि दर्वाज़ा कैसा होता है, और खंभा किसको कहते हैं, और दालान क्या है, और कोठरी किसका नाम है, निदान जबतक वह सैरकरनेवाला इन बातों से बेख़बर रहेगा, उस मकान के कमरों का हाल किसी के समझाने से भी न समझसकेगा, इस वास्ते पहले हम ज़मीन के हिस्सों के नाम लिखते हैं जिनको यादरखने से इस भूगोल का सारा हाल ध्यान मे आ जावे।

जानना चाहिए कि यह भूगोल जो नारंगी सा गोल है, और बिना किसी आधार के अधर मे सूर्य के गिर्द घूमता(१) है, दो तिहाई से अधिक अर्थात् १००० मे ७३४ हिस्से पानी से ढपा हुआ है। अनाड़ियों को इस बात के सुनने से बड़ा आश्चर्य होगा, कि पृथ्वी बिना किसी आधार के अधर मे किस तरह रहसकती है, उनको इस बात पर अच्छी तरह ध्यान करना चाहिए, कि जो वे किसी चीज़ को पृथ्वी का आधार मानेंगे तो फिर उस आधार के ठहराव के लिए भी कोई दूसरा आधार अवश्य मानना होगा, और फिर इसी तरह एक के लिए दूसरे का आधार बराबर ठहराते चले-जाना पड़ेगा, यहां तक कि आखिर थककर यही कहेंगे कि सब से पिछले आधार का कोई भी दूसरा आधार नहीं है, वह ईश्वर की शक्ति से आपही अधर मे ठहर रहा है। निदान जब यही बात है तो इतना बखेड़ा न करके पहले ही से यह बात क्यों न कहदेवें, कि जैसे सूर्य चन्द्र और तारे अधर मे हैं, उसी तरह पृथ्वी भी ईश्वर की शक्ति से बिना आधार अधर मे ठहर रही है, और यही बात हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र मे लिखी है, अंगरेजों ने विद्या और दूर-बीन इत्यादि यंत्रों के बल से प्रत्यक्ष साबित कर दिखाई। ये पहाड़ जो देखने मे बहुत बड़े मालूम पड़ते हैं, जब पृथ्वी के डील डौल पर ध्यान करो, कि जिस्का घेरा पचीस

---

(१) पृथ्वी का घूमना ऋतु का बदलना और दिन रात का घटना बढ़ना यह इस किताब के अंत मे वर्णन होगा।

हज़ार बीस मील(१) का है तो ऐसे जान पड़ेंगे जैसे नारंगी के छिलके पर कहीं कहीं रवे अथवा दाने दाने से रहा करते हैं। यद्यपि हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र मे भी पृथ्वी को गोल ही बतलाया है, पर अब अंगरेज़ी जहाज़ों के समुद्र मे चारों तरफ़ घूम आने से इस बात मे कुछ भी सन्देह बाक़ी न रहा, क्यों कि जब वह जहाज़ जो बराबर सीधा एक ही दिशा को मुह किए चला जाता है, चलते चलते कुछ दिनों पीछे बिना दहने बाएं मुड़े फिर उसी स्थान पर आजाता है, जहां से चला था, तो इस हालत मे पृथ्वी का आकार सिवाय गोल के और किसी प्रकार का भी नहीं ठहरसकता, और सच है जो पृथ्वी गोल न होती तो हिमालय पहाड़ के ऊंचे ऊंचे शृङ्ग हिन्दुस्तान के सारे शहरों से क्यों न दिखलाई देते, अथवा उन शृङ्गों पर से दूरबीन लगाकर, कि जिस्से लाखों कोस के तारों की सूरतें दिखलाई देती हैं, शरद ऋतु के निर्मल आकाश मे सारा हिन्दुस्तान क्यों न देखलेते, बरन समुद्र के तट पर खड़े हो कर जो किसी आते हुए जहाज़ को देखने लगो

---

(१) दो मील का एक पक्का कोस होता है, सड़क पर जहां पत्थर गड़े हैं, वे मील ही के हिसाब से गड़े हैं हमने इस पोथी मे कोस का हिसाब इस वास्ते नहीं लिखा, कि वे किसी ज़िले मे छोटे और किसी ज़िले मे बड़े होते हैं, बरन पहाड़ीलोग बोझ पर और चलनेवाले की ताक़त देखकर कोसों का हिसाब करते हैं, वही मंज़िल जो बोझेवाले को वे दस कोस की बतलावेंगे खाली आदमी के लिये पांच कोस की कहेंगे, और जो कभी वह आदमी घोड़े पर सवार होजावे तो फिर वे उस मंज़िल को दो ही कोस की गिनेंगे।

तो पहले उसका मस्तूल अर्थात् ऊर्धभाग और फिर पीछे से जब जहाज़ कुछ समीप आजायगा तो पतवार अथवा अधोभाग दिखलाई देवेगा, क्योंकि जब तक जहाज़ समीप नहीं आता, पृथ्वी की गुलाई के कारण उसका अधोभाग जल की ओट मे छिपा रहता है यह पानी जिस्से दो तिहाई से अधिक पृथ्वी ढकी ऊई हैं, समुद्र अथवा सागर कहलाता है खारा सब जगह है लेकिन कहीं कम कहीं जियादः थाह उसकी सवापांच मील तक तो मालूम हो सकी है परन्तु गहरा वह कहीं कहीं इस्से भी अधिक है। लहरें उसकी बाईस फुट तक ऊंची नापी गई हैं। यद्यपि समुद्र इस भूमंडल पर एकही है, पर जैसे हवेलियों का ठिकाना मिलने के लिए शहर को महल्लों मे बांट देते हैं, वैसेही समुद्र मे द्वीप और जहाज़ो का सहज से पता लगजाने के वास्ते उस्को पांच हिस्से करके पांच नाम रखदिए हैं। पहले हिस्से को जो अमेरिका के महाद्वीप से फ़रंगिस्तान और अफ़रीका के मुल्क तक फैला ऊआ है, अटलांटिक समुद्र कहते हैं। दूसरे हिस्से को जो अमेरिका महाद्वीप और एशिया के मुल्क के बीच मे है, पासिफ़िक समुद्र बोलते हैं। तीसरा हिस्सा जिसकी हद्द अफ़रीका के मुल्क से लेकर हिन्दुस्तान और आसट्रेलिया के टापू तक है. उस का नाम हिन्द का समुद्र रक्खा गया है, और चौथे और पांचवें हिस्सों को जो उत्तर और दक्षिण ध्रुव के गिर्द हैं, उत्तर समुद्र और दक्षिण समुद्र पुकारते हैं। इन पिछले दो समुद्रों का जल शीत की अधिकाई से जमकर सदा यख़ अर्थात पाला बना रहता है, जो ध्रुव के समीप है वह

तो कभी नहीं गलता, और बाक़ी गर्मियों के मौसिम मे जहां कहीं गलता है तो यख़ के टुकड़े पहाड़ों की तरह वहां गल के गिरने लगते हैं। जहाज़ों को इस समुद्र मे बड़ा डर है, जो कभी यख़ के टुकड़ों के बीच मे फंस जावें, तो फिर उस जगह से उनका निकलना बहुत कठिन है। ह्वेल मछली जो समुद्र के सब जीवों से बड़ी, प्रायः साठ हाथ लंबी होती है बहुधा इन्ही मे रहती है। इन पांचों समुद्र के जो छोटे टुकड़े दूर तक थल के भीतर आगए हैं, वे खाड़ी कहलाते हैं। और खाड़ियों के नाम अकसर उन शहर अथवा मुल्कों के नाम पर बोले जाते हैं, जो उनके समीप अथवा कनारे पर होते हैं। बन्दर वह स्थान हैं, जहां जहाज़ समुद्र की कोल से आकर लंगर डालते हैं। इस भूगोल का एक तिहाई जो जल से बाहर थल अर्थात सूखा है, कुछ एक ही ठौर नहीं, बरन कई जगह टुकड़ा टुकड़ा समुद्र के बीच बीच मे प्रकट हो रहा है जैसे निर्मल नीले आकाश मे मेह बरस जाने के बाद बादल के टुकड़े दिखलाई देते हैं। इन ज़मीन के टुकड़ों मे दो टुकड़े बहुत बड़े हैं, और इसीवास्ते वे महाद्वीप कहलाते हैं, बाक़ी छोटे छोटे टुकड़े द्वीप अथवा टापू कहे जाते हैं। ज़मीन के हिस्से जो दूर तक समुद्र मे निकल गए हैं, अर्थात् तीन तरफ़ उन के पानी है और एक तरफ़ महाद्वीप से मिले हुए हैं, उन को प्रायद्वीप बोलते हैं, और उसी प्रायद्वीप का सिरा अर्थात् अग्रभाग अन्तरीप है, और पिछला भाग जहां वह महाद्वीप से मिलता है, जो तंग और छोटा हो तो डमरूमध्य कहा जायगा, क्यों कि जैसे डमरू का

मध्य उस्के एक हिस्से को दूसरे से जोड़ता है, उसी तरह यह भी ज़मीन के एक हिस्से को दूसरे से मिलाता है। यह भी जानना अवश्य है, कि ज़मीन अर्थात् थल सभी जगह बराबर एक सी बट्टाढाल मैदान नहीं है, किसी जगह बहुत ऊंची होगई है। ऊंची ज़मीन का नाम पहाड़ है, और जिन पहाड़ों के अन्दर से आग निकलती है वे ज्वालामुखी कहलाते हैं। पहाड़ों के झरने और मेह का पानी जो इकट्ठा होकर मैदान मे बहता हुआ समुद्र को जाता है, उसे नदी कहते हैं, पर जो नदी बहुत बड़ी होती है उस को दर्या भी पुकारते हैं, और जो बहुत ही छोटी होती है वह नाला कहलाती है, और जो नदी से काटकर किसी दूसरी जगह पानी लेजावें, तो उसे नहर बोलते हैं। जब कभी इस मेह के पानी को बहने की राह नहीं मिलती और किसी नीची ज़मीन मे इकट्ठा होजाता है तो वही ताल और झील है। जिस तरह पर कोई माली या ज़मीदार किसी बडे बाग़ या खेत को जुदा जुदा क़िस्म के फूल वा अन्न बोने के लिए तख़्ते चमन और क्यारियों मे हिस्से करता है उसी तरह यह पृथ्वी भी जुदा जुदा क़ौम के आदमी और जुदा जुदा बादशाह राजे और क़ादीरों की बादशाहत राज और क़ादीरी के कारन जुदा जुदा हिस्सों मे बंटी हुई है। मुल्क अथवा देश छोटे और बड़े सब हिस्सों को कह सकते हैं, पर विलायत उसी बड़े हिस्से को कहेंगे, जिसे निराली क़ौम बसती हो, और जहां का चाल चलन और व्यवहार जुदा ही बरता जाता हो। यह विलायतें बमूजिब अपनी लंबान चौड़ान के

सूबों मे और सूबे ज़िलो मे और ज़िले परगनों मे बंटे रहते हैं, और फिर हर एक परगने मे कई एक मौज़े अर्थात् गांव बसाकरते हैं। जो बस्ती बहुत बड़ी होती है अर्थात् जिस्मे हज़ारों आदमी बसते हैं, और पक्के संगीन बड़े बड़े मकान बने होते हैं, उस को शहर और नगर कहते हैं। शहर से छोटा और गांव से बड़ा क़सबा कहलाता है।

अब यहां इस किताब के पढनेवालों को यह भी सोचना चाहिए, कि यद्यपि उस आलीशान मकान के सब कमरों का हाल जिस को सैरकरनेवाला आप नहीं देख सकता, किसी जानकार आदमी से सुनकर अवश्य उस्के दिल को खुशी हासिल होवेगी, लेकिन जो वह आदमी उस्को उन कमरों का नमूना या तसवीर भी दिखलादेवे तो फिर उस सैरकरने वाले को कैसा मज़ा मिलेगा, और कितना आनन्द हाथ लगेगा। निदान इसी तरह जानकार आदमियों ने भूगोल विद्यार्थियों के देखने के वास्ते ज़मीन का नमूना और उसकी तसवीर भी बना दी है। भूगोल के नमूने को भी भूगोल ही कहते हैं और ठीक भूगोल के डौल पर गोल बनाते हैं, और तसवीर वह है कि जिस को नक़शा कहते हैं, पर इस तसवीर मे भेद है, हम उसी एक मकान की तसवीर कई तरह से खींच सकते हैं, जो किसी छोटे से काग़ज़ पर खींचें, तो उस मकान का डौल तो निस्सन्देह मालूम हो जावेगा, लेकिन उसके दर दीवार अच्छी तरह न ज़ाहिर हो सकेंगे, और जो बड़े काग़ज़ पर बनावें तो दर दीवार अवश्य मालूम हो जावेंगे, पर फिर भी उन की नक़्क़ाशी और बारीकी तभी भले

प्रकार प्रकट होवेगी, कि जब उनके जुदा जुदा हिस्सों की जुदा जुदा तसवीर खींची जावे, इसी तरह भूगोल का नक़्शा भी जो छोटा होताहै, उस्से उस्का डौल मात्र, और जो ज़रा बड़ा रहता है उस्से केवल इतना कि कौन मुल्क किस तरफ़ है मालूम हो सकता है,लेकिन गांव और शहर और पहाड़ और नदी और सड़कों का व्योरा पतेवार तभी जाना जायगा, कि जब जुदा जुदा विलायत बरन जुदा जुदा पर्गनों का जुदा जुदा नक़्शा खींचा जावे। जानना चाहिए कि ज़मीन नारंगी की तरह गोल है,और समुद्र और टापू उसकी चारों अलंग पड़े हैं और तसवीर से हर एक चीज़ की एक ही अलंग दिखलाई देतीहै, दोनों अलंग कदापि दिखलाई नहीं दे सकती, इसवास्ते भूगोल के नक़्शे से उसकी दोनों अलंगों की दो तसवीरें लिखी हैं, जैसे आदमी के चिहरे की कोई तसवीर खैंचकर उस की सब अलंगों को दिखलाना चाहे, तो अवश्य उस्को दो तसवीरें लिखनी पड़ेंगी, एक से तो आंख नाक कान और मुंह इत्यादि नज़र पड़ेंगे, और दूसरी से चिहरे की पिछाड़ी, अर्थात गुद्दी और सिर के बाल दृष्टि से आवेंगे, लेकिन भूगोल की तसवीर देखकर कोई ऐसा न समझे कि वह चक्की के पाटों की तरह चिपटा है, वह तसवीर से चिपटा इस कारण मालूम होता है कि तसवीर से किसी चीज़ की भी उंचाई प्रत्यक्ष प्रकट नहीं हो सकती। यह भी ख़ूबी समझ लेना चाहिए, कि सहज से गांव और शहर इत्यादि का पता लगने के वास्ते, और इस बात के लिए कि जो किसी विलायत का जुदा नक़्शा खिंचा हो, तो तुरन्त

यह जान सकें, कि वह विलायत भूमण्डल के किस खंण्ड मे कौन कौन सी विलायत मे किस किस तरफ़ को पड़ती है, भूगोल के नक़शे मे ठीक बीचों बीच पूर्व से पश्चिम को एक लकीर, जिसका नाम विषुवत् रेखा है, खींचकर भूगोल को बराबर दो हिस्सों मे अर्थात् उत्तर और दक्षिण बांट दिया है (१) और उस विषुवत् रेखा को ३६० अंशों मे, जिसे अरबी मे दर्जा कहते हैं, भाग कर के प्रत्येक अंश से एक एक लकीर उत्तर और दक्षिण की तरफ़ खींच दी है और फिर उन लकीरों को ३६० अंशों मे भाग देकर हर एक अंश मे पूर्व से पश्चिम को लकीरें खींच दी हैं (२), निदान इन लकीरों से तमाम भूगोल के नक़शे पर इस तरह के ख़ाने बन गए हैं, कि जैसे चौपड़ और शतरंज मे घर बने रहते हैं, और इन्ही घर अर्थात् लकीरोंके अंशों की गिनती से भूगोल के सब स्थानों का पता लग जाता है, और एक जगह का दूसरी जगह से फ़ासिला (३) भी मालूम होजाता है। जो लकीरें पूर्व से पश्चिम को खिंची हैं उन्हे अक्षांश और जो उत्तर से दक्षिण को उन्हे देशान्तर कहते हैं। अक्षांश की गिनती विषुवत् रेखा

---

(१) भूगोल का नक़शा देखो।

(२) नक़शा छोटा होने के कारन प्रत्येक अंश से लकीर न खींच कर दस दस अंश के बाद लकीर खींची है।

(३) पृथ्वी के घेरे को, जो २५०२० मील किसी जगह मे लिख आए हैं, ३६० दर्जों मे बाटने से एक एक दर्जा ६९॥ मील का पड़ेगा जब किसी जगह से फ़ासिला जानना मंज़ूर हो फ़ौरन् परकार से नाप कर देख लेवें कि उन दोनों के बीच कितने दर्जे का तफ़ावत् है।

से करते हैं, और देशान्तर उस लकीर से गिनते हैं जो नक़शे मे इंगलिस्तान के दर्मियान ग्रीनिच नगर पर से खींची गई है। जैसे चौपड़ और शतरंज मे घर की गिनती बोलने से उस स्थान का अनुभव होता है, उसी तरह अक्षांश और देशान्तर के अंश की गिनती कहने से नक़शे मे उस जगह के गांव शहर इत्यादि का ज्ञान हो जाता है। गिनती अंशों की नक़शे मे उन्ही अंशों पर लिखी रहती है, और अंश के साठवें हिस्से को कला, और कला के साठवें हिस्से को विकला कहते हैं। ध्रुव भूगोल मे विषुवत् रेखा से उत्तर और दक्षिण उन दो स्थानों का नाम है, जहां देशान्तर की सारी लकीरें इकट्ठी होकर आपस मे मिलजाती हैं। भूगोल के नक़शे मे सिवाय ऊपर लिखी हुई लकीरों के और भी चार लकीर के निशान बिन्दी बिन्दी देकर पूर्व से पश्चिम को बने रहते हैं, प्रयोजन उस्से इस बात का बतलाना है, कि इन बिन्दी की पहली दोनो लकीरें, जो विषुवत् रेखा से२३॥ अंश के तफ़ावत पर उत्तर और दक्षिण की तरफ़ खिंची हैं, उन के दर्मियान के मुल्क मे, सदा सूर्य के साम्हने रहने से, निहायत गर्मी होती है, इसी वास्ते वह मुल्क गर्मसेर अथवा ग्रीष्मप्रधानक कहलाता है, और बाक़ी बिन्दी की दो लकीरें जो दोनों ध्रुवों से २३॥ अंश के फ़ासिले पर दोनों तरफ़ खिंची हुई हैं, उन के अन्दर सर्दसेर मुल्क अथवा शीतप्रधानक देश है, क्यों कि उस पर सूर्य्य की किरनें सदा तिरछी पड़ती हैं। इन सर्दसेर और गर्मसेर मुल्क के दर्मियान मोतदल अथवा अनुष्णाशीत मुल्क बसा है अर्थात् जो न बहुत गर्म है न सर्द।

हम अभी ऊपर लिख आए हैं कि जिस तरह मकानों की तसवीर बनती है उसी तरह बुद्धिमानों ने भूगोल का नकशा भी रचा है, परन्तु मकान इत्यादि के चित्रों में तो उन के अवयव ज्यों के त्यों उतार देते हैं, अर्थात् द्वार की जगह द्वार का आकार बनाते हैं, और दीवार की जगह दीवार का और भूगोल के नकशों में उन नकशों का विस्तार बहुत बढ़ जाने के भय से शहर नदी पहाड़ सड़क झील इत्यादि की जगह नीचे लिखे हुए चिन्ह लिख देते हैं, उन का पूरा आकार नहीं बनाते, नकशे में इन्ही चिन्हों को देखकर उन का अनुभव कर लेना चाहिए

गांव

शहर

बड़ाशहर

क़िला

नदी

झील

पहाड़

कच्चीसड़क

पक्कीसड़क

देशसीमा
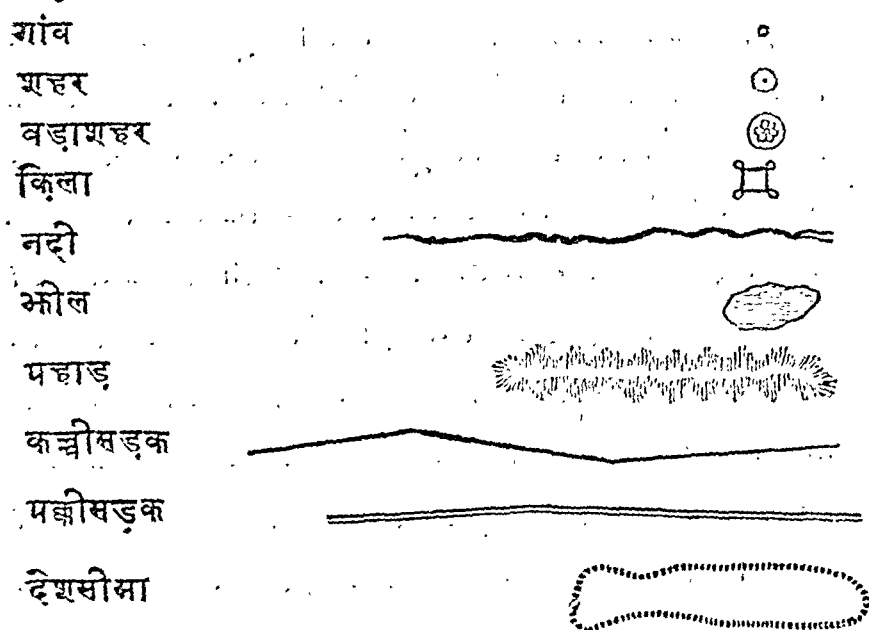
यह भी बात याद रखने की है कि किसी समय में इस सारी पृथ्वी पर ईश्वर की इच्छा से समुद्र का पानी छा गया था, और ऊंचे से ऊंचे पहाड़ उस में डूब गए थे, इस बात को

सारे मज़हब और सब मुल्क के आदमी मानते हैं कोई उस का नाम तूफ़ान बतलाता है, कोई प्रलय कहता है, पर समय में उस के तकरार है, जुदा जुदा मुल्क के आदमी जुदा जुदा काल उस के वास्ते ठहराते हैं, अबतक भी पहाड़ों पर समुद्र की मछलियों का हाड़ और सीप और शंख और घोंघे जो मिलते हैं, किसी काल में इस तूफ़ान के आने की गवाही देने के वास्ते बहुत हैं। यह भी किताब और पोथियों के देखने से मालूम होता है कि एक ही स्त्रीपुरुष से हम सब पैदा हुए हैं मुसलमान और अंगरेज़ उस पहले पुरुष को नूह और हिन्दू वैवस्वत-मनु कहते हैं। ज्यों ज्यों औलाद बढ़ती गई मनुष्य संसार में फैलते गए, और नए नए गांव और नए नए नगर बसने लगे, जब लोग दुनिया में सब तरफ़ बस गए तो बमूजिब मुल्कों की गर्मी सर्दी और पैदाइशों के जुदा जुदा क़ौमों के जुदा जुदा चाल ढाल और व्यवहार हो गए, जैसे सर्दमुल्कवाले सदा ऊनी कपड़े और पोस्तीनों में लिपटे रहते हैं, और गर्ममुल्कवाले केवल धोती दुपट्टे ही से अपना काम चलाते हैं। सूरतें भी आब हवा की तासीर से तबदील हो गईं, एशिया के पश्चिम भाग और फ़रंगिस्तान के आदमी सब से अधिक सुन्दर और बुद्धिमान हैं, पर जो देश उत्तर अलंग अर्थात् ध्रुव से समीप है, वहांवाले नाटे होते हैं, एशिया के पूर्व भागियों की नाक चिपटी गाल चौड़े और आंखें तिरछी और छोटी और अफ़रीक़ा के रहनेहारों की नाक फैली हुई रङ्ग काला बाल घूंघरवाले और होंठ मोटे रहते हैं, और अमेरिका के असली बाशंदों का रंग तांबे का सा

लाल है। मज़हब भी इस अर्से मे कई तरह के हो गए, और राजे भी हर एक कौम ने दूसरी कौमों के ज़ोर ज़ुलम् से बचने के लिये अपने अपने जुदा बना लिए। निदान अब हम एक एक मुल्क का हाल जुदा जुदा पतेवार पढ़नेवालों का चित्त प्रसन्नकरने के लिये इस ग्रन्थ मे लिखते हैं। थल अर्थात् ज़मीन के उन दो बडे टुकड़ों मे, जो महाद्वीप कहलाते हैं, एक का नाम तो अमेरिका है, जिसे बहुधा नई दुनिया और नया महाद्वीप भी बोलते हैं, और दूसरे अथवा पुराने महाद्वीप के तीन खण्ड तीन नाम से पुकारे जाते हैं, पूर्व का खण्ड एशिया, पश्चिम का यूरप अथवा फ़रंगिस्तान और दक्षिण का अफ़रीका। इन सब मे टापुओं समेत अटकल से प्रायः नव्वे करोड़ आदमी बसते हैं और उन की भाषा भिन्न भिन्न प्रकार की कुछ न्यूनाधिक दो सहस्र होवेंगी। इन नव्वे करोड़ आदमी मे से प्रायः पच्चीस करोड़ तो ईसाई मज़हब रखते हैं, अर्थात क्रिस्तान हैं, पैंतीस करोड़ बुद्ध का मत मानते हैं, दस करोड़ मुसलमान हैं, और दस ही करोड़ के लगभग हिन्दू होवेंगे, बाक़ी दस करोड़ मे और सब मज़हब के आदमी सोच लेने चाहियें।

एशिया

यह नाम यूनानी है, संस्कृत नाम हमलोगों को पृथ्वी के इन विभाग और मुल्क और नदी पहाड़ों के नहीं मिलते, इसी वास्ते नाचार अंगरेज़ी और फ़ारसी काम मे लाने पडे

देश का विस्तार वर्गात्मक मीलों में बतलावें, तो समझेंगे
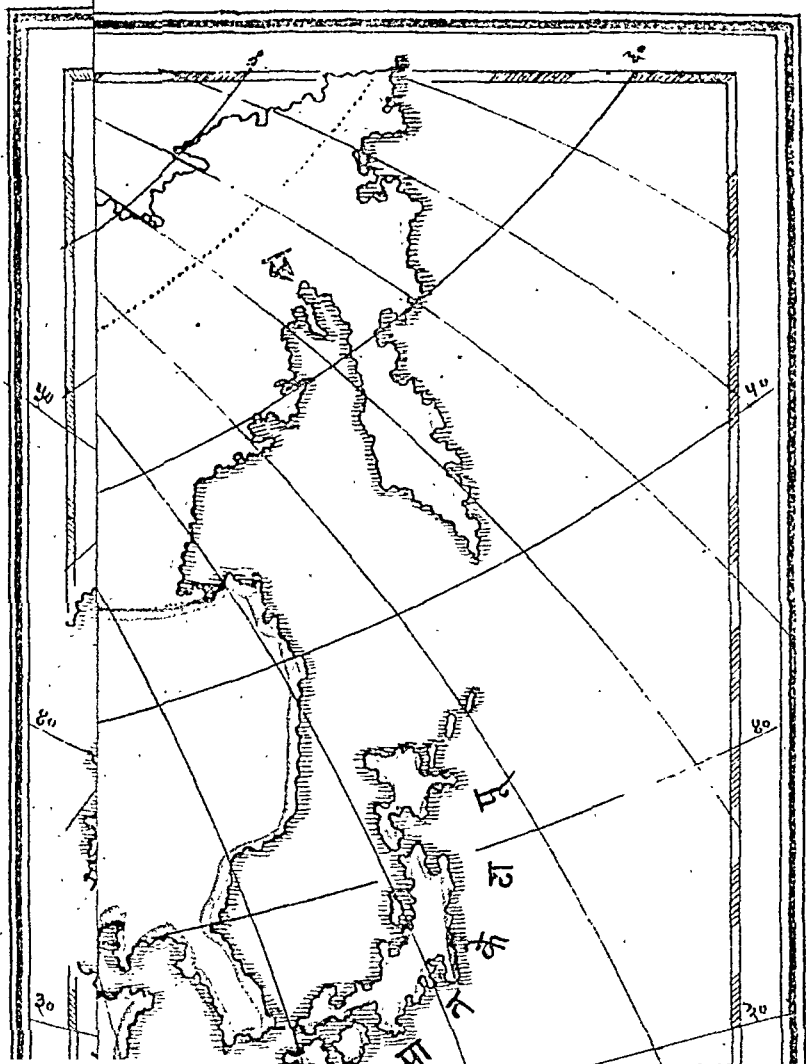
और सद्व शाल्मलीक कुश क्रौञ्च शाक पुष्कर ये द्वीप, और दही दूध मधु मदिरा और इक्षुरस के समुद्र और सोने चांदी के पहाड़, जो संस्कृत ग्रन्थों में लिखे भी हैं तो अब उन का कहीं पता नहीं लगता, न जानें इन लिखनेवालों ने क्या समझ के ऐसा लिखा था, पंडित लोग कहते हैं कि बातें तो ग्रन्थों में सब सत्य लिखीं हैं, पर अब उन के ठीक अर्थ का समझानेवाला नहीं मिलता। जो कुछ हो, लेकिन हम तो वही लिखते हैं जो जब जिसका दिल चाहे अपनी आंखों से देखलेवे। जिस तरह खेत और गांव का सर्हद--सिवाना है उसी तरह बड़े मुल्कों की भी सीमा होती है। इस एशिया की सीमा उत्तर तरफ़ उत्तरसमुद्र, और दक्खिनतरफ़ हिन्द का समुद्र, और पूर्वतरफ़ पासिफ़िक समुद्र. और पश्चिमतरफ़ रेडसी-नामक समुद्र की खाड़ी और स्वीज़ का डमरुमध्य अफ़रीका से, और मेडिटरेनियन और ब्लाकसी-नामक समुद्र की खाड़ी और डन और वलगा नदी और यूरल पहाड़ यूरप से उसे जुदा कते हैं, और २ से लेकर ७७ उत्तर अक्षांश और २६ पूर्वदेशान्तर से लेकर १९० पश्चिमदेशान्तर तक विस्तृत है। इस का लम्बान पूर्व से पश्चिम को अधिक से अधिक प्रायः ७५०० मील और चौड़ान उत्तर से दक्खिन को प्रायः ५००० मील और बिस्तार एक करोड़ पच्छत्तर लाख मील मुरब्बा अर्थात् वर्गात्मक(१) मील है। आदमी उस में

---

(१) वर्गात्मक उसे कहते हैं जो चारों तरफ़ बराबर हो, अर्थात् जितना चौड़ा हो उतनाही लम्बा, इसलिए जब हम किसी देश का विस्तार वर्गात्मक मीलों में बतलावें, तो समझलो कि

अटकल से सवा चव्वन करोड़ बसते हैं। आबादी उस की इस हिसाब से फ़ी मील मुरब्बा ३१ आदमी की पड़ती (१) है और एक सौ तेतालीस से अधिक भाषा बोली जाती हैं। पृथ्वी के इस भाग में ऐसे बड़े मुल्कों से लेकर जहां समुद्र भी

जितने वर्गात्मक मील हमने लिखे उतने ही टुकड़े एक एक मील के लम्बे और एक एक मील के चौड़े उस देश के हो सकते हैं जैसे कोई कपड़ा सोलह गिरह लम्बा और चार गिरह चौड़ा हो, तो हम उस कपड़े का विस्तार चौसठ गिरह वर्गात्मक बतलावेंगे, और फिर जो तुम उस कपड़े से गिरह गिरह भर लम्बे और गिरह गिरह भर चौड़े टुकड़े काटने लगो तो चौसठ ही टुकड़े काटे जावेंगे, देश की धरती का प्रमाण जानने के लिये यह हिसाव बहुत अच्छा है, नहीं तो एक एक जगह की लम्बान चौड़ा न बतलादेने से उन के विस्तार का कदापि ठीक अनुमान न हो सकेगा, क्यों कि देश किसी जगह मे कम लम्बे चौड़े रहते हैं और किसी जगह मे अधिक, कुछ पोथी के पत्रे की तरह सब तरफ़ बराबर नहीं होते। निदान जिसतरह गांव को बीघे से नापते हैं, उसी तरह देशों को वर्गात्मक मीलों से नापते हैं। अस्सी हाथ लम्बा और अस्सी हाथ चौड़ा बङ्गाली बीघा होता है, एक मील लम्बा और एक ही मील चौड़ा, अर्थात् ३५२० हाथ लम्बा और ३५२० हात चौड़ा, एक वर्गात्मक मील होता है, इसी वर्गात्मक को अरबी मे मुरब्बा कहते हैं।

(१) यह पड़ता फैलाने की तर्कीब मुल्क की आबादी जानने के लिये बहुत अच्छी है, मिरज़ापुर के ज़िले मे सन १८४८ के बीच खानःशुमारी के समय ८३१३८८ आदमी गिने गये थे, और बनारस के ज़िले मे कुल ७४१४२६। अब अनाड़ी लोग इस बात के सुनने से यही समझेंगे कि मिरज़ापुर बनारस से अधिक आबाद है, पर विद्वान् लोग दोनों ज़िलों का विस्तार देख फ़ी मील मुरब्बा पड़ता फैलालेते हैं, और इस हिक्मत से सहज मे जान लेते हैं, कि

लेकर जहां समुद्र भी जम जाता है, इतने गर्मसेर तक बसे हैं; कि जिससे आदमी सूर्य के तेज से काले हो जाते हैं। मुसलमानों का मजहब बहुत दूर दूर तक फैला है, पर गिन्ती में बुद्ध के माननेवाले अधिक हैं। हिन्दुस्तानवाले वैदिक धर्म रखते हैं, और ईसा का मत अब तक पृथ्वी के इस विभाग में बहुत नहीं चला। एशिया का मुल्क अगली तवारीख और इतिहासों में बड़ा प्रसिद्ध है, क्यों कि पहला आदमी जिस्से हम सब मनुष्य उत्पन्न हुए, पृथ्वी के इसी भाग में पैदा हुआ था, और पृथ्वी के इसी भाग से सारी बातें बुद्धि विवेक और सुख की निकलनी शुरू हुईं। पहले ही पहल पृथ्वी के इसीभाग में प्रतापी और बलवान राजे हुए, और सब से पूर्व पृथ्वी के इसी भाग में लक्ष्मी और विद्या का पैर आया। सिवाय इस के जैसे नदी पहाड़ जंगल और मैदान पृथ्वी के इस भाग में पड़े हैं, और जैसे फल फूल औषधि अन्न पशु पक्षी धातु रत्न इत्यादि इस में

बनारस मिरज़ापुर से कुछ कम पचगुना अधिक आबाद है, क्यों कि मिरज़ापुर का विस्तार ५२८४ मील मुरब्बा है, और बनारस का कुल २०९५ मील मुरब्बा पड़ता फैलाने से मिरज़ापुर में फी मील मुरब्बा १५८ आदमी पड़ते हैं, और बनारस में ७४५ आदमी यह वही हिसाब है कि जैसे एक के खेत में ४ मन गेहूं पैदा हुआ और दूसरे के में १० मन, पर जब मालूम हुआ कि दसमनवाले खेत में बीस बीघे धरती है, और चारमनवाले में दो ही बीघे तो साफ़प्रकट हो गया, कि चारमनवाले की धरती अधिक उपजाउ है क्यों कि उस्को फी बीघे दो मन गेहूं पड़े और दसमनवाले को फी बीघे कुल आध मन अर्थात् बीस सेर।

पैदा होते हैं, ऐसे कदापि दूसरे खंडों मे नहीं मिलेंगे। एशिया मे नीचे लिखी ऊई विलायतें बसी हैं। आदौ हिन्दुस्तान, उस्के पूर्व बर्म्हा, उस्के दक्षिण स्याम, उस्के दक्षिण मलाका. स्याम के पूर्व कोचीन, बर्म्हा के पूर्व और उत्तर चीन, उस्के उत्तर एशियाईरूस, चीन के पूर्व जपान के टापू, हिन्दुस्तान के पश्चिम अफ़गानिस्तान, उस्के पश्चिम ईरान, चीन के पश्चिम तूरान, ईरान के पश्चिम अरब उस्के उत्तर एशियाईरूम। बादशाहत इन सब विलायतों मे स्वाधीन स्वेच्छाचारी हैं, और सदा से ऐसी ही चली आई, अर्थात् बादशाह जो चाहे सो करे, कोई उस को रोक नहीं सकता, बादशाह के मुंह से निकला वही आईन है, मुल्क चाहे बर्बाद हो चाहे आबाद, प्रजा की सामर्थ्य नहीं कि उस की आज्ञा टाल सके। इस ढब के राज्य मे जब राजा धार्मिक और नैयायिक होता है, तब तो प्रजा को सुख चैन मिलता है, और नहीं तो लूट मार और बे इन्तिज़ामी मची रहती है, और तैमूर और नादिर ऐसे बादशाह एक एक दिन मे लाख लाख आदमी मर्द औरत और बच्चे बेगुनाह कटवा डालते हैं। केवल एक हिन्दुस्तान के बीच हम लोगों के भाग्यबल अब कुछ दिनों से आईनीबन्दोबस्त ऊवा है, अर्थात् बादशाह का मक़दूर नहीं कि आईन के बख़िलाफ़ कुछ भी काम करसके। आईन बादशाह और रैयत दोनो की सम्मति साथ बनता है, जब तक रैयत राज़ी न हो बादशाह अपनी तरफ़ से कोई भी आईन जारी नहीं कर सकता, और रैयत काहे को ऐसे किसी आईन पर राज़ी होगी, कि जिस्से उसका

नुकसान है, पस इस बन्दोबस्त से बादशाह चाहे अच्छा हो चाहे बुरा इन्तिज़ाम में खलल नहीं पड़ता, और मुल्क की दिन पर दिन उन्नति होती जाती है। विशेष वर्णन इस आईन और पार्लीमिंट का अर्थात् जहां आईन बनता है, यूरुप देश के अन्तर्गत इंगलिस्तान की विलायत के साथ होगा, क्यों कि अब हिन्दुस्तान उसी बादशाह के ताबे है। हमलोगों को इतनी बुद्धि न होने के कारण कि अपने मुल्क के लिये आप आईन बनावें वहांवाले अपनी तरफ़ से कई बड़े योग्य साहिबों को चुनकर कौंसल के नाम से यहां मुकर्रर करते हैं, कि जिस में वे सम्मत होकर प्रजा के हितकारी आईन बनावें। इस कौंसल का बर्णन हिन्दुस्तान के साथ होगा।

हिन्दुस्तान।

यह मुल्क एशिया के दक्षिण भाग में ८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांश तक और ६७ अंश से ९२ अंश पूर्वदेशान्तर तक चला गया है। हिन्द और हिन्दुस्तान इस मुल्क का नाम मुसलमानों ने रखा, और इंडिया अंगरेज़ लोग पुकारते हैं, जड़ इन दोनों नाम की सिन्ध नदी मालूम पड़ती है, क्यों कि अंगरेज़ लोग तो अब भी उस नदी को इंडस कहते हैं।

संस्कृतवालों ने उस का नाम भारतवर्ष इसलिये रखा कि उन के मत बमूजिब किसी समय मे राजा भरत ने यहां एकछत्र राज किया था। सीमा इस देशकी जुदा जुदा समय मे जुदा जुदा तरह पर रही है, कभी लोगों ने बर्म्हा स्याम मलाका और कोचीन को भी इसी मे गिना, और कभी काबुल कन्दहार और तिब्बत को इसमे मिलाया, पर हम यहां वही सीमा लिखते हैं जो अब इस काल मे बरती जाती है और अंगरेज़ी नकशों मे लिखी रहती है, और इसी सीमा के अन्तर्गत देश को हिन्दुस्तान कहना चाहिये क्यों कि बर्म्हा और काबुल इत्यादि देशवाले अपना चाल चलन मज़हब और राज्य इन दिनों हमलोगों से ऐसा जुदा रखते हैं कि अब उन को जुदा ही विलायत कहना उचित है। निदान यह हिन्दुस्तान जो पान की तरह कुछ त्रिकोण सा और नोक उस की दक्षिण को निकली हुई नकशे मे देखपड़ता है, दक्षिण तरफ़ समुद्र से घिरा है और उत्तर तरफ़ उस्के हिमालय का पर्वत पड़ा है, पश्चिम तरफ़ सिन्धु पार जिसे अटक का दर्या भी कहते हैं सुलैमान पर्वत है और पूर्व तरफ़ उस्के मनीपुर के जंगल-पहाड़ों से परे बर्म्हा का मुल्क है। इस्की लंबान कुमारी-अन्तरीप से, जो दक्षिण मे सेतुबन्धरामेश्वर के भी अगाड़ी है, कश्मीर तक प्रायः अठारह सौ मील होगी, और चौड़ान मुंज-अन्तरीप से जो करांची-बन्दर से भी बढ़ कर पश्चिम मे है और जिसे वहांवाले रासमुअर्री भी कहते हैं बर्म्हा-देश की सीमा तक प्रायः सोलह सौ मील है। विस्तार इस्का कुछ न्यूनाधिक बारह लाख मील मुरब्बा चत-

लाते हैं, और आदमी इस्में अटकल से चौदह करोड़ बस्ते हैं। पड़ता फैलाने से फी मील मुरब्बा कुछ ऊपर ११६ आदमी पड़ेंगे।

हम अभी ऊपर इस ग्रन्थ में किसी जगह एशिया की बड़ाई लिख आए हैं पर जानना चाहिए कि एशिया में भी यह देश सब से अधिक प्रख्यात था। यह देश किसी समय में विद्या और धन के लिये सब में शिरोमणि गिना जाता था। सारे पृथ्वी के मनुष्य इस देश के देखने की अभिलाषा रखते थे, और जो बणिक् बेवपारी यहांतक आते थे जन्मभर को रोटियों से निश्चिन्त हो जाते थे। यहां के राजाओं से सारे बादशाह दबते थे और इन का वे लोग सब तरह से मन रखते थे। देखो इन फ़रंगिस्तानवालों ने,जो अब विद्या को भी विद्या सिखाते हैं, पहले ही पहल रूमियों से पढ़ने लिखने की सुधबुध पाई, रूमी यूनानियों के चेले थे, और यूनानी और मिसरवाले हिन्दुस्तान में आकर यहां के पंडितों से विद्या उपार्ज्जन कर गये थे। केवल सिन्धुनदी के तटस्थ दोचार ज़िले इस देश के जो कुछ दिन ईरान के बड़े बादशाह दारा शाह के कबज़े में रहे तो कहते हैं कि जितनी आमदनी सारे ईरान के मुल्क की उस्के खज़ाने में आती थी उस्की एक तिहाई निराले इन ज़िलों से उसे हाथ लगती थी, वरन ईरानवाले सब उसे कर में चांदी देते थे और इन ज़िलों के ज़मीदार सोना पहुंचाते थे। इस टूटे हाल में भी सन् १७३९ के दर्मियान नादिरशाह यहां से सत्तर करोड़ का माल लेगया कि जिस्में केवल एक तख़्त ताऊस बादशाह के बैठने का

सात करोड़ से अधिक का था। जब तक राह न मालूम थी तो फ़रंगिस्तानवाले समुद्र से इस मुल्क में जहाज़ लाने के वास्ते कैसे अधैर्य्य और व्याकुल थे, कितने जहाज़ उनके इस राह की खोज में मारे गए और कितने आदमी इसी लालसा में समुद्र की मछलियों के ग्रास हुए। सिकन्दर ऐसा महीपाल इस मुल्क लेने की कामनाही में मरा, और बाबिल के स्वामी सिल्यूकस और ईरान के अधिपति नौशेरवां जैसे बादशाहों को इस देश के राजाओं के लिये अपनी बेटियां देनी पड़ीं। सिल्यूकस की बेटी महाराज चन्द्रगुप्त को आई थी और नौशेरवां की बेटी उदयपुर के राणा ने व्याही। निदान इस देश की अभिलाषा सारे देशों के लोग रखते थे, और चारों तरफ़ से दौड़ दौड़ कर यहां आते थे, और यहांवाले और सब देशों को तुच्छ जैसा समझ कर कभी बाहर न जाते, और सदा अपने ही स्थान में स्थिर बने रहते कौन ऐसी वस्तु थी जो इस देश में न हो और ये उस की खोज के लिये बाहर जावें, ईश्वर की कृपा से इन को इसी जगह सब कुछ मौजूद था।

पहाड़ इस मुल्क में कम हैं और मैदान बहुत, और उन मैदानों में नदियां इस बहुतायत से बहती हैं कि सारा मुल्क मानों बाग़ की तरह सिंच रहा है। हिमालय पर्वत जो इस मुल्क की उत्तर सीमा है दुनिया के सब पर्व्वतों से ऊंचा है। पूर्व्व में उस स्थान से जहां ब्रह्मपुत्र, पश्चिम में उस स्थान तक जहां सिन्धुनदी इसे काट कर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आती है, इस पहाड़ की लम्बान प्रायः दो हज़ार मील

होवेगी (१) और चौड़ान अनुमान कुछ कम चार सौ मील। हिमाचल और हिमाद्रि भी उसी का नाम है। हिम संस्कृत मे बर्फ़ को कहते हैं। इस पहाड़ के शृङ्ग सदा बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं, जो कभी कहीं से कुछ बर्फ़ हट जाती या गिर पड़ती है, तो सैकड़ों हाथ ऊंचे केवल बर्फ़ के करारे दिखलाई देने लगते हैं जो कोई आदमी हिन्दुस्तान के मैदान से इस कोहिस्तान में जावे, तो पहले उसे छोटे पहाड़ों पर चढ़ना उतरना पड़ता है ज्यों ज्यों वह उत्तर को इन पहाड़ों में बढ़ता जाता है पहाड़ों की उचान भी बढ़ती जाती है, यहां तक कि जाते जाते दस पन्द्रह अथवा बीस दिन मे वह उन पहाड़ों की जड़ में पहुंचजाता है कि जिन के शृङ्ग सदा हिम से आच्छादित रहते हैं। इन पहाड़ों पर मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी नहीं पहुंच सकते, बरन बादल भी कटि-मेखला से उन के अधोभागही से लटकते रहजाते हैं, शृङ्ग तक कदापि नहीं चढ़ सकते। छट्टू से पहाड़ पर, जो शिम-लासे तीन मंजिल आगे दस हज़ार फुट समुद्र (२) के जल से

---

(१) इस पहाड़ की अवधि इतनी ही मत समझना जितनी यहां लिखी गई। यहां उतना ही लिखना उचित है जितना हिन्दु-स्तान के साथ मिला है और हिमालय के नाम से पुकारा जाता है बाकी का हाल दूसरी विलायतों मे लिखा जावेगा यह पर्वत समुद्र तक चला गया है।

(२) पहाड़ उचान समुद्र के जल से इसवास्ते लिखते हैं कि पृथ्वी कहीं ऊंची कहीं नीची, हिसाब सब जगहमे ठीक नहीं बै-ठता, और समुद्र का जल सब स्थान में बराबर है। बहुत अनजान

ऊंचा है किसी दिन जब आकाश निर्मल हो चढ़ के इन बर्फ़ी-पहाड़ों की शोभा देखनी चाहिये पूर्व पश्चिम और दक्षिण को जहां तक निगाह जाती है सौ सौ दो दो सौ मील तक पहाड़ ही पहाड़ सवा सवा सौ हाथ तक ऊंचे और बीस बीस हाथ तक जड़ से मोटे पेड़ों के जङ्गलों से मानो हरे कपड़े पहने हुए जिन से नदियों का पानी जगह जगह पर उन की जड़ों से सूर्य्य की आभा से चमकता हुआ कनारी गोटा लगा है समुद्र के तरङ्ग की तरह ऊंचे नीचे दिखलाई देते हैं और उत्तर दिशा से अर्धचन्द्राकार कोई दो सौ कोस के पल्ले तक बर्फ़ी-पहाड़ नज़र पड़ते हैं ऐसे ऊंचे कि मानो

आदमी पाहाड़ों की उचान चढ़ाई के हिसाब से बतलाते हैं, पर याद रखो कि इस ढब से कदापि उसकी उचान का ठीक अनुमान नहीं हो सकता क्यों कि किसी पहाड़ मे ढाले थोड़ा रहता है और किसी मे बहुत इस लिए हमने सब जगह पहाड़ों कि खड़ी उचान का हिसाब लिखा है, जैसे देखो कसौली के पहाड़ को कालका से सड़क की राह छ कोस चढ़ाई लगती है, पर जो सड़क छोड़ कर कोई आदमी दूसरी तरफ़ से उस पर सीधा जा सके तो उसे अनुमान दो कोस से अधिक न चढ़ना पड़ेगा. और हिसाब से उस की खड़ी उचान समुद्र के जल से कुछ कुछ ऊपर चार हज़ार हाथ अथवा छ हज़ार फुट है, अर्थात् जो कसौली के शृङ्ग पर कोइ कूवा खोदना चाहे तो जब चार हज़ार हाथ गहरा खुद चुकेगा तब उसकी हाथ समुद्र के जल से बराबर गिनी जायगी, अथवा कसौली के बराबर ऊचा कोई मनार समुद्र के ठीक तट पर बनाना चाहे तो चार हज़ार हाथ ऊचा बनाना पड़ेगा तीन फुट का एक गज होता है और एक गज मे दो हाथ होते हैं

ईश्वर ने आकाश के सहारे के लिये यही खम्भे रचे, धूप के तेज से ऐसे चमकते कि मानो पृथ्वी के हाथ में यह उजले हुए चांदी के कङ्कण पड़े हैं, और फिर जो अपने पैरों के नीचे निगाह करो तो बाग़ की क्यारियों की तरह सैकड़ों रङ्ग के फूल खिल रहे हैं, बरन बाग़ों में वे फूल कहां पाइए पहाड़ों के पानी के गिरने का शोर और ठंढीठंढी हवाकी झकोर यह शोभा देखे ही बन आवे लिख के कोई कहां तक बतावे। जो लोग इन पहाडोंको पार होकर हिन्दुस्तान से तिब्बत को जाना चाहते हैं, वे उन नदियों के कनारे कनारे, जो इन पहाड़ों को काट कर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आई हैं, पहाडों की जड़ ही जड़ में चल कर, अथवा उन घाटियों पर, जो किसी किसी जगह में ऐसी ऊंची नहीं हैं जिन पर जान न बच सके, चढ़ कर पार हो जाते हैं। शृंगो पर, अर्थात् इन पहाड़ों की चोटियों पर, कदापि कोई नहीं जा सकता। सब से ऊंचा शृंग उसका धवलगिरि जहां से गंडक नदी निकली है समुद्र के जल से कुछ ऊपर अठाईस हजार फुट ऊंचा है। जमनोत्री का पहाड़ जिस्के नीचे से जमना निकली है प्रायः छब्बीस हज़ार फुट, और पुरगिल पहाड़, जो पित्ती और सतजल नदी के बीच में है, प्रायः तेईस हज़ार फुट उंचा है। नीति-घाटी, जिसे लीति भी कहते हैं, बदरीनाथ से ईशान कोन की तरफ़ दौली नदी के कनारे कुछ ऊपर सोलह हज़ार फुट समुद्र से बलन्द है। कमाउं-गढ़वाल-वाले इसी घाटी से हिमालय पार होकर तिब्बत और चीन को जाते हैं। श्रेणी हिमालय पहाड़ की सिन्धु से लेकर ब्रह्मपुत्र तक एक

ही चली गई है, पर उस के जुदा जुदा टुकड़े और जुदा जुदा शृंग जुदा जुदा नाम से पुकारे जाते हैं, जैसा अभी ऊपर शिमला चूड़ धवलगिरि जमनोत्री पुरगिल इत्यादि लिख आए। इन पहाड़ों में प्रायः तेरह हज़ार फुट की उंचाई तक तो जङ्गल भी होता है और आदमी भी बस्ते और खेती बारी करते हैं, फिर तेरह हज़ार फुट से ऊपर बर्फ़ ही बर्फ़ रहती है, जो पहाड़ तेरह हज़ार फुट से कम और सात हज़ार से अधिक ऊंचे हैं उन पर केवल जाड़े के दिनों में थोड़ी बज़्त बर्फ़ गिरजाती है। अजब महिमा है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, ज्यों ज्यों ऊपर चढ़ते जाओ दरख़्त् झाड़ी फल फूल और खेतियों की सूरत बदलती जाती है, कहां तो अभी उन की जड़ में गर्म मुल्क के पेड़ आम इमली इत्यादि देखे थे, और कहां थोड़ी ही दूर बढ़ कर सर्द मुल्क की पैदाइशवान् बरास चील केलो देवदार इत्यादि दिखलाई देने लगे, यहां तक कि फिर बर्फ़ की हद के पास सिवाय भोजपत्र के और कुछ भी नहीं उपजता। एक ही निगाह में गर्मी सर्दी बर्सात तीनों मौसिम नज़र पड़जाते हैं। अधोभाग में गर्मी और गर्मी की खेतियां, जो पहाड़ी लोग सीढ़ियों की तरह पहाड़ों पर दर्जा बदर्जा बोते चले जाते हैं और झरनों के पानी से अनायास सिंचा करती हैं, मध्य में जो बादल घिर आए तो बरसात और गरजना तड़-पना, और ऊपर फिर जाड़ा और बर्फ़ है। दस कोस के तफ़ावत में तीनो मौसिम की चीज़ पैदा हो सकती हैं। जी-रार्ड साहिब पुरगिल पहाड़ पर बीस हज़ार फुट तक ऊंचे

चढ़े थे, इस्से अधिक ऊंचे इन पहाड़ों पर किसी आदमी का जाना अब तक सुनने में नहीं आया। पन्द्रह हज़ार फुट से आगे बढ़ने पर सांस रुकने और सिर और छाती में दर्द होने लगता है। शिमला मंसूरी इत्यादि स्थानों में जहां सर्कार ने पत्थर काट कर सड़क निकाल दी हैं वहां चढ़ाव उतराव तो अवश्य रहता है पर लोग बेखटके घोड़े दौड़ाते चले जाते हैं। बाकी और सब जगहों में जहां सड़क नहीं, रस्ता इन पहाड़ों में बहुत विकट है, कहीं दीवार की तरह खड़े पहाड़ों में उन की दरारों के दर्मियान खूंटियां गाड़ कर और उन खूंटियों पर लकड़ियां रख कर उन लकड़ियों के सहारे से चलते हैं, और कहीं घास की जड़ पकड़ पकड़ कर बन्दरों की तरह हाथ के बल इन पहाड़ों पर चढ़ते हैं, जो पैर के तले निगाह करो तो कई सौ हाथ नीचे दर्या का पानी इस ज़ोर के साथ पत्थरों से टकरा रहा है कि जिसे देखकर सिर घूमे, और जो सिर पर नज़र उठाओ तो वह पहाड़ दीवार सा इतना ऊंचा दिखलाई देवे कि जिसे देख के आंख तिरमिरा जावे, ऐसी विकट राहों का हाल भी सुनने से रोंगटे खड़े होते हैं चलनेवालों का तो जी ही जानता होगा। हिमालय के सिवा इस मुल्क में और भी जो सब पहाड़ वर्णन योग्य हैं उन में से विन्ध्याचल इस देश के मध्य में पड़ा है, खम्भात की खाडी से नर्मदा नदी के उत्तर उत्तर ज़िले भागलपुर में गङ्गा के कनारे तक चला आया है; पर उंचाई उस्की अनुमान दो अढ़ाई हज़ार फुट से अधिक कहीं नहीं। सह्याद्रि विन्ध्य के पश्चिम सिरे से लेकर समुद्र के

तट से निकट ही निकट कुमारी-अन्तरीप तक चला गया है। अंगरेज़ लोग इसे पश्चिम घाट बोलते हैं। मलयागिर इसी के दक्षिणभाग का नाम है। सह्याद्रि के साम्हने बङ्गाले की खाड़ी के निकट कावेरी से विन्ध्य के पूर्व सिरे तक पहाड़ों की जो एक छोटी सी श्रेणी गई है उसे पूर्व्वघाट बोलते हैं। इन पश्चिम और पूर्व्वघाट के बीच से दक्षिण तरफ़ जो पहाड़ उसका नाम नीलगिरि है। यद्यपि इन पहाड़ों में पानी और जङ्गल की बहुतायत से बड़े बड़े रम्य और मनोहर स्थान हैं, पर शृंग उन के पांच छ हज़ार फुट से अधिक ऊंचे कोई नहीं, केवल एक दूदूर्तिवेत नीलगिरि में कुछ ऊपर आठ हज़ार फुट ऊंचा है।

अब उन नदियों का बयान सुनो जो इन पहड़ों में से निकलती हैं। मुख्य उन में गङ्गा जमना सरयू गण्डक शोण कोसी तिष्ठा चम्बल सिन्धु झेलम चनाब रावी व्यास सतलज ब्रह्मपुत्र नर्मदा तापी महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी हैं। गङ्गा इस देश की प्रधान नदी, जिसे संस्कृत में भागीरथी जान्हवी इत्यादि बहुतेरे नामों से पुकारते हैं, हिमालय से निकलकर पन्द्रह सौ मील बहने के बाद अनेक प्रवाहों से बङ्गाले की खाड़ी में गिरती है। जिस स्थान से यह निकली है उसे गङ्गोत्री अथवा गङ्गावतारी और गोमुख भी कहते हैं, वहां कोई तीन सौ फ़ुट ऊंचा एक बर्फ़ का ढेर है, उसी के नीचे एक सोखे से इस गङ्गा की धारा कुछ न्यूनाधिक अठारह हाथ चौड़ी और अनुमान हाथ या दो हाथ गहरी निकलती है, कि जो फिर औ नदियों का पानी

लेकर पांच कोस के पाट से समुद्र मे मिलती है। गङ्गा का उत्पत्तिस्थान अर्थात् गङ्गोत्री समुद्र के जल से कुछ कम चौदह हज़ार फुट ऊंचा है। जिस जगह मे यात्रियों के दर्शन के लिये मन्दिर बना है वहां से यह स्थान ग्यारह मील आगे है। हरिद्वार से, जो समद्र के जल से एक हज़ार फुट ऊंचा है, यह नदी पहाड़ों को छोड़ मैदान मे बहती है। राजमहल से कुछ दूर आगे बढ़कर इस गङ्गा की कई धारा होगईं, पर जो कलकत्ते के नीचे होकर भागीरथी और हुगली के नाम से सागर के टापू के पास समुद्र से मिलती है हिन्दू उसी को असली-गङ्गा समझते हैं, और जहां इस का समुद्र से सङ्गम हुआ बड़ा तीर्थ मानते हैं। वहां कपिल मुनि का एक मन्दिर बना है, और जो धारा सब से बड़ी पूर्व्व मे ब्रह्मपुत्र के साथ मिलकर दखनशहबाज़पुर नाम टापू के साम्हने समुद्र मे गिरती है उसे पद्मा पद्मावती और पद्दा भी कहते हैं, और उस का माहात्म्य असलीगङ्गा के बराबर नहीं मानते इस सौ कोस के तफावत मे जो इन दोनो धारा के बीच पड़ा है गङ्गा की और सब सैंकड़ों धारा समुद्र से मिलती हैं। पानी की बहुतायत से इस जगह मे बड़ा दलदल और अति सघन जङ्गल रहता है। इसी जङ्गल का नाम सुन्दरवन है, कि जो वृक्षों की शाखा पर कलोलें करते हुए बन्दर लंगूर और रङ्ग बरङ्ग के मधुरमंजुल शब्द करनेवाले पक्षियों की बहुतायत से पथिक जनों का जिन की नावें उस राह से आती हैं, मन लुभाता है, और अति सुन्दर और मनोहर मालूम पड़ता है, पर जिस से सर्प सिंह

इत्यादि दुष्ट जीव जन्तु भी इतने रहते हैं कि ऐसा साहस-वाला कोई नहीं जो अपनी नौका से उतर कर इस जङ्गल के भीतर घुसे, वरन नौका में भी, जो बीच धारा में लङ्गर पर रहती है, रात को चौकस रहना पड़ता है, नहीं तो आश्चर्य नहीं जो कोई शेर पानी में तैर कर नाव में किसी आदमी को उठा ले जावे। आबहवा भी इस जङ्गल की निहायत ख़राब है। बरसात में गङ्गा का पानी दस ग्यारह हाथ ऊंचा बढ़ जाता है और बङ्गाले के मुल्क में इस नदी के दोनों कनारों पर पचास पचास कोस तक जल ही जल दिख-लाई देने लगता है। धानों के खेत में नावें चलती हैं और गांव जगह जगह पर पानी के बीच में टापुओं की तरह देखपड़ते हैं। हिन्दुओं का यह मत है कि गङ्गा में नहाने से सारे पाप धो जाते हैं, और कहते हैं कि उस का पानी चाहे जितने दिन रखो बिगड़ता कभी नहीं, वरन उस का पीना बहुत गुणकारी समझते हैं। अबदुलहकीम खां जो सन १७९२ में बीजापुर के ज़िले के दर्मियान शाहनूर का नब्बाब था मुसलमान होकर भी सिवाय गङ्गा जल के कभी कोई दूसरा पानी न पीता, और पांच सौ कोस से इस नदी का पानी मंगवाता, जो कुछ हो गङ्गा से इस देशवालों का बड़ा उपकार होता है, लाखों बीघे खेती केवल इसी के जल से होती है, और करोड़ों काम इन लोगों के इस से नाव चलने से निकलते हैं, केवल जलंघी भागीरथी और माथा-भङ्गा इस की इन तीन धारा की राह में कम से कम अस्सी हज़ार नाव साल भर में आती जाती हैं, वरन कलकत्ते तक

तो इस नदी मे समुद्र से जहाज़ भी आते हैं। जमना जिस का शुद्ध नाम यमुना है, और जिसे संस्कृत मे कालिन्दी इत्यादि नामों से भी पुकारते हैं, गङ्गोत्री से कुछ दूर पश्चिम हिमालय मे जमनोत्री के पहाड़ से निकलकर कुछ कम आठ सौ मील बहती ऊई प्रयाग के नीचे, जिसे इलाहाबाद भी कहते हैं, गङ्गा मे मिलजाती है। इन दोनों नदियों के सङ्गम को हिन्दू लोग त्रिवेनी कहते है, और बज्जत ही बड़ा तीर्थ मानते हैं। अगले समय मे ये लोग दूसरे जन्म मे अपना मनबाञ्छित फल पाने के निश्चय पर अक्सर इस तीर्थ मे अपना सिर आरे से चिरवा डालते थे, शाहजहां बादशाह ने यह काम बुरा समझकर मौक़ूफ़ कर दिया,और वह आरा भी तुड़वा डाला। कपतान हजसन साहिब जमनोत्री का हाल इस तरह पर लिखते हैं, कि जमनोत्री के पहाड़ की नैर्ऋत अलङ्ग मे कुछ ऊपर दस हज़ार फ़ुट समुद्र से ऊंचे एक बर्फ़ के टुकड़े के नीचे से, जो उस समय साठ गज़ चौड़ा और तेरह गज़ मोटा था, यह नदी कोई गज़भर चौड़ी और पांच चार अङ्गुल गहरी निकलती है, उस बर्फ़ के टुकड़े मे एक मोखा था, कपतान साहिब उस मोखे की राह उस के अन्दर चले गए, तो वहां जाकर क्या देखते हैं, कि उस बर्फ़ की छत के नीचे पहाड़ के पत्थरों से बज्जत से छेद हैं, और उन छेदों मे से अदहन की तरह खौलता ऊआ पानी निकलता है। निदान यही पानी जमना की जड़ है, पर पहाड़ छोड़ कर जब यह मैदान मे पहुंचती है, तो फिर इतनी बड़ी है कि बड़े बड़े नाव बेड़े इस मे चलते हैं।

सरयू जिसे शरयू सरजू घर्घरा घाघरा देविका और देवा भी कहते हैं, और गण्डक अथवा गण्डकी, और कोसी जिसका शुद्ध नाम कौशिकी है, और तिष्ठा जिसे संस्कृत मे तृष्णा और त्रिस्रोता भी कहते हैं, ये चारों नदियां हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ों से निकल कर पहली छपरे से कुछ दूर ऊपर, दूसरी पटने के साम्हने॰ तीसरी भागलपुर से कुछ दूर आगे बढ़कर, और चौथी करतोया को लेती हुई नवाबगञ्ज के पास, गङ्गा मे मिलती हैं। गण्डक मे सालग्राम मिलते हैं इस लिये उसे सालग्रामी भी बोलते हैं। कहते हैं कि हिमालय के उत्तर-भाग मे मुक्तिनाथ के पास गण्डक के कनारे जो एक पर्व्वत है यह नदी सालग्राम को उसी मे से बहालाती है। हिन्दू तो सालग्राम को साक्षात विष्णु का अवतार समझते हैं, और अंगरेज़ लोग उसे आमोनैट कहते हैं, और बतलाते हैं कि जिस को हिन्दू चक्र का चिन्ह जानते हैं वह तूफ़ान के समय मे जो सब समुद्र के जीव पहाड़ों मे दब गए थे उन मे से एकप्रकार के छोटे से जानवर का निशान है। इस जातिके जानवर अब तक भी समुद्र मे मौजूद हैं और इस प्रकार के अङ्कित पत्थर और भी बहुत पहाड़ों मे मिलते हैं। गण्डक मे तैरना और करतोया मे नहाना हिन्दुओं के मत बमूजिब मना है, और इसी तरह कर्मनाशा का, जो एक छोटी सी नदी बनारस और बिहार के ज़िलों के बीच बहकर गङ्गा मे गिरती है, पानी-छूने-के लिये मनाही है। चम्बल जिसे संस्कृत मे चर्मण्वती लिखा है, और सोन अथवा शोण, यह दोनों विन्ध्याचल से निकलकर पहली तो

इटावे से बारह कोस नीचे जमना मे गिरती है और दूसरी शरयू और गण्डक के मुहानों के बीच से छपरे के साम्हने दक्षिण से आकर गङ्गा मे मिलती है। सिन्धु नदी, जिसे अटक का दर्या और अंगरेज़ लोग इण्डस कहते हैं, हिमालय के पार गारू-शहर के पास कैलाश पर्व्वत की उत्तर अलङ्ग से निकली है, और सतरह सौ मील से ऊपर बहकर कई धारा हो, कि जस मे सब से बड़ी का पाट मुहाने पर छ कोस से कम नहीं है, हिन्दुस्तान की पश्चिम दिशा से समुद्र से मिलती है। अटक के नीचे पहाड़ों से जगह की तङ्गी से यह दर्या बड़े ज़ोर शोर से बहता है, पाट वहां पर कुछ ऊपर पांच सौ हाथ होगा, पर पानी बहुत गहरा और नावों को उस जगह मे बड़ा ही डर रहता है, जो कहीं पहाड से टक्कर खावें तो एक दम से टुकड़े टुकड़े हो जावें। हिन्दुओं के धर्मशास्त्र मे सिन्धु-पार जाना मना है, लेकिन काम पड़ने से सब जाते हैं, बरन अगले ज़माने मे हमारे देश के राजाओं ने सिन्धु पार उतरकर बहुत मुल्क फ़तह किये हैं। झेलम चनाब रावी व्यासा और सतलज ये पांचों नदियां हिमालय से निकलकर सब की सब इकट्ठी पञ्जनद के नाम से मिट्ठन-कोट के नीचे सिन्धु मे गिरती हैं, और इन्ही पांच नदियों से सिंचा हुआ देश पञ्जाब अथवा पञ्चनद कहलाता है। इन मे से एक सतलज तो हिमालय के उत्तर भाग मे मानसरोवर के पास रावणहृद से निकली है, और बाकी चारों हिमालय की दक्षिण अलङ्ग से निकलती हैं। झेलम, जिसे शास्त्र मे वितस्ता लिखा है, और कुछ ऊपर चार सौ मील बहकर झङ्ग

से दस कोस नीचे चनाब से मिलजाती है, और रावी भी जिस का संस्कृत नाम ऐरावती है, कुछ ऊपर चार सौ मील बहती हुई मुलतान से बीस कोस ऊपर इसी चनाब से आ मिलती है। व्यास जिसे विपाशा भी कहते हैं, अभयकुण्ड से निकल अनुमान दो सौ मील बहकर हरीके पत्तन के पास सतलज से मिलती है, उसकी थाह से चोरबालू अकसर जगह है इस कारन जाड़ों मे जब पानी घट जाता है पायाब उतरने से बहुत ख़बर्दारी रखनी पड़ती है, बरन कनारों पर संभल संभल के पैर धरते हैं, पगडंडी से कदापि बाहर नहीं जाते, नहीं तुरत बालू मे गड़जावें, और सतलज, जिसका शुद्ध नाम शतद्रु है, कुछ ऊपर आठ सौ मील बहकर बहावलपुर से बीस कोस नीचे चनाब से मिल पञ्चनद के नाम से अनुमान तीस कोस बढ़ कर मिट्ठन कोट के नीचे, जैसा कि अभी ऊपर लिख आए हैं, सिन्धु से जा गिरती है। चनाब, जिसे संस्कृत मे चन्द्रभागा कहते हैं, हिमालय मे अपने निकास से मिट्ठनकोट तक कुछ ऊपर छ सौ मील लम्बी है। पहाड़ों मे इन नदियों के दर्मियान जहां पत्थर से पानी टकराने के सबब नावोंका गुज़र हर्गिज़ नहीं हो सकता झूले अथवा छीके पर पार होते हैं, या मशकों पर चढ़कर उतर जाते हैं। झूला उसे कहते हैं कि जो नदी के एक कनारे से दूसरे कनारे तक बराबर कई रस्से बांधकर उन्हें तख़्तों से पाट देते हैं, आदमी उन तख़्तों पर अपने पांवसे चलकर पार हो जाते हैं, यद्यपि अजनबी आदमी को इन पर से जाने मे बड़ा डर लगता है, क्यों कि चौगान उस की बहुधा हाथ डेढ़

हाथ से अधिक नहीं रहती, और पाट नदियों का सौ सौ दो दो सौ हाथ होता है, और सहारा हाथ से थामने को केवल उन्ही रस्सों का मिलता है, पर छीका इस से भी बुरा है वह एक रस्सा होता है, इस पार से उस पार बंधा हुआ, और उस मे एक छीका लटका हुआ, और फिर छीके मे एक रस्सी बंधी हुई आदमी उस छीके मे बैठजाता है, तब मल्लाह उसे उस रस्सी से, जिस का एक सिरा उस छीके मे बंधाहुवा और दूसरा दूसरे कनारे पर उन के हाथ मे रहता है, खींच लेते हैं; जब छींका बीच मे पहुंच कर रस्सीके झटकों से हिलने लगता है और नीचे दर्या समुद्र की तरह पत्थरों से टकराता हुआ देख पड़ता है, तब अनजान आदमी का तो होश उड़ जाता है, और क्योंकर न उड़े, कि जो रस्सी टूटे तो मीयां बीच ही मे लटकते रह जांय, और जो रस्सा टूटे तो फिर दर्या मे गोते खांय। मशक पर ऐसी दहशत नहीं है, जहां पानी का ज़ोर बहुत नहीं होता वहां मल्लाह, जिसे पहाड़ मे दर्याई कहते हैं, अपनी मशक पर पेट के बल पड़ जाता है और पारहोनेवाला उस की पीठ पर दुज़ानू हो बैठता है, वह मल्लाह अपने पैरों की तो पतवार बनाता है, और दोनो हाथों मे दो चप्पू रखता है, उन्ही से खेकर पार पहुंच जाता है। यह मशक रोझ अथवा बैल के चमड़े की बनती है और बहुत बड़ी होती है। ब्रह्मपुत्र, जिसे तिब्बतवाले सांपू कहते हैं, मानसरोवर के पास हिमालय की उत्तर अलङ्ग से निकलकर कुछ ऊपर सोलह सौ मील बहता हुआ समुद्र के पास आकर गङ्गा से मिल जाता है। नर्मदा सोन के उद्गम-स्थान के पास ही निकलकर

७०० मील बहती ऊई भडौंच के पास खम्भात की खाडी मे जा गिरती है; और उस के मुहाने से कुछ दूर दक्षिण सूरत से दस कोस नीचे तापी भी, जो बैतूल के पास पहाड से निकली है, साढे चार सौ मील बहकर समुद्र से मिलगई है। महा-नदी नागपुर के इलाके से निकलकर पांच सौ मील बहती ऊई कटक के पास कई धारा हो कर समुद्र मे गिरी है। गोदा-वरी पश्चिम घाट से त्रिम्बक से निकल कर वरदा और बान-गङ्गा को, जो दोनो नदियां गोंदावाने के इलाके से निकली हैं, लेती ऊई नौ सौ मील बह के राजमहेन्द्री के नीचे समुद्र से मिली है। कृष्णा भी उन्ही पहाडों मे सितारे के नज़दीक महा बलेश्वर से निकलकर मालपर्व गतपर्व भीमा, जिसे संस्कृत मे भीमरथी लिखा है, तुङ्गभद्रा इत्यादि नदियों को, जो उन्ही पश्चिम घाट के पहाडों से निकली हैं, लेती ऊई सात सौ मील बह के मछलीबन्दर के पास समुद्र मे मिलगई है। जितने क़िस्म के क़ीमती पत्थर हीरा लसनिया इत्यादि इस नदी के बालू मे मिलते हैं उतने और किसी मे भी हाथ नहीं लगते। और कावेरी नीलगिरि मे उतकमन्द अथवा उटकमण्ड से निकलकर कुछ ऊपर चार सौ मील बहती ऊई तिरुच्चिनापल्ली से थोडी दूर आगे समुद्र मे खपगई है। दक्षिण के पहाडों मे इन कृष्णा कावेरी इत्यादि नदियों के दर्मियान जहां नाव का गुज़र नहीं हो सकता, बांस की टोकरी से, जो चमडों से मढ़ी रहती है, बैठकर पार उतर ते हैं। निदान मुख्य नदियां तो यही हैं जिन का वर्णन ऊआ, और बाक़ी छोटी छोटी तो इतनी हैं कि जिन की गिनती बतलाना भी

कठिन है, पर उन मे से बज्जत इन्ही ऊपर लिखी ज्जई नदियों मे मिल गई हैं। हिन्दुस्तान की नदियां बरसात मे सब बढ़ती हैं, पर जो हिमालय के बर्फी-पहाड से निकली हैं, वे गर्मी मे भी वर्फ-गलने के सबब कुछ थोडी बज्जत बढ़ जाती हैं। नक्शे मे नदियों का बहाव देखने से देश का ऊचा नीचा होना भी बखूबी मालूम हो जाता है, जहां से नदियां निकलती है वहां अवश्य पहाड़ अथवा ऊंची धरती रहती है, और जिधर को वे बहती हैं वह उसे नीची और ढाल होती है।

नहर बडी इस मुल्क मे दोही हैं एक तो जमना की जो पहाड़ से काटकर दिल्ली में लाए हैं, और जिस का एक सोता पश्चिम मे हरियाने तक पज्जंचकर वहां रेगिस्तान मे खप जाता है, और दूसरी गङ्गा की, जो हरिद्वार से काटकरदुआवे मे लाए हैं। पहली तो फ़ीरोज़शाहतुग़लक़, जो सन १३५१ मे तख़्त पर बैठा था, पहाड से सफेदोंके पर्गने तक जो दिल्ली से अनुमान तीस कोस होवेगा, और शाहजहां सफेदों से दिल्ली तक लाया था, लेकिन फिर बज्जत दिनों तक वेमरम्मत पडी रहने से बिलकुल खुश्क होगई थी, सो अब सर्कार अंगरेजी ने बखूबी मरम्मत करादी, और पानी उसी तरह से जारी हो गया, लोगों को बडा आराम ज्जवा दिल्लीवालों के मानों सूखे खेत फिर लहलहाए और दूसरी सर्कार की तरफ़ से बनकर तयार ज्जई है। इस नहर के तयार होजाने से अब दुर्भिक्ष अन्तर्वेद मे कभी न पडे गा।

झील हिन्दुस्तान मे वडी कोइ नहीं और छोटी छोटी

भी बहुत कम हैं। चिलका कटक के पास चौतीस मील लम्बी आठ मील चौड़ी है, पानी खारा, और कुछ न्यूनाधिक दो लाख मन नमक हर साल उस्मे वहां तयार होता है पल्ली-काट अथवा पलियाकट, जिसे कोई प्रलयघाट भी कहता है इतनी ही बड़ी करनाटक अथवा कर्णाट देश मे है कोलेरू कृष्णा और गोदावरी के बीच मे छयालीस मील लम्बी और चौदह मील चौड़ी होगी। सांभर जयपुर और जोधपुर की अमलदारी के बीच मे बीस मील लम्बी और दोमील चौड़ी है। सांभर नमक उसी मे पैदा होता है जब गर्मी मे उस्का पानी सूखता है तो उस्के कनारों पर यह नमक जम जाता है, लोग खोद कर उठा लाते हैं, और बहुधा उस्के कनारों पर क्यारियां बनाकर उन मे उस्का पानी ले आते हैं वही पानी सूखकर नमक बन जाता है ऊलर कश्मीर के इलाके मे सोलह मील लम्बी और आठ मील चौड़ी और गहरी इतनी कि अब तक किसी ने उस्की थाह नहीं पाई वितस्ता एक तरफ़ से उस्का पानी लेती हुई वही है सिंघाड़े उस मे बहुत होते हैं।

अब सोचना चाहिए कि जिस देश मे इतनी नदियां बहती हैं और पानी की ऐसी इफ़रात है फिर ज़मीन उपजाऊ और उर्वरा क्यों न हो, और यही कारन है कि जो इस देश की धरती का शस्यजनक और बहुफला होना सारे संसार मे प्रख्यात होगया, बरन और उपजाऊ देशों का इसे उपमा ठहराया यहां साल मे दो फ़सल और कहीं तीन तीन फ़सल भी काटते हैं, और ऐसी बिरली बस्तु है कि जो यहां

पैदा न हो। वर्फिस्तान और रेगिस्तान मैदान और कोहिस्तान, समुद्र से निकट, और समुद्र से दूर, गर्म और सर्द खुश्क और तर, सब तरह के मुल्कों के अन्न फल फूल और औषधि यहां मौजूद हैं, मनुष्य की सामर्थ्य नहीं जो यहां के जङ्गल पहाड़ों की जड़ी बूटियों का सारा भेद जान लेवे, या जितने प्रकार के वृक्ष उन से होते हैं सब की गिनती करे, केवल वे सब, कि जो सदा हमलोगों के काम में आते हैं उन के नाम नीचे लिखे जाते हैं। खेत से यहां जव गेहूं चावल चना ज्वार बाजरा मूंग मोठ मक्की उर्द मसूर मटर कोदो किराव अरहर मसुआ तिल तीसी राई सरसों ज़ीरा सौंफ़ अजवायन धनियां काहू कासनी मेथी कंगनी सांवां चेना कोलथ बाथू फाफरा रग्गी सोंठ हलदी सन तम्बाकू मजीठ मिरचा कुसुम कपास पोस्त नील ऊख केसर कचूर रेंडी अरवी शकरकन्द ज़मीकन्द रतालू बंडा खीरा ककड़ी तुरई आरिये कद्दू कोहड़ा पेठा तर्बूज़ खर्बूज़ा भिंडी बोड़ा सेम आलू गोभी परवल करेला मूली गाजर शलग़म पयाज़ लहसन हींग चुकन्दर आदीलक बैंगन और बाग़ और जङ्गल पहाड़ से सेव नाशपाती बिही गिलास बादाम पिस्ता अङ्गूर आलूचा आलूबुखारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत ज़र्दआलू अखरोट आम अमरूद अनार आमला कौला सन्तरा जामुन गुलाबजामुन लोकट लीची फालसा खिरनी केला कमरख अंजीर शरीफ़ा नीबू चकोतरा अनन्नास पपीआ कटहल बढ़ल करौंदा हड बहेड़ा बेर बेल इस्टाबरी मको रसभरी कैफल ताड़ खजूर नारियल सुपारी तेजपात छोटी बड़ी इलायची जायफल जावत्री दा-

रचीनी कहवा मागू चन्दन रक्तचन्दन कालीमिर्च कवाबचीनी कपूर जटामांसी अगर गुग्गुर धूप लोबान मुसव्वर सागौन साल सीसों तुन नीम इमली महुवा कीकर पाकर खैर तीखुर चिरौंजा पलास रीठा सेमल बड़ पीपल कदम्ब कचनार कैत आमड़ा जलपाई अमलतास मौलसिरी चम्पा हरसिङ्गार चील चिलगोज़ा केलो कायल रौ वान वरास देवदारकक्कड़ महरू भोजपत्र वेदमुश्क चनार सफेदा सर्व बांस वेत नर्कट कुश क़लम दूब वनफ़शा चाय मिहदी भांग धतूरा पान टेंटी फोक करील आक झड़वेडी, फुलवारियों मे गुलाब केवड़ा वेला चंवेली जाही जूही सेवती मदनवान मोगरा रायवेल नर्गिस सुगन्धरा सेवती सोसन गेंदा गुलदाउदी गुलमेहंदी गुल-दुपहरिया गुलअब्बास गुलखैरू लटकन झूमका इसरैलिस डेलिया, और पानी मे कमल कमोदनी मखाना सोला सिं-घाडा कसेरू इत्यादि बहुतायत से होते हैं। सिवाय इन के बहुत से फल फूल के वृक्ष अब अंगरेज़ लोगों ने दूसरे मुल्कों से लाकर इस देश मे लगाए हैं, और लगाते जाते हैं, कि जिन का हिन्दी मे नामही नहीं मिलता। डाकतर वालिच साहिब ने चार सौ छप्पन प्रकार की लकडी, जिन से यहां काठ की चीज़ें बनती हैं इकट्ठी की थीं। सहारनपुर के सर्कारी बाग़ के दर्मियान पांच हज़ार क़िस्म से ज़ियादः और कलकत्ते मे सर्कारी बाग़ के दर्मियान जिसका घेरा प्रायः तीन कोस का होवेगा, दस हज़ार क़िस्म से अधिक वृक्ष वीरुध लगाये हैं और डाकतर वैट साहिब केवल मन्दराज हाते से लाख क़िस्म से ऊपर पेड बूटे इकट्ठे कर के इंगलिस्तान

को ले गए। गेहूं नागपुर का प्रसिद्ध है। चावल बाडे का सा, जो पिशौर के ज़िले मे है, कहीं नहीं होता, पुलाव बहुत सुस्वाद और सौगन्ध बनता है, सेर भर चावल सेर ही भर घी सोखता है, और फूलकर चार सेर के बराबर हो जाता है। चैना कोलथ बाथू फाफरा ये चारों अदना क़िस्म के अन्न केवल हिमालय के पहाडी-देशों मे होते हैं और रग्गी दक्षिण के पहाड़ों मे। तम्बाकू भिलसा सा कहीं नहीं होता, इस पेड़ का यहां पहले कोई नाम भी नहीं जानता था, जहांगीर बादशाह के इश्तिहार से जिस्का ज़िकर उसने अपनी किताब मे लिखा है मालूम होता है कि यह काम की चीज़ पहले ही पहल उस के अथवा उस्के बाप अकबर के समय मे फ़रङ्गीलोग अमरिका से लाए। अब तो इतनी फैल गई कि लोगों को इस बात का निश्चय आना भी कठिन है। कपास यद्यपि अमरिका मे भी होता है, परन्तु पुराने महा-द्वीप के सब मुल्कों मे इसी भारतवर्ष से फैला। सिकन्दर जब सतलज तक आया था तो उस्के साथवालों ने कपास के पेड़ देखकर बड़ा अचरज माना, और अपनी किताब मे उस्का नाम ऊन का पेड लिखा, और उस्की यह टीका की कि यूनान मे जो ऊन भेड़ियों की पीठ पर जमता है वह हिन्दुस्तान मे पेड़ोंके बीच फलता है, बेचारों ने रुई पहले कभी न देखी थी, केवल पोस्तीन और ऊनी वस्त्र पहनते थे। यहां रुई मालवे के दसियान बहुत पैदा होती है। पोस्त जिस्से अफ़यून निकलती है मालवे मे बहुत होता है, और वहां की अफ़यून अव्वल क़िस्म की गिनी जाती है, सिवाय

इस के बनारस और पटने के आस पास भी बोया जाता है। नील तिरहुत मे बहुत होता है। ऊख इसी जगह से बहुत विलायतों मे फैली है। पुराने यूनानियों ने इस मुल्क की चाशनी खाकर बड़ा आश्चर्य माना, और किताबों मे लिखा कि हिन्दुस्तान के आदमी भी मक्खियों की तरह पेड़ों के रस से शहद बनाते हैं। केसर की खेती कश्मीर के पामपुर परगने मात्र मे होती है, और कहीं नहीं जमती, वहां केसर ऊंची ज़मीन पर बोते हैं जिस मे पानी बिलकुल न ठहरे और सींचते कभी नहीं, जड़ उस्की पयाज़ के गट्ठे की तरह होती है, और वही गट्ठे बोए जाते हैं पेड़ और पत्ते उस्के कुशघास से मिलते हैं, और फूल ऊदे रङ्ग का क्वार कातिक मे खिलता है, उसी फूल के भीतर पीली पीली यह केसर रहती है। कश्मीर मे केसर पन्दरह रुपये सेर मिलती है, और चालिस पचास हज़ार रुपये की पैदा होती है। तर्बूज़ मधुरता मे इलाहाबाद का प्रसिद्ध है, और खर्बुज़े जमाली अगरे के। आलू और गोभी भी हिन्दुस्तान की तरकारी नहीं हैं, तम्बाकू की तरह अमरिका से आगई। शलगम भुटान मे बहुत बड़ा और मीठा होता है। पयाज़ बम्बई की प्रसिद्ध है। हींग का पेड़ सिन्ध और मुलतान की तरफ़ होता है। सेब नाशपाती बिही गिलास बादाम पिस्ता अंगूर आलूचा आलूबुखारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत ज़र्दालू अखरोट ये सब कश्मीर मे बहुत अच्छे और कई प्रकार के होते हैं, और हिमालय के तटस्थ दूसरे ठंढे मुल्कों मे भी मिलते हैं, पर गिलास कश्मीर के सिवाय और कहीं

नहीं होता बहुत नाज़ुक और वहां के मेवों का सर्दार है, फ़सल उस्की पन्दरह वीस रोज़ से अधिक नहीं रहती, सावन के महीने मे फलता है। अंगूर कश्मीर से किश्मिशी बहुत अच्छा होता है, बीज बिलकुल नहीं गुच्छे का गुच्छा शर्बत की घूंट की तरह निगल जाओ, पर कनावर सा इस विलायत मे कहीं नहीं होता, गुच्छे और दाने भी बहुत बड़े और मीठे होते हैं और वहां सस्ते भी इतने कि चार पैसे को एक आदमी का वोझ लेलो। शफ़तालू बब्बे से बिहतर दूसरी जगह नहीं फलता। आम बम्बई के बराबर कहीं नहीं होता, पर बनारस और मालदह का भी बहुत प्रसिद्ध है, इस मुल्क का ख़ास मेवा है, दूसरी विलायत मे नहीं मिलता, और दुनिया के सब मेवों का सिरताज है, इसका नाम अम्रतफल लोगों ने बहुत ठीक रखा, अम्रत भी उस्से अधिक सुस्वाद न होगा, बड़े आम सेर सेर से भी ऊपर वज़न मे उतरते हैं। आमला और अमरूद बनारस मे बहुत तुहफ़ा होता है। कौला सिलहट साउमदा और मीठा कहीं नहीं पाया जाता, और वहां इस्के जङ्गल के जङ्गल खड़े हैं, रुपए के हज़ार हज़ार तक बिकते हैं। कटहल इतना बड़ा होता है कि शायद ऐसे वैसे कमज़ोर आदमी से तो उठ भी न सके। इसटाबरी मकोै रसभरी और कैफल उत्तराखण्ड के देशों मे अच्छे होते हैं। हड़ बिलासपुर की मशहूर है, पर सूखी ज़ई दो तोले से भारी नहीं होती। ताड़ दक्षिणपाई-घाट मे इतने बड़े होते हैं कि उस्के दो तीन पत्तों से छप्पर छाजावे। नारियल और सुपारी

समुद्र के तटस्थ देशों मे जमते हैं दूर नहीं होते। तेजपात इलायची जायफल जावत्री दारचीनी कहवा सागू चन्दन रक्तचन्दन और कालीमिर्च के दरख़्त दक्खिणदेश मे विशेष करके तुलव केरलकच्छी और त्रिवाङ्कोड़ू के दर्मियान होते हैं। तेजपात और बड़ी इलायची नयपाल मे भी इफ़रात मे उगती है। सागूके दरख़्त की टहनियां काटकर उन्हें पानी मे कूटते भिगाते और धोते हैं, उन का जो सत निकलता है उसी को चलनी से गर्म तवों पर चालते हैं, वह भुनकर दाने दाने सा होजाता है और सागूदाने के नाम से बिकता है। चन्दन और रक्तचन्दन के पेड़ वहां पश्चिमघाट मे मलयागिर पर बहुत हैं; चन्दन मे जो वस्तु रहे उसे कहते हैं कि कीड़ा और मोर्चा नहीं लगता, इस लिये हथियार इत्यादि चीज़ों के रखने के लिये जिसे मोर्चा अथवा कीड़ा लगने का डर है अमीर लोग चन्दन के सन्दूक़ बनवाते हैं। पथरीली-धरती मे चन्दन के पेड़ अच्छे होते हैं, और सब से अधिक उत्तम चन्दन उन पेड़ों मे उस स्थान का है जो धरती के नीचे और जड़ों से ऊपर रहता है, और जिस्का रङ्ग ख़ूब गहरा होता है। चन्दन काटकर महीने दो महीने तक वहां मिट्टी मे दाब रखते हैं, हिक्मत उसे यह है कि ऊपर का छिलका जो नाकारा होता है बिलकुल दीमक खालेती हैं, और ख़ुशबूदार गूदा बिलकुल बाकी रहजाता है। कालीमिर्च आसाम मे भी बोते हैं, और कपूर का दरख़्त मनीपूर मे जमता है। अगर सिलहट के जङ्गल मे और गुग्गुर अर्थात् गूगल बिन्ध मे होता है। लोबान के पेड़ सिवा

झोडू मे और मुसव्वर के दरख्त कांगडे मे बहुतायत से हैं। सागौन की लकडी के जहाज़ बनते हैं। इस लिये वह बड़े काम की चीज़ है, यह वृक्ष बहुधा पश्चिमघाट पर और चिचगांव मे समुद्र के निकट होता है। और साल जिस्का हरिद्वार के पास पहाड़ की तराई मे बड़ा भारी जङ्गल है अक्सर इमारत के काम मे आता है। खैर तीखुर चिरौञ्जी बहुधा विन्ध्य के पहाड़ मे और चील चिलगोजा, अर्थात् नेवज़ा, केलो कायल रौ बान बरास देवदार कक्कड़ अखरू भोजपत्र हिमालय के पर्व्वत मे होते हैं। चील का गोंद बिरोज़ा और तेल तारपीन कहलाता है, पहाड़ी लोग मशाल और बत्ती की जगह रात को उसी की लकड़ी जलाते हैं। केलो कायल और देवदार ये तीनों सनोबर की क़िस्म हैं, और सवासौ हाथ से भी अधिक ऊंचे होते हैं। बान को अंगरेज़ी मे ओक कहते हैं। बरास के फूल लाल लाल बहुत बड़े और सुहावने होते हैं। भोजपत्र उसी जगह होता है जहां से बर्फिस्तान का आरम्भ है, बारह हज़ार फुट से नीचे कदापि नहीं उगता। वेदमुश्क चनार और सफ़ेदा ये कश्मीर के वृक्ष हैं, वेदमुश्क से केवड़े की तरह अर्क निकालते हैं, वह केवड़े से भी अधिक गुण रखता है। बेत पश्चिमघाट के पहाड़ों मे २२५ फुट तक लम्बा होता है। चाय के पेड़ अब सर्कार की आज्ञानुसार देहरादून और कांगड़े के पहाड़ों मे लगने लगे हैं, पहले चाय चीन के सिवाय और कहीं नहीं होती थी, पर अब जान पड़ता है कि इन उत्तराखण्ड के पर्व्वतों मे भी वैसी

ही हो जायगी। सर्कार ने इस बात के लिये बहुत रुपया खर्च किया है, और उस्की तयारी के वास्ते चीन से बुलाकर वहां के आदमी नौकर रखे हैं, क्यों कि जब पेड़ से पत्ते तोड़ते हैं तो उनको आग पर गर्म करके हाथों से मसलने मे बड़ी चतुराई चाहिये, कई बार उनको आग पर सेंकना पड़ता है और कई बार हाथों से मलना, अनाड़ी आदमी से यह काम कभी नहीं बन पड़ता, आशाम के ज़िले मे भी बोई जाती है। पान इस मुल्क की तुहफ़ा चीज़ों मे गिना जाता है, बरन यह भी एक रत्न कहलाता है। मखाना पुरनिया के तालावों मे फलता है। गुलाब ग़ाज़ीपुर और अजमेर मे बहुत होता है, और चंबेली जौनपुर और बाढ़ मे। पर सब से अधिक आश्चर्य का पेड़ हिन्दुस्तान मे वह है कि जिस की प्रशंसा दूसरी विलायतवालों ने अपनी किताबों मे बहुत ही लिखी है, जिस किसी स्थान मे जल के समीप कोई पुराना बड़ रहता है और उस पर मोर और बन्दर नाचते कूदते हैं अतिरम्य और सुहावना होता है और उस की बहुत सी टहनियां जो धरती मे जड़ पकड़ती हैं मानो दालान और बारहदरियां बन जाती हैं, एक बड़ का पेड़ जिसे लोग तीन हज़ार बरस का पुराना बतलाते हैं, नर्मदा नदी के कनारे भड़ौंच के पास इतना बड़ा है कि जिस्के नीचे सात हज़ार आदमी अच्छी तरह आराम से डेरा कर सकें, उस्का घेरा प्राय चौदह सौ हाथ का होवेगा, और उस्की टहनियां जो धरती मे जड़ पकड़ गई हैं तीन हज़ार से कम नहीं। नाम उस्का वहांवाले कबीरबड़

कहते हैं। सिवाय इसके ऊपरे से पश्चिम जहां सरयू गङ्गा से मिलती है मांझी-नाम बस्ती के पास एक बड़ का पेड़ इतना बड़ा है कि जिस की छाया गर्मियों में दो पहर के समय १२०० फुटके घेरे में पड़ती है।

जानना चाहिये जहां तृण और जल की ऐसी बहुतायत होगी वहां पशु पक्षी भी अधिक रहेंगे। जङ्गली जानवरों में सिंह बाघ बघेरा चीता हाथी गैंडा अरना रीछ सूवर भेड़िया हिरन बारहसिंहा रोझ पाढ़ा साही गीदड़ लोमड़ी खरगोश सियाहगोश बनबिलाव ऊदबिलाव तरह बतरह के बन्दर और लङ्गूर कस्तूरिया बरड़ कक्कड़ सकीन घोड़ल सुरागाय ढूंल गिलहरी नेवला गिरगिट, और घरेलुओं में घोड़े गधे ऊंट खच्चर गाय भैंस भेड़ी बकरी दुम्बे कुत्ते बिल्ली, और पक्षियों में मनाल जीजूराना खलीज पलास कस्तूरा ओंकार नूरी बांधनू चकोर तीतर बटेर मुर्ग़ मुर्ग़ाबी सारस बगला बतक चकवा लाल बुल्बुल लवा तोता मैना काकातूआ मोर कोकिला अगिन श्यामा कोयल पपीहा बाज़ बहरी शिकरा शाहीन गिद्ध चील कव्वा ऊदऊद खञ्जन बया गोरय्या पिंडकी कबूतर, इन के सिवाय चूहे छछूंदर चिमगादड़ सांप अजगर बिच्छू गोह कनखजूरा मच्छर पीसू मक्खी शहदकीमक्खी भिड़ भौंरा जुगनू तितली दीमक, और रेशम क़िर्मिज़ और लाख के कीड़े भी इस देश में बहुत होते हैं। नदी और तालावों में मछली मेंडक जोंक और कछुए रहते हैं। और बड़े दर्याओं में मगर और घड़ियालों का डर है। दक्षिण में समुद्र के

कनारे कौड़ी और मोतीवाले सीप भी होते हैं। हमने सिंह और बाघ भिन्न भिन्न लिखा है, यद्यपि बज्जतेरे लोग बरन कितने ही कोशकर्त्ता भी इन दोनों के बीच भेद नहीं करते पर सिंह वह है जिसे संस्कृत मे केसरी और फ़ारसी मे शेरबब्र और अंगरेज़ी मे लायन कहते हैं। उसकी गर्दन पर केसर अर्थात् घोड़े की यालों के से बज्जत से झबड़े झबड़े बाल रहते हैं, और शेर से अत्यन्त अधिक बल पराक्रम और साहस रखता है, ये जानवर अब बज्जत कम रहगए, कभी कभी हरियाने के जङ्गलों मे मिलजाते हैं। और बाघ वह है जिसे फ़ारसी मे शेर कहते हैं और जिस से तमाम तराई और सुन्दरबन भरा पड़ा है। चीता यहां के राजा लोग हिरन मारने के लिये पालते हैं। शिकार के समय इस जानवर को आंखों मे पट्टी बांध बहली पर बिठा साथले जाते हैं, जब किसी तरफ़ हिरनों का झुण्ड निकलता है तो तुरन्त उस की आंख से पट्टी हटा देते हैं, और वह बिजली की तरह लपक कर उन मे से एक को जा ही दबाता है। हाथी और गैंडे रङ्गपुर सिलहट आशाम त्रिपुरा और चटगांव के जङ्गलों मे बज्जत हैं, पर हाथी दक्षिण के जङ्गल मे बज्जत अच्छा होता है, और हिमालय की तराई मे जो पकड़ा जाता है वह ऐसा बड़ा और उसका चिहरा इतना उभरा ज्ञवा नहीं रहता। हाथी-पकड़ने के लिये जङ्गलों मे गढ़े खोदकर मिट्टी से बेमालूम ढक देते हैं, जब हाथियों का झुण्ड उधर आता है तो जो उन मे गिर रहता है उसी को पकड़ लाते हैं। पर सुन्दरबन के पास ज़मीन दलदल

होने के कारन गढ़ा खोदना कठिन है, इस लिये हाथी के पकड़नेवाले चालीस पचास आदमी इकट्ठे होकर पलेहुए हाथियों पर सवार बड़े बड़े मजबूत रस्सों के फन्दे बनाकर जङ्गल मे जाते हैं, जब जङ्गली हाथी इनके हाथियों के मारने के लिये हल्ला करके आते हैं तो ये उनको फन्दे से फसा-लेते हैं, कोई उसकी गरदन मे रस्सा डालता है और कोई उस्की सूंड फसाता है और कोई पैर कस लेता है, निदान उन रस्सों का एक एक सिरा उन पलेहुए हाथियों की कमर मे बंधे रहने के सबब फिर वे जङ्गली हाथी भाग नहीं सकते और चारों तरफ़ से जकड़ जाते हैं। पर उस काम से जान-जोखों बड़ी है इस लिये अकसर हाथी पकड़नेवाले एक बड़ा बाड़ा बनाते हैं, ख़ूब मज़बूत लकडे गाड़ कर और उस्के गिर्द खाई खोद देते हैं, अन्दर जाने को केवल एक दर्वा-ज़ा रखते हैं; लेकिन वह भी इस ढब का कि जैसे जङ्गलों मे जाने की राह रहती हैं, जो हाथी को मालूम पडजाय कि यह दर्वाज़ा आदमी का बनाया है तो कदापि उस्के अन्दर पैर न धरे, क्यों कि यह जानवर बडा होशयार होता है, और उस बाड़े से मिला हुआ उसी तरह का एक ऐसा छोटा बाड़ा रखते हैं कि जिस्मे जाकर फिर हाथी घूम न सके, नि-दान जब वह बाडे तयार हो जाते हैं तो बहुत से आदमी उन जङ्गलों को जा घेरते हैं कि जिन मे हाथी रहते हैं, और दूर दूर से इस तरह पर ढोल इत्यादि की आवाजें करते हैं, और आग जलाते हैं कि उन हाथियों का झुण्ड हटते हटते उसी बाडे के दर्वाज़े पर आ जाता है, और

जब सारे हाथी उस बाड़े के अन्दर चले जाते हैं तो ये लोग तुरन्त उस का दर्वाज़ा बड़ी मज़बूती से बन्द कर देते हैं, जब हाथी कोई राह निकलने की नहीं पाते उस वक़्त जो उन को गुस्सा होता है वह तमाशा देखने लाइक़ है, निदान कुछ दिन में भूख प्यास और दौड़ने से वे सुस्त और काहिल होजाते हैं तब अन्दर से उस छोटे बाड़े का दर्वाज़ा खोलते हैं, और ज्यों हीं एक हाथी उस्के भीतर आजाता है तुरन्त उस को बन्द करदेते हैं, इस छोटे बाड़े के गिर्द मचान बंधे रहते हैं, हाथी जगह की तङ्गी से घूम भी नहीं सकता बिल-कुल बेक़ाबू हो जाता है ये मचानों पर चढ़कर अच्छी तरह उसे रस्सों से जकड़ लेते हैं, और उन रस्सों को अपने सधे हुए हाथियों की कमर से कसकर तब उसे बाहर निकालते हैं और किसी पेड़ से बांध देते हैं. इसी तरह एक एक करके जब सब हाथियों को निकाल चुकते हैं तब फिर धीरे धीरे उनको खिला पिला कर आदमियों से परचा लेते हैं। आगे यहां के राजा और बादशाह लड़ाई के वक़्त दुश्मन की फ़ौज के साम्हने अपने सधाए हुए मस्त हाथियों की सूंडों में दुधारे खांडे देकर हुलवा देते थे, पर अब तोप के आगे बेचारे हाथी की क्या पेश जा सकती है केवल सवारी और बारबर्दारी के काम में आते हैं। पुरु राजाने झेलम के कनारे पर दस हज़ार जङ्गी हाथियों के साथ सिकन्दर का मुक़ाबला किया था। आसिफुद्दौला के पास सब से बड़ा हाथी जो त्रिपुरा के जङ्गल में पकड़ा गया था साढ़े दस फ़ुट ऊंचा था, पर स्काट साहिब के लिखने से मालूम हुआ

कि उन्होंने उस जङ्गल मे बारह फुट दो इंच तक ऊंचा हाथी सुना था। रूस के बादशाह बड़े पीटर को ईरान के बादशाह ने जो हाथी तुहफा भेजा था, और जिस्की खाल अब तक वहां के अजाइबखाने मे रखी है, सोलह फुट ऊंचा था मालूम नहीं कि इसी जगह से गया था या किसी दूसरे मुल्क से आया। गैंडे से मज़बूत दुनिया मे कोई दूसरा जानवर नहीं, इस का चमड़ा ऐसाकड़ा होता है कि उस पर सिवाय गोली के तीर तलवार और कोई भी हथियार कुछ काम नहीं करता, ढाल अच्छी उसी के चमड़े की बनती है, इस जानवर से न शेर लड़ना चाहताहै और न इस को हाथी छेड़ता, इसे जङ्गल का चक्रवर्ती राजा कहनाचाहिये, यदि डील डौल मे हाथी से छोटा है, पर जब उन के पेट मे अपनी खाग मारता है तो फिर हाथी चित्त ही गिर पड़ता है और गैंडे का कुछ भी नहीं कर सकता, यह जानवर केवल घास पत्ते खाता है और जब तक कोई इसे न सतावे तो यह भी किसी जीव को कुछ दुख नहीं देता। अरना भैंसा भी बड़ा भयानक जानवर है, किसी किसी के सींग दस फुट तक लम्बे होते हैं। कस्तूरिया-हिरन हिमालय के पहाडों मे होता है, लोगोंने यह बात बहुत गलत समझ कर रखी है कि उस्के पैर की नली मे जोड़ नहीं होता और वह बैठ नहीं सकता, जैसे और सब जानवर चलते फिरते दौड़ते बैठते हैं इसी तरह वह भी सब काम करता है, जाड़ों मे जब ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ बहुत पड़ जाती है तब यह नीचे उतरता है, उन्हीं दिनों मे इस का शिकार

होता है, इस जानवर की नाभी से एक छोटी सी थैली रहती है जिस्को नाफ़ा कहते हैं उसी के अन्दर कस्तूरी है, जब उसे मारकर उस्के पेट से नाफ़ा निकालते हैं, तो कस्तूरी उस्मे लहू मास की तरह गीली रहती है, धूप मे रखकर सुखालेते हैं, जो कस्तूरी खाने मे बहुत कड़वी और तीखी हो उसे असल और जो कसैली या दूसरे मज़े पर हो उसे बनावट समझना चाहिये, और भी इस की बहुत परीक्षा हैं। बरड कक्काड़ सकीन घोड़ल सुरागाय और ईल ये सब जानवर बर्फी-पहाड़ों के पास होते हैं। सकीन एक तरह का जङ्गली भेड़ा है; लेकिन सींग उस के ऐसे भारी होते हैं कि एक आदमी से नहीं उठ सकते। गाय को सुरा और बैल को याक कहते हैं, इन के बदन पर रीछ की तरह बड़े लम्बे लम्बे बाल रहते हैं और उन की दुम का चवर बनता है, वहां के लोग इन याक-बैलों पर सवारी भी करते हैं, जिन कठिन पहाड़ों मे घोड़ा टट्टू नहीं जा सकता वहां वे याक पर चढ़कर बख़ूबी चले जाते हैं। ईल एक-प्रकार की गिलहरी है, जो चिमगादड़ की तरह उड़ती है। घोड़े यहां दक्षिण मे भीमा नदी के कनारे जो तेलिये कुमैत सियाह ज़ानू होते हैं बहुत उमदः हैं, और काठियावाड़ और लक्खी जङ्गल भी घोड़े के वास्ते प्रख्यात है, काठिया-वाड़ का घोड़ा कूदने फांदने मे ख़ूब चालाक होता है, कहते हैं कि उस कनारे पर कभी किसी अरब का जहाज़ ग़ारत हो गया था उसी के घोड़ों के फैलने से वहां उन की नसल दुरुस्त हुई है, और लक्खी जङ्गल का घोड़ा डील

डौल मे बहुत बड़ा रहता है, पांच पांच हजार तक भी उस्का दाम उठता है। ऊंट जोधपुर का प्रसिद्ध है, सौ कोस तक एक दिन मे जा सकता है। गाय भैंस गुजरात हरियाना सिन्ध मुलतान इत्यादि पश्चिम देशों की दूध बहुत देती हैं, और बैल भी वहां के प्रसिद्ध हैं। ये जानवर दक्षिण मे बहुत खराब होते हैं, कद के छोटे और दूध भी थोड़ा देते हैं। बर्फी-पहाड़ों मे भेड़ी का ऊन बहुत अच्छा और बकरी के बाल के अन्दर पश्मीना होता है। दुम्बे सिन्धु के तटस्थ-देशों मे होते हैं। पक्षियों के दर्मियान सनाल जीजूराना खलींज और मलास बर्फिस्तान के तटस्थ पहाड़ों मे, और कस्तूरा और ओंकार कश्मीर मे होता है। सनाल देखने मे मोर की तरह खूबसूरत, पर दुम उसकी सी नहीं रखता। जीजूराना नूरी और बांधनू ये भी बहुत सुन्दर होते हैं। ओंकार के सिर मे सियाह परों की एक अच्छी लम्बी कलगी रहती है कि जो इस देश के अकसर बादशाह राजा और सर्दार अपनी टोपी और पगड़ियों मे लगाते हैं। चकोर बटेर मुर्ग लाल बुलबुल लवा लड़ने मे और तोता मैना काकातूआ आदमी की बोली-बोलने मे प्रख्यात हैं, नूरी बांधनू और तोते इत्यादि सुन्दर-बन और तराई के जङ्गल मे जियादः मिलते हैं। मोर कोकिला अगिन प्यासा कस्तूरा कोयल और पपीहे का शब्द बहुत मधुर होता है। बाज बहरी शिखरा और शाहीं अमीर लोग चिड़ियों का शिकार करने के लिये पालते हैं। बया अपना घोंसला बड़ी कारीगरी से बनाता है, चटाई की तरह बुनता

है और तीन उस मे घर रखता है बाहर नर के लिये बीच का मादा के लिये और अन्दरवाला बच्चे के लिये. और पेड़ की ऐसी पतली टहनियों से बल्कि खजूर के पत्तों से उसे लटकाता है कि जिस्से अण्डों तक सांप न पहुंच सके, बहुधा जुगनू कीड़े उठा लाता है कि जिस्से रात को घोंसले के अन्दर उजाला रहे, सच पूछो तो पंछियों से ऐसी होशयारी किसी से नहीं, यह छोटी सी चिड़िया आदमी के सिखलाने से बड़े बड़े काम कर दिखलाती है, तोप पर चोंच से बत्ती लगा देती है, बदकार आदमी चुहल के लिये औरतों की टिकलियें दिखला कर इशारा कर देते हैं यह फ़ौरन् उतार लाती है, धन्य है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर जिसने ऐसी ऐसी चिड़ियों को यह समझ दी। सांप इस मुल्क से बाज़ ऐसे ज़हरीले हैं कि जिनका काटा आदमी फिर पानी न मांगे। और अजगर दक्षिण के जङ्गलों मे चालीस फुट तक लम्बें होते हैं। मछलियों से कलकत्ते के बीच तपस्या-मछली की बड़ी तारीफ़ है, कहते हैं कि उस्के स्वाद को कोई नहीं पहुंचती। मलबार मे मछलियों की इतनी बहुतायत है कि बाज़ वक़ घोड़ों को दाने के बदल मछलियां खिला देते हैं। जोंक दक्षिण के घाटों मे बहुत होती हैं, यहां तक कि बर्सात से मुसाफ़िर को राह चलना मुशकिल पड़ जाता है। घड़ियाल गङ्गा से बीस हाथ तक लम्बे होते हैं। कौड़ियां समुद्र के कनारे इस बहुतायत से मिलती हैं कि समुद्र के तटस्थ देशों से चूना भी कौड़ी जलाकर बनता है। मोतीवाले सीप दक्षिण देश के नीचे समुद्र से होते हैं, लोग गोता

मारकर बहुत से सीप-जानवर सैकड़ों वरन हज़ारों समुद्र की थाह से निकाल लाते हैं और गढ़े खोद कर मिट्टी से दाब देते हैं; जब थोड़ी देर बाद वे सब मर जाते हैं तब एक एक को उस गढ़े से निकाल कर चीरना शुरू कर्त्ते हैं, बहुत तो खाली जाते हैं किसी से मोती निकल आता है। सांप और सिंह को सब कोई बुरा कहता है, पर सोच कर देखो तो इस मनुष्य का चित्त तुष्ट करने के वास्ते कितने जीव सताए जाते हैं।

खान इस मुल्क में लोहा तांबा सीसा सुरमा गन्धक हरिताल नमक कोयला अबरख यशम बिल्लौर अकीक़ इन सब चीज़ों की मौजूद है, और हीरा भी बहुत अच्छा और बेशकीमत निकलता है। महा नदी के कनारे सम्भलपुर के इलाके में बुंदेलखण्ड में पन्ने के दर्मियान दक्षिण में कृष्णा के कनारे कोलूर इत्यादि स्थानों में इस की खान हैं, और वह प्रसिद्ध बड़ा हीरा कोहनूर जो सर्कार कम्पनी ने दलीपसिंह से लेकर महारानी विक्टोरिया को नज़र दिया, शाहजहां के समय में इसी कोलूर की खान से निकला था, और मीरजुमला ने वह उस बादशाह को भेंट किया था, उस समय में इस का मोल पचत्तर लाख रुपया आंका गया था। पत्थर के कोयलों की क़दर आगे तो कोई नहीं जानता था और न यहां कभी किसी को इस की खान का कुछ गुमान था, पर जब से अंगरेज़ों ने धूएं के जहाज़ चलाए तो यह कोयला भी अब एक बड़े काम की चीज़ ठहरा वीरभूम के ज़िले में इस की खान जारी है, और नर्मदा-कनारे के ज़िलों

मे भी इस का होना साबित है. सिवाय इन के और अनेक प्रकार के बज्जतेरे रंग बरंग के पत्थर मिलते हैं कि जो अक्सर साहिब लोग अपने गहनों मे लगाते हैं।

मौसिम हिन्दुस्तान मे तीन हैं जाड़ा गर्मी और बरसात, और हरएक ऋतु अपने अपने समय पर अच्छी बहार दिखलाती है, समुद्र के तटस्थ-देश मे विशेष करके दक्षिण के घाटों पर बरसात बज्जत होती है, यहांतक कि किसी किसी जगह मे नौ नौ महीने के लिये सारा सामान गृहस्थी का घर मे इकट्ठा कर रखना पड़ता है, मेह की शिद्दत से बाहर निकलना नहीं होता। और हिमालय के पहाड़ों मे सर्दी अधिक रहती है, जहां बर्फ़ नहीं होती वहां भी जो पहाड़ चार पांच हज़ार हाथ से ऊंचे हैं उन पर जेठ बैसाख मे आग तापनी पड़ती है। कनावर और कश्मीर मे बरसात नहीं होती, क्यों कि उन इलाकों के चौगिर्द ऐसे ऐसे ऊंचे पहाड़ आगये हैं कि बादल जो समुद्र की तरफ़ से आते हैं पहाड़ों की जड़ोंही मे लटकते रह जाते हैं पार होकर उन इलाकों मे नहीं पज्जंच सकते। और बाकी सब ज़िलों मे ग्रीष्म ऋतु अति कठिन होती है, लूएं चलने लगती हैं और धरती तपने, अमीर लोग तहखाने और खसखाने मे बैठ कर पङ्खे झलवाते हैं, और ग़रीब बेचारे सूर्य के प्रचण्ड ताप से व्याकुल होते हैं।

आदमी हिन्दुस्तान के जवांमर्द और दयावान् होते हैं यहांतक कि बज्जतेरे लोग पशु पक्षी तो क्या वरन वृक्ष को भी नहीं सताते, गर्म मुल्क के सबब मिहनत कम करते हैं, और

बहुधा सुस्त और काहिल बरन आरामतलब रहते हैं,यहां तक कि अकसर लोग इसी मसल पर चलते हैं ॥ दोहा ॥

चलिबे तें ठाढ़ो भलो बातें बैठ्यो जान।
बैठे तें सोबो भलो सोबे तें मरजान ॥१॥

पर बड़ा ऐब इन से यह है कि सर्वजनहितैषी और सर्वमङ्गलेच्छुक नहीं होते, अपना नाम बढ़ाने के लिये अवश्य कूए तालाब और पुल इत्यादि बनवाते हैं, पर जो काम ऐसा हो कि इन से अकेले न बन सके और दस पांच आदमी मिलकर उसे चन्दे के तौर पर बनवाना चाहें तो उसे उन को एक पैसा भी देना भारी पड़जाता है, निदान यहां के आदमी जो काम करते हैं सो केवल अपने नाम के लिये, यदि उस्से दूसरों का भी भला हो जावे तो आश्चर्य नहीं, पर केवल दूसरे आदमियों के भले के लिये ये कदापि कोई काम न करेंगे, चिहरा इनका बादामी आंखें लम्बी पुतलियां काली, नाक तीखी, कद सयाना, कमर पतली, और बाल लम्बे और काले रहते हैं। इस मुल्क में कुल को बहुत बचाते हैं, बहुधा जैसे कुल के आदमी होते हैं वैसा ही रूप और स्वभाव रखते हैं, उच्च कुल के आदमी सुन्दर और भलेमानस होते हैं, और इसी तरह नीच-कुलवाले कुरूप और खोटे होते हैं, पर यह बात कुछ सब जगह नहीं है, कहीं कहीं इस्का विपरीत भी देखने में आता है। जातिभेद केवल इसी मुल्क में है, यह बात दूसरी किसी विलायत में नहीं, प्रधान तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ये चार हैं, पर अब इन से सैकड़ों निकल गईं। रुपया इस मुल्क के

आदमियों का शादी ग़मी मे बहुत खर्च होता है, अर्थात् लड़का लड़की के विवाह मे और मा बाप के क्रियाकर्म से। सिवाय इस्के जो लोग सुबुद्धी हैं वे अपना धन तीर्थ-यात्रा और दान-धर्म-करने से और मन्दिर धर्मशाला कूवा तालाव पुल सरा इत्यादि बानाने से उठाते हैं, और सदावर्त बिठलाते हैं, और कपूत और कुबुद्धी नाच रङ्ग और तमाशबीनी से उसे उड़ा देते हैं। बाक़ी गुज़ारा इन का बहुत थोड़े से मे होजाता है, खाने पहन्ने और रहने के लिये इन को बहुत नहीं चाहिये, गहना पहन्ना और नौकर बहुत से रखना यही बहुधा धनी और दरिद्री का भेद है। स्त्री यहां की लाज करती हैं, और पर्दे मे रहती हैं, आगे यह बात न थी जब से मुसलमानों की अमलदारी आई तब से यहां यह रस्म जारी हुई, आगे रानी लोग राजाओं के साथ सभा मे बैठती थीं। विवाह इस देश मे बहुत छोटी उमर मे करलेते हैं, और इसी से पुरुष बहुधा दीर्घायु और बलवान् नहीं होते। पातिव्रत धर्म इस मुल्क का सा और कहीं भी नहीं, यहां उच्च कुल की स्त्री कदापि दूसरा विवाह नहीं करतीं, वरन अपने पति की लाश के साथ चिता पर बैठकर जल जाती थीं। सर्कार ने अब इस सती होने की बुरी रस्म को मौक़ूफ़ कर दिया। आगे लौंडी गुलाम भी यहां बेचे और मोल लिये जाते थे, पर सर्कार के प्रताप से अब यह भी अन्याय दूर होगया। केवल एक बुरी बात अब तक जड़ से नहीं गई, यद्यपि सर्कार उस्के मिटाने मे बहुत उद्यम और परिश्रम कर रही है, तथापि होती जाती है, अर्थात् कोई

कोई दुष्ट रजपूत अपनी लड़कियों को मार डालते हैं कि जिस्से किसी का सुसरा न बनना पड़े। पहले तो जीव का सताना ही बुरा है, तिस्से पञ्चेन्द्रिय आदमी को मारना, तिस्से भी स्त्री को, और तिस्से भी ऐसी अवस्था से कि जिसे देख के राक्षस को भी दया आवे, और जिस्का हाल सुन कर पत्थर भी पसीज जावे, और तिस्से भी अपनी आत्मजा लड़की को। हम नहीं जानते कि ऐसे आदमियों को कैसी सज़ा देनी चाहिये, फांसी तो इन के वास्ते कुछ भी नहीं है, ये अपनी पूरी सज़ा को तभी पहुंचेंगे जब रौरव नर्क की अग्नि से जलेंगे। हिन्दू मुर्दों को आग में जलाते हैं, और मुसल-मान मिट्टी में दाबते हैं, पर पारसी लोग न जलाते हैं न दाबते, वे अपने मुर्दों को एक खुले मकान के बीच जो केवल इसी काम के लिये बना है, धूप में रख देते हैं। भील गोंद कुवाड़ धांगड़ कोली इत्यादि को जो जङ्गल पहाड़ों में बस्ते हैं, अंगरेज़ लोग इस मुल्क के क़दीमी बाशन्दे अर्थात् भूमिये ठहराते हैं, और कहते हैं कि ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य उत्तर अथवा पश्चिम से आकर पहले सारस्वत देश अर्थात् कश्मीर लाहौर मुलतान और सिन्ध इत्यादि में बसे, और फिर धीरे धीरे सारे हिन्दुस्थान में फैल गए, और इस बात के साबित करने के लिये बड़ी बड़ी दलीलें लाते हैं। निदान यह तो हमने वे बातें लिखीं जो प्राय सारे हिन्दुस्तान में मिलेंगी, पर याद रखना चाहिये कि यह ऐसी बड़ी विलायत है कि इसे एक एक सूबे के दर्मियान कई तरह के आदमी बस्ते हैं, और जुदा ही रङ्ग रूप पहनावा और

चालढाल रखते हैं। उत्तराखण्ड के आदमी विशेष करके गङ्गा और सिन्धु के बीच गोरे सुन्दर और सीधे सादे सच्चे होते हैं, स्त्रियां वहां की ऐसी रूपवती कि मानो कहानी क़िस्से की परियों को पर काटकर छोड़ दिया है। कश्मीर की सदा से प्रसिद्ध रही हैं पर कमर उन की ज़रा मोटी होती है। जम्बू चम्बा कांगड़ा और कहलूर इन इलाक़ों की सबसेबढकर हैं, पर यह हम उन्ही लोगों का हाल लिखते हैं जो बर्फ़िस्तान से इधर नीचे पहाड़ों मे बस्ते हैं; और नहीं तो हिमालय के उत्तर भाग मे बर्फ़िस्तान के दर्मियान भोटिये लोग महाग़लीज़ और अति कुरूप होते हैं, प्यास बुझाने के लिये भी झरनों से गाय बैलों की तरह मुंह लगाकर पानी पीते हैं हाथ से नहीं छूते, फिर बदन धोने की कौन बात है। पोशाक से कश्मीर की औरतें केवल एक पीरहन अर्थात् गले का कुरता पर एड़ी तक लटकता हुआ पहनती हैं, और सिरसे एक तिकोना रूमाल पट्टी की तरह बांध लेती हैं। गङ्गा से पूर्व नैपाल इत्यादि उत्तराखण्ड के देशों मे लोग नाटे होते हैं, और उन की छाती और कन्धा चौड़ा, बदन गोल गोल और गठीला, चिहरा चकला, आंखे छोटी और नाक चिपटी होती है, उत्तराखण्ड के मुल्कों मे स्त्रियें लाज कम करती हैं, और सिवाय कुलीन आदमियों के उन सब को वहां इख़्तियार है कि चाहें जितने विवाह करें और चाहे जिस पुरुष के पास जा रहें, जब कोई स्त्री एक पुरुष को छोड़ कर दूसरे के पास जाती है तो वह पहला पुरुष उस दूसरे से कुछ रुपए

जो उसने विवाह के समय खर्च किये थे अवश्य लेलेता है। और इसी तरह जब वह स्त्री दूसरे को छोड़ कर तीसरे के पास पहुंचती है, तो वह दूसरा अपने रुपये उस तीसरे आदमी से वसूल कर लेता है। औरत क्या यह तो दर्सनी हुंडी ठहरी। और जब कई भाई मिलकर पाण्डवों की तरह एक ही औरत से व्याह कर लेते हैं, तो पहला लड़का बड़े भाई का, दूसरा दूसरे भाई का,तीसरा तीसरे भाई का, इसी तरह क्रम से बट जाते हैं। सिन्धु के तटस्थ-देशों मे हिन्दू मुसलमानों से बहुत कम परहेज़ रखते हैं। बरन किसी किसी जगह आपस मे शादी व्याह भी कर लेते हैं। पञ्जाब के सिख हजामत नहीं बनाते, जवान अच्छे सजीले होते हैं, पोशाक उन की सिपाहियाना, और सुन्दर, दांत पान न खाने से सफ़ेद मोतियों की लड़ी से रहते हैं, उस देश मे औरतें भी तङ्गमुहरी का पाजामा पहनती हैं। रजपुताने की औरतों के घाघरों का घेर बहुत बड़ा रहता है, डाढ़ी रखने की वहां भी चाल है, और कच्ची रसोई की छूत बिलकुल नहीं मानते, बनिये महाजनों को नाई दाल भात और रोटी परोस देता है। लखनऊवालों का पहनावा ज़नाना है, पाजामे की मुहरियां इतनी चौड़ी रखते हैं कि उठावें तो सिर तक पहुंचे, और पगड़ियों का घेरा इतना बड़ा कि छतरी का भी काम न पड़े, बोझ मे तो छोटी मोटी गठड़ीसे कम न होगी, बरन कहीं खुलजावे तो अन्दर से गड़गूदड़ का ढेर इतना निकले कि एक टोकरी भरे। बङ्गाली बड़े कमहिम्मत और असाहसी बरन डरपोकने होते हैं, और

सन्देस और मछ्ड़ा खा खा कर बहुधा बुढ़े होने पर तुन्देले होजाते हैं, ये लोग अंगरेजों की तरह सिर अकसर खुला रखते हैं, बादशाही महलों के लिये इन्ही बङ्गालियों को खोजा बनाते थे। औरतें वहां की केवल एक धोती पर किफ़ायत करलेती हैं, पर उसे भी इस ढब सेलपेटती हैं कि नङ्गी और कपड़े वालियों मे थोड़ा ही फ़र्क रह जाता है। दक्षिण मे विशेष करके कावेरीपार मुसलमानों का राज्य पक्का न होने के कारन अबतक भी बहुत बातें असली हिन्दू-सत की देखने मे आती हैं, आदमी वहां के नाटे होते हैं धोती दुपट्टा और पगडी पहनते हैं, औरतें साडी पहनती हैं, पर मर्दों की तरह लांग कस लेती हैं, इस सबब से उन की पिण्डलियां खुली रह जाती हैं, लाज बिलकुल नहीं करतीं, घोडों पर सवार होकर फिरती हैं, बहुत सी रस्म और रवाज और लोगों की चाल ढाल और सूरत शकल जो खास किसी ज़िले से इलाक़ा रखती हैं, और उन का अहवाल सुनने लाइक़ है, वह सब उन्ही ज़िलों के साथ वर्णन होंगी यहां मौक़ा नहीं है।

मज़हब यहां सदा से दो चले आये थे, एक वेद के मुवाफिक और दूसरा वेद के बखिलाफ़, यह बात खुद वेदों से प्रकट है। जो लोग वेद को नहीं मानते थे, वह असुर और राक्षसों मे गिने जाते थे। बौध और जैनी वेद को नहीं मानते और पशु का घात करना बहुत बुरा समझते हैं। दोढाई हजार बरस का अर्सा गुज़रता है कि यह मत बड़ा प्रबल होगया था, और सारे हिन्दुस्तान मे राजा प्रजा सब

लोग उसी मत को मानते थे, केवल कन्नौज ऐसी जगहों के आसपास कुछ कुछ वेद के माननेवाले रह गये थे, शङ्कराचार्य के समय से वह मत दूर हुआ, और वेद की महिमा फिर चमकी। अब मुख्य मत तो शैव शाक्त वैष्णव वेदान्ती और जैनी हैं, पर भेद इनके हज़ारों ही होगये, सिवाय इस्के आठवें हिस्से से अधिक इस देश मे मुसलमान बस्ते हैं और लाखों ही अब क्रिस्तान होते चले हैं।

विद्या की जड़ यही मुल्क है, इसी मुल्क से विद्या निकली थी, सब से पहले इसी मुल्क के आदमियों ने विद्या अभ्यास मे चित्त लगाया, और यहां के पण्डित सदा से नामी और ज्ञानी और अन्य सब देशियों के मान्य और शिरोमणि रहे। मिसर और यूनानवाले जिन्हों ने सारे फ़रङ्गिस्तान को आदमी बनाया, अपने बड़े पण्डितों के हाल मे यही लिखते हैं कि वे हिन्दुस्तान से विद्या सीख आए, सिकन्दर इतना बड़ा बादशाह जिस्की सभा मे अरस्तू-ऐसे बड़े बड़े योग्य यूनानी पण्डित मौजूद थे, इस देश से एक पण्डित को जिस कानाम वहांवालों ने कलन लिखा है और असल मे कल्याण मालूम होता है, बड़ी खुशामद से अपने साथ ले गयाथा, उस समय उस्के साथ यहां से कोई बड़ा पण्डित तो काहे को गया होगा, किसी ऐसे वैसे होने यह बात कबूल की होगी, पर यूनानवाले उस की प्रशंसा यों लिखते हैं कि जितने दिन वह सिकन्दर के पास रहा, उस ने अपने चलन मे ज़रा भी फ़र्क़ नआने दिया, और अच्छी तरह हिन्दू का धर्म निबाहा, और जब बहुत बूढ़ा

हुआ तो उन सब के साम्हने तुषानल करके अपने आप जल गया। ईरान के प्रतापी बादशाह बहराम ने यहां से गवैये बुलवाये थे, गान-विद्या अब तक भी हिन्दुस्तान सी दूसरी जगह नहीं है। बग़दाद के बड़े ख़लीफ़ा मामूं ने यहां से वैद मंगवाए थे, और सदा उन्हो वैदों की दवा खाता था, ग्रन्थ भी इस देश में आत्मतत्त्व ज्योतिष गणित भूगोल खगोल इतिहास नीति व्याकरण काव्य अलङ्कार न्याय नाटक शिल्प वैद्यक शस्त्र गान अश्व गज इत्यादि सब विद्या के अच्छे अच्छे मौजूद थे, परन्तु मुसलमानों ने अपनी अमलदारी में हिन्दुओं के शास्त्र नष्ट कर दिये और फिर राज्य भ्रष्ट होने के कारन इन विद्या की चाह न रहने से घटते घटते उन का पढ़ना पढ़ाना ऐसा घट गया कि अब तो कोई ग्रन्थ भी यदि हाथ लगजाता है उस्का पढ़ाने और समझानेवाला नहीं मिलता। मुसलमान बादशाहों के समय से लोग फ़ारसी अरबी सीखते रहे, अब इन दिनों से अंगरेज़ी विद्या ने उन्नति पाई है, सर्कार ने हिन्दुस्तानियों का हित विचार उनके पढ़ने के लिये जगह जगह पर मदरसे और पाठशाले बैठा दिये हैं, और दिन पर दिन नये बैठते जाते हैं, उमेद है कि इस अंगरेजी भाषा के द्वारा फिर भी हमारे देशवासी सब विद्याओं में निपुण हो जावें, और जो सब नई नई बातें फ़रङ्गिस्तानवालों ने अपनी बुद्धि के बल से निकाली और निर्णय की हैं उन से बड़े फ़ाइदे उठावें।

बोली इस मुल्क में अब उर्दू मुख्य गिनी जाती है, परन्तु

यह केवल थोड़े ही दिनों से जारी ऊई है, उर्दू का अर्थ लश्कर है, जब तुर्क अफ़ग़ान और मुग़लों की हिन्दुस्तान मे बादशाहत ऊई, और उन के आदमी यहां लश्कर के दर्मियान बाज़ारियों के साथ हर वक़्त ख़रीद फ़रोख़्त मे बोलने चालने लगे तो उन की अरबी फ़ारसी और तुर्की इन लोगों की हिन्दी (१) के साथ मिलकर यह एक जुदी बोली बन गई, और इस का निकास उर्दू अर्थात् लश्कर के बाज़ार से होने के कारन नाम भी इस का उर्दू की ज़ुबान रखा गया, महाराज पृथीराज के भाट चन्द ने जो दोहरे बनाए हैं, वह उसी असली हिन्दी बोली मे हैं, जो मुसलमानों के चढ़ाव से पहले इस देश मे बोली जाती थी, अब जिस बोली मे फ़ारसी अरबी के शब्द कम रहते हैं, और हिन्दी हर्फ़ों मे लिखी जाती है, उसे हिन्दी और जिसे फ़ारसी अरबी के शब्द अधिक रहते हैं, और फ़ारसी हर्फ़ों मे लिखी जाती है, उसे उर्दू कहते हैं, प्राचीन समय मे यहां प्राकृत अर्थात् मागधी भाषा बोली जाती थी, बौध मत और जैन मत की बऊत पोथी इसी भाषा मे लिखी हैं, पर संस्कृत, जिसे वेद और पुराण इत्यादि हिन्दुओं के शास्त्र

---

(१) पुरानी पोथियों मे जो दस भाषा लिखी हैं अर्थात् पञ्च गौड़ और पञ्चद्राविड़। पञ्चगौड़ मे सारस्वत कान्यकुब्ज गौड़ मिथिला और उड़ेसा। और पञ्चद्राविड़ मे तामल महाराष्ट्र कर्नाट तैलङ्ग और गुर्जर। सो इन मे से जो बोली कान्यकुब्ज मे बोली जाती थी वही हिन्दी की जड़ है॥

लिखे हैं, ऐसा नहीं मालूम होता कि कभी इस मुल्क की बोली रही हो, और सब लोग संस्कृत मे बोल चाल करते हों, वरन इसी लिये ब्राह्मण इसे देववाणी पुकारते हैं, मुख्य बोली कहने से मुराद हमारी उस बोली से है जो मध्यदेश मे राजा की सभा और राजधानी मे बोली जावे, जैसे कि उर्दू, दिल्ली आगरे लखनऊ मे और मध्यदेश की सब सर्कारी कचहरियों मे बोली जाती है, और नहीं तो हिन्दुस्तान मे हर जगह की एक जुदी बोली है, जैसे बङ्गाले मे बङ्गला, भोट मे भोटिया, नयपाल मे नयपाली, कश्मीर मे कश्मीरी, पञ्जाब मे पञ्जाबी, सिन्ध मे सिन्धी, गुजरात मे गुजराती, रजपुताने मे देसवाली, ब्रज मे ब्रजभाषा, तिरहुत मे मैथिली, बुंदेलखण्ड मे बुंदेलखण्डी, उड़ेसे मे उड़िया, तिलङ्गाने मे तैलङ्गी, पूना सितारे की तरफ़ महाराष्ट्री, कर्नाटक मे कर्नाटकी, द्रविड़ मे तामली, जिसे अन्ध्र भी कहते हैं, बोलियां बोली जाती हैं। इन सब मे ब्रजभाषा बहुत प्रसिद्ध, और अत्यन्त मधुर कोमल प्यारी और रसीली है, और कितने ही काव्य के ग्रन्थ इस भाषा मे कवि लोगों ने बहुत सुन्दर और नाली रचे हैं।

चीज़ें यहां सब तरह की बनती हैं, जिन्दगी के ज़रूरी और आराम दोनो तरह के असबाब यहां हाथ लग सकते हैं, और सब क़िस्म के कारीगर मौजूद हैं, पर तौ भी कश्मीर की शाल और ढाके की मलमल बहुत प्रसिद्ध है, यह दोनो चीज़ जैसी इस मुल्क मे बनती है दूसरे मुल्कों के आदमी हर्गिज़ नहीं बना सकते। सारी दुनिया के बादशाह इन्हीं

कश्मीरियों के बुने दुशाले ओढ़ते हैं, अंगरेज़ों ने इंगलिस्तान में हज़ारों तरह की कलें बनाईं, परन्तु इस देश की सी शाल और मलमल बनाने की उन्हें भी कोई तदबीर न सूझी, न ऐसी नर्म और गर्म शाल वहां बन सकती, और न ऐसी बारीक मज़बूत और मुलाइम मलमल तयार हो सकती है, अब भी वहां की जो सुकुमार बीबियां हैं, गर्मी में ढाके की मलमल का गौन पहनती हैं। अकबर के समय में ढाके के दर्मियान पांच अशरफ़ी तक की मलमल और १५ अशरफ़ी तक का ख़ासा तयार होता था, और दुशाला अब भी कश्मीर में सात हज़ार रुपये तक का बुना जाता है। सिवाय इस के कश्मीर के कागज़ और क़लमदान, बनारस के कमख़ाब दुपट्टे और गुलबदन, फ़र्रुख़ाबाद की छीटें, मुलतान के रेश्मी कपड़े और क़ालीन, मुर्शिदाबाद के बूंद और कोरे, दिल्ली के आइने और नैचे, ग़ाज़ीपुर का गुलाब, शाहजहांपुर का क़न्द, गया और जयपुर की काले और सफ़ेद पत्थरों की चीज़ें, अमरोहे और चनार के मिट्टी के बर्तन बहुत बढ़िया और अच्छे होते हैं।

तिजारत इस मुल्क में कम है, यहां के आदमी ज़मीदारी की तरफ़ बहुत मन देते हैं, और अपने मुल्क से निकलकर दूसरे मुल्क में तो बनज बेवपार के लिये कदापि नहीं जाते। अगले ज़माने में दूसरी विलायतों के आदमी यहां आकर इस मुल्क की चीज़ें लेजाते थे, और उस्के बदल में सोना चांदी देजाते। पर अब फ़रङ्गिस्तानवालों ने कल के बल से वस्तु के बनाने में श्रम और समय घटाकर उन्हें ऐसा

होता है, वह बहुत ही भारी है, कभी कभी बीस लाख तक आदमी इकट्ठा हो जाते हैं।

राज्य इस देश का सदा से सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओं के घराने में रहा, परन्तु अगले समय के हिन्दूराजाओं का वृत्तान्त कुछ ठीक ठीक नहीं मिलता, और न उन के साल संवत् का कुछ पता लगता है, जो किसी कवि या भाट ने किसी राजा का कुछ हाल लिखा भी है, तोउसे उस्ने अपनी कविताई की शक्ति दिखलाने के लिये ऐसा बढ़ाया कि अब सच से झुठको जुदा करना बहुत कठिन पड़गया। सिवाय इस के ब्राह्मणों ने बौध राजाओं को असुर और राक्षस ठहराकर बहुतों का नाममात्र भी अपने ग्रन्थों में लिखना उचित न समझा, और इसी तरह बौध ग्रन्थकारों ने इन के राजाओं का वर्णन अपनी पुस्तकों में लिखना अयोग्य जाना, तिसपर भी बहुत से ग्रन्थ अब लोप हो गए, बौधोंने ब्राह्मणों के ग्रन्थ नाश किये, और ब्राह्मणों ने बौधों के ग्रन्थ गारत किये, मुसलमानों ने दोनों को मिट्टी में मिला दिया। छापे की हिक्मत जिस्से ग्रन्थ अमर हो जाते हैं, आगे कोई नहीं जानता था, निदान हिन्दुस्तान के अगले राजाओं की वंशावली और वृत्तान्त शृङ्खलायुक्त और सम्पूर्ण ठीक ठीक अखण्डित अब कहीं से भी नहीं मिल सकता। कहते हैं कि सब से पहला राजा इस देश का मनु का बेटा इक्ष्वाकु हुवा, उस की राजधानी अयोध्या थी, उस्के कुल में बड़े बड़े नामी राजा हुए, सब के भूषण राजा रामचन्द्र तक उस गद्दी पर इक्ष्वाकुवंश के सत्तावन राजा बैठ चुकेथे, और फिर छप्पन

सस्ता कर दिया, और दुरुस्ती और सफ़ाई से इस दर्जे को पहुंचाया कि सारी दुनिया उन्हीं की चीज़ें पसन्द करती है और हिन्दुस्तानियों की बनाई हुई कोई नहीं पूछता, बरन हिन्दुस्तानी लोग भी अपने सब काम उन्हीं विलायती चीज़ों से चलाते हैं, इस देश की बनी हुई चीज़ से राज़ी नहीं होते, अगले ज़माने से ईरान तूरान और रूम यूनान इत्यादि देशों के सौदागर खुश्की पिशावर की राह से ऊंटों पर माल ले जाते थे, और मिसर और अरब के बेवपारी समुद्र की राह जहाज़ लाते थे, पर यह जहाज़ उतनी ही दूर से चलते थे, जिसे अरब की खाड़ी कहते हैं, वे लोग तब जहाज़-चलाने की विद्या से ऐसे निपुण न थे जो कनारा छोड़ कर दूर खाड़ी से बाहर महासागर मे अपना जहाज़ ले जाते। फ़रङ्गिस्तानवाले समुद्र की राह अपने जहाज़ हिन्दुस्तान मे लाने के वास्ते बहुत तड़फते थे, उन दिनो मे वे भी अरब और मिसरवालों की तरह जहाज़ चलाने मे चतुर न थे, और न भूगोल विद्या अच्छी तरह जानते थे, समुद्र को अपार और अगम्य समझ के सदा अपने जहाज़ों को तट से निकट रखा करते, पहले तो वहांवाले हिन्दुस्तान आने के लिये अपने जहाज उत्तर समुद्र मे ले गये इस मन्सूबे पर कि रूस और चीन की परिक्रमा देकर यहां पहुंचें, पर जब कितने ही जहाज़ उस समुद्र के जमे हुए बर्फ़ मे फंसकर तबाह होगये और रूस की हद से आगे न बढ़ सके, तब उस राह को छोड़कर पश्चिम तरफ़ अटलांटिक समुद्र मे चले, वहां उन का जहाज़ अमरिका के महाद्वीप मे जा

लगा, और आगे न बढ़ सका, तब हारकर दक्षिण की राह ली, और अफ़रीका के कनारे कनारे केपअवगुडहोप से जिसे कोई उत्तमाशाअन्तरीप भी कहता है, मुड़कर हिन्दुस्तान मे आए। जिस आदमी ने यह समुद्र की राह फ़रङ्गिस्तान से हिन्दुस्तान को निकाली उस्का नाम वास्कोडिगामा था, आठवीं जुलाई सन १४९७ का कि जिन दिनो मे सुलतान सिकन्दर लोदी दिल्ली के तख़्त पर था वास्कोडिगामा तीन जहाज़ लेकर पुर्टगाल की राजधानी लिसबन से वहां के बादशाह की आज्ञानुसार हिन्दुस्तान की राह ढूंढने के वास्ते निकला, और साढ़े दस महीने के अर्से मे उस्का जहाज़ कल्लीकोट मे आकर लगा। निदान फ़रङ्गियों का यह पहला जहाज़ था कि जिसे हिन्दुस्तान का कनारा हुआ, और वास्कोडिगामा पहला फ़रङ्गी था कि जो समुद्र की राह से इस देश मे पहुंचा, और कल्लीकोट पहला नगर था जिसे इन का क़दम आया। कहते हैं कि जब वास्कोडिगामा के जहाज़ लिसबन से चलेथे तो वहांवालों को फिर इन जहाजों के देखने की आस न थी, और इन जहाज़ियों को मुर्दों मे गिन चुके थे, जब इन के जहाज़ लौटकर लिसबन मे पहुंचे तो वहां के राजा और प्रजा सब को अत्यन्त हर्ष हुआ और बड़ी ही खुशियां मनाईं। पुर्टगालवालों की देखादेखी फिर फ़रङ्गिस्तान के और लोग भी अपने जहाज़ इस राह से यहां लाने लगे, और हिन्दुस्तान की तिजारत से बड़े बड़े फ़ाइदे उठाए, जब से धूएं के जहाज़ बनने लगे तब से यहां का आना जाना फ़रङ्गिस्तानवालों का और भी बहुत सुगम

होगया, और यद्यपि स्वीज़ के डमरूमध्य के पास थोड़ी दूर खुश्की ता अवश्य चलना पड़ता है. परन्तु रेडसी से मेडिटरेनियनसी में चलेजाने से यह राह फ़रङ्गिस्तान की बज्ञतही निकट पड़ती है। इस राह यहां से धूए के जहाज़ पर इङ्गलिस्तान तक जाने में डेढ़ महीना भी नहीं लगता। फ़रङ्गिस्तान और अमरिका से यहां शराब, कपड़े, हथियार, औज़ार, बरतन, धात, खुशबू, किताबें, ज़ेवर, खाने की चीजें, लिखने पढ़ने की वस्तु, कलें, खिलौने, मकान सजाने के असबाब, और तरह बतरह के अद्भुत और अनोखे पदार्थ आते हैं। और यहां से नील, शोरा, अफ़यून, रेशम, हाथीदांत, रूई, चावल, शक्कर, गोंद, जवाहिर, शाल, मलमल, गर्ममसाले, और दवाइयां, उन मुल्कों को जाती हैं। सिवाय इन मुल्कों के ईरान तूरान तिब्बत अफ़गानिस्तान बर्म्हा चीन अरब मिसर इत्यादि एशिया और अफ़रीका के देशों से भी इस मुल्क की तिजारत जारी है। अपने मुल्क में अर्थात एक शहर से दूसरे शहर को हिन्दुस्तानी लोग जहां दर्या है वहां नाव पर, और जहां सड़क है वहां गाड़ियों पर, और रेगिस्तान में ऊंटों पर, और पहाड़ों में भेड़ी बकरी और याकबैलों पर और बाकी जगहों में बैल टट्टू और खच्चरों पर, तिजारत का असबाब ले जाते हैं। बज्ञत जगहों में वार्षिक मेले भी ज्ञआ करते हैं, कि जिन में सब तरफ़ के बेवपारी माल लाते हैं। हरिद्वार का मेला जो हर साल मेष की संक्रान्ति को ज्ञआ करता है, इस देश में मशहूर है, पर उसमें भी बारहवें बरस जो कुम्भ का मेला

होता है, वह बहुत ही भारी है, कभी कभी बीस लाख तक आदमी इकट्ठा हो जाते हैं।

राज्य इस देश का सदा से सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओं के घराने मे रहा, परन्तु अगले समय के हिन्दूराजाओं का वृत्तान्त कुछ ठीक ठीक नहीं मिलता, और न उन के साल संबत् का कुछ पता लगता है, जो किसी कवि या भाट ने किसी राजा का कुछ हाल लिखा भी है, तोउसे उसे अपनी कविताई की शक्ति दिखलाने के लिये ऐसा बढ़ाया कि अब सच से झुठको जुदा करना बहुत कठिन पड़गया। सिवाय इस के ब्राह्मणों ने बौध राजाओं को असुर और राक्षस ठहरा-कर बहुतों का नाममाच भी अपने ग्रन्थों मे लिखना उचित न समझा, और इसी तरह बौध ग्रन्थकारों ने इन के राजाओं का वर्णन अपनी पुस्तकों मे लिखना अयोग्य जाना, तिसर भी बहुत से ग्रन्थ अब लोप हो गए, बौधोंने ब्राह्मणों के ग्रन्थ नाश किये, और ब्राह्मणों ने बौधों के ग्रन्थ ग़ारत किये, मुसलमानों ने दोनों को मिट्टी मे मिला दिया। छापे की हिक्मत जिस्से ग्रन्थ अमर हो जाते हैं, आगे कोई नहीं जानता था, निदान हिन्दुस्तान के अगले राजाओं की वंशा-वली और वृत्तान्त शृङ्खलायुक्त और सम्पूर्ण ठीक ठीक अख-ण्डित अब कहीं से भी नहीं मिल सकता। कहते हैं कि सब से पहला राजा इस देश का मनु का बेटा इक्ष्वाकु हुवा, उस की राजधानी अयोध्या थी, उस्के कुल मे बड़े बड़े नामी राजा हुए, सब के भूषण राजा रामचन्द्र तक उस गद्दी पर इक्ष्वाकुबंश के सत्तावन राजा बैठ चुकेथे, और फिर छप्पन

रामचन्द्र से सुमित्र तक बैठे। सुमित्र अयोध्या का पिछला राजा था, विक्रमादित्य से कुछ दिन पहले उसका देहान्त हुआ। जयपुर जोधपुर और उदयपुर के राजा तीनों अपनी असल रामचन्द्र को औलाद से बतलाते हैं। राठौर अर्थात् जोधपुरवाले मुसलमानों के चढ़ाव के समय कन्नौज की गद्दीपर थे, जब मुसलमानों ने वहां से निकाला तो मारवाड़ मे आए। कछवाहे अर्थात् जयपुरवाले पहले नरवर मे थे। गहलौत अर्थात् उदयपुरवालों की पहली राजधानी सूरत के पास बल्लभीपुर था। इक्ष्वाकु के बहनोई बुध के वंश वाले राजा चन्द्रवंशी कहलाए, इन की राजधानी प्रयाग मे थी। बुध के बेटे पुरुरव के पड़पोते ययाति के तीन बेटे थे, उरु, पुरु और यदु, पुरु की सत्ताईसवीं पीढ़ी मे हस्ती ने हस्तिनापुर बसाया। हस्ति की तेईसवीं पीढ़ी मे युधिष्ठिर ने महाभारथ जीतकर इन्द्रप्रस्थ मे, जिसे अब दिल्ली कहते हैं, राज किया। यदु के कुल मे इक्यावन पीढ़ी के बाद कृष्ण और बलराम उस वंश के भूषण भये, युधिष्ठिर के भाई अर्जुन से लेकर तीस पीढ़ी तक उसी के कुल मे इन्द्रप्रस्थ की गद्दी चली आई। पिछला राजा क्षेमराज जो सुस्त और अचेत हुवा, तो उस्का मन्त्री विसर्व उसे मारकर गद्दी पर आप होबैठा। विक्रमादित्य के समय मे विसर्व से लेकर इस गद्दी पर अढ़तीस राजा तीन घरानों के बैठ चुके थे। अढ़तीसवें राजा राजपाल को जब कमाऊं के राजा सुखवन्त ने मार इन्द्रप्रस्थ पर क़बजा करना चाहा तो महाराज विक्रम ने चढ़ाव किया और वह राज सारा अपने आधीन कर

लिया। फिर कोई सात सौ बरस पीछे समय के फेर फार से यह इन्द्रप्रस्थ तोमर अथवा तवार राजाओं की राजधानी हुवा, और इक्कीस पीढ़ी तक उन्ही के हाथ मे रहा, उन्नीस पीढ़ी के बाद राजा अनङ्गपाल ने पुचहीन होने के कारन अपने नाती पृथीराज को गोद लिया। विक्रमादित्य सन ईसवी से छप्पन बरस पहले प्रमर अथवा पवार वंश मे उज्जैन की राजगद्दी पर बैठा था, यह राजा बड़ा प्रतापी हुआ, लोग उस्के गुण आज तक गाते हैं, और आज तक भी उसे परजन-दुखभञ्जन पुकारते हैं, यद्यपि वह ऐसा पराक्रमी और इतना बड़ा राजा था, पर तौ भी उस्के सीधेपन और तपस्या को देखो कि राजाधिराज होकर चटाई पर सोता और अपने हाथ सिप्रा नदी से तूंबा भरकर पानी ले आता, संबत् हिन्दुस्तान मे उसी का बर्ता जाता है। उत्तर दक्षिण और पूर्व से तो उस समय मे हिन्दुस्तानको बाहर के शत्रुओं का कुछ भी भय न था, क्यों कि तब जहाज़ चलाने की विद्या लोगों को अच्छी तरह न आने से दूसरी विलायत के आदमी कदापि समुद्र की राह, जो हिन्दुस्तान के गिर्द प्राय आधी दूर तक खाई की तरह घूमा है, इस मुल्क पर चढ़ाव नहीं कर सकते थे, और न कोई हिमालय ऐसे पर्वत के पार होसकता था, इस मुल्क मे आने के लिये पश्चिम तरफ़ अर्थात् पिशावर मानो दर्वाज़ा था, और ईरान इत्यादि सिन्धु पार के देशवाले उसी राह से इस मुल्क पर चढ़ाव करते थे, सब से पहला चढ़ाव जिस का पक्का पता लगता है, सिक-

न्दर का था। फ़ारसी तवारीखों मे यह बात अशुद्ध लिखी है, कि वह कन्नौज तक आया। खुद सिकन्दर के साथी लोग अपनी यूनानी-किताबों मे लिखते हैं, कि वह सतलज इसपार न उतर सका, गङ्गा के दर्शनो की उसके मन मे लालसा ही रही। पञ्जाब के राजाओं को तो उस ने लड़ भिड़ कर ज्यों त्यों अपने मुवाफ़िक़ कर लिया था, पर जब उसकी फ़ौज ने सुना, कि मगधदेश का नागवंशी राजा महानन्द छ लाख पियादे तीस हज़ार सवार और नौ हज़ार हाथी की भीड़भाड़ रखता है, तो उन का दिल यकबारगी टूट गया और आगे बढ़ने से इनकार किया, नाचार फ़ौज के फिरजाने से सिकन्दर को भी उसी जगह से लौटना पड़ा। सिकन्दर के पीछे फिर कई बार ईरान के बादशाहों ने इस देश पर चढ़ाव किया, पर जय ऐसी किसी ने न पाई, जो मध्यदेश तक आता, जो चढ़े सो सिन्धु ही के तटस्थ देशों मे लड़ भिड़ कर लौट गए, यहां तक कि सन १००१ ईसवी मे महमूद ग़ज़नवी ने अपने लशकर की बाग हिन्दुस्तान की तरफ़ मोड़ी। उस समय मे उज्जैन और मगध का राज बहुत दिनों से नष्ट हो गया था, और नए नए घरानों के नए नए राजा खण्ड खण्ड मे राज करते थे, क्षत्रियों का बहुधा नाश हो गया था, और ब्राह्मणों से लेकर शूद्र अहीर पहाड़ी और जङ्गली मनुष्यों तक गद्दी पर बैठ गए थे। दिल्ली तवारों के आधीन थी कन्नौज राठौरों के हाथ था, और मेवाड़ मे गहलौतों का राज था, आपस मे नित के वैर से बाहर के शत्रुओं का मन बढ़ा, और सब का एक

महाराजाधिराज के न रहने से उन को इस देश मे घुस आना सहज हो गया, निदान महमूद ने पञ्चीस बरस के भीतर बारह बार हिन्दुस्थान पर चढ़ाव किया, और बारहों बार जय पाई, वह कन्नौज और कालिञ्जर तक आया, और यहां तक सारा मुल्क लूट मार से तबाह कर दिया, महमूदशाह के विजयी होने से हिन्दुस्तान का भरम खुल गया, और फिर हर एक यहां आकर लूट मार मचाने लगा। सन ११९१ मे शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाव किया, पहली लड़ाई मे तो उस ने महाराज पृथीराज से शिकस्त खाई, पर दूसरी मे, जो थानेसर के पास तलावड़ी के मैदान मे हुई थी और जिस्मे कम से कम तीन लाख सवार और तीन हजार हाथी पृथीराज के साथ थे और पैदलों की कुछ गिनती न थी, पृथीराज को उस्ने पकड़ लिया, और दिल्ली अपने गुलाम कुतबुद्दीन ऐबक को दी। पृथीराज हिन्दुस्तान का आखिरी स्वाधीन राजा था, हिन्दुओं का राज उसी के साथ गया॥ कवित्त॥

केते भये यादव सगर सुत केते भये
जात हू न जाने ज्यों तरैया परभात की।
बलि बेणु अम्बरीष मानधाता प्रह्लाद
कहां लौं कहिये कथा रावण ययात की॥
वे हू न बचन पाये काल कौतुकी के हाथ
भांति भांति सेना रची घने दुख घातकी।
चार चार दिना को चवाव सब कोउ करौ
अन्त लुट जैहै ज्यों फूतरो बरात की॥१॥

सन १२०६ मे कुतबुद्दीन दिल्ली के तख्त पर बैठा, और यही गुलाम यहां हिन्दुस्तान मे मुसल्मानों की बादशाहत का बुनियाद-डालनेवाला हुआ, फिर धीरे धीरे ये सारे मुल्क के मालिक बन गए, और नौबत बनौबत एक खानदान बिगड़ने के बाद दूसरे खानदान के आदमी सलतनत करते रहे, यहां तक कि सन १३९८ मे समरकन्द के बादशाह तैमूरलङ्ग ने बानबे हजार सवारों के लेकर चढ़ाव किया, और दिल्ली को फतह कर लिया। तैमूर तो दिल्ली मे सोलही रोज रहकर अपने देश को चला गया, लेकिन उस्के पोते के पड़पोते बाबर बादशाह ने सन १५२६ मे पानीपत की लड़ाई के दर्मियान दिल्ली के बादशाह इबराहीम लोदी को मारकर यह सारा मुल्क अपनें कबजे मे कर लिया। बाबर का पोता अकबर इस मुल्क मे बड़ा नामी बादशाह हुआ, बरन ऐसा बादशाह तो मुसल्मानोंमे कोई भी नहीं था, आजपर्य्यन्त लोग उस्का यश गाते हैं, और भलाई के साथ उसे याद करते हैं। जिन दिनों इस का बाप हुमायूं शेरशाह से शिकस्त खाकर सिन्ध की राह ईरान को भागा था, तो उसी सिन्ध के रेगिस्तान में उस आफत के दर्मियान, कि हुमायूं के पास चढ़ने को घोड़ा भी मौजूद न था, एक सवार के टट्टू पर चलता था और पीने को पानी मुश्किल से मिलता था, अकबर का जन्म हुआ, और जब हुमायूं ने अपने भाई कामरां से, जो काबुल मे था, आते वक्त लड़ाई की तो कामरां ने अकबर को, जो उस वक्त उस्के काबू मे था, भाले से बांधकर किले के बुर्ज पर लटका दिया था, कि जिस्मे हुमायूं

की फ़ौज किले पर हथियार न चलावे, क्या महिमा है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, कि वही अकबर सब बादशाहों का सिरताज हुआ, वह तेरह बरस की उमर मे तख़्त पर बैठा, और इक्यावन बरस राज किया। यद्यपि वह इतना बड़ा बादशाह था कि जिस के इसतबल मे पांच हज़ार हाथी, और दस हज़ार घोड़े ख़ासे के बंधते थे, और जिस का डेरा दौलतसरा कमख़ाब के फ़र्श और मख़मली मोती टके हुए पर्दोंवाला सफ़र के वक़ पांच मील के घेरे मे खड़ा होता, हर सालगिरह को सोने से तुलादान करता, और सोने के बादाम अपने दर्बारियों मे लुटाता, पर तौभी वह रऐयत के साथ बहुत सीधा सादा रहता। आठ पहर मे केवल एक बार खाता गोश्त से अकसर पर्हेज़ रखता, हिंसा बुरी जानता, नाम को मुसलमान था, मन से सूरज की पूजा करता, आदित्यवार के दिन उसकी अमलदारी भर मे जीव-मारने की मनाही थी। रऐयत उसे इतना चाहती, कि जीते जी उसे मन्नत चढ़ने लगी थीं, और कितने ही आदमी उस के मुरीद अर्थात् शिष्य हो गए थे। उस के राज्य मे रुपये का दो मन पौने चौदह सेर जौ बिकता था, और एक मन बाईस सेर गेंहूं, बाज़े बाज़े आईन इस बादशाह ने बहुत ही अच्छे जारी किये थे। यह भी उसी का जारी किया हुआ आईन था, कि जब तक दूल्हा दुल्हन समझदार न हों, कि एक दूसरे से अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर करें, छोटी उमर मे हर्गिज़ शादी न होने पावे। जैसे बुद्धिमान् और विद्या मे निपुण लोग अकबर की सभा मे इकट्ठा हुए

थे, ऐसे किसी दूसरे बादशाह के समय में नहीं भये, शेख अबुलफ़ज़ल, राजा बीरबल, राजा टोडलमल, नव्वाब ख़ानख़ाना, तानसेन इत्यादि उसके यहां नवरत्न मे गिने जाते थे, यह मिहनती मुशकिल काम राजा टोडलमल और अबुल्फ़ज़ल का था, जो इस मुल्क के दफ़तर को हिन्दी से फ़ारसी मे उतारा, अब तक भी बहुत बन्दोबस्त अबुल्फ़ज़ल के बांधे हुए उसी तरह पर चले जाते हैं। सूबे, सर्कार, महाल, पटवारी, क़ानूंगो, यह सब उसी ने मुक़र्रर किये थे, निदान शाहआलम तक यह बादशाहत इसी घराने मे चली आई। शाहआलम से अंगरेज़ों ने लेली। यह घराना तैमूर का मुसलमानों की सल्तनत मे सब से पिछला था, जिस ने यहां बादशाहत का डङ्का बजाया। शाहआलम के पोते बहादुर-शाह अब भी रंगून मे नज़रबन्द हैं, खाने को सर्कार से पाते हैं, बादशाहत शाहआलम के साथ गई, अब यहां सिक्का सर्कार अंगरेज़बहादुर का चलता है। कुतबुद्दीन ऐबक से लेकर शाहआलम तक पैंसठ मुसल्मान-बादशाह दिल्ली के तख़्त पर बैठे, और शाहआलम के मरने तक पूरे छ सौ बरस बादशाहत करते रहे। इन मे से उनतीस तो अपनी मौत मरे, और तेईस दूसरे के हाथ से मारे गए, सात बन्दीख़ाने मे मरे, और छ का पता नहीं, पड़ता फैलाने से फ़ी बादशाह कुछ ऊपर नौ बरस बादशाहत आती है। स्वाधीन स्वेच्छाचारी बादशाहों का प्राय सब जगह ऐसा ही हाल है। यह केवल आईनी-बन्दोबस्त का फ़ाइदा है, कि जो इङ्गलिस्तान मे इथलरेड से चौथे विलियम तक ८५६

बरस के अर्से मे कुल ४२ बादशाह हुए, और पड़ता फैलाने के हिसाब से फी बादशाह कुछ ऊपर बीस बरस सलतनत करते रहे, कि जो यहां की बनिसबत दूनी से भी अधिक है। अंगरेजों ने जब देखा कि पुर्टगाल इत्यादि फरंगिस्तान की विलायतों के आदमी हिन्दुस्तान मे जाते हैं, और यहां की तिजारत से बड़ा फाइदा उठाते, तो फिर इन दैवी पुरुषों से कब चुपचाप रहा जा सकता था, इन्हों ने भी अपने माल के जहाज यहां को रवानः किये। और सन १५९९ मे लन्दन-शहर के दर्मियान बहुत से आदमियों ने आपस के साझे मे कुछ रुपया इकट्ठा करके इस मुल्क मे बनज-ब्योपार-करने के लिये एक कोठी खड़ी की, और दूसरे ही साल वहां के बादशाह से कई एक शर्तों पर इस बात की अपने नाम एक सनद लिखवा ली, कि सिवाय इन साझियों के दूसरा कोई अंगरेज हिन्दुस्तान से तिजारत न करने पावे। लेकिन जब इस मुल्क मे उन्हों ने अपना कब्ज़ और दखल करना शुरू किया, तो सन १८१३ से उन को तिजारत-करने की मनाही हो गई, और वह अटक उठ गई। अंगरेजी मे साझियों को कम्पनी कहते हैं, इस लिये इन साझी-सौदागरों का नाम भी ईस्टइण्डियाकम्पनी रखा गया। कम्पनी किसी बुढ़िया का नाम नहीं है, जैसा लखनऊ मे जब लार्ड वालेंशिया गवर्नर जेनरल विलिज़ली के भानजे सैर को गये थे, तो अखबार-नवीसों ने वहां बादशाह से अर्ज़ की, कि लाट साहिब के भानजे कम्पनी के नवासे तशरीफ़ लाये हैं, वे लोग तब तक यही जानते थे, कि

कम्पनी बुढ़िया, और गवर्नर जेनरल उस्के बेटे हैं। जब इङ्गलिस्तान मे यह कम्पनी खड़ी ऊई, जो यहां तख़्त पर अकबर बादशाह था। हिन्दुस्तान मे पहले ही पहल इन की कोठियां सन १६११ मे सूरत, अहमदाबाद, खम्भात और घोघे मे जारी ऊईं, १६५२ मे बङ्गाले के दर्मियान बलेश्वर मे, और उस्से दो बरस पीछे मन्दराज मे भी होगईं। सन १६६४ मे पुर्टगाल के बादशाह से बम्बई का टापू मिला। सन १७०० मे बङ्गाले के सूबेदार ने कलकत्ता, गोबिन्दपुर और छोटानटी, ये तीन गांव इन को दे दिये, और कलकत्ते मे एक क़िला भी, जिस का नाम अब फोर्टविलियम है, बनाने की आज्ञा दी, उस समय कलकत्ते मे कुल सत्तर घरों की बस्ती थी। सन १७५६ मे बङ्गाले के सूबेदार नव्वाब सिराजुद्दौला ने इस बात पर, कि अंगरेज़ों ने उस्के एक आदमी को, जो ढाके से कुछ ख़ज़ाना लेकर भागा था, पनाह दी, उन से नाखुश होकर कलकत्ता छीन लिया, और १४६ अंगरेज़ों को, जो उस समय वहां मौजूद थे, ऐसे एक छोटे से घर मे, जिस्का विस्तार बीस फुट मुरब्बा से अधिक न था, और जिसे अब तक वे लोग "ब्लेकहोल" अर्थात् कालीबिल पुकारते हैं, बन्द किया, कि दूसरे दिन उन मे से कुल २३ जीते निकले, बाक़ी १२३ रात ही भर मे वहां दम घुटकर मर गए। निदान यह ख़बर सुनते ही कर्नैल क्लैव साहिब मन्दराज से ६०० गोरे और १५०० सिपाही लेकर कलकत्ते मे आए, कलकत्ता भी लिया और फिर मुर्शिदाबाद पर चढ़ाव कर दिया। सन १७५७ की तेईसवीं जून को

पलासी की लड़ाई मे नव्वाब की फ़ौज ने, जो सत्तर हज़ार से कम न थी, शिकस्त खाई, नव्वाब भागा और उसी दिन मानो अंगरेज़ी अमल्दारी की नेव जमी। थोड़े ही दिनों पीछे सन १७६५ मे शाहआलम ने, जो तब दिल्ली के तख़्त पर था, बिहार, बङ्गाला और उड़ेसा, इन तीनों सूबे की इस्तिमरारी दीवानी का पर्वाना कम्पनी के नाम लिख दिया, कि जिस्से दो करोड़ रुपये साल की आमदनी का ठिकाना हुआ। और वज़ीर आसिफुद्दौला ने रुहेलों की लड़ाई मे मदद लेने के लिये सन १७७५ मे बनारस का इलाक़ा इन के हवाले किया। अब देखना चाहिये महिमा सर्व्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, कि ये लोग कहां से कहां बढ़ गए, और किस दर्जे को पहुंचे, जो लोग सौदागरी के लिये घर से निकले वे अब यहां का राज करते हैं, और जो लोग लाखों सवार के धनी कहलाते थे, वे इन से खाने को टुकड़े मांगते हैं। पर सच पूछो तो यह केवल अपनी नीयत का फल है, अंगरेज़ लोग यहां सौदागरी के लिये आये थे, और वही सौदागरी मात्र चाहते थे, अपने बचाव का बन्दोबस्त अवश्य रखते थे, और जिस्पर बिपत पड़ती उसे मदद देते, पर यहांवालों ने इन को छेड़ना और सताना शुरू किया, जैसा किया वैसा ही फल पाया, जिसने इन के साथ ज़ियादती की, इन्हों ने भी उसे अच्छी तरह उस ज़ियादती का मज़ा चखाया। उस वक़्त मे हिन्दुस्तान की बादशाहत का अजब हाल था, आपस की फूट और नित के लड़ाई झगड़ों से तैमूर का ख़ानदान जीर्ण और जराग्रस्त होगया था, तिस्से

भी सन १७३९ मे ईरान के बादशाह नादिरशाह और फिर थोड़े ही दिनो बाद पैदर्पै तीन चढ़ाव अहमदशाह दुर्रानी के जो उस्के अमीरों मे था इस मुल्क पर ऐसे ऊए कि वह और भी जर्जरीभूत हो गया, सूबेदारों ने बादशाह को नाम माच भी मानना छोड़ दिया, और जिस्के बाप दादा ने कभी चर्प्पे भर ज़मीन पर दख़ल न पाया था उसे भी हिन्दुस्तान की सलतनत पर दिल दौड़ाया, इधर दक्षिण के सूबेदार निज़ामुलमुल्क ने हैदराबाद मे अपनी ऊकूमत जमाई, और उधर नव्वाब वज़ीर ने अवध का सूबा अपने तले दबा-लिया, इधर आगरे तक मरहठों ने लूटमार मचादी, और उधर सरहिंद तक सिक्खों का हल्ला होने लगा, बादशाह लोग दिल्ली के क़िले मे पड़े थे, पर वहां भी उन को कौन बैठा रहने देता था, आज एक आदमी तख़्त पर बैठा कल दूसरे ने उस्का गला काट सिक्का अपने नाम का चलाया, अभी तलवार का लह्र सूखने नहीं पाया कि तीसरे ने उसी तलवार से उस को भी मौत का जामा पि-न्हाया और ताज बादशाही का अपने सिर पर रखा, कभी बादशाह मरहठों की क़ैद मे पड़ता था और कभी पठान उसे घेर लेते थे, सन १७०७ से कि जब औरंगजेब-आलमगीर बादशाह अकबर का पड़पोता मरा सन १७६० अर्थात् शाहआलम के राज्याभिषेक तक तिरपन बरस के अर्से मे नादिरशाह और अहमदशाह छोड़कर चौदह बाद-शाह दिल्लीके तख़्त पर बैठे, और इन मे से यदि मुहम्मद-शाह की सलतनत के तीस बरस निकाल डालो तो तेईस बरस

मे तेरह बादशाह ठहरते हैं अब सोचो जहां तख़्त औ ताज की ऐसी छीनछान मचेगी वहां की सलतनत भी भला क़ाइम रह सकती है? सदा से यही दस्तूर चला आया जब शर्वशक्तिमान् जगदीश्वर देखता है कि अब लोग मेरी प्रजा का पालन नही कर सकते और जिस काम के लिये इन्हे नियुक्त किया था उसे छोड़कर विषय बासना मे पड़ गए, तब तुर्त उन्हें दूर करता है और जो उसके बंदे इस काम के योग्य हैं उन्हे उन की जगह पर बिठलाता है इस मे कुछ सन्देह नही कि जो इस हालत मे अंगरेज़ लोग हिन्दुस्तान को न लेते फ़रासीस अथवा फ़रंगिस्तान की किसी दूसरी विलायत के बादशाह के क़बज़े मे आजाता, और यदि वे भी न लेते तो कोई दूसरी क़ौम सिन्धु पार से आकर इस मुल्क को ज़ेर करती, तैमूर के ख़ानदान से बादशाहत निकल चुकी थी, ईश्वर की कृपा से दिन हिन्दुस्तानियों के अच्छे थे जो अंगरेज़ यहां आए, मानो सूखे हुए खेत फिर लहलहाए। निदान पहले तो हैदरअली के बेटे टीपूसुलतान का सिर खुजलाया कि इन अंगरेज़ों से बैर बिसाहा, और बैठे बिठाए इन के साथ लड़ना विचारा। हैदरअली मैसूर के राजा का नौकर था, नमकहरामी करके उसका सारा मुल्क अपने क़बज़े मे कर लिया, टीपू का यह इरादा था कि अंगरेज़ों को दक्षिण से निकाल दे, और उभारा उसे फ़रासीसियों ने था, कई बरस के लड़ाई झगड़े मे आख़िरकार सन १७९९ मे श्रीरङ्गपट्टन के हल्ले के दर्मियान अंगरेज़ी सिपाहियों के हाथ मारा गया, और मुल्क

उस्का बज़त सा सर्कार के इख़्तियार मे आया। उन्ही दिनों मे सर्कार अंगरेज़ बहादुर को मरहठों की तरफ़ से खटका पैदा ज़वा, फ़रासीसियों को वे भी नौकर रखने लगे थे, लार्ड विलिज़ली साहिब ने जो उन दिनों यहां के गवर्नर जेनरल थे उन के पेशवा बाजीराव से दोस्ती करनी चाही, उस वक़ तो दौलतराव सेंधिया के बहकाने से उसने न माना, लेकिन जब जस्वंतराव ज़ल्कर ने उस पर चढ़ाव किया तो सर्कार से क़ौल क़रार भी किया और बुंदेलखण्ड का इलाक़ा भी देदिया, यह बात सेंधिया को बुरी लगी, उसे चाहा कि नागपुरवाले से मिलकर कुछ फ़साद उठावे, पर इधर लार्ड लेकने डीग लसवारी और दिल्ली, और उधर जेनरल विलिज़ली ने असाई और अरगांव, की लड़ाइयों से इन दोनों के दांत ऐसे खट्टे किये कि सन १८०३ मे नागपुर के राजा ने तो कटक का ज़िला और सेंधिया ने अंतरवेद अर्थात् गंगा जमना के बीच का मुल्क उन को देकर अपना पीछा छुड़ाया इस नए मुल्क के हाथ लगने से अंगरेज़ों की अमल्दारी दिल्ली तक पज़ंच गई। उन दिनों मे शाहआलम सेंधिया की क़ैद मे था, लार्ड विलिज़ली ने उस को उस्की क़ैद से छुड़ाकर गुज़ारे के वास्ते लाख रुपए महीने से कुछ ऊपर पिंशन मुक़र्रर कर दिया। थोड़े ही दिनों बाद नयपालियों ने अपनी हद से पैर निकाला, और पज़ंचते पज़ंचते कांगड़े ; तक पज़ंचे, जब पहाड़ से उतर कर तराई मे अंगरेज़ी रऐयत को सताने लगे तो सर्कार ने उन को भी नसीहत देना मुनासिब समझा, और सन १८१४ मे मलौन के क़िले पर उन की

फ़ौज को शिकस्त देकर कालीनदी से पश्चिम तरफ़ के पहाड़ तो अपने आधीन कर लिये, और पूर्व तरफ़ के उन के पास रहने दिये। यद्यपि बाजीराव ने बिपत के समय अंगरेज़ों से क़ौल क़रार कर लिया था पर दिल से इन के साथ नर्द दग़ा की खेलना चाहता था, छठी नवम्बर सन १८१७ को पूना के दर्मियान रज़ीडंटी से आग लगवा दी, और अंगरेज़ी सिपाही जो थोड़े से वहां रहते थे उन का मुक़ाबला किया। इधर सेंधिया की भी एक चिट्ठी नयपाल के राजा के नाम इस मज़मून की पकड़ी गई, जिस्से उस्की दिली दुश्मनी सर्कार अंगरेज़ के साथ साबित होगई। पिंडारों ने प्राय पच्चीस हज़ार सवार के इकट्ठा होकर सारे मुल्क मे लूटमार मचा रखी थी। हुलकर के कारदार भी सर्कार के दुश्मनों की पच्छ करते थे। अमीरख़ां पठानों के साथ रजपुताने को तबाह कररहा था। यद्यपि सब तरफ़ इस ढब से हलचल पड़गई थी, और सारे हिन्दुस्तान मे फ़साद की आग भड़का चाहती थी, पर लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने जो उस समय गवर्नर जेनरल था, इस होश्यारी के साथ सब का बंदोबस्त किया, और फ़ौजों को इस ढब से चढ़ाया, कि इधर तो सेंधिया को जो सर्कार ने कहा सब मान कर रजपुताने से अपना इख़्तियार बिलकुल उठा लेना पड़ा, उधर मीरख़ां ने अपना तोपख़ाना सर्कार के हवाले कर दिया, इधर बाजीराव पेशवा ने सर्कारी ख़ज़ाने से आठ लाख रुपया सालाना पिंशन लेकर बिठूर मे गंगा सेवन करना स्वीकार किया और उधर हुल्कर की फ़ौज ने महीदपुर मे शिकस्त

खाकर सर्कारी फ़र्मांबर्दारी को जानदिल से मंजूर कर लिया, नागपुर का राजा अपने कसूर की दहशत से मुल्क ही छोड़ भागा, सर्कार ने कुछ थोड़ा सा इलाका लेकर बाकी उस्के वारिसों को बहाल रखा, और पिंडारे ऐसे मारे काटे गए कि नाम को भी बाकी न रहे, जो जीते बचे वे लूटमार छोड़कर खेती वारी करने लगे। निदान सन १८१८ मे यह मरहठों का युद्ध फ़तह फ़ीरोजी के साथ पूरा हुआ, और सब तरफ़ अमन चैन हो गया। काबुल की लड़ाई के समय सिंध के अमीरों ने करांची और ठट्ठा सर्कार को देडालने और सिंधु नदी की राह से महसूल उठा लेने का करार कई बातों के साथ किया था, पर फिर दगा की, और अपने करार से पलट गए, इस लिए सन १८४३ मे सर्कार ने उन को उस मुल्क से खारिज करके वहां बिलकुल अपना कबज़ा कर लिया। सन १८४५ के अंत मे सिक्खों ने सतलज पार उतर कर इन पर चढ़ाव किया, पर जैसा किया वैसा ही फल पाया। पहले तो सन १८४६ मे सर्कार ने उन से केवल जलंधर-दुआब और सतलज के इस पार का मुल्क लिया था, और अपराध क्षमा करके दलीपसिंह को गद्दी पर बहाल रखा था, पर फिर भी जब वे लोग लड़ने भिड़ने और बखेड़ा करने से न हटे, तब सन १८४९ मे सर्कार ने बिलकुल मुल्क ज़ब्त कर लिया, और दलीपसिंह को पंजाब से निकालकर खाने के लिये दस हज़ार रुपया महीना पिंशन मुकर्रर कर दिया। अब इस दम अटक से कटक तक सर्कार ही की अमल्दारी है, और हिमालय से समुद्र पर्यन्त इन्ही

का डंका बजता है, बरन हिन्दुस्तान की असली सर्हद से भी पूर्व और पश्चिम मे अब कुछ कुछ इन की अमलदारी बढ़ती चली है।

अंगरेजों की बराबर तो कभी किसी की याद मे कोई राजा या बादशाह नहीं हुआ, और न किसी ने इन जैसा मुल्क का बंदोबस्त और प्रजा का पालन किया। जिस तरह अब इन की अमलदारी मे यह विलायत आबाद होती चली है, ऐसी कभी नहीं हुई थी, और न इतनी धरती इस देश मे कभी जोती बोई गई। ऐसा यहां कौन राजा हुवा, जो प्रजा से अपने अर्थ कुछ भी कर न लेवे, खज़ाने मे जितना रुपया आवे सब उन्ही के सुख के लिये खर्च करे। किस राजाने जमीदारों के साथ ऐसा पक्का बंदोबस्त किया था, कि जो जमा एक बार उन के साथ ठहर जावे, फिर कभी उस्के सिवा और कुछ उन से न मागे, और बेवपारियों से तिजारत के माल पर महसूल न लेवे। ऐसी सड़कें किस ने बनाई थीं, जिन पर सावन भादों की अंधेरी रात मे बग्गियां दौड़ा करें, इतने पुल किस ने बनाए थे, कि सैकड़ों कोस बराबर चले जाओ पर घोड़े का सुम पानी मे न डूबे। डाक इस तरह की किस ने बैठाई थी, कि ऐसे थोड़े महसूल पर इतनी दूरकी चिट्ठियां और पुलंदे इस कदर जल्द आ पहुंचें। पुलिस का बंदोबस्त किसने ऐसा किया था कि कोस कोस मे सड़कों पर चौकियां बैठ जावें। गरीबों के लड़कों को पढ़ाने के लिये किसने गांव गांव मे पाठशाला बिठाए थे, और किस ने शहर मे कंगालों के लिये दवाखाने बनाए थे।

कब ऐसे छापेखाने हुए जो टके टके पर पोथियां मिलें, और कब किसी राजा ने अपने बंधुओं को इस ढब आदमियों की तरह रखा। किस राजाने ऐसी कचहरी खोली जिस्में राजा पर भी नालिश सुनी जावे, और किसे अपनी रऐयत का माल ऐसा शिवनिर्माल्य समझा कि जो गवर्नर जेनरल भी छटाक भर दूध चाय के वास्ते लें तो उसी दम उस्का दाम ज़मींदार को चुका देवें। देखो जहां भारी भारी जंगल थे और शेर हाथी रहते थे वहां अब बस्तियां बस गईं, जो धरती सदा से बनजर पड़ी थी वह भी अब जोती बोई गई, बिरली ऐसी जगह है जहां खेती लाइक धरती बनजर पड़ी हो, बन तो क्या पहाड़ भी इन की अमल्दारी मे खेती से खाली न रहे। हम लोगों की महारानी क्वीन विक्टोरिया, ईश्वर दिन दिन बढ़ावे प्रताप उनका, इस मुल्क की आमदनी से एक कौड़ी भी नहीं लेतीं; और हुक्म देदिया है कि जितना रुपया कम्पनी का हिंदुस्तान में लगा था उस का वाजिबी सूद देकर बाकी हिंदुस्तान की सारी आमदनी इन्हीं हिंदुस्तानियों की बिहबूदी और बिहतरी के कामों मे लगाओ, जैसे सूर्य पृथ्वी से पानी सोख लेता है और फिर मेह बरसाकर उसी पृथ्वी का भला करता है। ज़मींदारों से जो गांव की जमा मुकर्रर हो गई अब साहिब कलकटर का मक़दूर नहीं जो उन से सेर भर घी भी बिना दाम मांग सके, या एक आदमी भी उन का किसी काम के लिये बिना पैसा दिये बेगार मे पकड़ सकें। चाहे जितना माल मुल्क के एक कनारे से दूसरे कनारे ले जाओ सर्कारी अम-

सूदारी मे एक कौड़ी भी कोई महसूल की न मांगेगा। सड़कें पक्की कंकर और सुरखी पिटी हुई तो कलकत्ते से दिल्ली तक और दूसरे बड़े बड़े शहरों के बीच भी बन हो गई हैं, और बनती चली जाती हैं, पर अब लोहे की सड़कें तयार होती हैं, कि जिन पर धूएं की गाड़ी चला करेगी, और दूसरे दिन मुसाफ़िरों को कलकत्ते से दिल्ली पहुंचावेगी। पुल जहां पक्के बनने कठिन थे वहां लोहे के बना दिये, जो बाक़ी रह गए हैं उस की भी तयारी हो रही है। डाक से चिट्ठी पीछे अब कुल टका महसूल लगने का हुक्म हो गया, चाहो लाहौर से मंदराज भेजो और चाहे बंबई से कलकत्ते मंगाओ। इले-क्ट्रिक टेलिग्राफ, जिस्से तार के ऊपर बिजली दौड़ाकर सूइयों के इशारों से ख़बरें पहुंचा करती हैं तयार हो गई है, उस्से एकही लहज़ में हज़ारों कोस की ख़बर भुगत जाया करती है। शास्त्र से बढ़ावा देकर लिखा है कि रावण असुर अग्नि और पवन से काम लेता था, पर ये सुर तुल्य अंगरेज़ बहादुर जल, अग्नि, पवन, धूंआं बरन बिजली से भी प्रत्यक्ष चाकरी लेते हैं। गाड़ियां माल की अब अकेली कलकत्ते से लाहौर को चली जाती हैं, न सवार साथ है न पियादा, जो सड़क से किसी जगह पर आधी रात को भी हांक लगाओ तो चारों तरफ़ से चौकीदार जवाब देंगे और उसी दम आकार ख़बर लेंगे, सड़क क्या जैसे बाज़ार बस्ता है कहीं चौकी कहीं दूकान, कहीं पड़ाव कहीं सरा कहीं कूआ कहीं तालाब, दुतर्फ़ा दरख़्त इस ख़ूबी से लगे हैं, मानो

पथिक उन बाग़ मे चले आते हैं। पाठशालों मे लड़कों को हिंदी फ़ारसी अ़रबी संस्कृत अंगरेजी बंगला गुजराती मरहटी सब कुछ सर्कार की तरफ़ से पढ़ाया जाता है, और अस्पताल मे बीमारों की ऐसी ख़बर लीजाती है कि बाप बेटे की भी न लेगा। छापेख़ानों मे बहुधा सर्कार भी अपनी तरफ़ से किताब और पोथियां छपवा देती है कि जिससे सस्ती होने से ग़रीबलोग भी उन से फ़ाइदा उठावें। जेलख़ाने मे क़ैदियों के खाने पहन्ने सोने बैठने और मिहनत करने का ऐसा बंदोबस्त है कि जिससे वे क़ैद के सिवा और किसी बात का दुख न पावें, यह नही कि सज़ा तो उन्हे क़ैद की बोली जावे और जेलख़ाने मे वे तड़फ तड़फ कर जान से गुज़र जावें, और मिहनत मे भी उन से ऐसा काम लेते हैं कि जिस के सीखने से वे जनम भर रोटी कमा खावें, और फिर कोई बुरा काम न करें। जिन राजाओं ने इन के साथ लड़ाई की थी उन को भी इन्हों ने इस आराम से रखा है कि शायद वह अपनीं गद्दी पर वैसा आराम न पाते। यदि एक छोटा सा ज़मीदार भी समझे कि सर्कार ने वाजिबी जमा से एक पैसा अधिक लेलिया, उसे इख़्तियार है कि अ़दालत मे सर्कार पर नालिश करे, और यदि आईन कें बमूजिब उस का दावा साबित हो जावे तो सर्कार को उसी दम उस का पैसाख़ज़ाने से निकाल देना पड़ता है। फ़ौज तो क्या जब ख़ुद गवर्नर जेनरल भी दौरे को जाते हैं मक़दूर नही कि कोई किसी ज़मीदार से एक बोझा लकड़ी या घास बिना दाम दिये ज़बर्दस्ती ले सके,

न्याय और इंसाफ़ इसी का नाम है। देखो आगे यह मुल्क कितना बस्ता था और कितना जंगल उजाड़ था। रामचंद्र के अयोध्या से रामेश्वर तक जाने मे बराबर जंगल ही जंगल का वर्णन लिखा है, कि जिन से ऋषी मुनी अथवा भिल्ल इत्यादि रहते थे। कृष्णचंद्र के समय मे भी वृन्दावन वन गिना जाता था, और गोप लोग उसमे शकटों पर रहते थे, जैसे अब भी तातार के आदमी रहते हैं। अकबर के वक़्त तक आगरे के सूबे मे हाथी और चीते पकड़े जाते थे। क्या हुए अब वे सब बड़े बड़े जंगल जिन के नाम और वर्णन पुस्तकों मे लिखे हैं? कौन ऐसा राजा था जो दास और दासी न रखता था, कहो यह कौन न्याय की बात है कि आदमी को जानवर की तरह पकड़ रखें? भिलसा के टोप पर जो दो हज़ार बरस से पहले का बना मालूम होता है, हिंदूराजाओं की लड़ाई का एक चित्र लिखा है, उसमे जहां सिपाही लोग स्त्रियों को दासी बनाने के लिये पकड़ रहे हैं, देखकर बदन कांपता है। खंड खंड के राजा होते थे, अयोध्या मे रामचंद्र और मिथिला मे दस मंज़िल के तफ़ावत पर जनक राज करते थे, देखो महाभारथ मे कितने राजाओं का नाम लिखा है, और फिर ये सब सदा आपस मे लड़ते झगड़ते रहते थे, जहां नित की लड़ाई रहेगी वहां प्रजा की अवश्य तबाही होगी। दो दो हज़ार बरस से अधिक पुरानी मुहर और अंगूठियें पीतल और तांबे की धरती से निकलती हैं, जो उस समय मे धन बहुत था तो ऐसी चीज़ों पर लोग अपना नाम क्यों

खुदवाते थे, वरन उस समय की जो अशरफी भी मिलती हैं तो अकसर हलकी और निरे सोने की (१), पुराणों को पढ़िये और वौधमत के ग्रंथों को देखिये तो अच्छी तरह यह वात खुलजायगी कि राजाओं के भंडार मे और जो सब महाजन साहूकार और कामदार राज से सम्बन्ध रखते थे उन के घरों मे अवश्य सोने चांदी और रत्नों का ढेर लगा रहता था, पर प्रजा ऐसी खुशहाल नही थी जैसी अब है, आगे तालाव के पानी की तरह धन एक जगह मे

---

(१) बहुतेरे ऐसे भी आदमी हैं कि वह कदापि इस वात को न मानेंगे कि आगे इस देश मे धन अब से अधिक न था, तो उन को यह भी समझ लेना चाहिये कि हमारी मुराद उस वात के साबित करने से नही है, हम इस जगह केवल इतना ही सावित करना चाहते हैं, कि यदि इस देश की दौलत घटी भी हो तो उस्के घटने का कारन अंगरेजी अमलदारी नही है। सचकर के मानो जो कभी अंगरेज इस वक्त मे इस मुल्क को न थाम लेते, हम लोगों का कहीं पता न लगता। दौलत जो गई तो महमूदगज़नवी मुहम्मदगोरी और नादिरशाह इत्यादि उसे लेगए। दौलत जो छिपी तो लूट की दहशत से हमी लोगों ने ज़मीन के अंदर छिपाई। दौलत जो नही आती तो फ़रंगिस्तानवालों की वुद्धि और विद्या का वल वढ़ने से और हम लोगों के सुस्त और निरुद्यमी पड़ने से और जहाज़वालों को अमरिका और दूसरे वड़े वड़े टापुओं की राह मालूम हो जाने से अव उस का आना नही होता। आगे वे लोग हमारी वनाई हुई चीज़ें लेजाते थे, अव हमी लोग उन की वनाई चीज़ें मोल लेते हैं। जो हीरा रूई शक्कर नील गर्म मसाले इत्यादि इस देश की पैदा दूसरे देशों को जाती थी, वह अव अमरिका और टापुओं से वहां आती हैं। जो लोग अंगरेज़ी अमलदारी को दौलत घटने का कारण समझते हैं, उन्हें पुराने क़िस्से कहानियों पर ध्यान न करना चाहिये, इस मुल्क की उस हालत को देखें कि जव अंगरेज़ों के हाथ पड़ा, ईरान मे तो अंगरेजी अमलदारी नहीं है, फिर वे लोग क्यों अपने मुल्क को आगे की वनिस्वत अव वहुत दीन और धनहीन समझते हैं? जरा समय के फेर फार पर निगाह करो, कि आगे एशिया और फ़रंगिस्तान मे क्या तफ़ावत था और अव क्या हो गया।

इकट्ठा रहता था, देखने मे तो बहुत पर निरा निकम्मा था; और अब जैसे उसी तालाब को काटकर खेतों मे लेजावें और उन्हें सींचकर अन्न उपजावें, इसी तरह वह धन सब प्रजा के बीच फैलगया, देखने मे तो नही आता पर फल बहुत देता है। शत्रुओं को जब पराजय करते थे बुरी तरह से मारते, योगवाशिष्ठ मे एक कथा के बीच लिखा है कि एक राजा ने कई सौ चोर एक राक्षसी को खिलादिये, यद्यपि यह बात केवल दृष्टान्त के वास्ते हो पर यह साबित है कि आगे चोरी भी बहुत होती थी, और अब सदर निज़ामत का रजस्टर देखो तो भारी जुर्म हर साल घटते जाते हैं। सब राजा एक से नही होते थे, इस्मे सन्देह नही जो कभी कभी कोई युधिष्ठिर विक्रमादित्य और भोज के से अच्छे भी हो जाते थे, पर बहुधा नाच गाने मे रहते और अन्याय भी बहुत करते। देखो रघुवंश मे राजा अग्निवर्ण का क्या हाल लिखा(१) है, जब रामचन्द्र की औलाद मे ऐसे भए तो औरों की क्या गिनती है। कुकर्म भी बहुत होता था, महाराज चन्द्रगुप्त नायन के पेट से थे, अब कोई नायन रखे तो ज़ात बाहर हो, जब राजाने यह काम किया तो प्रजा को ज़िना के लिये कौन सज़ा देता होगा। मुसल्मानों का वक़्त इस्से भी बत्तर था, बादशाह तो बहुधा शराब के नशे मे चूर पड़े

---

(१) महाराज अग्निवर्ण नाच रंग और तमाशबीनी मे ऐसा आसक्त होगए थे, कि प्रजा को उनका दर्शन मिलना भी दुर्लभ हुआ, और जब मंत्रियों ने महलों मे जाकर बहुत सी बिनती की कि महाराज आप के दर्शन की अभिलाषा मे सारी प्रजा बाहर खड़ी है, तो महाराज ने उन के दर्शन के लिए झरोखे की राह अपना पैर बाहर निकाल दिया!

रहते थे, और फ़ौजें उन की लड़ाई के नाम और बहाने से मुल्क को लूटती थीं, जिस राजा नव्वाब या ज़मीदार पर उस का धन धरती अथवा उस की बेटी छीनने के लिये बाद्शाही फ़ौजें चढ़ती थीं, फिर यह हाल होता था कि दूध पीते बच्चे को भी उस इलाके मे जान नहीं छोड़ते थे, और लड़कियों को भी पकड़ पकड़ कर ख़राब करते थे। ख़ुलासतुल्अख़बारवाला लिखता है कि सुलतान रुकनुद्दीन फ़ीरोज़शाह इतनी शराब पीता था कि आख़िर नाचार उस के अमीरों ने उसे क़ैद कर लिया। ज़ुब्दतुत्तवारीख़वाला लिखता है कि सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीनकैक़ुबाद इतनी शराब पीता था, और ऐसा ऐश और तमाशबीनी मे डूब गया था, कि उस की देखादेखी रऐयत को भी सिवाय शराब ज़िना और जूए के कुछ दूसरा शग़ल बाक़ी नहीं रहा, यहां तक कि मस्जिद और मन्दिरों मे ये बातें होने लगी थीं। मआसिररहीमीवाला लिखता है कि मुबारकशाह इस क़दर ऐयाश और ख़राब हो गया था कि क़लम को भी उसका हाल लिखने से शर्म आती है, ज़नानी पोशाक पहन कर रंडियों के साथ अमीरों के घर नाच तमाशा करने को जाता, और अकसर नंगा मादज़ाद दर्बार किया करता। तारीख़ फ़िरिश्तःवाला मुहम्मदशाह दखनी की तारीफ़ यों लिखता है कि उस की सल्तनत मे पांच लाख हिंदू मारे गए, और अहमदशाह दखनी का हाल यों बयान करता है, कि जब उस ने विजयनगर के राजा पर चढ़ाव किया तो पहले उस की रऐयत को क्या मर्द क्या औरत और क्या बच्चे सब को

और हसरत के साथ उन दिनों को याद करते हैं, हमा
समझ से वे सब मिलकर एक अर्ज़ी इस मज़मून की लि
और महारानी विक्टोरिया के चरण कमलों मे भेजें, ि
आप चौथाई मुल्क तो अगले बादशाहों की तरह जागीर
उन निकम्मे निरुद्यमी बेइल्म आदमियों को मुआफ़ क
दीजिए कि जो बहुधा इस देश मे राजा बाबू और अमी
कहलाते हैं, जिस्से वे बेफ़िकर होकर नाच रंग और भांड
का तमाशा देखें, और अपनी तोंद के बोझ के सिवा मे
आध सेर सोने चांदी और जवाहिरात का भी बोझ अप
बदन पर बढ़ावें, और बाकी तीन हिस्से की आमद
अपने तोशेखाने मे दाखिल कीजिए। शाहजहां की तर
एक तख़्तताऊस बनवाइये, जिस्मे जौहरियों को फ़ाइद
हो। नौकरों की तनखाहें बढ़ा दीजिये, और जब वे म
तो अगले बादशाहों की तरह उन का सारा घरबार ज़ब्
कर लीजिये, हैदराबाद के नव्वाब के यहां तो अब तक भ
यही दस्तूर जारी है। राजाओं को हुक्म दीजिए अपन
सुन्दर सुन्दर बेटियां जिस तरह दिल्लीके बादशाहोंको दे
थे अब आपके शाहज़ादों के वास्ते भेज देवें, और गवर्न
जेनरल को फ़र्माइये महाजन और भलेमानसों की अच्छ
अच्छी औरतें चुनकर नव्वाबों की तरह आप के वा
लौंडियां हाज़िर कर, और जो उन औरतों को उन्
देखना मंज़ूर हो, हुक्म देवें कि गवर्मिंटहौस मे बादशा
ज़माने की तरह लेडी साहिब के लिये मीनाबाज़ार ल
जब लोगों की बहूबेटियां आवें लाटसाहिब भेस बदल

सब को परख लेवें, खुद अकबर यह काम करता था। नादिरशाह की तरह एक दो शहर क़त्ल करवाइये, औरंगज़ेब की तरह आप भी सब मंदिर और मसजिदों को तुड़वाकर उन के मसाले से अपने मत के गिरजा बनवाइये और हिंदू और मुसल्मानों को ज़बर्दस्ती अपने मज़हब मे लाइये, और जो बाक़ी रहें उन से मुसल्मान बादशाहों की तरह जो अकबर से पहले हुए थे जिज़ये का रुपया वसूल कीजिये। बादशाह राजा और नव्वाबों को जिन्हें उन के मुल्क से ख़ारिज किया अब आप लाखों रुपए क्यों पिंशन देती हैं, जिस्तरह उमरखिलजी फ़र्रुखसियर अहमदशाह इत्यादि दिल्ली के बादशाहों की आखें निकाली गई थीं आप भी इन की आखें निकलवा लीजिए, अथवा पोस्त या नमक का पानी पिलवाकर जान ही ले डालिये। लाखों रुपया सूद का आप इन महाजनों को क्यों देती हैं, मुहम्मदतुग़लक़ की तरह तांबे का रुपया चलाकर क्यों नहीं उन का बिलकुल क़र्ज़ा अदा कर देतीं, अथवा जिस तरह पेशवा के कहने बमूजिब सेन्धिया ने अपने दीवान घाटक्या की लड़की के व्याह का ख़र्च वसूल करने को उसे पूना मे भेज कर वहां के महाजनों को गर्म तोप मे बांध बांध रुपया वसूल किया था आपभी हमलोगों से उगाह लीजिये। नाव डूबने का तमाशा देखने के लिये आप भी सिराजुद्दौला की तरह एक दो गुज़ारे की कश्तियों का बीच धारा मे तख़्ता खुलवा दीजिये, डाक की क्या ज़रूरत है जिसे काम होगा अगले ज़माने की तरह अब भी क़ासिद के हाथ चिट्ठी रवानः

करेगा। सड़क और पुल तुड़वा दीजिये, और चौकी पहरा बिलकुल उठवा लीजिये, बरन इख़्तियार दे दीजिए कि पिण्डारों की औलाद से जो जीते हों फिर वही अपने बाप दादों का पेशा इख़्तियार करें, जिस्से लोग आगे की तरह अब भी एक शहर से दूसरे शहर में न जा सकें, और जांय तो क़ाफ़िला बांधकर और सवार सिपाही साथ लेकर, माल की बीमा बिकेगी, सिपाहियों का रुज़गार खुलेगा, बीमा लेने वाले महाजनों को फ़ाइदा होगा, और आप को भी मरहठों की तरह पिंडारों से लूट के माल की चौथ हाथ लगेगी। सिपाह की तनख़ाह बादशाहों की तरह बरस छ महीने चढ़ाकर बांटिये, जिस्से वे रुपया क़र्ज़ लेवें तो महाजनों को पांच सात रुपये सैकड़े से भी अधिक सूद मिले, और बहुत तंग होंगे तो अगले ज़माने की तरह अब भी बज़ार लूटकर अपना काम चला लेंगे। पाठशाला सब बर्ख़ास्त कीजिये, ग़रीबों को आगे कब किसे पढ़ाया था, न ये पढ़ेंगे न अपना भला चाहेंगे, न ये तवारीखें देखेंगे न बुरी भली अमल्दारी का फ़र्क़ कर सकेंगे। छापेख़ाने बंद कीजिये जिस्से किताब महंगी हों, और लेखकों की रोज़ी खुले। अस्पताल मौक़ूफ़ कीजिये जिस्से वैद हकीमों को दो पैसे मिलें, और जब उन की दवा किसी बीमार को फ़ाइदा न करे, तो सुल्तान आदिलशाह बीजापूर के बादशाह की तरह क़त्ल करवाइए, और हाथी के पैरों से पिसवाइये। ज़मीदारों से जमा आगे किसे मुक़र्रर की थी, जो जिस्के पास देखिये ले लीजिये, ये तो आप की रऐयत हैं,

इन को बेगार मे पकड़िये, इन से अपनी खिदमत लीजिए, सर्कारी मकानात बनवाइये, सिपाहियों का बोझ ढुलवाइये, बाग लगवाइये, निदान जिन सब सर्कारी कामों मे आप अब रुपया खर्चती हैं, वह सब अगले बादशाहों की तरह ज़मींदारों से मुफ्त मे लीजिये, आप केवल अपने अमीरों को खुश रखिये, और चैन से ऐश कीजिये, और ये करोड़ों ज़मींदार तो आप की रऐयत गुलाम हैं, आप ही के वास्ते ईश्वर ने इन्हें बनाया है, इन्हे जो चाहिए सो कीजिये, और जो आप को यह ख्याल हो कि कलकत्ते के बाबू लोग जो कुछ थोड़ा बहुत अंगरेजी पढ़गए हैं हमारी बदनामियां अखबारों मे छापेंगे, तो एक दो को उन मे से अगले बादशाहों की तरह कान मे सीसा पिला दीजिये, या खाल खिचवाकर भुस भर दीजिये, और हिंदुस्तानी कवि भाट और शाइरों को ज़मीन दुशाले और सोने के कड़े बख़्शिये, ये आप की तारीफ मे ऐसे ग्रंथ बनावेंगे कि फिर लोग सिकंदर और नौशीरवां को भूलकर कयामत तक आप ही का नाम नेकी के साथ स्मरण करेंगे,और आपही का यश गावेंगे। निदान महारानी साहिब जो हिंदुस्तान की कमनसीबी से यह अर्ज़ कबूल करलें तो फिर भी अगला ज़माना आ सकता है, और जो इंसाफ के रू से यह हुक्म सदावें कि हम अमीरों के साथ कदापि वह बात न रखेंगे जो अगले बादशाह रखते थे, नहीं तो वे भी उसी तरह हमारा गला काटेंगे, जैसे अगले अमीरों ने अगले बादशाहों का गला काटा था, और हम अपनी हिंदुस्तान की रऐयत के

साथ वही सुलूक करेंगे, कि जैसा अपनी इंगलिस्तान की रऐ.यत के साथ सुलूक करते हैं, जिसे जैसा अंगरेजी रऐ.-यत हम को हमारे सब कामों मे मदद देती है, उसी तरह हिंदुस्तानी रऐ.यत भी देवे, तो फिर अब कभी उस अगले ज़माने के मुह देखने की दिल मे उमेंद न रखनी चाहिये, क्योंकि सर्कार अंगरेज़ बहादुर का बंदोबस्त ऐसा कच्चा नही है जो किसी तरह से हिल सके। हमने इस बात की बड़ी खोज की कि जो लोग सर्कार कम्पनी की अमलदारी को अच्छी नही कहते और पुराने वक़ों को याद करते हैं उन से इस बात का सबब दर्याफ़्त करें, पर जो जो सबब उन लोगों ने बयान किये सब के सब नामाक़ूल मालूम हुए, क्योंकि पहले तो वे कहते हैं कि इस अमलदारी मे ज़मीन का ज़ोर घटगया, अन्न कम पैदा होता है, दूसरे आगे की बनिस्बत अब सर्कार महसूल ज़ियादः लेती है, तीसरे तिजारत मे फ़ाइदा न रहा, चौथे हिंदुस्तानियों को बड़े उहदे नही मिलते, ऐसे काम पर अंगरेज़ही भरती होते हैं। हमने जो आईन अकबरी की किताब खोली और हिसाब किया तो मालूम हुआ कि अकबर के वक़ मे जो सबसे अच्छा बादशाह था भली से भली एक बीघे धरती मे जो साठ मुरब्बा इलाही गज़का गिना जाता था (१) आठ मन साढ़े सत्तरह सेर गेहूं की पैदावारी पड़ती थी, इससे अधिक नही होती थी। हम जानते हैं कि शुरू अंग-

(१) इकतीस अंगल का एक इलाही गज़ होता है।

रेज़ी अमलदारी मे जब लोगों ने लूटमार से बचाव पाकर बहुतेरी ज़मीन जो हज़ारों बरस से बनजर पड़ी थी जोत ली है उस मे अब पहली सी पैदा न होने से ज़मीदार हाकिम को दोष देते हैं, यह नहीं समझते कि जो ज़मीन बराबर हर साल बोई जायगी उस्का ज़ोर अवश्य घट जायगा, आगे अव्वल तो नित के लड़ाई झगड़ों से ऐसे बहुत कम खेत थे जो बराबर पांच सात बरस बोए जाव, दूसरे बादशाह कच्चा बंदोबस्त रहनेके कारन जिस साल खेत बोआ जाता था उसी साल पूरा महसूल लेते थे नहीं तो तख़फ़ीफ़ करदेते थे, अब लड़ाई झगड़े की बिलकुल दहशत उठगई, सर्कार ने ज़मीदारों का फ़ाइदा समझ कर कार्दारों की लूटमार से बचाने के लिये बड़ी बड़ी मुद्दतों का पक्का बंदोबस्त करदिया, अब ज़मीदार आंख बंद करके हर साल बराबर एक ही तरह से अपने खेतों को बोते चले जाते हैं, यदि इंगलिस्तानियों की तरह फ़सल की बदली करें, और बारी बारी से खेत को बनजर छोड़ें, जैसा इस विषय की किताबों मे लिखा है, तो कदापि धरती का ज़ोर न घटे। नौ दस बरस का अर्सा गुज़ता है कि आगरे की गवर्नरी मे २२९९९०७६ एकर (१) धरती बोई जाती थी और अब २४४५०२२८ एकर बोई जाती है भला जहां दस बरस के अर्से मे १४५११५२ एकर धरती नई जोती बोईजावे, वहां यह बात क्योंकर कही जा सकती है कि आगे की बनिस्बत अब किसानों को फ़ाइदा कम है।

---

(१) कुछ कम दो बीघे का एक एकर होता है।

महसूल यद्यपि अकबर के वक्त से ऐसी जमीन पर फी बीघे केवल दो मन कुछ ऊपर सवा छ सेर गेहूं अथवा उस्का दाम लिया जाता था, पर बेगार बेतरह थी, उत्तराखंड इत्यादि देशों के रजवाड़ों मे जहां अब तक ज़मीदारों से बेगार लीजाती है, यदि बेगार मौक़ूफ़ हो खुशी से दूना महसूल-देनेको राज़ी हैं, पस सोचना चाहिये कि बेगार से कितना नुक़सान था, सिवाय इस्के कश्मीर के इलाक़े मे आधी आधी बटाई होती थी, और अकबर कारीगरों की बनाई चीज़ों पर पांच रुपया सैंकड़ा लेता था, और जो महसूल कि साबिक़ से जारी थे और अकबर ने मौक़ूफ़ किये उन की तफ़सील नीचे लिखी जाती है, भला इन महसूलों के बोझ से क्योंकर न रऐयत पिसती होवेगी, जहांगीर और शाहजहां तो अकबर की राह पर चले थे, पर औरंगज़ेब के वक़्त से फिर बहुतेरे महसूल जारी होगये।

तफ़सील महसूलों की जो अकबर ने मौक़ूफ़ किये।

१ जिज़या
२ परवानराहदारी
३ मीरबहरी
४ करहिंदूयात्रियों से
५ गावशुमारी
६ सरदरख़्ती
७ पेशकश
८ पेशेवालों से
९ दारोग़ाना
१० तहसीलदारी
११ फ़ौतहदारी
१२ वजहकिराया
१३ खरीतिया
१४ सर्राफ़ी
१५ हासिलबाज़ार
१६ आबकारी
१७ नमक
१८ चूना
१९ महुए
२० मकान की खरीद फ़रोख्त
२१ मवेशी की खरीद फ़रोख्त

तिजारत में फ़ाइदा इसी लिये नहीं होता कि हमारे मुल्क के आदमी जहाज़ पर नहीं चढ़ते, यदि ये जहाज़ों

पर सवार होकर तिजारत के लिये दूसरे मुल्कों मे जावें नि-सन्देह ये भी वही फ़ाइदा उठावें कि जो इन की बदल फ़रंगी उठाते हैं (१)। रहगया चौथा उज़्र सो उस का यह हाल है कि जो रुपया अंगरेज़ों को तनख़ाह और पिंशन मे दिया जाता है, वह हम भी मानते हैं कि इस मुल्क को अवश्य घाटा पड़ता है, पर यदि हम से सर्कार सलाह पूछे तो हम यही कहेंगे कि जिन कामों पर अब हिंदुस्तानी नौकर हैं उन पर भी अंगरेज़ मुकर्रर कीजिये। सर्कारी आईन को इन्ही हिंदुस्तानियों ने बदनाम किया, मजिस्ट्रेट कलक्टर से कोई नही दुख पाता, जो रोता है सो इन्ही अमले पुलिस और सरिश्तेदारों के नाम को रोता है। कौन ऐसा बेवक़ूफ़ है जो इन थानःदारों को मजिस्ट्रटी और सरिश्तेदारों को कलक्टरी मिलने की दुआ मांगे। हमारे मुल्क के आदमी अव्वल तो रिशवत लेना ऐब नही समझते, परम्परा से यह बात चली आई है, दूसरे हिंदू को काम मिला तो मुसल्मान को सताया, मुसल्मानों को इख़्तियार हुआ तो हिंदुओं से खार निकाला, पस पहले हिंदुस्तानियों को चाहिये कि अपने तईं उन कामों के लाइक़ बनावें, जिन के मिलने की उमेद रखते हैं। रुपये के रहने से राज्य का सुशासित होना अधिक वांछित है, जो प्रजा को चैन मिलेगा तो रुपया बहुत हो रहेगा,

---

(१) ऋग वेद की पहली ही संहिता के देखने से साफ साबित है कि आगे हिंदू लोग जहाज़ पर सवार होते थे और समुद्र मे जाना ऐब नही समझते थे।

और जो मुल्क ही में बखेड़ा रहा तो फिर नादिरशाह सरीखे बरसों की इकट्ठा की ऊई जमा पूंजी एक ही दिन में झाड़ बुहार कर लेजायगे। जो लोग हमारे सुख के प्रयोजन इतना परिश्रम करते हैं, वह जो अपनी वाजिबी तनख़ाह लेजायें तो इसे क्यों बुरा मानना चाहिये। बाज़ आदमी यह भी कहते हैं कि अंगरेज़ी अमल्दारी में दीवानी और फ़ौजदारी का बंदोबस्त अच्छा नहीं, उन्हों ने शायद पुरानी तवारीखें नहीं देखीं, फ़ौजदारी के बाब में तो राफ़फ़िच साहिब जो सन १५८३ में शाहइंगलिस्तान का ख़त अकबर के नाम लाए थे लिखते हैं कि बनारस और पटने के दर्मियान इस तरह रास्ता लुटता था कि जैसे अरब लोग अपने मुल्क के जंगलों में डाका डालते हैं, बरन ख़ुद अकबर का वज़ीर एक जगह से हिंदू फ़कीरों की बेवक़ूफ़ी दिखलाने के लिये लिखता है कि एक साल प्रयाग के मेले में साधु संतों के दो झुंड गंगा में पहले नहाने के लिये तकरार कररहे थे, बादशाह भी वहां मौजूद था, समझाया, उन लोगों ने उसका समझाना न माना, झुंझलाकर ऊक्म देदिया कि दोनों जी खोल के लड़, आप तमाशा देखता रहा, यहां तक कि बऊतेरे आदमी उन में से कट गए, वाह रे अकबर तेरा इंसाफ़। धन्य अंगरेज़ कि हरिद्वार के कुंभ के मेले में मक़दूर नहीं कि कोई म्यान से तलवार निकाले, और दीवानी के बाब्ते एक मोतबर तवारीखवाला लिखता है, कि एक रोज़ किसी लड़के ने शाहजहां के पास नालिश की, कि मेरी मा के पास तीन लाख रुपया है,

और मुज को कुछ नही देती, बादशाह ने उस की बुढ़िया माको बुलाकर हाल दर्याफ्त किया, उसे साफ़ कहदिया कि तीन लाख रुपया बेशक है, पर जब लड़का होशयार होगा दूंगी अभी ख़राब करेगा, बादशाह ने हुक्म दिया कि लाख रुपया लड़के को दे, और लाख रुपया अपने खाने को रख, इस क़दर तुम दोनों के लिये काफ़ी है, और बाक़ी लाख रुपया बादशाही ख़ज़ाने मे दाख़िल करदे। जब मुक़द्दमा फ़ैसल होचुका और हुक्म कागज़ पर चढ़गया, बुढ़िया बहुत घबराई और चालाकी करके बादशाह से अर्ज़ की, कि करामात लड़के को तो लाख रुपया वाजिबी दिलवाया, मेरा पति उसका बाप था, पर आप का मेरा पति कौन होता था जो बराबर का तरका लेते हैं इतनी बात मिहर्बानी करके बतला दीजिये, कि जिस्से आगे को इस रिश्तेदारी की ख़बर रहे। बादशाह अपने मन मे लज्जित हुआ और हंस के उसका रुपया उलटा दिलवा दिया। तवारीख़वाले ने तो यह बात शाहजहां की तारीफ़ मे लिखी है कि एक एक बुढ़िया उस तक पहुंचकर अपने दिल की कह सकती थी, पर इस बहाने से बादशाह की नीयत और अदालत का आईन बख़ूबी प्रकट होगया। अब तक भी गुजरात की तरफ़ हिंदुस्तानी अमलदारियों मे यह दस्तूर जारी रहा है कि जब किसी को किसी से रुपया वसूल करना होता तो भाटों को जिन का वहां यही काम है कुछ देकर उस के घर धरना बिठलाता, और उस बेचारे के पास उस वक़्त देने को न होता तो बहुत फ़ज़ीहत करता, यहां तक कि वे

ब्राह्मण अपना लहू उसके दर्वाजे पर छिड़कते, वरन कई बार ऐसा हुआ है कि अपने घर से किसी बुढे या बुढिया को लाकर उसके दर्वाजे चिता पर बिठलाकर जला दिया है। जो वहां अदालत अच्छी होती तो यह नौबत क्यों पहुंचती। हम यह बात कुछ अंगरेजों की खुशामद या उन की झूठी तारीफ़ की राह से नहीं लिखते कि जैसा अकसर ग्रंथकारों ने अपनी पुस्तकों के बीच स्लोक कबित्त शैर और कसीदों मे उन्हें सूर्य से अधिक तेजस्वी और आकाश से अधिक ऊंचा इत्यादि बढ़ावा दिया है, हमने तो केवल अगले राजा और बादशाहों का जो कुछ हाल पुरानी किताबों मे देखा या लोगों के ज्ञानवृद्धि के कारन इस जगह मे दर्ज करदिया, यदि किसी को उसमे संदेह हो पुरानी तवारीखों से मिलान करले।

यह भी जान लेना चाहिये कि सन १८५८ में श्रीमती महारानी इङ्गलैंडेश्वरी क्वीन विक्टोरियाने इस मुल्क का इंतिज़ाम कम्पनी से लेकर अपने एक वज़ीरके सपुर्द कर दिया, और उसकी मददके वास्ते बारह आदमियों की एक कौंसल भी मुकर्रर करदी, यह वज़ीर सेक्रिटरी-अव-स्टेट-फ़ार-इंडिया कहलाता है, और उस कौंसल का नाम कौंसल-अव-इंडिया कहाजाता है। कम्पनीको अब सिवाय उस रुपये का जो इस मुल्क में लगाया था सूद लेनेके और कुछ भी इस मुल्कसे इलाक़ा न रहा, बंदोबस्त और इंतिज़ाम बिलकुल वज़ीर के इख़तियार मे आगया वही सब साहिब लोगों को इस मुल्क के उहदों पर मुकर्रर करके वहां से भेजता है,

और यहां गवर्नर जेनरल को कौंसल के साथ एक राय होकर मुल्क के बंदोबस्त और इंतिज़ाम का बिलकुल इख्तियार देरखा है। गवर्नर जेनरल से नीचे मंद्राज और बंबई के गवर्नर अपनी अपनी कौंसलों सहित और आगरे और पंजाब बंगाले के लेफ्टिनंट गवर्नर मुकर्रर हैं, और फिर सिवाय पंजाब के उन चारों गवर्नरों के नीचे चार सदरदीवानी और सदरनिज़ामत अदालत और चार ही बोर्ड-अव-रवन्यू और फिर उन के ताबे ज़िले ज़िले मे कमिश्नर जज मजिस्ट्रट् कलकृर इत्यादि अपने अपने काम पर नियुक्त हैं। पंजाब मे सदर के बदल जूडीशल कमिश्नर और बोर्ड की एवज़ फिनांशल कमिश्नर मुकर्रर हैं, और कमिश्नर के नीचे ज़िले के हाकिम डिपटी कमिश्नर कहलाते हैं। सिवाय इस के कलकत्ते बम्बई और मंद्राज मे उन तीनों शहर के दीवानी फ़ौजदारी के मुकद्मे और जो नालिशें कि असली अंगरेज़ों पर दाइर हों सुन्ने के वास्ते एक एक सुप्रीमकोर्ट की कचहरी भी बादशाह की तरफ़ से मुकर्रर है, और उसे तीन तीन जज बैठते हैं। फ़ौज के सेनापति अर्थात् कमांडरिंचीफ़ साहिब इंगलिस्तान से मुकर्रर होकर आते हैं। कलकत्ता मंद्राज और बम्बई तीनों हातों मे तीन कमांडरिंचीफ़ रहते हैं, पर कलकत्तेवाले का हुक्म दोनों पर गालिब है।

सन १८५३ मे सर्कारी फ़ौज सब मिलाकर इस मुल्क मे प्राय अढ़ाई लाख हिंदुस्तानी और पचास हज़ार गोरे थे, और बत्तीस हज़ार सिपाही कांटिंजंट की फ़ौज मे भरती

थे, कांटिंजंट वह है जिसका खर्च हिंदुस्तानी रईसों के यहां से मिलता है और वे उन को हिफाज़त के लिये उन्हों के इलाकों मे रहते हैं, लेकिन अब गोरे बहुत बढगए, अस्सी हज़ार से कम नहीं हैं, और उनकी एवज़ में हिंदुस्तानी सिपाह घटगई, बरन ऐसी तजवीज़ हो रही है कि यह भी अस्सी हज़ार रहे।

आमदनी इस मुल्क की आय तीस करोड़ रुपया (१) सालाना सर्कारी खज़ाने मे आता है, और अनुमान नब्बे करोड़ रुपया सर्कार को लोगों का देना है कि जिस के वास्ते सर्कार ने प्रामिसरी नोट अर्थात् तमस्सुक लिख दिये हैं, और साढे पांच रुपये से साढे तीन रुपये सैकड़े तक सालाने के हिसाब से छठे महीने सूद दिया करती है। कम्पनी इस मुल्क की आमदनी से केवल उतने रुपए का वाजिबी सूद लेलेती है, कि जो उसने पहले ही पहल इस मुल्क मे अपनी गिरह से लगाया था, उस्से सिवाय उसे एक कौड़ी भी लेने का हुक्म नहीं, और न बादशाह इस मे से एक कौड़ी लेता है, यह सारा रुपया इसी मुल्क के कामों मे खर्च होता है (२)।

---

(१) सन १८६० मे सैतीस करोड़ होगया।

(२) सोलहवीं दिसम्बर सन १८५२ को जो गवर्नर जेनरल बहादुर ने बाबत सन १८५२—५३ अर्थात शुरू मई सन १८५२ से आखिर अप्रैल सन १८५३ तक एक साल की आमदनी और खर्च का तखमीना बांधकर मंजूरी के वास्ते इंगलिस्तान को रिपोर्ट भेजा है उसका खुलासा नीचे लिखा जाता है।

	आमदनी	ख़र्च
बंगाला	११४४७१८४५	१२९३८११२७
आगरा व पंजाब	७६६५१०००	३१८२५३००
मंदराज	५२६२२८२०	४९७६८६६०
बम्बई	४८५३६८६१	५२२००१६४
इंगलिस्तान	०	२४१५७८५४
	२९२२२८५२५	२८७३३३११५

और तीसरी जून सन १८५२ को जो इंगलिस्तान से गवर्नर जेनरल बहादुर के नाम चिठी आई थी उस्से सन १८५०—५१ की आमदनी और ख़र्च का ब्रेवरा लिखते हैं।

आमदनी		ख़र्च	
धरती बाबत	१४२८२९६८०	तहसील बाबत	२००१३०९९
महसूल	१९७४५५६०	अदालत	१९५८२६०४
नमक	१७२४४९८०	महसूल	२०२७७३९
अफ़यून १८५१—२	२६८७८१८४	कश्ती व जहाज़	४७१३४७३
साइर व आबकारी	१०४९९८४०	फ़ौज	१००९५६०४०
स्टाम्प डाक कर टकसाल व तमाकू	१५७१०९८३	सूद तमस्सुकों का	२२२३८९१८
		सूद इंगलिस्तान मे	४७४५६८५
लाहौर सिंध बरहां व टापू	१९१०००००	पिंशन इमारत और विद्यालय	४४८५२०८८
		मुतफ़र्रिक़ात गैर मामूली	२५५४८८६२
	२५१४७९२२७		२५१९७९२२७

तीसवीं अपरैल सन १८५२ को सर्कारी खज़ानों मे नक़द रोकड़ मौजूद १५२३९६०४४।

बंगाल हाता।

निदान मुजमल बयान तो हिंदुस्तान का होचुका, अब उस के जुदा जुदा ज़िलों का कुछ बखान करते हैं। जानना चाहिये कि इस मुल्क के तीन खंड गिने जाते हैं, जितना हिमालय के पहाड़ों से बसा है वह तो उत्तराखंड कहलाता है, और जो नर्बदा और महानदी से दक्षिण है वह दाक्षि-णात्य अर्थात् दक्षिण देस अथवा दखन कहा जाता है, इन दोनों के बीच आर्यावर्त है उसी को पुण्यभूमि भी कहते हैं। हिंदुस्तान का दक्षिण भाग अंतरीप है, क्योंकि वह पूर्व पश्चिम और दक्षिण तीनों तरफ़ समुद्र से घिरा है। मुसल्मान बादशाहों ने अपनी बादशाहत में इस मुल्क को बाईस सूबों में विभाग किया था, परंतु उन में से काबुल कंदहार और ग़ज़नी तो इस विलायत से बाहर हैं, और दक्षिण देस के कितने ही ज़िले उन के दख़ल में न रहने के कारन उन सूबों में गिने ही नहीं गए थे, सिवाय इस के उन सूबों की हदें अब ऐसा बदल गई हैं कि कुछ तो एक के पास हैं और कुछ दूसरे के हाथ चले गए, इस लिये हम उन सूबों का ख़याल छोड़कर और इस मुल्क को अंगरेज़ी और हिंदुस्तानी अमल्दारी में भाग देकर उन के एक एक ज़िलों का उस क्रम से बयान करते हैं कि जो अब बर्ते जाते हैं। अंगरेज़ी अमल्दारी में तीन हाते हैं, बंगाल हाता, बंबई हाता, और मंदराज हाता। बंगाल हाते में कर्मनाशा नदी तक के ज़िले तो बंगाले के लेफ़्टिनंट गवर्नर के तहत में

हैं, फिर जमना तक पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ़्टिनंट गवर्नर के ताबे, जमना के पार उत्तर मे लाहौर के लेफ़्टिनंट गवर्नर का इख़्तियार है, और गंगा पार अवध के इलाक़े मे वहांके चीफ़ कमिश्नर का।

पश्चिमोत्तर देश की लेफ़्टिनंट गवर्नरी।

पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ़्टिनंट गवर्नर के तह्त के जो ज़िले हैं उनमे—१—इलाहाबाद सदर मुक़ाम (१) इलाहाबाद जिस का असली नाम प्रयाग है २५ अंश २७ कला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ५० कला पूर्वदेशांतर मे ७२००० आदमियों की बस्ती गंगा और जमना के बीच जहां उन दोनों का संगम हुआ हिंदुओं का बड़ा तीर्थ हैं। यह बादशाही जमाने मे इसी नाम के सूबे की राजधानी था अब पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ़्टिनंट गवर्नर बहादुर की राजधानी है। गंगा और जमना दोनों बड़ी नदियों के संगम होने से और तीसरी सरस्वती का संगम भी जो आंखों से दिखलाई नही देती पर शास्त्र मे इसी जगह लिखे रहने से उस्को त्रिवेणी भी कहते हैं, और सब तीर्थों का राजा मानते हैं। मकर की संक्रांत को बड़ा भारी मेला होता है, लाखों यात्री आते हैं। क़िला बहुत मज़बूत है, एक तरफ़ उस के जमना और दूसरी तरफ़ गंगा मानो उस्की खाई हो गई हैं। सर्कार की तरफ़ से

(१) ज़िले का सदर मुक़ाम उस्को कहते हैं जहां हाकिम रहे और कचहरी हो

उस की बड़ी तयारी रहती है, और मेगज़ीन भी उस मे रक्खा गया है इस क़िले के अंदर एक तलघरे मे बड़ के दरख़्त की जड़ है, हिंदू उसे अक्षय बट कहते, और बहुत मानते हैं। तवारीखों से ऐसा मालूम होता है कि आगे गंगा जमना का संगम ठीक उस बड़ के नीचे था, और जो लोग त्रिवेणी मे डूबकर मरना चाहते थे वे उसी बड़ पर चढ़कर कूदते थे, शायद किसी बादशाह ने इस बात के बंद करने के लिये उसे कटवा डाला, और समय पाकर दर्या भी वहां से हटगया। उसी क़िले से ४२ फुट ऊंची एक पत्थर की लाट अर्थात् शिलास्तम्भ जिसे वहां के ब्राह्मण बहुधा भीमसेन का सोंटा कहते हैं दो हज़ार बरस से अधिक पुरानी है, उस्पर मगध देश के महाधार्मिक राजा महाराज प्रियदर्शी अर्थात् अशोक का एक अनुशासन अर्थात् हुक्मनामा पाली भाषा मे जो मागधी से मिलती है पुराने पाली अक्षरों के दर्मियान खुदा हुआ है। इस्से अधिक पुरानी लिपि इस भारतबर्ष मे और कोई नहीं। जेम्स प्रिं-सिप साहिब इन अक्षरों को पढ़कर उन की एक वर्णमाला बना गए हैं, अब उस वर्णमाला की सहाय से जो कोई चाहे इस प्रकार के अक्षर पढ़ सकता है। निदान उस लाट पर इन पाली हर्फ़ों मे उस समय के राजा अशोक का हुक्म यह खुदा है, कि मैंने अहिंसा को परम धर्म माना और इसी धर्म को अंगीकार किया, मेरी प्रजा भी सब ऐसा ही करे, और फिर किसी पशु को न बधे, दया दान सत्य शौच का पालन करे, और चण्डत्व नैष्ठुर्य क्रोध मान ईर्ष्यादि

पाली अक्षरों की वर्णमाला

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व

ह स अ आ इ उ ऊ ए ऐ ओ मा गि धी चु छू दं धै मौ स्य

से दूर रहे। पुराणों मे इस अशोक को महाराज चंद्रगुप्त का पोता कहा है, और जैन शास्त्र मे बौध पुस्तकों की तरह उस्की बड़ी प्रशंसा लिखी (१) है। यह सन ईसवी से कुछ न्यूनाधिक अढ़ाई सौ बरस पहले राज सिंहासन पर बैठा था। इस तरह के शिलास्तम्भ दिल्ली इत्यादि और भी कई स्थानों मे हैं, और उन पर भी यही धर्मलिपि इसी राजा की आज्ञा से इन्ही अक्षर और भाषा मे खुदी है। फ़ारसी इत्यादि अक्षर जो उसपर हैं वह पीछे से खोदे गए हैं। सरा इलाहाबाद की पक्की और बहुत बड़ी है, और उसी से लगा हुआ सुलतान खुसरो का मक़बरा बना है —२—मिर्ज़ापुर इलाहाबाद से अग्निकोन की तरफ़। यह ज़िला बहुत सा विंध्य के पहाड़ों से आच्छादित है। सदर मुक़ाम मिर्ज़ापुर ७५००० आदमियों की बस्ती जो इस समय बड़े बेवपार और तिजारत की जगह है इलाहाबाद से ४५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे (२) पर बसा है मिर्ज़ापुर से तीन कोस पर एक झरना बीस गज़ ऊंचे पहाड़ से गिरता है बरसात मे वह जगह

---

(१) बौध और जैनियों की पुस्तक मिलाने से और पुराने मंदिर और मूर्त्ति के देखने से इस बात मे कुछ भी संदेह बाक़ी नही रहता कि किसी समय मे यह दोनों मत एक थे थोड़े दिनों से भेद पड़ा है।

(२) जिधर नदी बहती हो उधर उस्का मुंह मानकर दहने और बांए कनारों का भेद विचार लेना चाहिये जैसे नर्मदा पूर्व से पश्चिम को बहती है तो दक्षिण के देश उस के बांए कनारे पर और उत्तर के देश दहने कनारे पर पड़ेंगे और यह नदी पश्चिम से पूर्व को बहती है तो दक्षिण के देश उस्के दहने कनारे पर और उत्तर के देश बांए कनारे पर पड़ेंगे।

बौधमत का स्लोक जो सारनाथ की धमेख मे मिला था

१ येधर्म्महेतुप्रभवाहेतुतेषांतथागताह्यवदत्तेषांचयोनिरोध
एवंवादीमहाश्रमणः ॥

बिहार के जि़ले मे बज़तेरी प्राचीन बौधमूरतों पर यह स्लोक खुदा ज़ुआ है, वरन राजग्रह के प्रसिद्ध जैन मंदिर मे भी जो बस्ती मे है एक मूर्त्ति पर यही स्लोक खुदा है, और इसी कारण हम उसको प्राचीन बौधमती अनुमान करते हैं।

सैर कि है, और कोस दो एक के तफ़ावत पर जहां विंध्याचल गंगा के समीप आ गया है पहाड़ के नीचे गंगा के निकट विंध्यवासिनी देवी का मंदिर है। नवरात्रि से बड़ा मेला होता है। क़िला चनार का, जिस्का शुद्ध नाम चरणाद्रि है, मिर्ज़ापुर से १२ कोस पूर्व गंगा के तट कई सौ फुट ऊंचे एक पहाड़ के टुकड़े पर बहुत मज़बूत बना है। हिंदू इस क़िले को विक्रम के भाई राजा भर्टहरि का बनाया कहते हैं, बरन अकसर नादान निश्चय रखते हैं कि भर्टहरि अब तक उसमें बैठा है। एक तहख़ाना अंधेरा जिस्का मुंह इतना छोटा कि आदमी मुशकिल से अंदर जा सके हिंदुस्तानी अमलदारी में उस क़िले का जेलख़ाना था कितने आदमी उस में घुटकर मरे होंगे यह परमेश्वर जाने पर अब भी उस के देखने से रोंगटे खड़े होते हैं, न मालूम कैसा दिल था उन लोगों का जो इस ढब से तड़फा तड़फा कर आदमियों की जान लेते थे! चनार से तीन मील पर शेख़क़ासिम सुलैमानी का मक़बरा भी बिशेष करके उस्का दर्वाज़ा और गिर्द की जालियां देखने लाइक़ हैं —३— बनारस मिरजापुर के ईशान कोन, यह ज़िला बहुत ही आबाद है। शहर बनारस जिसे मुसलमान मुहम्मदाबाद और हिंदू काशी और वाराणसी भी कहते हैं, क्योंकि बरणा और असी दो नदियों के बीच इलाहाबाद से ७० मील पूर्व ऐन गंगा के बाएं कनारे बसा है, बहुत आबाद दौलत की इफ़रात और हिंदुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है। १८१००० उस में आदमी बसते हैं। गलियां

बहुत तंग और मकान बहुत ऊंचे, ऐसा कि छ सात मरातिब तक, गर्मियों मे चलने का बड़ा आराम छतरी दकार नहीं, छांव छांव मे सारे शहर का चक्कर दे आइये। घाट गंगा के तीर बहुत संगीन और सुहावने बने हैं। बिंदुमाधव का मंदिर तोड़कर जो औरंगजेब ने मस्जिद बनाई है उस्के दोनों मीनार मस्जिद की छत से १५० फुट और गंगा तीर से अनुमान २१० फुट ऊंचे हैं। ऊपर जाने से सारा शहर और दूर दूर तक का गिर्दनवाह गंगा के दोनों तरफ़ दिखलाई देता है। उन पर चढ़ने के लिये १३१ सीढ़ी लगी हैं। विश्वेश्वर का मंदिर भी यहां उसी बादशाह ने तोड़ा था, कहते हैं कि तब असली विश्वेश्वर तो ज्ञानवापी के कूए मे पड़े और जिनकी अब पूजा होती है वह उन की जगह पर नए बिठाए गए। मानमंदिर मे राजा जय-सिंह जयपुरवाले के बनवाये हुए चंद्र सूर्य तारादिकों के देखने और ग्रहों के वेधने के लिये बहुत अच्छे यंत्र बने थे पर अब सब वे मरम्मत हैं। इन यंत्रों का तात्पर्य बिना ज्योतिष शास्त्र पढे समझ मे नहीं आवेगा, इस कारण हम ने विस्तार पूर्वक नहीं लिखा, इतना ही समझ लेना चाहिये कि ज्योतिष सम्बन्धी वेधशाला मे ऐसे ऐसे यंत्र बने रहते हैं, कि जिन से विद्वान लोग सूर्य चंद्र और तारादिकों के चलने फिरने का हाल मालूम करते हैं। संस्कृत विद्या का यह काशी मानों घर है, यहां के पंडित सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। तीर्थ के कारन फ़क़ीर बहुत रहते हैं। सांड़ गली गली घूमते हैं। रूप यहां अच्छा होता है, तिस्से भी नागरनियां

तो इस नगर की अत्यंत ही सुन्दर हैं। सर्कार ने लड़कों के पढ़ने के लिये एक पाठशाला अंगरेज़ी डौल का यहां बहुत अच्छा बनवाया है, उस मकान के बनने से प्राय सवा-लाख रुपया खर्च हुआ। नए आदमी के वास्ते काशी की सैर के दो समय हैं, एक तो नाव पर सवार होकर प्रातः-काल घाट ही घाट जाने का, कि जब सब लोग स्नान पूजा करते हैं, और दूसरा संध्या को मीनार पर से देखने का कि सारा शहर हथेली सा और सब मर्द औरत अपने घरों मे काम करते हुए दिखाई देते हैं। बुढ़वामंगल का मेला इस शहर मे मशहूर है, और हकीकत मे देखने लाइक होता है, होली के पीछे जो मंगल आता है लोग शाम से कश्तियों पर जा बैठते हैं, और फिर बुध के दिन दोपहर को उतरते हैं, छ पहर मेला रहता है, बिलकुल दर्या कश्तियों से छा जाता है, और लोग कश्तियों को अपने अपने मक़दूर मुवाफ़िक़ रंगरंगाकर और उन से झाड़ फ़ानूस और तसवीरें लगाकर बहुत आरास्तः करते हैं, सैकड़ों कश्तियों पर नाच गाना होता है, और हलवाई और तंबोलियों की दूकानें भी कोड़ियों कश्ती पर चलती हैं, रोशनी भी होती है, और आतिशबाज़ियां भी छुटती हैं। शहर से डेढ़ कोश पर सारनाथ महादेव के पास बौध मत-वालों के बनाए हुए कुछ मकान टूटे फूटे अब तक भी बाकी हैं, जिसे वहांवाले सारनाथ की धमेख कहते हैं और देखने से एक बहुत बड़ा ठोस गुम्बज़ औंधी हांडी की सूरत दिखलाई देता हैं पर इतना पुराना कि उस के पत्थर

बुढ़िया के दांतों की तरह गिरते चले जाते हैं, हकीकत मे यह बौधलोगों का देहगोप अर्थात् उन के महापुरुषों से किसी की कबर और पूजा की चीज है, साहिबलोगों की तहकीकात से ऐसा मालूम होता है कि सन ईसवी से ५४३ बरस पहले शाक्य मुनि के मरने पर उस समय हरएक राजा ने जो बौधमती था यही चाहा कि उन की लाश को अपने इलाके मे उठा ले जावे, और सब के सब उस के वास्ते युद्ध करने को उपस्थित हुए, तब उस के चेलों ने उस की लाश जलाकर थोड़ी थोड़ी हड्डी और राख सब को बांट दी, और लड़ने से रोका। निदान राजाओं ने उस हड्डी राख को अपने अपने इलाके पर धरती मे गाड़कर गुम्बज बनादिए और फिर उसके चेलोंके मरने पर उन की हड्डी राख के ऊपर भी इसीतरह के गुम्बज तयार किये और उस सब की पूजा करने लगे। भिलसा मानिकयाला इत्यादि स्थानों मे कई जगह अब भी ये गुम्बज मौजूद हैं, और वहां सिंहल तिब्बत चीन इत्यादि देशों के बौधमती लोग आज लों इन गुंबजों की नकल धातु पत्थर अथवा मिट्टी की बनाकर चिता सम्बंधी होने के कारण चैत्य के नाम से पूजते हैं, यहां भी पुराने मंदिर और खंडहरों मे अकसर जगह ये चैत्य मिलते हैं। और धमेख की असल धर्ममृग मालूम होती है, क्योंकि बौध पुस्तकों मे लिखा है कि काशी मे मृग अर्थात् हिरनों को धर्म के लिये दाना मिलता था, शायद उसी के पास उन हिरनों का रमना था। अब यह गुम्बज अथवा धमेख टूट फूट कर बहुत जर्जर होगया है,

कुछ गिर गया है और कुछ गिरता जाता है, तिस पर भी अनुमान नव्वे फुट ऊंचा और तीन सौ फुट के घेरे मे है। जेम्सप्रिंसिप साहिब ने भेद लेने के लिये उसे एक तरफ़ से खुदवाया था, तब उस के अंदर से एक डब्बेमे हड्डी और राख और कुछ उस समय के प्रचलित सिक्के और तांबे के पत्र पर उसी समय के अक्षरों मे बौधमत का एक श्लोक खुदा हुआ निकला था। जिन दिनों मे बुध का मत सारे हिंदुस्तान मे फैल रहा था, यहां के राजा भी उसी मत को मानते थे और इस काशी को जो अब ब्राह्मणों का बड़ा तीर्थ है बौध का तीर्थ जानते थे। गंगा के पार रामनगर मे महाराजे बनारस के रहने के महल और मकान सुहावने बने हैं, उसी के पास एक तालाब और मंदिर राजा चेतसिंह का बनाया यद्यपि अध बना रहगया है पर जितना है उस मे पत्थर की पुतली इत्यादि चित्र बहुत,बारीकी के साथ बनाए हैं।—४—जौनपुर बनारस के उत्तर सदर मुकाम जौनपुर इलाहाबाद से ६० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता गोमती के बाएं कनारे बसा है। आबादी २७००० आदमियों की, फुलेल वहां का मशहूर है। क़िला पत्थर का बना है। पुल गोमती पर १५ ताक वाला संगीन बहुत मज़बूत और अलीशान है, यद्यपि वह सैकड़ों बरस का पुराना हो चुका है, और सन १७७३ मे उस पर इतना पानी आगया था, कि बार्कर साहिब के सिपाहियों की नावें उस के ऊपर हो कर निकल गईं, तथापि अब तक कहीं से चलविचल नहीं हुआ। अंगरेज़ भी उस्के बनानेवाले कारीगरों की तारीफ़

करते हैं। सिवाय पुल और क़िलेके यहां तीन मसजिदें ऐसी बड़ी बड़ी संगीन बनी हैं कि यद्यपि अब निरीखंडहर हो गई हैं तौभी किसी समय मे कुछ दिन इस शहर के पायतख़्त रहने की पक्की गवाही देती हैं।—५—आज़मगढ़ जौनपुर के ईशानकोन की तरफ़, इस का सदर मुक़ाम आज़मगढ़ इलाहाबाद से १६० मील ईशान कोन पूर्व को झुकता टोंस नदी के बांएं कनारे बसा है। आबादी उस में १३००० आदमी से ऊपर है।—६—ग़ाज़ीपुर आज़मगढ़ के अग्निकोन की तरफ़। गुलाब और गुलाब का इतर यहां बहुत बढ़िया बनता है और सब दिसावरों को जाता है। बारह रुपए तक बोतल गुलाब की और पचास रुपए तोले तक का इतर अब भी तयार होता है। बीशापहीबर साहिब जब वहां गए थे तो दो लाख फूल का तोले भर इतर सौ रुपए को बिकता था। सदरमुक़ाम ग़ाज़ीपुर ३८००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ११५ मील पूर्व गंगा के बांएं तीर है। लार्ड कार्नवालिस की क़बर इसी जगह बनी है, उस के बनाने मे लाख रुपया ख़र्च हुआ था।—७—गोरखपुर आज़मगढ़ के उत्तर, गर्मी बहुत नही पड़ती, परंतु आब-हवा कुछ अच्छी नहीं है। उत्तर तरफ़ नयपाल की तराई मे बड़ा भारी जंगल है सदर मुक़ाम गोरखपुर ५४००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से १३० मील ईशानकोन रावती नदी के बांएं कनारे बसा है, उसमे गोरखनाथ का मंदिर है। ऊपर लिखे हुए छओं जिले बनारस की कमि-श्नरी मे गिने जाते हैं।—८—बांदा इलाहाबाद के पश्चिम

सदर मुक़ाम बांदा ४१००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ८० मील पश्चिम हैं। कालिंजर का क़िला बांदे से ४८ मील दक्षिण अढ़ाई कोस के घेरे का एक पहाड़ पर जो वहां के मैदान से अनुमान चार सौ गज़ ऊंचा होवेगा मज़बूत और बहुत मशहूर है, पर अब बेमरम्मत और टूटा फूटा पड़ा है। बांदे से ३६ मील अग्निकोन को चित्रकोट में हिंदुओं का मंदिर और तीर्थ है, नदी पहाड़ और जंगल उदासीन मनवालों को बहुत सुख देते हैं। —९—फ़तहपुर इलाहाबाद से वायुकोन की तरफ़। सदर मुक़ाम फ़तहपुर २०००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से ७० मील वायुकोन को बसा है।—१०—कान्हपुर फ़तहपुर के वायुकोन। सदर मुक़ाम कान्हपुर जिस की आबादी लाख आदमियों से प्राय अठारह हज़ार ऊपर गिनी गई है इलाहाबाद से १२० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता गंगा के दहने कनारे पर बसा है। वहां सर्कारी फ़ौज की बड़ी छावनी है। कान्हपुर से नौ मील उत्तर पश्चिम को झुकता हुआ गंगा के दहने कनारे बिठूर हिंदुओं का तीर्थ है। ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िले इलाहाबाद की कमिश्नरी में हैं।—११—इटावा कान्हपुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम इटावा प्राय २३००० हज़ार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के बांए तीर बसा है। —१२—फ़र्रुख़ाबाद इटावे के ईशानकोन की तरफ़। सदर-मुक़ाम फ़र्रुख़ाबाद १३२००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता गंगा से

डेढ़ कोस हटकर दहने कनारे बसा है। छावनी फ़तगढ़ मे ऐन गंगा के कनारे है। वहां एक क़िला भी कच्चा बना है डेरे तंबू उस जगह मे बहुत अच्छे बनते हैं। कनौज का पुराना शहर जिसे संस्कृत मे कान्यकुब्ज कहते हैं फ़र्रुखाबाद से प्राय ४० मील अग्निकोन गंगा के इसी कनारे पर उजाड़ सा पड़ा है, यदि बस्ती के निशानों पर नज़र करो तो किसी समय मे उस्की बस्ती का बिस्तार लंदन से भी अधिक मालूम पड़ता है। यह वही कनौज है जिसे बारह सौ बरस भी नही बीते कि तीस हज़ार तो केवल तंबोलियों की दुकान खुलती थी। इसी कनौज का राजा इस देश मे मुसलमानों के राज्य का कारण हुआ, कहते हैं कि जब वहां के राजा जयचंद राठौर ने अपनी लड़की का स्वयंवर करने के लिये राजसूयज्ञ रचा, और पृथीराज दिल्लीवाला उस यज्ञ मे न आया, तो जयचंद ने एक सोने का पृथीराज बना के दर्वाज़े पर द्वारपाल की ठौर बैठा दिया, महाराज पृथीराज को इस बाद के सुनने से बड़ा कोप आया, उसी दम अपने बीरों को ले उठ धाया, और जयचंद की बेटी को हर ले गया। इस लड़ाई मे पृथीराज के अच्छे अच्छे आदमी मारे गए, और इसी सबब जब जयचंद ने इस लाग की आग से शहाबुद्दीन मुहम्मदग़ोरी को हिंदुस्तान मे बुलाया, तो आख़िर को पृथीराज ने शिकस्त खाई और हिंदुस्तान मे मुसलमानों का राज होगया। यदि मुहम्मदग़ोरी के चढ़ाव के समय इन का आपस मे बिगाड़ न रहता, और जयचंद पृथीराज को सहाय करता तो हिंदुओं

का राज कदाचित फिर भी कुछ दिन ठहर जाता।—१३—मैनपुरी ईटावे के उत्तर। सदरमुकाम मैनपुरी बीस हजार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २१० मील वायुकोन को बसा है।—१४—आगरा मैनपुरी के पश्चिम। बादशाही वक़ मे उस्के आसपास के जिले उसी नाम के सूबे मे दाखिल थे। शहर आगरे का, जिसे सिकंदरलोदी ने बसाकर बादलगढ़ नाम रखा था और फिर अकबर बादशाह के वक़ से जब वह हिंदुस्तान की दारुस्सल्तनत हुआ अकबराबाद कहलाया, इलाहाबाद से २८५ मील वायुकोन जमना के दहने कनारे पर बसा है। आगे कीसी आबादी तो कहां पर फिर भी १२५००० आदमी उसमे बस्ते हैं। हिंदू इस जगह को परशुराम का जन्मस्थान कहते हैं। शाहजहां बादशाह की बेगम मुम्ताज़महल का मक़बरा, जिसे लोग ताजगंज अथवा ताज बीबी का रौजा कहते हैं, इस शहर मे एक निहायत उमदा मकान बना है। फ़रंगिस्तानवालों ने सारी दुनिया छान डाली, पर इस साथ की इमारत कहीं नहीं पाई, इस के देखने को यदि लोग रूम और चीन से भी पैदल दौड़ते हुए आवें, तो निश्चय है कि उसे आंख भरकर देखने ही मे अपनी सारी मिहनत भरपावें। न उसे जाकर फिर उस्से बाहर आने को जी चाहे, न उसे देखकर फिर उस पर से आंख उठाने को मन माने। दर्वाज़े के अंदर जाते ही उस की शीतल मंद सुगंध समीर से मन की कली मानो फूल सी खिल जाती है, साम्हने बाग़ जिस्मे नहर और फ़व्वारे जारी सर्व के दरख़्त दुतरफ़ा लगे हुए उन के बीच मे रौज़े का

गुम्बज़ और उस्के चारों कोने के चारों मीनार साम्हने देख पड़ते हैं, ऐसे ऊंचे कि मानों आस्मान से बातें करते हैं। इस गुम्बज़ का कलस साढ़ाई सौ फुट से कम कदापि ऊंचा नहीं है, और व्यास अर्थात् चौड़ान उस गुम्बज़ की ७० फुट है। वह सारा मकान संगमर्मर का बना है, और उस्पर लाजवर्द अक़ीक़ सुलैमानी गोरी तामड़ा यशम बिलौर फ़ीरोज़ा इत्यादि सैकड़ों क़िस्म के क़ीमती पत्थर जड़कर ऐसे बेल बूटे फूल फल और जानवर बनाए हैं, कि मानो किसी चितेरे ने हाथीदांत पर अभी तसवीरें खींच दी है। तसवीरें भी कैसी, कि यह नमालूम हो कि तसवीरें खींची हैं। या सचमुच किसी ने बाग़ से फूल फल तोड़ कर उस पर ला रखे हैं। बारीकी का यह हाल है, कि अठन्नी बराबर एक फूल मे सत्तर टुकड़े पत्थर के, और फिर भी नाखुन घिसने से उस पर न अटके पत्तियों मे हल्के भारी रंग का होना, रंग रेशों का जुदा जुदा दिखलाई देना, यही मन मे लाता है कि जो इस का बनानेवाला कारीगर यहां होता तो उस्के हाथ चूमते, पर कहते हैं कि शाहजहां ने उस के हाथ कटवाडाले थे, जिस्से फिर दूसरा मकान ऐसा न बना सके। जमना उस की दीवार के तले बहती हैं, और उस तरफ़ उस की दीवार ३००० गज़ लंबी है। कप्तान इर्वाईन साहिब अपनी किताब मे इस की लागत कुछ ऊपर तीन करोड़ सत्तरह लाख रुपया लिखते हैं। सर्कार ने इस की और सिकंदरे की मरम्मत के लिये सन १८१४ मे एक लाख रुपया खर्च किया था। शाहजहां भी अपनी बेगम की क़बर

के पास इसी रौजे के अंदर गड़ा है। शहर से तीन कोस पर सिकंदरा जहां अकबर की कबर है, और जमना पार एतिमादुद्दौला का मक़बरा और रामबाग़ भी देखने योग्य स्थान हैं। क़िला जमना के कनारे लाल पत्थर का अकबर का बनवाया हुआ बहुत सुंदर है, पर जहां उस समय मे जयपुर और जोधपुर को राजाओं को भी बैठना कठिन था, खड़े ही रहते थे, वहां अब उल्लू और चिमगादड़ का बासा है। जहां मीयां तानसेन की तान छिड़ती थी, वहां अब मकड़िया जाला तनती हैं। जहां तीन तीन गज़ लंबी कपूरी बत्तियां सोने के बीस बीस सेर भारी शमादानों पर बलती थीं वहां अब कोई चराग़ मे कौड़ी भर तेल भी नहीं डालता। मोती मसजिद इस क़िले मे निरे संगमर्मर की बहुत उमदा बनी है। सन १८०३ मे जब लार्डलेक ने मरहठों से आगरा छीना तो वहां एक तोप छ सौ मन भारी हाथ लगी, मालूम नहीं किस समय की बनी थी, लार्डलेक ने चाहा कि कलकत्ते भेजें, पर नाव का तख़्ता टूट जाने के सबब जमना मे डूब गई। इसी ज़िले मे आगरे से नौ कोस पर फ़तहपुर सीकरी मे शेख़सलीमचिश्ती की दर्गाह है, और अकबर के बनवाए बहुत से मकान उमदा उमदा बने हैं, पर अब सब बेमरम्मत हैं, दर्गाह देखने लाइक़ है। राफ़फ़िचसाहिब जो अकबर के समय मे आए थे फ़तहपुर की शान को आगरे से भी बढ़कर लिखते हैं।—१५— मथुरा आगरे के वायुकोन को। शास्त्र मे इसी ज़िले का नाम सूरसेन लिखा है। शहर मथुरा का ६५००० आदमियों

की बस्ती इलाहाबाद से २८० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के दहने कनारे बसा है। कृष्ण का जन्मस्थान और इसी लिये तीर्थ की जगह है। मारवजी का मंदिर यहां प्रसिद्ध है। किले मे राजा जयसिंह ने ग्रह नक्षचादि-कों के बेधने के लिये कुछ यंत्र बनवाए थे, पर अब वह सब टूट फूट गए, किले का भी केवल नाम ही रहगया है। पुराने मंदिर तो इस शहर के सन १०१७ मे महमूदगज़नवी ने तोडे थे, पर पीछे से एक मंदिर छत्तीस लाख रुपया लगा के राजाबीरसिंहदेव उर्छावाले ने बनवाया था, सो औरंग-ज़ेब ने उसे तुड़वाकर उस्के ममाले से उसी जगह मस्जिद बनवादी। महमूदगज़नवी ने यहां से सौ मूरतें चांदी की और पांच मूरतें सोने की लूटी थीं, और इस शरह की तारीफ मे एक ख़त के दर्मियान गज़नी के किलेदार को यों लिखा था, कि "इस साथ का शहर दो सौ बरस की मिह-नत मे भी दूसरा तयार होना कठिन है, हज़ारों इमारतें जिन मे बज़तेरी संगमर्मर की बनी हैं मुसलमानों के मत की तरह मज़बूत हैं, और मंदिरों की तो गिनती भी नहीं हो सकती" मथुरा से पांच मील उत्तर जमना के दहने कनारे दृंदावन कृष्ण के रास विलास की जगह बज़त रम्य और सुहावनी है। कुंज और मंदिर बज़त मनोहर बने हैं। बंदर और लंगूर और मयूर हक्षों की घनी घनी छांव मे सदा कलोलें करते रहते हैं। ऊपर लिखे ऊए पांचों ज़िले आगरे की कमिश्नरी मे हैं।—१६—बदाऊं फ़र्रुखाबाद के वायुकोन को गंगा पार। सदरमुकाम बदाऊं २७०००

आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २५० मील पर वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता हुआ है।—१७—शाहजहांपुर बदाऊं के पूर्व। सदर मुक़ाम शाहजहांपुर कुछ ऊपर ७४००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २१० मील वायुकोन उत्तर को झुकता गर्रा नदी के बाएं कनारे बसा है।—१८—बरेली शाहजहांपुर के उत्तर। सदर मुक़ाम बरेली १११००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २६५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ और संकरा दोनों नदियों के संगम पर बसा है। मेज़ कुरसी कौच संदूक़ इत्यादि काठ के सियाह रोग़नी वहां बहुत अच्छे बनते हैं, और दूर दूर तक जाते हैं। रुहेले सिपाही इस ज़िले मे बहुत रहते हैं, पर अब अंगरेज़ी अमल्दारी होने से दंगा फ़साद और लूट मार उन लोगों ने छोड़ दिया, बहुतेरे हल जोतते हैं, और बहुतेरों ने परदेस मे नौकरियां करलीं। बरेली से ३० मील ईशान कोन को पीलीभीत २५००० आदमी की बस्ती गर्रा नदी के बाएं कनारे है, चावल वहां अच्छे होते हैं।—१९—मुरादाबाद बरेली के वायुकोन। उत्तर भाग मे पहाड़ और जंगल है। ऊख इस ज़िले मे बहुत होती है। सदर मुक़ाम मुरादाबाद कुछ कम ५७००० आदमी की बस्ती इला-हाबाद से ३०० मील वायु कोन उत्तर को झुकता राम-गंगा के दहने कनारे बसा है। वहां से मंजिल एक पर द-क्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता संभल है, यहां हिंदू लोग कलि के अंत मे कल्की अवतार होने का निश्चय रखते हैं।—२०—बिजनौर मुरादाबाद के उत्तर सदर मुक़ाम बिजनौर

११००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायु कोन ज़रा उत्तर की तरफ़ झुकता हुआ है। ये ऊपर लिखे हुए पांचों ज़िले रुहेलखंड की कमिश्नरी में गिने जाते हैं।—२१—अलीगढ़ मुरादाबाद के नैर्ऋतकोन को। सदर मुक़ाम कोयल ५५००० आदमी की बसती इलाहाबाद से २८० मील वायुकोन को है, और उससे कोस भर पर अलीगढ़ का क़िला है।—२२— बलंदशहर अलीगढ़ के उत्तर सदर मुकाम बलंदशहर १५००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३१५ मील वायुकोन कालीनदी के दहने किनारे है। —२३—मेरट बलंद शहर के उत्तर। सदर मुक़ाम मेरट ४०००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५५ मील वायुकोन को है और वहां सर्कारी फ़ौज की बहुत बड़ी छावनी है। वह स्थान जहां किसी समय में हस्तिनापुर बस्ता था मेरट से २५ मील ईशानकोन की तरफ़ गंगा के दहने तट के निकट है। अब वहां केवल एक मंदिर दिखलाई देता है और बाक़ी हर तरफ़ दीमकों की बांबियां हैं। मेरट से एक मंज़िल वायुकोन को सरधने में समरू की बेगम का बनाया गिरजा घर देखने लाइक़ है। उस में पच्चीकारी के काम की संगमर्मर की बेदी बनाई है। —२४— मुज़फ़्फ़रनगर मेरट के उत्तर। सदर मुक़ाम मुज़फ़्फ़रनगर नौ हज़ार आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता है।—२५—सहारनपुर मुज़फ़्फ़रनगर के उत्तर। ऊख बहुत होती है। सदर मुक़ाम सहारनपुर ३७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ४१०

मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता हुआ है। अलीम-दीख़ांवाली जमना की नहर उसके बीच से जाती है। सहारनपुर से पूर्व अग्निकोन को झुकता हुआ रुरकी एक मुकाम है। वहां गंगा की नहर लाने के लिये सलानी नदी पर जो अंगरेज़ों ने पुल बांधा है देखने योग्य है। यह नदी नहर के रस्ते में थी और उस के कनारे नहर के पानी से नीचे पड़ते थे इन्हों ने क्या हिक्मत की है कि जहां तक धरती नीची थी वहां तक नहर के बराबर ऊंचा पक्का बंध बांध कर और सलानी के बहने के लिये उस के बीच में एक पुल रख कर उस बंध और पुल पर से नहर को निकाल दिया है॰ अर्थात् पुल के नीचे तो सलानी जारी और पुल के ऊपर से नहर चलती है वहां सर्कार की तरफ़ से एक कालिज भी बहुत बड़ा बना है कि उस में लड़के इंजिनिअरिंग अर्थात् इमारत का काम सीखते हैं। और खाने पहने और रहने को जगह भी सर्कार से पाते हैं। ज्यों ज्यों काम सीखते जाते हैं उन की तनखाहें बढ़ती जाती हैं और जब पढ़ लिखकर तयार होते हैं तो सड़क पुल नहर बंगले बारक इत्यादि बनाने के कामों पर मुकर्रर हो जाते हैं ये पांचों जिले मेरट की कमिश्नरी में हैं।—२६—देहरादून (१) सहारनपुर से उत्तर पहाड़ों के अंदर। साल के जंगल इस जिले में बहुत हैं। लंधौर और मंसू

(१) दून उसे कहते हैं जो दो पहाड़ों के बीच चौरस मैदान हो।

री टीवा जो समुद्र से कुछ न्यूनाधिक छ हज़ार फुट ऊंचे होवेंगे साहिब लोगों के हवा खाने की जगह इसी ज़िले मे हैं। गंगा और जमना वहां से दूर तक बहती हुई दिखलाई देती हैं, परंतु शिमला की तरह इन पहाड़ों पर बड़े बड़े ऊंचे पेड़ों के सुंदर और मनोहर जंगल नहीं हैं। सदर मुकाम देहरा इलाहाबाद से ४१५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है वहां सिखों का गुरुद्वारा है। वहां से छ मील उत्तर मंसूरी टीबे की जड़ मे राजपुरा बसा है जो लोग हवा खाने को टीबे पर जाते हैं गाड़ी इत्यादि जो असबाब पहाड़ों पर नहीं चढ़ सकता इसी जगह छोड़जाते हैं।—२७—कमाऊंगढ़वाल सहारनपुर से ईशान कोन को हिमालय के पहाड़ों मे चीन की हद तक। यह एक बे आइनी कमिश्नरी है। अकसर नदियों का बालू धोने से सोना हाथ लगता हैं, पर बहुत थोड़ा। तांबे की खान हैं। बस्ती यहां खसियों की बहुत सूरत इन पहाड़ियों की कुछ कुछ तातारियों से मिलती है। कमाऊंका अशिस्टंट सदर मुकाम अलमोरे मे रहता है, वह ३५०० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ समुद्र से कुछ ऊपर तिरपन सौ फुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। शहर के पश्चिम एक छोटा सा क़िला सर्कार ने फ़ोर्ट माइरा नाम बनवाया है गढ़वाल का अशिस्टंट अलमोरे से १०४ मील वायु कोन अलखनन्दा नदीके बांए कनारे श्रीनगर के पास पावरी

मे रहता है। अलमोरे से २५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकती नयपाल की हद पर लोहूघाट की छावनी है। वहां से तीन मील पश्चिम एक पहाड़ पर फोर्ट हेस्टिंगज़ छोटा सा क़िला है, पर मज़बूत बना है। हिंदुओं का बड़ा तीर्थ बदरीनाथ अलमोरे से ८० मील उत्तर ज़रा वायु कोन को झुकता विष्णुगंगा के दहने कनारे समुद्र से दस हज़ार तीन सौ फुट ऊंचा है। मंदिर शिखरदार ४५ फुट बलंद, ऊपर तांबे की छत सुनहरी कलस चढ़ा हुआ, मूर्ति नारायण की गज़ भर ऊंची श्याम पाषाण की है। वहां गर्मियों मे यात्रियों का मेला लगता है। जाड़े भर मंदिर बर्फ़ के नीचे दबा रहता है। उस के पास ही गर्म पानी का एक सोता है, जिस्से गंधक की गंध आती है। बदरीनाथ से सीधा पच्चीस मील लेकिन सड़क की राह प्राय १०० मील केदारनाथ का मंदिर है, जहां एक काले पत्थर की पूजा होती है। जिन को हिमा-लय मे गलना मंजूर होता है इसी जगह से बर्फ़ के पहाड़ों मे चले जाते हैं। हिंदू लोग इस तरह अपने तई हलाक करने मे बड़ा पुण्य समझते हैं। जिसे गलना मंजूर होता है पंडा उसे एक तरफ़ को इशारा करके कह देता है कि यही स्वर्ग की राहा है, निदान यह बेचारा पहाड़ के अंदर उसी तरफ़ दौड़ता है, और जब नज़रों से निकलजाता है तो उस एक बर्फ़ के खाड मे उतरना पड़ता है कि जहां से फिर उलटा नहीं

लौट सकता क्योंकि बर्फ़ का ढाल कुढब है, उतरजाना सहज पर फिर चढ़आना कठिन, निदान जब वह बर्फ़ की सर्दी से वहां ठिठुरकर मरजाता है, तो चील कव्वे उस पर गिरते हैं। अल्मोरे के दक्षिण तीस मील की राह पर कोई एक मील लंबी भीमताल की सुंदर झील है इस्से दो मील पूर्व नौकुचिया ताल है। अलमोरे से २९ मील नैर्ऋत कोन दक्षिण को झुकता ५६०० फुट समुद्र से ऊंचा नैनीताल साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। ताल के गिर्द घूमने मे कुछ कमजियादः दो घंटा लगता है। चारों तरफ़ उसके पहाड़ों पर कोठी और बंगले बने हैं। ताल बड़ा गहरा और स्वच्छ जल से भरा हुआ बहुत रम्य और सुहावना मालूम देता है।

—२८—अजमेर यह ज़िला रजपुताने के बीच अर्बली पहाड़ से पूर्व है। दूसरे सर्कारी ज़िलों से किसी तरफ़ भी नहीं मिला, चारों तरफ़ जयपुर जोधपुर किशनगढ़ और उदयपुर की अमल्दारियों से घिरा है यह भी एक बे आईनी कमिश्नरी है। बादशाही ज़माने मे इस के आसपास के सब इलाके इसी नाम के सूबे मे गिने जाते थे अब अंगरेजी दफ़तरों मे यह सूबा रजपुताने के नाम से लिखाजाता है क्योंकि उस गिर्दनवाह मे रजपूत राजा बहुत हैं। सीसे की इस ज़िले मे खान है। सदर मुकाम अजमेर इलाहाबाद से ४५० मील पश्चिम ज़रा वायु कोन को झुकता एक पहाड़ की जड़ मे पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। ८०० फुट ऊंचे पहाड़ पर तारागढ़ का

बेमेरम्मत पुराना क़िला है। ख़ाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दर्गाह जिस की ज़ियारत को अकबर आगरे से नंगे पांव गया था इस शहर में बहुत मशहूर है। शहर के बाहर एक झील के कनारे जिस्का घेरा ८ मील का होगा बादशाही बाग़ है। रजपुताने के अजंट के रहने की जगह यही अजमेर है। शहर से सात कोस पर नसीराबाद की छावनी एक वृक्षरहित पथरीले मैदान में बनी है। जेनरल अकटरलोनी साहिब को दिल्ली के बादशाह ने नसीरुद्दौला ख़िताब दिया था इसी कारन उन के नाम पर इस छावनी का नाम नसीराबाद रहा। दूसरी तरफ़ तीन कोस के फ़ासिले पर पुष्कर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है अनुमान आध कोस के घेरे में वह झील होवेगी कनारे पर घाट और मंदिर बने हैं झील में कमल और मगर बहुत हैं यहां ब्रह्मा की पूजा होती है।—२८—सागरनर्मदा अथवा जब्बलपुर की कमिश्नरी नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी से नर्मदा नदी के दोनों तरफ़ भूपाल और संधिया की अमल्दारी तक चला गया है। विंध्य के तटस्थ होने के कारन जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है। कोयले की खान है। सदर मुक़ाम जब्बलपुर इलाहाबाद से २०० मील नैर्ऋत कोन को नर्मदा से कुछ दूर हटकर दहने कनारे पर बसा है। वहां सर्कार ने ठगों के लिये बड़ा बंदोबस्त बांधा है। जो ठग आगे अपना पेट पालने को आदमियों का गला घोंटते थे वे सब वहां शतरंजी कालीन बुनते हैं, और डेरे तंबू बनाते हैं। जो

ठग गिरफ़्तार होते हैं इसी जगह भेजे जाते हैं और सज़ा मुआफ़ होने के वादे पर अपने सारे साथियों को पकड़ा देते हैं। अब वहां इन ठगों का एक गांव बस गया है, और इसी जगह उन का आपस में शादी व्याह भी हुआ करता है। सर्कार उन से काम लेती है, और उन्हें खाने को देती है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई डिपटी कमिश्नर मुक़र्रर हैं, वे आईनी ज़िले के मजिस्ट्रेट कलक्टरों की तरह अपने अपने हिस्से के इलाके में इस हिसाब से इंतिज़ाम करते हैं, कि एक तो सागर में जो जब्बलपुर के वायुकोन को सौ मील पर बसा है। दूसरे सिउनी में जो जब्बलपुर के दक्षिण नैर्ऋत कोन को झुकता सौ मील पर बसा है। तीसरे बैतूल में जो जब्बलपुर के नैर्ऋतुकोन १७० मील पर बसा है। चौथे नरसिंहपुर में जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को झुकता ८० मील पर बसा है। पांचवें होशंगाबाद में जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को ज़रा झुकता १५० मील पर नर्मदा के बांएं कनारे बसा है, वहां सर्कारी फ़ौज की छावनी है। छठे मंडले में जो जब्बलपुर के दक्षिण ५६ मील पर बसा है और सातवें दमोह में जो जब्बलपुर के वायुकोन उत्तर को झुकता ६० मील पर बसा है।—३०—झांसी की बेआईनी कमिश्नरी कानपुर के पश्चिम जमना पार। इसमें चार ज़िले हैं। पहले का सदर मुक़ाम हमीरपुर इलाहाबाद से ११० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता बेत्वा के बाएं कनारे जहां वह जमना से मिली है। दूसरे का जा-

भूगोलहस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN TWO VOLUMES

दो जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी श्रीयुत लेफ़्टिनंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

बाबू शिवप्रसाद ने बनाई।

BY

BA'BU' SIVAPRASA'D

॥ शेर ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द।

PART II

दूसरा हिस्सा

दूसरी बार

कलकत्ते के संस्कृत प्रेस में छपी

१८५९।

कौन हमीर पुर के वायुकोन मिसरी कालपी की प्रसिद्ध है। वह १८००० आदमियों की बस्ती जमनाके दहने कनारे हमीरपुर से एक मंजिल वायुकोन को बसा है। तीसरे का भांसी जालौन के नैर्ऋत कोन और चौथे का चंदेरी भांसी के दक्षिण नैर्ऋत कोन को भुकता चंदेरी का कपड़ा किसी समय से बहुत प्रसिद्ध था, और उसे अबुल फजल अकबर के समय १२००० मसजिद ३६० सरा और ३८४ बाज़ार लिखता है, लेकिन अबतो ऊजड़ बन खड़ा है।

बंगाले की डिपटी गवर्नरी।

बंगाले के डिपुटी गवर्नर के तहत से जो ज़िले हैं उन मे—१—चौबीस परगना है भागीरथी के पूर्व और सुंदरबन के उत्तर। कहने से अब तक भी यह ज़िला चौबीस परगना कहलाता है, पर हक़ीक़त से उस्के अंदर अब अठारही परगने गिने जाते हैं, छ दूसरे ज़िलों के साथ लग गए। उस का सदर मुक़ाम कलकत्ता इसी ज़िले से उत्तर की तरफ़ २२ अंश २३ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर मे समुद्र से ५० फुट ऊंचा और प्राय सौ मील दूर और इलाहाबाद से ४९८ मील अग्नि कोन पूर्व को भुकता

छ मील लंबा भागीरथी के बांएं कनारे पर जिसे वहां दर्याय ऊगली कहते हैं बसा है। अनुमान करते हैं कि कलकत्ता इस शहर का नाम कालीघाट के सबब से जो वहां दर्याकनारे देवी का एक मंदिर है रहा था। अब यही शहर हिंदुस्तान की राजधानी है। साबिक़ मे उस शहर के पास दलदल झील और जंगलों की बहुतायत से आबहवा ख़राब थी, पर जब से सर्कार ने पानी का निकास करके दलदल ज़मीनों को सुखवा-दिया, जंगल कटगए, और हर तरफ़ सफ़ाई रहने लगी तब से बहुत राह पर आती चली है। अब यह शहर बड़ी रौनक़ पर है। क्या शक्ति है परमेश्वर की जहां सौ बरस भी नहीं गुज़रे साठ सत्तर झोंपड़ों की बस्ती थी, वहां अब तीन कोस लंबा शहर बसता है। शहर भी कैसा कि जहां बीस से ऊपर तो बड़े बड़े नामी बज़ार हैं, कि जिन्मे सारी दुनिया की चीज़ें मयस्सर, और बसती जिस की दो लाख तीसहज़ार आदमी से ऊपर गिनी जाती है। लाख आदमी से अधिक नित गिर्दनवाह और आसपास के गावों से आया करते हैं। वहांसब विला-यतों के आदमी नज़र पड़जाते हैं। सुस्ती और का-हिली का निशान कम दिखलाई देता है, जिस्को दे-खिये अपने काम मे मशगूल है। बग्गी और गाड़ियां वहां इतनी दौड़ा करती हैं, कि बाज़ वक़्त रस्ता न मिलने के सबब घड़ियों खड़ा रहना पड़ता है। सवारी वहां पालकी और घोड़े की गाड़ी जिस वक़्त जिस

जगह चाहिये, दो अशरफ़ी रोज़ से दो आने रोज़ तक की घोड़े की गाड़ी, किराएपर मौजूद है। कोठियां वहां अंगरेजी डौल की दुमंज़िली तिमंज़िली वरन चौमंज़िली तक हज़ारों बनी हैं। बाग़ बाबुओं के ऐसे उमदः और सुथरे कि राजाओं का भी दिल उन की सैर को ललचाय। जहाज़ गंगा मे सैकड़ों लगेहुए, जहां तक नज़र जावेगी मस्तूल ही मस्तूल दिखलाई देवेंगे। शाम के वक़्त, जब हज़ारों साहिब मेमों के साथ गाड़ियों पर सवार होकर गंगा कनारे की सड़क पर हवा खाने को निकलते हैं अजब एक कैफ़ियत होती है। निदान यह शहर लाइक सैर के हैं। लंदन का नमूना है। किले की तयारी मे जिस्का नाम फोर्ट विलियम् है दो करोड़ से ऊपर खर्च हुआ है, और गवर्नर जेनरल के रहने का मकान भी बहुत आलीशान और सुंदर बना हैं। एक म्यूजियम अर्थात् अजाइबघर उस शहर मे ऐसा है कि उस के अंदर तमाम् एशिया की अद्भुत और अनोखी चीजें भरी हैं। यदि नाम मात्र भी उन चीजों का लिखें तो ऐसे ऐसे कई ग्रंथ बनजावें। धातु वनस्पति जीवविशेष कृत्रिम और स्वाभाविक जो पदार्थ जहां कहीं क्या जल क्या थल मे अद्भुत मिला सब को इस घर मे ला रखा। फल फूल पेड़ों की टहनियां मरे हुए जीव जंतु और नए नए तरह के पक्षी कीट पतंग इत्यादि शीशों के अंदर ऐसे दवा के अर्कों मे रखे हैं, कि मानो वह तो अभी तोड़ेगए और

यह अभी हिलें चले और बोलेंगे। अस्पताल कई एक बहुत बड़े बड़े बने हैं। विद्यालय इतने हैं कि जिन मे हजारों लड़के सारी दुनिया के इल्म सीखते हैं। मेडिकल कालिज मे लड़कों को डाक्टरी का इल्म सिखलाया जाता है, और मुर्दों का पेट चीर चीर कर दिखलाया जाता है। जब वे पक्के होते हैं तब डाक्टरी के काम पर मुकर्रर हो जाते हैं। वहां इस कालिज मे शीशों के अंदर अर्कों के दर्मियान बड़ी बड़ी चमत्कारी चीजें रखी हैं। कहीं दो धड़ एक सिर, और कहीं दो सिर एक धड़ का लड़का, कहीं सारा बदन आदमी और मुंह जानवर का और कहीं सारा बदन जानवर और मुंह आदमी का। मा के गर्भ मे बालकों की पहले क्या सूरत रहती है और फिर दिन पर दिन क्योंकर बदलती जाती हैं, नौ दिन से लेकर नौ महीने तक आंवलनाल समेत रखे हुए हैं। लड़कियों के पढ़ने के वास्ते भी इस्कूल बने हैं। अब वहां के अमीरों ने आपस मे चंदा करके एक इस्कूल ऐसा तयार किया है कि जिसमे सिवाय हिंदुओं के और किसी जात के लड़के न आने पावें। टकसाल भी लाइक देखने के है, कैसी कैसी धूंए की कलें उसमे लगाई हैं और कैसा उन कलों के बल आप से आप जल्द सिक्का तयार होता है। गनफौंडरी मे इसी तरह धूंए की कलों के ज़ोर से तोपें ढलती और खराद पर चढ़ती हैं। जेनरल अक्तरलोनी के मानूमेंट अर्थात् मीनार पर जो १६५

फुट ऊंचा है चढ़ने से सारा शहर मानो हथेली पर दिखलाई देने लगता है। चढ़ने के लिये उस्के अंदर २१३ सीढ़ियां बनी हैं। सड़कें वहां की सब साफ़ और चौड़ी और रात को रोशन रहती हैं रौशनी का यहां भी लंदन की तरह वाफ़से बंदोबस्त होगया है। (१) और छिड़काव के लिये नहरों मे पानी लाने को गंगा के कनारे धूंए का प्रम्प अर्थात् वह कल जिस्से पानी ऊपर उठता है बना दिया है। लहर समुद्र की गंगा से कलकत्ते तक पहुंचती है, उसी को ज्वार भाठा कहते हैं। जहाज़ भी कलकत्ते तक आते हैं। मांस अहारियों की बहुतायत से कव्वे चील और हड़गिल्ले वहां बहुत हैं। यह हड़गिल्ला पांच फुट ऊंचा होता है और पर उस्का फैलने से पंदरह फुठ तक नापा गया है। कलकत्ते से आठ कोस उत्तर गंगा के बांएं कनारे बारकपूर की छावनी है। वहां भी गवर्नर जेनरल के रहने का एक उमदा मकान और बाग़ बना है। कलकत्ते से छ मील ईशान कोन को दमदमे मे तोपख़ाना रहता है। यह भी मालूम रखना चाहिये कि शहर कलकत्ते का सुप्रिमकोर्ट के तहत मे है, परगनों के लिये

---

(१) जिसतरह खज़ाने से नलों की राह फ़व्वारों मे पानी पहुंचा करता है, इसी तरह यह वाफ भी अपने ख़ज़ाने से नलों की राह जावजा पहुंच जाती है, और जिसतरह फ़व्वारे के मुंह से पानी निकला करता है उसी तरह इसके नलों के मुंहसे इसकी ज्वाला निकलती है। मुफ़स्सल बयान इस वाफ के तयार करने का और नलों मे उस्के बांटने का लंदन के बयान के साथ होगा यहां इतना ही रहेगा।

जज कलकटर इत्यादि जुदा मुकर्रर हैं, और वे सब फोर्ट विलियम के किले से कोस आध एक पर अलीपूर मे कचहरी करते हैं।—२—हौरा चौबीस परगने के पश्चिम। सद्र मुकाम हौरा अथवा हबड़ा ठीक कलकत्ते के साम्हने गंगा पार बसा है। वहां बारूत बनाने की मेगजीन धूंएं के जोर से चलते हुए आरे कल के कोल्हू इत्यादि, कई कारखाने हैं।—३—बारासत चौबीसपरगने के उत्तर। सद्र मुकाम बारासत कलकत्ते से १२ मील ईशान कोन की तरफ है।—४— नदिया बारासत के उत्तर। उस का सद्र मुकाम किशननगर कलकत्ते के उत्तर ५७ मील पर बसा है। शहर नदिया अथवा नवद्वीप गंगा के कनारे उस मुकाम पर है जहां उस्की दोनो धारा जलंघी और भागीरथी का संगम हुआ है, पर वह अब वर्दवान के जिले मे गिना जाता है। बंगाले मे वहां के पंडित बहुत प्रसिद्ध हैं, विशेष करके नय्यायिक। इसी जिले मे वायु-कोन की तरफ भागीरथी के कनारे मुर्शिदाबाद के दक्षिण तीस मील पर पलासी का गांव है, जहां लार्ड क्लाइव ने सन १७५७ मे सिराजुद्दौला को शिकस्त दी थी।—५— जसर नदिया के पूर्व। आबहवा बहुत खराब। सुंदरबन इस जिले के दक्षिण भाग मे पड़ा है। सद्र मुकाम जसर अथवा मुरली कलकत्ते से ६२ मील ईशान कोन की तरफ है।—६—बाकरगंज जसर के पूर्व। सन १८०१ मे इस का सद्र मुकाम बाकरगंज से उठकर बरीसाल मे आगया। वह कलकत्ते से १२५ मील ठीक पूर्व गंगा के एक

टापू मे वसा है।—७—नावकोली बाकरगंज के पूर्व। सदरमुकाम वलुआ कलकत्ते से १८० मील पूर्व ईशानकोण को झुकता मेघना के बांए कनारे है।—८—फ़रीदपुर अथवा ढाकाजलालपुर बाकरगंज के उत्तर। उस का सदर मुकाम फ़रीदपुर कलकत्ते से १२५ मील ईशान कोन की तरफ़। वहां से अढाई कोस पर पद्मा बहती है। इसी ज़िले मे ढाके से चार कोस अग्निकोन की तरफ़ नरायनगंज मे नमक का वक्त रोज़गार होता है।—९—ढाका ढाकाजलालपुर के पूर्व। ढाके का शहर, जिसे जहांगीरनगर भी कहते हैं, कलकत्ते से १८० मील ईशान कोन की तरफ़ बूढीगंगा के बांए कनारे वसा है, बरसात के दिनों मे जब पानी की बाढ आती है, तो हर तरफ़ उसके जल ही जल दिखलाई देता है। किसी समय मे यह शहर बहुत आबाद और सूबेबंगाले की राजधानी था। अब तक भी उस के गिर्दनवाह मे बहुतेरे खंडहर पड़े हैं और अनुमान ६०००० आदमी उस्मे बसते हैं। कहते हैं कि शाइस्ताखां की सूबेदारी मे वहां रुपए का आठ मन चावल बिका था, सन १६८९ मे जब वह वहां से चलनेलगा तो उसे शहर का पश्चिम दर्वाज़ा चुनवाकर उसपर यों तिलाक़ अर्थात् आन लिखवा दिया, कि इस दर्वाज़े को मेरे पीछे वही सूबेदार खोले जो फिर ऐसा सस्ता करे।—१०—त्रिपुरा ढाका और इस ज़िले के बीच मे ब्रह्मपुत्र का दर्या जिसे वहांवाले मेघना के नाम से पुकारते हैं बहता है। इस ज़िले का नाम पुराने कागज़ों मे कहीं कहीं रौशनाबाद

भी लिखा है। यह पूर्व दिशा मे हिंदुस्तान का सब से परला ज़िला है। इस्से आगे फिर जंगल पहाड़ है, कि जिन से परे बर्म्हा का मुल्क बस्ता है। आदमी वहां के जिन्हे बंगाली तिउरा पुकारते हैं कुछ जंगली से हैं। बहुधा ज़मीन मे बल्लियां गाड़कर उन बल्लियों पर अपने झोपड़े बनाते हैं। सूरतें उन की चीन और बर्म्हावालों से बहुत मिलती हैं। धर्म का उन के कुछ ठिकाना नहीं। इस का सदर मकाम कोमेला पहाड़के पास गोमती नदी के बांए कनारे कलकत्ते के पूर्व ईशानकोन को झुकता २०० मील पर बसा है।—११—चित्रग्राम अथवा चटगांव जिसे अंगरेज़ लोग चिटागांग कहते हैं, त्रिपुरा के अग्निकोन की तरफ़ नाफ़ नदी तक चलागया है। यह भी ज़िला हिंदुस्तान की हद पर है। इस्से पूर्व जंगल पहाड़ और फिर उन से आगे बर्म्हा का मुल्क है। इस ज़िले मे बस्ती कम है और बन बहुत। यहां के आदमी भी त्रिपुरावालों की तरह छ सात हाथ लंबी बल्लियां ज़मीन मे गाड़कर उस्पर अपने झोपड़े बनाते हैं। अठवारे मे एक दोबार कई मुकामों पर हाट लगा करती है उसी जगह लोग सौदा करने के लिये इकट्ठा होते हैं। मज़हब का उनके कुछ ठिकाना नहीं सब चीज़ खाते पीते हैं। शिकारो बहुधा हाथी मारकर उसी के गोश्त पर गुज़ारा करते हैं। हाथी वहां के जंगलों मे त्रिपुरा की तरह बहुतायत से होते हैं। गरजन का तेल जो काठ की चीज़ों को साफ़ रखने के लिये खूब चीज़ है वहां बहुत बनता है। आबहवा अच्छी है।

चटगांव अथवा इसलामाबाद २२००० आदमी की बस्ती इसका सदर मुकाम कर्नफूली नदी के दहने कनारे कलकत्ते के पूर्व तीन सौ मील पर बसा है। उस्से बीस मील उत्तर हिंदुओं का तीर्थ सीताकुंड है, कि जिसका जल सदा गर्म रहता है। जो कोई उसके जल के पास जलती हुई बत्ती लेजावे तो उस की बाफ गोरखडिब्बी की तरह बारूत सी भभक जाती है। उसी थाने के इलाके मे बडवाकुंड हिंदुओं का दूसरा तीर्थ है, उसमे पानी के ऊपर ज्वाला-मुखी की तरह सदा आग बला करती है। ज्वालामुखी और गोरखडिब्बी का बर्णन और वहां आग के जलने और भभकने का कारण कांगडे के जिले मे लिखा जावेगा

—१२— सिलहट जिस्का शुद्ध नाम श्रीहट्ट है त्रिपुरा के उत्तर। शास्त्र मे जो मत्स्य देश लिखा है वह इसी के आसपास है। इस जिले के पूर्व और दक्षिण भाग मे जंगल और पहाड़ है; और बाकी मैदान कि जो बरसात के दिनों मे बहुधा जलमग्न होजाता है। लोहे और कोयले की खान है। इन पहाड़ों मे अकसर खसिये लोग बसते हैं, मजबूत होते हैं, और हथियार उन के तीर कमान और नंगी लंबी तलवारें और ढालें चौखूंटी इतनी बड़ी कि जिन से मेह से छतरी की बिलकुल इहतियाज नही। उन लोगों मे पैतृकाधिकार बड़ी बहन के लड़के को पहुंचता है। ढाल और सीतलपाटी अर्थात् बेत की बुनी हुई चटाई यहां के बराबर कहीं नही बनती। इमा-रत कम बहुत आदमी छान छपरों मे रहते हैं। सदर

मुकाम इस का सिलहट कलकत्ते के ईशान कोन को कुछ ऊपर ३०० मील पर बसा हैं। सिलहट से एक दिन की राह पर वायुकोन को पडुवा नाम बस्ती है। वहां से नौ मील ईशानकोन को पहाड़ मे एक अद्भुत गुफा हैं, दस से अस्सी फुट तक ऊंची और चौड़ी, लंबान की ख़बर नहीं, लोग आध कोस तक तो उस के अंदर गए हैं, फिर लौट आए। सिलहट से २० मील ईशानकोन उत्तर को झुकता जयंतापुर पहले एक राजा के दख़ल मे था, सन १८२२ मे वहां के राजा की बहन ने काली के साम्हने नरबलि चढ़ाने को एक बंगाली पकड़ने के लिये अपने आदमी सर्कारी अमल्दारी मे भेजे थे, पर क़िस्मत बंगालियों की अच्छी थी कि वह आदमी गिरफ़्तार होगए और जेलख़ाने मे भेजे गए, परंतु सन १८३५ मे वहां के राजा ने तीन आदमी सर्कारी रैयत को अपने इलाक़े के अंदर पकड़कर काली के साम्हने बल देही दिया, तब सर्कार ने उस इलाक़े को ज़ब्त करके सिलहट मे मिला लिया, और राजा के खाने को पिंशन मुक़र्रर कर दिया।—१३— कचार अथवा हेरम्ब सिलहट के पूर्व। यह ज़िला तीन तरफ़ पहाड़ों से घिरा है, कि जो आठ आठ हज़ार फुट तक ऊंचे हैं, और मैदान दलदल और झीलों से भराहै। दक्षिण भाग मे बड़ा घना जंगल है। लोहा खान से निकलता है। सदरमुक़ाम सिलचार कलकत्ते से ३०० मील ईशानकोण बारक नदी के बांए कनारे बसा है।—१४— मैमनसिंह सिलहट से पश्चिम। यह ज़िला ब्रह्मपुत्र के दोनो कनारों पर बसा है। और

बज्जत सी नदीयां उसे बहती हैं। बरसात के दिनों मे प्राय सारा ज़िला जलमग्न हो जाता है। इस का सदरमुक़ाम सोवारा अथवा नसीराबाद ब्रह्मपुच के दहने कनारे कलकत्ते के उत्तर ईशानकोन को झुकता ज्ञआ २०० मील है। —१५— पबना जसर के उत्तर। इस का सदरमुक़ाम पबना कलकत्ते से १३७ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता है। —१६— राजशाही पबना के वायुकोन की तरफ़। इस ज़िले के बीच कई धारा गंगा की और दूसरी नदीयां भी बहती हैं, और बरसात मे सब जगह जल ही जल हो-जाता हैं। इस का सदरमुक़ाम बौलिया कलकत्ते से १३० मील उत्तर गंगा के बांए कनारे पर बसा है।—१७—बगुड़ा राजशाही के ईशानकोन की तरफ़। इस का सदरमुक़ाम बगुड़ा कलकत्ते से १७५ मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को झुकता ज्ञआ है।—१८— रंगपुर बगुड़ा के उत्तर। ब्रह्म-पुच तिष्ठा करतोया इत्यादि कई नदियां इसे बहती हैं, और ईशानकोन की तरफ़ झीलें भी हैं। गर्मी कम पड़ती है। पूर्वभाग मे लू बिलकुल नही चलती। इस ज़िले मे बज्जतेरे आदमी आटा पीसने की तकीब न जानने के कारन गेहूं भी चावल की तरह उबाल कर खाते हैं। इमा-रत बज्जत कम, बड़े बड़े आदमी और महाजन भी घास फूस के बंगलों मे रहते है। जंगल ऐसे कि जिन मे हाथी गैंड़े फिरते हैं। सदरमुक़ाम रंगपुर कलकत्ते से २४० मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को झुकता है।—१९— दिनाजपुर रंगपुर के पश्चिम। नदियां इस ज़िले मे बज्जत है, गांव

गांव नाव घूमती है, पर बरसात मे जगह जगह पर जो पानी बंद रह जाता है और बहुत से तालाव जो बेमरम्मत पड़े हैं गर्मियों मे उन का सड़ना और सूखना बुरा होता है। सदरमुकाम दिनाजपुर कलकत्ते के ठीक उत्तर २२५ मील पूर्णवावा नदी के कनारे अनुमान ३०००० आदमी की बस्ती है।—२०— पुरनिया दिनाजपुर के पश्चिम। मोरंग का पहाड़ और जंगल इस जिले के उत्तर पड़ता है, जिसे संस्कृत मे किरात देश लिखा हैं। बरसात मे इस जिले की प्राय आधी धरती जलमग्न हो जाती है। जमीदारों को खेतियों की हाथियों से रखवाली करनी पड़ती है। जब अंगरेजों की वहां नई अमलदारी हुई थी तो उन के नौकरों ने उन से यह मशहूर करदिया कि यहां की लोमड़ी रात को रुपए और कपड़े भी उठा ले जाती है और इस बहाने से बहुतेरी चीजें चुरालीं। गाय.भैंस.यहां बहुत होती हैं, मोरंग के जंगल मे चराई का आराम है। सदरमुकाम पुरनिया कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोन को जरा झुकता, यद्यपि नौ मील मुरब्बा के विस्तार मे बसा है, पर आदमी उस मे चालीस हजार से अधिक न होंगे। जो लोग कुलीन नही होते वे लोग कुलीन बनने के लिये अपनी बेटियों को कुलीनों के साथ व्याहने मे बड़ा रुपया खर्च करते हैं, वरन कभी कभी दंतहीन और कंठागतप्राणवालों के साथ भी व्याह देते हैं, कि जिस्से फिर उस्के भाइयों का विवाह कुलीनों के साथ हो सके, और अकुलीन स्त्रियों के लेने से रुपया मिले।—२१— मालदह पुरनिया के दक्षिण।

सदरमुकाम मालदह कलकत्ते से १८० मील उत्तर महानंद नदी के तट पर अनुमान २०००० आदमियों की वस्ती है। गौड़ का शहर जो किसी समय मे बंगाले की राजधानी था, मालदह से नौ दस मील दक्षिण गंगा कनारे बस्ता था, अब गंगा की धारा वहां से चार पांच कोस हटगई, शहर की जगह खंड़हर और जंगली दरख़्त खडे हैं। अकबर के बाप हुमायूं बादशाह ने उस्का नाम जन्नताबाद रखा था। पुराना नाम उस्का लक्ष्मणावती है। उस्के खंड़हर अबतक भी बीस मील मुरब्बा मे नज़र पड़ते हैं। उस्मे एक मीनार ७१ फुट ऊंचा है।—२२— मुर्शिदाबाद मालदह से दक्षिण आबहवा वहां की ख़राब। सदरमुकाम मुर्शिदाबाद भागीरथी के बांए कनारे १२० मील कलकत्ते के उत्तर बसा है। पहले उस का नाम मक़सूदाबाद था, सन १७०४ मे बंगाले के नाज़िम मुर्शिदकुली खां ने उसे मुर्शिदाबाद किया, और सूबे बंगाले की राजधानी बनाया, कि जो बिहार से पूर्व बह्मा की हद तक चला गया है। अब भी नव्वाब नाज़िम जो सर्कार से पंद्रह लाख रुपया सालाना पिंशन पाता है इसी शहर मे रहता है, एक कोठी अंगरेज़ी तौर की अपने रहने के वास्ते बहुत उमदा बनाई है, कहते हैं कि उस्की तयारी मे आठारह लाख रुपया ख़र्च हुआ है, और अनुमान डेढ़ लाख आदमी उस शहर मे बस्ते हैं। मुर्शिदाबाद से छ मील दक्षिण भागीरथी के बांए कनारे बहरामपुर की छावनी है। —२३—बीरभूम मुर्शिदाबाद के पश्चिम। इस ज़िले मे कोयले और लोहे की खान है। सिउड़ी इस का सदरमु-

काम कलकत्ते से ११० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ है। वहां से ६० मील वायुकोन को झाड़खंड के बीच देवगढ़ मे बैद्यनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है। शिवरात्रि को बड़ा मेला होता है। हज़ारों कांवड़िये गंगा से महादेव के लिये गंगाजल लाते हैं। और पंदरह मील पश्चिम नागौर का पुराना शहर वीरान सा पड़ा है। उस्से सात मील पर वकलेसर मे गर्म पानी का एक सोता जारी है। गंधक का उस्मे असर है और थर्मामेटर(१) उस्के अंदर डुबाने से १५२ दर्जे चढ़ता है। सिउड़ी से अनुमान २० मील नैर्ऋतकोन को मंगलपुर के पास वृक्षरहित बीहड़ धरती मे जो कोयले की खान है, तीस सीढ़ी उत्तर कर उस्के अंदर जाना होता है, धरती के नीचे सुरंगों की तरह आध आध कोस तक हर तरफ़ खान खोदते चले गए हैं, और उन सुरंगो मे जगह जगह पर बड़े बड़े मोखे रखे हैं, उन्हीं मोखों की राह से जैसे कूए से पानी खींचते हैं,

---

(१) गर्मी का प्रमाण जानने के लिये थर्मामेटर ख़ूब चीज़ है। पतली लंबी गर्दन की एक शीशी मे पारा भरा रहता है मुंह शीशी का बिलकुल बंद और गर्दन शीशी की हवा से ख़ाली होती है, और उस शीशी के नीचे एक पटरी पीतल की २४० बराबर हिस्सों मे बंटी हुई लगी रहती है। पारे का स्वभाव है कि गर्मी से फैलता और सर्दी से सिकुड़ जाता है, पस यह पारा जहां जितना फैलकर जितने दर्जे तक उस शीशी के अंदर चढे वहां उतनी गर्मी समझनी चाहिये। बिना थर्मामेटर के कदापि कोई यह बात नहीं बतला सकता कि एक जगह से दूसरी जगह किस क़दर कम या ज़ियादः गर्मी है।

लोहे की चर्खियों से खुदाहुआ कोयला खींच लेते हैं, खान अंदर अंधेरी हैं, पर सीधी ऊंची चौड़ी और साफ़ ऐसी, कि यदि आदमी विना मशाल भी उस्मे जावे तो ठोकर और टक्कर न खावे, कई सौ आदमी सर्कार की तरफ़ से कोयला खोदा करते हैं, और साल मे चार पांच लाख मन कोयला वहां से निकलजाता है। खान के अंदर जो सोतों से पानी निकलता है उस के वाहर फेकने के लिये धूएं की कल लगाई है। दस वारह कोस के घेरे मे और भी इस तरह की कई खान हैं। जगह देखने लाइक़ है—२४—वर्द्दवान वीरभूम के दक्षिण। शुद्ध नाम इस का बर्द्धमान जैसा नाम तैसा गुण, धरती बड़ी उपजाऊ, वनारस से उतर कर ऐसा आबाद और उपजाऊ तो दुनिया मे कोई दूसरा ज़िला नही देख पड़ता। फैलाने से फ़ी मील मुरब्बा छ सौ आदमी की वस्ती पड़ती है। सदरमुक़ाम इस का वर्द्दवान कलकत्ते से ६० मील वायुकोन की तरफ़ अनुमान ६०००० आदमी की बस्ती है। मकान वहां के राजा ने बहुत उमदा उमदा वनवाए हैं, पालेस की कोठी और गुलावबाग़ दोनों देखने लाइक़ हैं, उनकी तयारी मे राजा ने अपने हौसिले बमूजिब कोई वात वाकी नही छोड़ी। वहांवाले कहते हैं कि यह गुलावबाग़ लंदन के हैडपार्क के नमूने पर बना है, अंगरेज़ी तौर के मकान और वाग़ इस तयारी और सफ़ाई के साथ इस गिर्दनवाह मे और कहीं भी नहीं मिलेंगे।—२५—हुगली वर्द्दवान के अग्निकोन को। उस्मे कोयले की खान है। सदरमुक़ाम हुगली भागीरथी के

दहने कनारे पर कलकत्ते से २६ मील उत्तर बसा है। मुर्शिदाबाद के नव्वाब के किसी रिश्तेदार ने वहां एक इमामबाड़ा बनवाकर उस्के खर्च के वास्ते कुछ ज़मीन माफ़ कर दी थी, लेकिन आमदनी ज़मीन की वहां के मुतवल्ली हज़म करजाते थे, अब सर्कार ने अपनी तरफ़ से ऐसा बंदोबस्त कर दिया है कि उस ज़मीन की आमदनी से इमामबाड़ा भी खूब तयार रहता है, और एक अस्पताल और दो बड़े विद्यालय भी मुकर्रर होगए हैं।—२६—मेदनीपुर हुगली और हवड़ा के नैर्ऋतकोन। आदमी इस ज़िले के बड़े सुस्त आलस्यी और धनहीन हैं। सदरमुकाम मेदनीपुर कलकत्ते से ६८ मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ है। —२७—बलेश्वर जिसे बालासोर भी कहते हैं मेदनीपुर के दक्षिण। नमक इस ज़िले मे लाख रुपए साल से ज़ियादः का बनता है। लोहे की खान है। सदरमुकाम बलेश्वर कलकत्ते से १४० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ बूढ़ीबलङ्ग नदी के दहने कनारे समुद्र से आठ मील पर बसा है। किसी समय मे जब सर्कार कम्पनी की तरफ़ से वहां तिजारत का कारखाना जारी था, और फ़रासीस डेनमार्क और डचवाले भी दूकान और कोठियां रखते थे, तो बहुत आबाद था, पर अब बिलकुल बेरौनक़ है। वहां के आदमी शराब बहुत पीते हैं और जो लोग शराब से पर्हेज़ रखते हैं वे अफ़यून खाते हैं।—२८—कटक बलेश्वर के दक्षिण। संस्कृत मे उसे उत्कल देश कहते हैं। बादशाही वक़्त मे वह अपने आसपास के ज़िलों के साथ बंगाले की हद तक सबे

उड़ेसा लिखा जाता था। बाग यहां अच्छे नहीं लगते कहीं कहीं लोहा और पहाड़ी नदियों का बालू धोने से कुछ सोना भी मिलता है। समुद्र के कनारे नमक बड़त बनता है। समुद्र के कनारे तो यह ज़िला दस कोस तक नीचा और जंगल है, और जब समुद्र से ऊमड़ा आता है तो बिलकुल जलमग्न होजाता है, और फिर दस कोस तक आबाद है, उस्से आगे पश्चिम को पहाड़ और बन है। पहाड़ सब से बड़ा दोहज़ार फुट तक समुद्र से ऊंचा है। सदरमुकाम कटक नव्वे हज़ार आदमी की बस्ती, कलकत्ते से अढाई सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता ड़आ महानदी के कनारे पर बसा है। क़िला बारहभट्टी अथवा बारहबट्टी का शहर से आध कोस पर बना है, गिर्द उस्के ८० गज़ चौड़ी खंदक है।—२६—खुरदा अथवा पुरी कटक के दक्षिण चिलका भील तक। सदरमुकाम पुरुषोत्तमपुरी अथवा जगन्नाथ कलकत्ते से ३०० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र के कनारे बसा है, उसे जगन्नाथ का मंदिर कुछ कम सवा दो सौ गज़ लंबा और इतना ही चौड़ा एक ऊंची पत्थर की दीवारों का हाता है उस्के भीतर ६७ गज़ ऊंचा बना है, इस बड़े मंदिर के सिवा जिसमे जगन्नाथ बिराजते हैं उस हाते के अंदर और देवताओं के भी बड़त से मंदिर हैं। जगन्नाथ के रथ के पहिये के नीचे दबकर मरने से हिंदूलोग बड़ा पुण्य समझते हैं, और आगे कितने ही आदमियों ने इस तरह पर अपनी जान देडाली है। इस मंदिर को राजा अनंगभीमदेव ने बनवाया था, और वह

सन ११७४ मे उड़ेसे की गद्दी पर बैठा था। कटक से जगन्नाथ जाते ज़ए कोई सोलह मील पर खुरदा की तरफ़ झाड़ी मे एक ऊंचा सा बुर्ज दिखलाई देता है, वहां से दो तीन कोस भवानेश्वर का उजड़ा ज़आ शहर है. वहांवाले बतलाते हैं कि किसी समय मे इस के अंदर सात हज़ार मंदिर और एक करोड़ महादेव के लिंग थे, अब भी बज़तेरे मंदिर टूटे फूटे पड़े हैं, एक उन मे से १८० फुट ऊंचा है, और एक लिंग भी महादेव का वहां चालीस फुट से कम नही है। भवानेश्वर से पांच मील पश्चिम खंडगिर के पहाड़ मे कई जगह पत्थर काटकर गुफा बनाई हैं, एक पर पुराने अच्चर भी खुदे हैं, पुराने मंदिरों के टूटे ज़ए खंभे इत्यादि और जैनमत की मूर्तें वहां बज़त पड़ी हैं, राजा ललितेंद्र केसरी के महलों के निशान हैं, और पहाड़ की चोटी पर एक नया मंदिर पार्श्वनाथ का अब थोडे दिनों से बना है। कटक से ३५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता बैतरणी नदी के दहने कनारे जहाज़पुर मे जो सब पुराने मंदिर और मूरतें कि अब तक भी बाकी हैं उन से मालूम होता है कि वह किसी समय मे बड़ा मशहूर और हिंदुओं का तीर्थ था। जगन्नाथ से १८ मील उत्तर समुद्र के तट पर कनारक गांव के पास एक पुराना टूटा ज़आ पर बड़ा अद्भुत सूर्य का मंदिर है, सन १२४१ मे राजा नृसिंहदेव लंगोरे ने बनवाया था, और बारह बरस की आमदनी उड़ेसे की उसमे खर्च ज़ई थी, यद्यपि शिखर बिलकुल गिर गया है पर फिर भी जितना बाकी है सवासौ फुट

के लगभग ऊंचा होवेगा। कहते हैं किसी समय मे उस्के ऊपर एक टुकड़ा चुम्बुक का इतना बड़ा लगा था कि लोहे के कील कांटे वाले जहाजों को जो उस तरफ़ से निकलते थे कनारे पर खींच लेता था। जगमोहन अथवा सभामंडप उस मंदिर का साठ फुट लंबा और इतना ही चौड़ा और ऊंचा है, दीवारें बीस बीस फुट तक मोटी हैं, यह मंदिर निरे पत्थरों का बना है, कि जिन को लोहे से आपस मे जड़ दिया है, और उस मे स्त्री पुरुष जीव जंतु पक्षी की सूरतें और बेल बूटे बड़ी कारीगरी के साथ बनाए हैं।—२०—बांकुड़ा बर्दवान के पश्चिम। कोयले की खान है। सदर-मुकाम बांकुड़ा कलकत्ते से सौ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता है। वहां सर्कार की तरफ़ से मुसाफ़िरों के लिये एक सरा बनाई गई है।—२१—भागलपुर मुर्शिदाबाद के वायु-कोन बिंध्य के पहाड़ पूर्व से इसी ज़िले तक हैं, यहां से फिर दक्षिण को मुड़ जाते हैं। एक क़िस्म की खरी मिट्टी इन पहाड़ों मे बहुतायत से होती है, अकसर वहां की औरतें जब गर्भवती होती हैं तो उसे खाती हैं। सदर-मुकाम भागलपुर पांच हजार घर की बस्ती कलकत्ते से २२५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे कोस भर के फ़ासिले से बसा है। भागलपुर के पूर्व दक्षिण को ज़रा झुकता साठ मील पर गंगा के दहने कनारे तीस हज़ार आदमियों की बस्ती राजमहल है। मकान बादशाही जो गंगा कनारे अच्छे उमदा बने थे अब सब टूट फूट कर खंडहर होगए। भागलपुर से दो मंज़िल दक्षिण

जंगल के बीच आध कोस ऊंचे मंदरगिर पर्वत पर हिंदुओं का प्राचीन तीर्थ है। पहाड़ और पानी के झरने बरसात मे बड़ी कैफ़ियत दिखलाते हैं। वहांवाले कहते हैं कि देवताओं ने इस पहाड़ से समुद्र मथा था।—३२—मुंगेर भागलपुर के पश्चिम सदरमुकाम मुंगेर, जिस्का असली नाम मुद्गिर बतलाते हैं, कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे पर है। क़िला मज़बूत था, पर अब बेमरम्मत और टूटा फूटा सा पड़ा है। बंदूक़ पिस्तौल छुरी कांटे इत्यादि लोहे की अंगरेज़ी चीज़ें वहां अच्छी और सस्ती बनती हैं। यह शहर सूबेबंगाले की सरहद पर बसा है, इस्के पश्चिम सूबेबिहार शुरू होता है। मुंगेर से पांच मील पूर्व सीताकुंड का गर्म सोता है, अठारह फ़ुट मुरब्बा मे पक्का ईंटों का एक हौज़ बना है, और उसी मे कई जगह पानी के नीचे से बुलबुले उठा करते हैं, जहां बुलबुले उठते हैं वहां पानी अधिक गर्म रहता है, पानी साफ़ है, और उस्से थर्मा-मेटर डुबाने से १३६ दर्ज तक पारा उठता है। उसी गिर्दनवाह मे और भी कई एक इस तरह के गर्म सोते हैं। —३३— बिहार मुंगेर के पश्चिम दक्षिण भाग मे पहाड़ हैं। अफ़यून इस ज़िले मे बहुत होती है, और चावल बासमती अच्छा। वहां ग्वालों के दर्मियान अजब एक रस्म जारी है, दिवाली के दिन एक सूवर के पांव बांध कर मैदान मे छोड़ देते हैं, और फिर उस को अपने गाय बैलों के पैर से कुंदवाते हैं, यहां तक कि वह मरजाता

है, इसका एक मेला होता है, और फिर उस सूवर को वे लोग खा जाते हैं, इस ज़िले मे अवरक बिल्लौर गेरू लोहा संगमूसा और अक़ीक की खान है। सदरमुकाम गया हिंदुओं का तीर्थ कलकत्ते से २८९ मील वायुकोन को फल्गु नदी के बाएं कनारे है। हिंदू निश्चय रखते हैं कि फल्गु कभी दूध की बहती है, कारण ऐसा मालूम होता है कि शायद उस के करारों के टूटने से कभी कभी खरी मिट्टी इतनी पानी के साथ मिलजाती है कि वह दूध सा दिखलाई देता है। यह बात अकसर नदियों से हुआ करती है, जिन के कनारों पर या थाह मे खरिया का असर है, हम दूध उसी को कहेंगे जिस्से मक्खन निकले। पुराना शहर गया जिस्मे गयावाल ब्राह्मण बसते हैं एक पथरीली उचान पर फल्गु नदी और एक पहाड़ी के बीच मे बसा है, और साहिबगंज जहां बज़ार है और बेवपारी लोग रहते हैं, रामशिला की पहाड़ी के दक्षिण और शहर के उत्तर फल्गु के कनारे मैदान मे है, इन दोनों के बीच साहिब लोगों के बंगले हैं। शहर की गलियां तंग और निहायत ग़लीज़ ऊंची नीची बीच बीच मे पत्थर के ढोके पड़े हुए, पत्थरों के तपने से और फल्गुका बालू धिकने से गर्मी वहां शिद्दत की होती है। फल्गु के कनारे बिष्णुपादोदका का मंदिर है, मंदिर के बीच मे कुण्ड को जिस्मे चरण का चिह्न है, चांदी से मढ़ा है। पास ही एक मंदिर मे पुण्डरीकाक्षजी की मूर्त्ति है, उस मूर्त्ति का पत्थर हाथ की चोट लगने से धातु की सी आवाज़ देता है,

हिंदू उसे करामात समझते हैं, यह नहीं जानते कि कौन मे ऐसा भी एक पत्थर होता है कि उसे बजाओ तो बाजे की आवाज़ें निकलें। आदमी वहां सब मिलाकर प्राय एक लाख बसते होंगे। गयावाल ब्राह्मण आगे यात्रियों पर बहुत ज़ियादती करते थे, अब भी अकसरों से जो कुछ वे बेचारे अपने घर से लाते हैं ले लिवाकर आगे को उन से तमस्सुक लिखवालेते हैं। बिहार ३००० आदमियों की बस्ती गया से ४० मील ईशानकोण की तरफ़ है। मुसल्मान बादशाहों के वक़ मे इसी शहर के नाम से यह सूबा जो सूबे इलाहाबाद और बंगाले के बीच मे पड़ा है पुकारा जाता था। संस्कृत मे उस्के दक्षिण भाग को मगध और उत्तर भाग को मिथिला लिखा है। किसी ज़माने मे इस के आस पास बौध लोगों के बड़े तीर्थ थे। बिहार वे लोग उस जगह को कहते हैं जहां उस मत के भिक्षुकों के रहने के लिये मठ और धर्मशाला बनें, वरन उन्ही मठ और धर्मशाला का नाम विहार है। अब भी इस ज़िले मे हर जगह बौध लोगों के मकान और मंदिरों के निशान मिलते हैं, और हरतरफ़ उनकी मूरतें टूटी फूटी ढेर की ढेर नज़र आती हैं, वरन जैनी और वैष्णवों ने भी वहां अपने मंदिरों मे कितनी ही मूरतें बौध मत की उठा कर रख ली हैं। बराबर के पहाड़ों मे जो गया से सात कोस है भिक्षुकों के रहने के लिये पत्थर काट काट कर सुन्दर सचिक्कण गुफा बनाई हैं, उन मे उस समय के खुदे हुए अक्षर भी मौजूद हैं। निदान ये सब निशान किसी समय

मे बौध मत के प्रबल होने के देखने लाइक हैं। बुधगया मे, जो गया से आठ मील होगा, एक पुराने बुध के मंदिर के पीछे पीपल का पेड़ है, ब्राह्मण उसे ब्रह्मा का लगाया और बौध उसे सिंहलद्वीप के राजा दुग्धकामिनी का लगाया कुछ कम तेईस सौ बरस का पुराना और उस स्थान को पृथ्वी का मध्य बतलाते हैं। देखने मे तो वह पेड़ कोई १५० बरस का पुराना मालूम होता है, पर यह अलबत्ता हो सकता है कि उसी स्थान पहले कोई दूसरा पीपल रहा हो। बिहार से सोलह मील दक्षिण पहाड़ों की जड़ मे राजगृह की छोटी सी बस्ती है, जिसे जरासिंध की राजधानी बतलाते हैं, और पहाड़ों के अंदर उस के मकान और उस मैदान का जहां वह भीम के हाथ से मारा गया था निशान देते हैं। मकानों के निशान और किले अथवा शहरपनाह की टूटी हुई पुरानी दीवार और बुर्जों को देखने से जो पहाड़ों के ऊपर दस मील के घेरे से नमूदार हैं मालूम होता है कि राजगृह किसी समय मे निस्सन्देह बहुत बड़ा शहर बसता था। यह जगह जैनी और वैष्णव दोनों का तीर्थ है। जैनियों के तो पांचों पर्वतों पर पांच मंदिर बने हैं, और वैष्णव गर्म और सर्द कुण्डों मे जिन की वहां इफ़रात है नहाते और अपने मत के देवलों मे दर्शन करते हैं। गर्मकुण्ड के पास ही एक गुफा, जैसी बराबर के पहाड़ मे है, पत्थर काटकर भिक्षुकों के रहने के लिये बनी है। वहां के अकसर बेवक़ूफ़ उसे सोनभंडार बतला कर कहते हैं कि उसमे जरासिंध की

दौलत गड़ी है। राजग्रह से पंदरह मील कुण्डलपुर रुक्मिनी का जन्मस्थान एक गांव सा बस्ता है, बुध की मूरतें और पुरानी इमारतों के निशान वहां भी बहुतायत से हैं। —३४—पटना अथवा अज़ीमाबाद विहार से पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ। सदरमुकाम पटना कलकत्ते से ३२० मील वायुकोन गंगा के दहने कनारे पर बसा है, और कनारे ही कनारे कोई नौ मील तक चला गया, पर बस्ती बहुत दूर दूर है, अगली सी आबादी अब नहीं रही, फिर भी लाख से ऊपर आदमी हैं। बाज़ार तो चौड़ा है, पर गलियां तंग मेंह में कीचड़ खुश्की में गर्द। बहुत दिन हुए कि सर्कार ने वहां एक गोदाम चावल रखने के लिये जिसे वहांवाले गोलघर कहते हैं गुम्बज़ अथवा औंधी हुई हांडी की सूरत का बनाया था, अब उसमें सिपाहियों का असबाब रहता है, आवाज़ उस्के अंदर खूब गूंजती है, चढ़ने को बाहर से दुतरफ़ा सीढ़ियां लगी हैं। एक मूर्त्ति को वहां के ब्राह्मण पटनेश्वरी देवी कह कर पूजते हैं, लेकिन वह मूर्ति असल में बुध की है। हरिमंदिर सिखों का तीर्थ है, कहते हैं कि उन का नामी गुरुगोविंदसिंह इसी जगह पैदा हुआ था। शाह अर्ज़ानी का मक़बरा मुसल्मानों की ज़ियारतगाह है। यह शहर बौध मती गुप्त राजाओं के समय में बड़ी रौनक़ पर था, मगध देश बरन सारे हिंदुस्तान की राजधानी और पाटली-पुत्र पद्मावती और कुसुमपुर के नाम से पुकारा जाता था। उस समय के यूनानियों ने उसे दस मील लंबा और

६४ दर्वाज़ों का शहर लिखा है। शास्त्र में पाटलीपुत्र को शोण के संगम पर कहा है, इस्से ऐसा मालूम होता है कि शोण आगे पटने के समीप गंगा से मिलती थी, अब १६ मील हट गई है। पटने से १० मील पश्चिम गंगा के दहने कनारे दानापुर की बहुत बड़ी छावनी है। दानापुर से इतनी ही दूर पर जहां शोण गंगा से मिली है मोनिया अथवा मनेर में एक मक़बरा पत्थर का मखदूम शाहदौलत का बहुत अच्छा बना है। पटने से तीस मील पूर्व गंगा के दहने कनारे बाढ़ छोटा सा क़स्बा है, चंबेली का फुलेल वहां बहुत उमदा बनता है।—२५—तिरहुत अथवा त्रिहुत जिसे बाज़े आदमी त्रिभुक्ति भी कहते हैं भागलपुर और मुंगेर से वायुकोन को। उत्तर में तराई का जंगल है। गंडक और कोसी नदी के बीच जो देश है उसे संस्कृत में मिथिला और वैदेह कहते हैं, उसी का यह मानो मध्य भाग है। आवहवा वहां की अंगरेज़ों को तो मुवाफ़िक़ है, पर हिंदुस्तानियों के लिये ख़राब। शोरा बहुत होता है। सदरमुक़ाम मुज़फ़रपुर आठ हज़ार आदमियों की बस्ती कलकत्ते से ३४० मील वायुकोन उत्तर झुकता हुआ है।—२६—शाहाबाद पटने से पश्चिम शोण से लेकर कर्म्मनाशा नदी तक, जो सूबेबिहार की हद है। नैर्ऋतकोन की तरफ़ उजाड़ है, बाक़ी सब आबाद और उपजाऊ। फिटकिरी की खान है, कभी कभी हीरा भी मिल जाता है। इस का सदरमुक़ाम आरा कलकत्ते से ३५० मील वायुकोन को है। आरे से दो मंज़िल पूर्व गंगा के

दहने कनारे वकसर का क़िला और शहर है। सन १७६४ मे नव्वाब वज़ीर शुजाउद्दौला ने सर्कारी फ़ौज से इसी जगह शिकस्त खाई थी। वकसर से चौंतीस मील दक्षिण सहसराम मे एक पक्के तालाव के बीच, जो मील भर के घेरे मे होगा, शेरशाह वादशाह का मक़वरा संगीन वना है। आरे से अनुमान ७५ मील दक्षिण पश्चिम को झुकता प्राय १००० फुट ऊंचे पहाड़ पर दस मील मुरव्बा के विस्तार मे शोण नदी के वांए कनारे एक वड़ा मज़बूत क़िला रुहतासगढ़, जिस का शुद्ध नाम रोहिताश्व वतलाते हैं, उजाड़ पड़ा है। उस पर जाने के लिये दो कोस की चढ़ाई का कुल एक तंग सा रस्ता है, वाक़ी सव तरफ़ वह पहाड़ जंगल और नदीयों से ऐसा घिरा है, कि किसी प्रकार भी आदमी का गुज़र नही हो सकता। दो मंदिर उस प्राचीन हैं, वाक़ी सव इमारत महल वाग़ तालाव इत्यादि जिन के अव केवल निशान भर वाक़ी रह गए हैं मुसलमान वादशाहों के वनवाए मालूम होते हैं।—३७—सारन, जिस्का शुद्धोच्चारण शरण है, शाहावाद के उत्तर, वहुत आवाद और उपजाऊ। शोरा वहां वहुत पैदा होता है, गाय वैल भी अच्छे होते है। सदरमुक़ाम छपरा ५०००० आदमियों की वस्ती कलकत्ते से ३६० मील पर वायुकोन को गंगा के वाए कनारे है। वहां से दो मंज़िल पूर्व गंडक के वांए कनारे, जहां गंगा के साथ उस का संगम हुआ है, हाजीपुर मे हरसाल कार्तिक की पूर्णिमा को एक वहुत वड़ा मेला हुआ करता है।—३८—चम्पारन सारन के उत्तर। सदरमुक़ाम मोती-

छाड़ी कलकत्ते से ३७५ मील वायुकोन को है वहां से थोड़ी सी दूर उत्तर सुगौली की छावनी है।—२८—आशाम सिलहट के उत्तर ब्रह्मपुत्र के दोनो तरफ़ हिमालय से चीन की सरहद तक चला गया है। आशाम आईनी ज़िलों में नही गिनाजाता, कमाऊं गढ़वाल और सागर नर्मदा की तरह इस इलाक़े के लिये भी एक जुदा कमिश्नर और अजंट मुकर्रर है, और उस्के नीचे छ बड़े असिस्टंट छ जगहों में कचहरियां करते हैं। पहला सदरमुकाम गोहाट में। दूसरा गोहाट से ७५ मील पूर्व ईशानकोण को झुकता नौगांव में। तीसरा गोहाट से ६५ मील ईशानकोण ब्रह्मपुत्र के दहने कनारे तेजपुर में। चौथा गोहाट से ८० मील पश्चिम ब्रह्मपुत्र के बांए कनारे ग्वालपाड़े में। पांचवां गोहाट से १९० मील ईशानकोण लखमपुर में। और छठा गोहाट से १८० मील ईशानकोण पूर्व को झुकता शिवपुर अथवा शिवसागर में। गोहाट से ६५ मील दक्षिण खसियों के पहाड़ में जिसे अंगरेज़ कोसिया कहते हैं समुद्र से ४५ फ़ुट ऊंची चेरापुंजी साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। रहने के लिये बंगले बनगए हैं। मेह वहां बहुत बरसता है। साल भर में ३०० इंच तक नापा गया है (१) अजंटी के तहत में बीस राजा और सर्दार

(१) मेह का हर जगह अंदाज़ा समझने के लिये यह तर्कीब बहुत अच्छी है, अर्थात जिस स्थान के मेह का प्रमाण जानना दरकार हो, इस बात को समझ लेना चाहिये कि जो वहां धरती बराबर होती और मेह का पानी जितनी धरती पर पड़ता उतनी ही धरती पर

गिने जाते हैं, पर केवल गिनती मात्र को हैं, राजा के बदल उन को बनरखा कहना चाहिये, केवल वन और झाड़ी उन की मिलकियत है, और यही जंगली आदमी जिनका वर्णन आगे होता है, उन की रैयत हैं। सर्कार के सब ताबे और फ़र्मांबर्दार हैं। जितनी नदियां इस ज़िले मे बहती हैं, शायद और कहीं भी इतने बिस्तार मे न बहती होंगी। इकसठ नदियां इस तरह की हैं, कि जिनमे प्राय बारहों महीने नाव चलती है। बरसात के दिनों मे जल चहुं दिश फैल जाता है। अगले समय मे वहां के राजाओं ने पानी के बीच रस्ता जारी रखने को बंध के तौर पर ज़मीन से तीन चार गज़ ऊंची सड़क बनाई थीं, इस्से ऐसा अनुभव होता है कि उन दिनों मे वह देश अच्छा बस्ता था, और आश्चर्य नहीं जो उसी राह से चीनवाले यहां और यहांवाले चीन को आते जाते हों, परंतु अब उन सड़कों पर जंगल जम गया है, और शेर भालू चलते हैं। लोहे और कोयले की खान है। नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। मटियातेल कई जगह से निकलता है। उत्तर मे जिस जगह ब्रह्मपुत्र दर्या हिमालय

इकट्ठा होने पाता, तो वह नापने मे कितना गहरा होता, जैसे चेरा पूंजी की सारी धरती थाली की तरह बराबर होती और साल भर के मेह का पानी बिना सूखने और बहने के उस पर इकट्ठा होने पाता, तो ३०० इंच गहरा होता। सर्कार ने मेह का पानी नापने के लिये लोहे के यंत्र बनवा तहसीलों मे रखवा दिए हैं। जब मेह बरसता है तो उस का प्रमाण नित का नित किताब मे लिख लिया जाता है।

को काटकर आसाम से आता है, उस का नाम प्रभुकुठार है, क्योंकि ब्राह्मणों के मत बमूजिब उसे परशुराम ने अपने कुठार से काटा था। जंगल पहाड़ बहुत है, विशेष करके पूर्व और उत्तर में, और उनके बीच बहुतेरी जात के जंगली मनुष्य अर्थात् आवर डफला गारुड विजनी खामती मिस्मी महामरी मीरी खिंहफो नागे इत्यादि बसते हैं। धर्मका इन के कुछ ठिकाना नहीं, सब चीज़ खाते हैं। तीरों को ज़हर में बुझाते हैं। ग़लीज़ ऐसे कि आबदस्त तक नहीं लेते। चौपायों के खोपडे काले करके शोभा के निमित्त बंदनवार की तरह अपने घरों में लटकाते हैं। कोई उन में बौध भी है। अकसर पेड़ों की छाल का लंगोट और सींक का टोप पहनते हैं, कोई कम्बल भी ओढ़ लेता है। कहते हैं कि इन में गारुड़ लोग जो ब्रह्मपुत्र के दक्षिण और सिलहट और मैमनसिंह के उत्तर बसते हैं सांप को भी खा जाते हैं, और कुत्ते के पिल्ले तो उन की बड़ी मिठाई हैं। पहले उसे पेट भरकर चांवल खिलाते हैं और फिर उसे जीता आग पर भूनकर भक्षण करजाते हैं। और जब आपस में तकरार होती हैं तो दोनो आदमी अपने अपने घर में चटाकर का दरख़्त लगाते हैं, और इस बात की सपथ करते हैं, कि क़ाबू मिलते ही अपने दुश्मन का सिर उस पेड़ के खट्टे फल के साथ खा जावें, और जब अपने दुश्मन का सिर काट लाते हैं, तो क़सम बमूजिब उसे चटाकर के साथ उबाल कर शोरबे की तरह खा जाते हैं, वरन अपने मित्र बांधवों को भी निमंत्रण करते हैं, और फिर उस पेड़

को काट डालते हैं, और जब लड़ाई झगड़े मे किसी बंगाली ज़मीदार का सिर काट लाते हैं, तो उस के गिर्द पहले तो सब मिलकर नाचते गाते हैं, और फिर उस की खोपरी साफ़ कर के घर मे लटकाते हैं बरन अशरफ़ी और बंकनोट की बराबर वहां ये बंगालियों की खोपरियां चलती हैं। सन १८१५ मे कालूमालूपाडे के ज़मीदार की खोपरी हज़ार रुपये और इंद्रतअल्लुक़ेदार की खोपरी पांच सौ रुपए पर चलती थी। वे लोग अपने मुर्दों को जलाकर बिलकुल राख कर डालते हैं, कि जिसमे कोई मनुष्य खोटे रुपए की तरह किसी गारूड़ की खोपरी बंगाली के एवज़ मे देकर उन्हे ठग न लेवे। विवाह वहां मर्द औरत की रज़ामंदी से होता है, और जो उनमे से किसी का बाप उस विवाह से नाराज़ हो तो सब लोग मिलकर उसे इतना पीटते हैं कि जिस्से वह राज़ी होजावे। स्वामी मरने से वहां की स्त्री देवर जेठ को ब्याहती हैं, और सारे भाई मरजावें तो श्वशुर से विवाह करती हैं। मालिक वहां छोटी लड़की होती है। मुर्दे को चार दिन बाद जलाते हैं। जो छोटा सर्दार मरे तो उस्के साथ एक गुलाम का सिर काटकर जलाते हैं, और जो कोई बड़े दर्जेवाला मरे तो उस्के सब गुलाम मिल कर एक हिंदू को पकड़ लाते हैं, उस का सिर काटकर उस्के साथ जलाते हैं। आदमी वे लोग मज़बूत और मिह-नती, नाक हबशियों की तरह फैली हुई, आंखें छोटी, माथे पर झुर्रियां, भवें लटकी हुई, मुंह बड़ा, होंठ मोटे चिहरा गोल, और रंग उन का गेहुंआं होता है। औरतें

नाटी, संदरी, और मर्दों से भी जियादः मज़बूत होती हैं। और कानों से उन के वीस वीस तीस तीस पीतल के इतने बड़े बड़े बाले पड़े रहते हैं, कि छाती तक लटकते हैं। आशाम के अमीर भी घासफूस के बंगले अथवा छपरों से रहते हैं। आशाम का पश्चिम भाग अबतक भी कामरूप के नाम से पुकारा जाता है, पर शास्त्र मे जो सीमा कामरूप देश की लिखी है, उस बमूजिब रंगपुर मैमनसिंह सिलहट जयंता कचार मनीपुर और आशाम ये सब कामरूप ही ठहरते हैं। संस्कृत मे कामरूप को प्रागज्योतिष भी कहते हैं। पुरानी पोथियों मे इस देश के बड़े बड़े अद्भुत कहानी क़िस्से लिखे हैं, नादान आदमी अबतक भी उसे जादू का घर समझते हैं तांत्रिक मत इसी जगह से फैला है। २६ दर्जे ३६ कला उत्तर अक्षांस और ९२ दर्जे ५६ कला पूर्व देशांतर मे कामाक्षा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। वहां के आदमियों की सूरत चीनियों से मिलती है। सदरमुक़ाम गोहाट कलकत्ते से ३२५ मील ईशानकोण, जो किसी समय मे कामरूप की राजधानी था, और अब जहां साहिब कमिश्नर रहते हैं, ब्रह्मपुत्र के बाएं कनारे पर एक गांव सा बस्ता है। —४०— नैर्ऋतकोनकीसीमा-और संभलपूर की अजंटी-और छोटे नागपुर की कमिश्नरी बांकुड़ा के पश्चिम। यह एक बहुत बड़ा इलाका है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई असिस्टंट रहते हैं, वही उसे जगह जगह पर आईनी ज़िले के मजिस्ट्रट कलक्टरों की तरह कचहरियां करते हैं, अपील उन सब का साहिब कमिश्नरके पास

आता है, वे कलकत्ते से २०६ मील पश्चिम वायुकोन को भुकता विश्किंमनपुर अथवा छोटे नागपुर मे रहते हैं। छावनी डोरंडा मे कोस भर दक्षिण है। हद इस इलाके की उत्तर को वीरभूम बिहार और मिरज़ापुर के ज़िलों से मिलती है, और दक्षिण को गंजाम तक जो मंदराज हाते का ज़िला है चलीगई। पूर्व उस के बाजगुज़ार महाल मेदनीपुर और बर्द्वान है, और पश्चिम बघेलखंड का राज सागर-नर्मदा और नागपुर का इलाका। इस इलाके मे आबादी कम है और उजाड़ और झाड़ी बहुत, ज़मीन बीहड़ और पथरीली, पर अकसर जगह तर और उपजाऊ, आबहवा खराब, सीसा सुरमा लोहा अबरक कोयला ज़बरजद और हीरे की खान है। नदी का बालू धोने से कुछ सोना भी मिल रहता है। पहाड़ों मे गोंद चुआड़ कोल धांगड़ इत्यादि कई जाति के जंगली मनुष्य ऐसे बसते हैं कि न उन के धर्म का कुछ ठिकाना है और न खाने पीने का, आदमीयत की बूबास बिलकुल नही रखते, और लूटमार बहुत पसंद करते हैं। बहुतेरे उन से, विशेषकर के जो लोग सिरगूजा के पहाड़ों मे रहते हैं, बनमानसों की तरह नंगे फिरते हैं, और केवल बन के फल फूल तेंदू महुआ इत्यादि और कंदमूल खाकर गुज़ारा करते हैं, बरन वहांवाले तो उन की असभ्यता का वर्णन यहां तक करते हैं कि जब उनके रिश्तेदार लोग इतने बुढे अथवा रोग से शक्तिहीन हो जाते हैं कि चल फिर नही सकते तो उन्हे वे लोग काट काट कर खा जाते हैं। इसे जो मुल्क

सर्कारी बंदोवस्त मे कमिश्नरी से संबंध रखता हैं, उसे छोटानागपुर मानभूम और हज़ारीबाग़ तीन हिस्सों मे बांट कर तीन असिस्टंटों के तावे कर दिया है। पहले का सदरमुकाम लोहारडग्गा छोटेनागपुर से ४५ मील पश्चिम, दूसरे का पुरुलिया छोटे नागपुर से ७० मील पूर्व, तीसरे का हज़ारीवाग़ छोटेनागपुर से ५० मील उत्तर, वहां सर्कारी फ़ौज की छावनी है। हज़ारीवाग़ के पास कई सोते गर्मपानी के ऐसे हैं जिन मे गंधक का असर है, और उन के अंदर थर्मामेटर डुवाने से १९० दर्जे तक पारा चढ़ता है। हज़ारीवाग़ से अनुमान दो मंज़िल पूर्व समेत-शिखर के पहाड़ पर जैनियों का एक बड़ा तीर्थ और मंदिर है। अजंटी के आधीन नाम को तो ५८ राजा हैं, पर इख़्तियार उन को बहुत थोड़े, रुपया मालगुज़ारी का सर्कारी ख़ज़ाने मे दाख़िल करते हैं। —४९—बाजगुज़ार महाल नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पूर्व, और कटक और बलेश्वर के पश्चिम, जंगल झाड़ी बहुत, आबहवा निहायत ख़राब, कोयला लोहा पेवड़ी खरिया और अबरक की खान है। नदीके बालू मे से सोना भी हाथ लगता है, पर बहुत थोड़ा। आदमी असभ्य और प्राय जंगली, राजा इन महालों मे केवल नाम मात्र हैं, इख़्तियार सब साहिब सुपरिंटेंडंट का है। खंड लोग वहां अब तक अपने देवता के आगे आदमी का बल देते हैं, वरन उन का यह निश्चय है; कि जब तक आदमी को बल चढ़ाकर उस्का मांस खेत मे न गाड़ें, तब तक गल्ला

अच्छा पैदा न होगा। मकफ़र्सन साहिब अपने रिपोर्ट मे लिखते हैं कि ये लोग अपनी कौम का आदमी नही काटते आसपास के इलाकों से लड़के ले आते हैं, वलदान के समय पहले उन के हाथ पैर की हड्डियां तोड़ डालते हैं, फिर खेतों मे गाड़ने के लिये उन के बदन से मास के टुकड़े काटते हैं। सर्कार ने इस बुरे काम को बंद करने के लिये बहुतेरी तदबीरें की हैं, पर वे कमबख़्त चोरी छिपे आदमियें को काटही डालते हैं।—४२—नागपुर, नैर्ऋत कोन की सीमा और संभल पुर की अजंटी के पश्चिम। यह बड़ा इलाका नैर्ऋत कोन की तरफ़ हैदराबाद की अमल्दारी से जा मिला है। इस इलाके मे कुछ हिस्सा सूबे गोंदवाने का आगया है, बाकी सूबे बराड़ है। अकबर के वज़ीर आबुलफ़ज़्ल ने नागपुर के राजा को बराड़ का राजा लिखा, कि जिस सबब से अब तक भी उस्का वह नाम चलाजाता है, पर हकीकत मे नागपुर गोंदवाने मे है, बराड़ की राजधानी इलचपूर था जो अब हैदराबादवाले के कब्ज़ मे है। उस समय वे, लोग इन इलाकों से बहुत कमवाकिफ़ थे, और ये इलाके बादशाहों के कब्ज़ मे अच्छी तरह नही आए थे। अब भी नागपुर के इलाके मे, विशेष करके पूर्व भाग के दर्मियान, जैसे जैसे जंगल उजाड़ और झाड़ पहाड़ पड़े हैं हम जानते हैं किसी दूसरे इलाके से न होंगे, और उन मे विशेष करके बसतर की तरफ़ जो अग्निकोन को है, आदमी भी जिन्हें गोंद कहते हैं प्रकृति मे वनमानसों से कम नही होते। स्त्रियें तो उन की दो चार पत्ते कमर मे

लटकाए रहती हैं, पर मर्द नंगे मादर्ज़ाद जंगलों में फिरा करते हैं, घर बार बिलकुल नही रखते नाक उन की चिपटी फैली ऊई होंठ मोटे बाल अकसर घुंघरवाले, केवल बन के कंद मूल और फल फूल अथवा शिकार से गुज़ारा करते हैं। गोमांस तक खाते हैं। अपनी देवी के साम्हने आदमी का बल चढ़ाते हैं। उन में से जो लोग बस्तियों के पास बस गए हैं वे खेती बारी और नौकरी चाकरी भी करते हैं, और अब आदमी बनते चले हैं। ज़मीन वहां की बलंद बीहड़ और अकसर पथरीली है, पहाड़ी नाले खोले और घाटे हरमुक़ाम पर हैं। आबहवा जंगलों की ख़राब, पानी उस से कहीं कहीं बऊत कम मिलता है। लोहा इस इला-क़े में कई जगह से निकलता है, और गेरू की भी खान है। किसी ज़माने में बैरागढ़ की खान से हीरा निकलता था, पर अब बंद हो गया। कहीं कहीं नदियों का बालू धोने से कुछ सोना भी निकल आया करता है, लेकिन निहायत कम। निदान इस बेआईनी इलाक़े में भी आग्रास और छोटे नागपुर की तरह एक कमिश्नर रहता है, और उसके तहत में पांच डिपटी कमिश्नर आईनी ज़िले के कलक्टर की तरह पांच ज़िलों में काम करते हैं। पहला कलकत्ते से ६७७ मील पश्चिम २१ अंश ९ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ११ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १००० फुट बलंद सदरमुक़ाम नागपुर में रहता है। गर्मी की शिद्दत वहां बऊत नहीं होती। आदमी शहर में १४०००० बसते हैं, लेकिन गली कूचे तंग और निहायत ग़लीज़, बरसात में की

बड बड़ी होजाती है, मकान देखने लाइक़ कोई नही, जिधर देखो झोंपड़ेही झोंपड़े दिखाई देते हैं। शहर के गिर्दनवाह मे दरख़्त बिलकुल नही, पटपर मैदान पड़ा है। दक्षिण तरफ़ एक छोटा सा नाला नाग नदी नाम बहता है, इसी से शायद इस शहर का नाम नागपुर रखा। छावनी पास ही सीताबलदी की पहाड़ी पर है। दूसरा नागपुर से १५० मील पूर्व रायपुर मे रहता है। वहां से १०० मील उत्तर सातपुड़ा पहाड़ के ऊपर जहां से सोन और नर्मदा निकली हैं एक बडे भारी जंगल मे अमरकंटक महादेव का मंदिर हिंदू का तीर्थ है। तीसरा नागपुर से ४० मील पूर्व बान गंगा के दहने कनारे भंडारे मे रहता है। चौथा नागपुर से ८० मील उत्तर छिंदवारे मे रहता है। और पांचवां नागपुर से १०५ मील दक्षिण अग्निकोन को ज़रा झुकता बरदा नदी के बांए कनारे से ५ मील के तफ़ावत पर चांदा मे रहता है।

पंजाब की लेफ़्टिनंट गवर्नरी।

अब उन ज़िलों का बयान किया जाता है जो पंजाब के लेफ़्टिनंट गवर्नर के तहत मे हैं।—१—दिल्ली बलंदशहर के वायुकोन। बादशाही ज़माने मे इस नाम का एक सूबा गिना जाता था, कि जिस्की हद सूबेलाहौर से मिलती थी।

शहर दिल्ली का, जिसे बज्धा शाहजहानाबाद कहते हैं, लाहौर से २५० मील अग्निकोन को जमना के दहने कनारे बसा है। युधिष्ठिर महाराज ने इस जगह इंद्रप्रस्थ बसाया था, और तब से वह स्थान बराबर हिंदुस्तान की राजधानी रहा। जिस ने इस देश पर चढ़ाव किया पहले उसी के तोड़ने पर मनदिया, जो बादशाह वहां आया उस ने पुराने शहर को तोड़ कर नया अपने नाम से आबाद किया। अब जो शहर मौजूद है अकबर के पोते शाहजहां बादशाह का बसाया है, और इसी लिये उस्के नाम से पुकारा जाता है। चारों तरफ़ संगीन ६३६४ गज़ शाहजहानी शहरपनाह है, तेरह दर्वाज़े, सोलह खिड़कियां, तीन उन से बंद, बाज़ार क़िले से दिल्ली दर्वाज़े तक तीस गज़ चौड़ा, और लाहौरी दर्वाज़े तक चालीस गज़ चौड़ा होवेगा। नहर जमना की गली गली घूमी है। क़िला लाल पत्थर का ऐन जमना के कनारे बज्जत सुंदर बना है। करोड़ रुपया उस की तयारी से खर्च ज्ञआ बतलाते हैं। और उस के अंदर दीवानआम दीवानख़ास इत्यादि कई मकान संगमर्मर के बज्जत उमदा बने हैं। यह वही मकान है जिसे किसी समय तख़्तताऊस रखा जाता था, टवर्नियर साहिब अपनी किताब से लिखते हैं, कि शाहजहां ने ज्ञक्म दिया था, कि इस दीवानख़ास के तमाम दर दीवारों पर अंगूर के गुच्छे बनाए जावें, इस ढब से, कि कच्चे अंगूर की जगह पन्ना और पक्के की जगह एक एक लाल संगमर्मर से जड़देवें, बरन एक ताक़ इस तरह का बनकर तयार भी होगया था,

परंतु फिर औरंगज़ेब का इख़्तियार हो जाने से वह काम जाता रहा। अब यह मकान बेमरम्मत है, जिन हौज़ों से गुलाब और बेद्मुश्क भरा जाता था, उन से अब काई जम गई है, और जहां मखमल और कमखाब के फ़र्श पर मोतियों की झालर के शमियाने खड़े होते थे, वहां अब कोई झाड़ू भी नहीं देता, वरन सैकड़ों मन कबूतर और अबाबीलों की बीटें पड़ी है। कहते हैं कि औरंगज़ेब के वक़ में यहां बीस लाख आदमी बसते थे। नादिरशाह ने सन १७३८ मे क़तलआम किया, और फिर मरहठों ने तो इसे ऐसा तबाह कर डाला, कि सन १८०३ मे जब लार्डलेक ने उन लोगों से छीना तो बिलकुल उजाड़ पाया, जो वहां आया सो लूटने ही को आया था, केवल एक यह लेक साहिब उसे लूटमार से बचाने के लिये पहुंचे। सन १८५४ से १५२००० आदमी उसमे गिनेगए थे, और हिंदुस्तान के पहले दर्जे के शहरों मे गिना जाता है। जामे मसजिद, जिसे दस लाख रुपया लगा है, इस शहर की सो हिंदुस्तान मे तो क्या शायद सारे जहान मे इस शान की न निकलेगी। तूल उस का २६१ फुट, कुरसी ३५ ज़ीनों की, मीनार १३० फुट बलंद, इन मीनारों पर चढ़ने से सारा शहर थाली की तरह दिखलाई देता है। हर सुखराय-कागज़ी का बनाया हुआ जैन मंदिर भी देखने लाइक़ है, संगमर्मर और पच्चीकारी का काम किया है। शहर के बाहर दस दस कोस तक हर तरफ़ खंडहर और मक़बरे पड़े हैं, खंडहर कैसे कि जब तयार हुए होंगे लाखों बरन बहुतों से करोड़ों रुपए लगे

होंगे, क़बरें किन की कि जिन की अर्दली में लाखों सवार दौड़ते होंगे, जो रत्नजटित चिलमचियों में पिशाब करते थे अब उन की क़बरों पर कुत्ते मूतते हैं, जो सारे हिंदुस्तान में न समाते थे सो अब डेढ़ गज़ ज़मीन में सोए हैं, जिन पर मखी नही बैठने पाती थी उन्हें अब दीमक चाटते हैं। निदान कौड़ियों बादशाह इस शहर के आसपास मिट्टी में दबे पड़े हैं॥ दोहा॥ इत तुग़लक़ इत इलतमिश इत हि मुहम्मदशाह॥ इतहि सिकंदर सारखे बहुतेरे नरनाह॥१॥ जो न समाए बाहु बल अटक कटक के बीच॥ तीन हाथ धरती तले मीच कियो अब नीच॥२॥ शहर से अढ़ाई कोस बाहर अकबर के बाप हुमायूं का मक़बरा, जिस की तयारी में पंद्रह लाख रुपया लगा था, और निज़ामुद्दीन औलिया की दर्गाह, अब भी देखने लाइक़ हैं। शहर से सात कोस पर नैर्ऋतकोन को कुतब साहिब की दर्गाह है, वहां झील का बंध बांधकर उसपर से चादर झरने नहर और फ़व्वारे निकाले हैं, बरसात में सैर की सुहावनी जगह है, फूलवालों का मेला मशहूर है, वहां शहाबुद्दीनग़ोरी ने महाराज पृथीराज का मंदिर तोड़कर उस्के मसाले से कुव्वतुल्इसलाम नाम एक मसजिद बनानी चाही थी, उमर उस की पूरी हो गई और मसजिद अधूरी ही रही॥ दोहा॥ जो आए नूतन रचे घर गढ़ नगर समाज॥ पूरे काहू ने नही किये जगत के काज॥१॥ मंदिर की भी कुछ दीवारें जो टूटने से बचीं अब तक उस में खड़ी हैं, पर मूरतों के आकार बिलकुल खंडित कर दिए। यदि यह मसजिद तयार हो जाती,

शायद इतनी बड़ी दुनिया भर मे दूसरी न निकलती, और उस के बीच एक कीली अष्टधात की, जिसपर कुछ पुराने हिंदी हर्फ़ खुदे हुए हैं, सवा पांच फुट मोटी और बाईस फुठ ऊंची गड़ी है, मिहराबों पर मस्जिद के, जो साठ फुट ऊंची होवेंगी, इस खूबी और सफ़ाई के साथ संगतराशी की है, कि शायद मुहर खोदने मे भी कोई न करे, और एक मीनार उस मस्जिद का, जो फिर पीछे से शमशुद्दीनइलतमिश ने बनवाया था, २४२ फुट ऊंचा, जिस्से चढ़ने के लिये ३७८ सीढ़ियां लगी हैं, अब तक खड़ा है। यह मीनार जिस्का तीन दर्जा तो लाल पत्थर और चौथा संगमर्मर का बनाया है, और हर दर्जों पर कुरान की आयत बहुत खूबसूरती से खोदी हैं, निहायत खूबसूरत बना है। इतना ऊंचा और साथ ही ऐसा खूबसूरत शायद दूसरा मीनार दुनिया से न निकलेगा। शहर के पास एक मुकाम पर जिसे लोग जंतरमंतर कहते हैं, ग्रह नक्षचादिकों के देखने के लिये राजा जयसिंह के बनवाए कुछ यंच अब तक मौजूद हैं। शहर से बाहर पास ही एक खंडहरे मे, जिसे लोग फ़ीरोज़शाह का कोटला कहते हैं, ४८ फुट ऊंची एक ही पत्थर की एक लाट खड़ी है, और उस पर भी वही हर्फ़ और वही बातें खुदी हैं, जो इलाहाबाद की लाट पर हैं। —२—गुड़गांवां दिल्ली के नैर्ऋतकोण को। सदर मुकाम गुड़गांवां लाहौर से २६० मील अग्नि कोन को है।—३—झझर गुड़गावें के उत्तर। सदर मुकाम झझर लाहौर से २४० मील अग्नि कोन को ज़रा दक्षिण की तरफ़ झुकता हुआ

है।—४—रोहतक गुड़गांवें के उत्तर। सदरमुकाम रोहतक लाहौर से २२५ मील अग्नि कोन दक्षिण को झुकता हुआ, शहर पुराना और टूटा फूटा है।—५—हिसार अथवा हरियाना रोहतक से पश्चिम वायुकोन को झुकता। गाय भैंस उस ज़िले से अच्छी होती हैं, दूध बहुत देती हैं। एक साहिब ने वहां एक बैल सवा चार हाथ ऊंचा नापा था, और वह दस मन पानी की पखाल उठाता था। बस्ती बहुधा जाट गूजरों की, पानी कम, सत्तर अस्सी हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। सदरमुकाम इस का हिसार लाहौर से २०० मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ है, किसी वक़्त में वह बहुत बड़ा शहर था, अब उस में दस हज़ार आदमी भी नहीं बसते। फ़ीरोज़शाह के महल के खंडहरे जिस जगह खड़े हैं, वह उस समय शहर का मध्य गिना जाता था। उसी के पास लोहे की एक कीली भी गड़ी है। —६—सिरसा हिसारके वायुकोन। सदरमुक़ाम सिरसा लाहौर से १५० मील दक्षिण है।—७—पानीपत रोहतक के वायुकोन। सदरमुक़ाम पानीपत लाहौर से २२५ मील अग्निकोन को बसा है। वहां बूअलीक़लंदर की दर्गाह है, जिस में कसौटी के खंभे लगे हैं। इस जगह में दो लड़ाइयां बहुत बड़ी बड़ी हुई हैं, पहली सन १५२५ में अकबर के दादा बाबर और इबराहीम लोदी के बीच, और दूसरी सन १७६१ में अहमद शाह दुर्रानी और सदाशिवराव भाऊ के बीच, कि जिसे पीछे फिर इतनी फ़ौज किसी लड़ाई के मैदान में अब तक इस मुल्क में इकट्ठा

नहीं हुई। कहते हैं कि अस्सी हज़ार सवार पियादे तो अहमदशाह की तरफ़ थे, और पचासी हज़ार मरहठों की तरफ़, और वहीर तो गिनती से बाहर थी, मरहठों के लशकर में सब मिलाकर कम से कम पांच लाख आदमियों की भीड़भाड़ होगी। पानीपत से २४ मील उत्तर करनाल बीस हज़ार आदमी की बस्ती जमना की नहर के कनारे है, छावनी वहां की प्रसिद्ध थी पर अब बिलकुल टूट गई। —८—थानेसर सहारनपुर के पश्चिम। सदरमुक़ाम थानेसर, जिसे संस्कृत में स्थाणुतीर्थ और कुरुक्षेत्र कहते हैं, लाहौर से १६० मील अग्निकोन को सरस्वती के बांए तीर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है, इसी जगह कौरव पांडव जूझे थे, और महाभारत हुई थी। सरस्वती में अब पानी बहुत कम रहता है। शेखचुहली का, जिसे लोग शेखचिल्ली कहते हैं, यहां मक़बरा है। कहते हैं कि उस के दर्वाज़े पर नीचे तो यह लिखा था कि खुदा के वास्ते ज़रा ऊपर देख, और ऊपर यह लिखा था ऐ बेवकूफ़ क्या देखता है, पर अब तो टूटा फूटा सा पड़ा है, यह बात वहां कहीं दिखलाई नहीं देती।—९—अम्बाला थानेसर के उत्तर। सदरमुक़ाम अम्बाला लाहौर से १६० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता बड़ी छावनी की जगह है।—१०—लुधियाना अंबाले के वायुकोन। सदरमुक़ाम लुधियाना लाहौर से १०० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता सतलज की एक धारा के बांए कनारे पर बसा है। यहां भी पशमीने का काम बनता है।—११—फ़ीरोज़पुर लुधियाने से पश्चिम। सदरमक़ाम

फ़ीरोज़पुर लाहौर से ४६ मील दक्खिण अग्निकोन को भुकता सतलज के बांए कनारे पर बड़ी छावनी की जगह है। किला भी एक कच्चा पर दुश्मन का दांत खट्टा करने को बहुत पक्का सर्कार ने बनवाया है। इन ऊपर लिखे हुए चारों ज़िलों मे दरख़्त बहुत कम हैं, कोसों तक सिवाय आक और भड़बेरी के दूसरा कोई पेड़ दिखलाई नहीं देता। फ़ीरोज़पुर की गर्द मशहूर है, धुनी हुई राख की तरह उड़ती है आंधी मे क़यामत का नमूना दिखलाती है। बस्ती बहुधा सिखों की है। पच्छिम के बादशाहों की चढ़ाई और नित की लड़ाई भिड़ाई से यह देश निपट उजाड़ हो गया था, पर अब सर्कार के साए मे फिर आबाद होता चला है। इन ज़िलों मे भी पंजाब की तरह कूए मे रहट लगाकर पानी निकालते हैं; मोट बैलों से नहीं खिचवाते। —१२—शिमला हिमालय के पहाड़ों मे अंबाले से नव्वे मील उत्तर पूर्व को भुकता हुआ। लोहा इस ज़िले मे कोटखाई के पर्गने के दर्मियान बहुत निकलता है। सदरमुक़ाम शिमला लाहौर से १५० मील पूर्व अग्निकोन को भुकता हुआ समुद्र से सात हज़ार दो सौ फुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। अम्बाले से पैंतालीस मील पर पहाड़ की चढ़ाई शुरू होती हैं, वहां पहाड़ की जड़ मे कालका नाम एक छोटी सी बस्ती है, बाज़ार गोदाम इत्यादि जगहें बनी हैं, साहिब लोग गाड़ी बग्गी ऊंट पालकी इत्यादि इसी जगह छोड़ देते हैं, और यहां से खच्चर और पहाड़ी कुलियों पर बोझा लादकर घोड़े पर अथवा भम्पान से, कि जिसे पहा-

ड़ी तामजान कहना चाहिये, सवार हो जाते हैं, पुरानी सड़क में तो चढ़ाव उतार बहुत पड़ता था, पर अब जो नई सड़क निकली है उसपर लोग कालका से शिमला तक सरपट घोड़ा दौड़ाए चले जाते हैं, बरन अब इस राह से वहां ऊंट और गाड़ी छकड़े भी आने जाने लगे हैं। यह सड़क जब तक रहेगी, वलियम इडवार्ड साहिब का नाम क़ाइम रक्खेगी, उन्ही की तजवीज़ से यह सड़क बनाई गई है, और उन्ही के वाइस से यह राह निकली है। पांच पांच सात सात कोस पर डाकबंगले बने हैं, और पानी के झरने क़दम क़दम पर झरते हैं। कालका से पुरानी सड़क की राह नौ मील कसौली चढ़कर, जो समुद्र से सात हज़ार फुट ऊंचा है और जहां गोरों की पलटन रहती है, फिर प्राय नौ ही मील सबाठू को उतरना पड़ता है। सबाठू समुद्र से ४२०० फुट ऊंचा है, वहां भी गोरे सिपाहियों की छावनी है, और शिमला की कलकटरी का ख़ज़ाना रहता है। सबाठू से शिमला तक फिर बराबर सत्ताईस मील उतार चढ़ाव है। गर्मी के दिनों में जब कालका में लूएं चलती हैं, और पंखे से भी जान नहीं बचती, तब दो घंटे की राह कसौली चढ़कर ऊनी और रूईदार कपड़े पहन्ने पड़ते हैं, और आग तापते हैं। हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ भी वहां से नज़र आते हैं। शिमला के पहाड़ पर प्राय तीन सौ कोठियां केलों के जंगलों में, जिसे फ़ारसीवाले सनोबर कहते हैं, साहिबलोगों के रहने के वास्ते बहुत उमदा बनी हैं। जाड़ों में शिमला

खाली रहता है, पर गर्मियों मे चार पांच सौ अंगरेजों की भीड़ भाड़ हो जाती है। चीजें ऐश की सब यहां मयस्सर, आबहवा की सफाई स्वर्ग से भी शायद कुछ बढ़कर। गर्मी से वहां इतनी सर्दी रहती है, कि जितनी मैदान मे पूस माघ के दर्मियान; और जाड़ों मे तो वहां सड़कों पर हाथ हाथ दो दो हाथ बर्फ पड़ जाती है। बर्फ गिरने के वक्त अजब कैफियत होती है, जाड़ों मे जिस तरह कुहरा छाता है, उसी तरह पहले तो अंधेरा सा हो जाता है, और फिर जैसे रूई के छोटे छोटे फाहे धुनते वक्त उड़ते हैं, उसी तरह बर्फ भी गिरने लगती है, यहां तक कि सारे पहाड़ दरख्त और मकान सफेद हो जाते हैं, मानो किसी ने आसमान से सैकड़ों मन कंद या पीसा हुआ सफेद नमक छिड़क दिया है, उस वक्त उस मे चलने से बालू की तरह पांव धस्ता है; पर कुछ देर बाद जब वह जमकर पाला होजाती हैं, तो फिर पत्थर भी उस्के आगे नर्म है, और चलनेवालों का पैर खूब ही फिसलता है, बरन घोड़े के सवारों को तो जान जोखों है। निदान शिमला भी इस हिमालय के पहाड़ मे एक अति रम्य और मनोहर स्थान है।—१३—जालंधर लुधियाने के उत्तर पश्चिम को झुकता हुआ सतलज पार। पानी इस जिले मे ज़मीन से नज़दीक है, अक्सर जगह गज़ भर खोदने से निकल आता है। सदरमुकाम जालंधर लहौर से ८० मील पूर्व बसा है।—१४—हुशयारपुर जालंधर के पूर्व। सदरमुकाम हुशयारपुर लाहौर से ६५ मील पूर्व है।—१५—कांगड़ा हुशियारपुर के ईशान कोन। यह

ज़िला बिलकुल हिमालय के पहाड़ों मे बसा है । घेघे की बीमारी यहां अकसर होती है । सदरमुक़ाम कांगड़ा, जिसे नगरकोट भी कहते हैं, लाहौर से १३० मील पूर्व ईशान कोण को झुकता एक छोटे से पहाड़ पर बसा है । क़िला वहां का मज़बूती मे प्रसिद्ध है, उस के आसपास पर्बतस्थली ने फैलाव ख़ूब पाया है, और पानी के सोते अनगिनत जारी हैं, इस लिये धान बहुत उपजता है । महामाया का मंदिर, जिसे वहां देवी का भवन कहते हैं, हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है । तीन चार कोस की चढ़ाई चढ़कर धर्मशाला की छावनी मे साहिबलोगों के बंगले हैं, वहां बर्फ़ का पहाड़ बहुत समीप है, गर्मी मे भी कांगड़ेवालों को बर्फ़ लेने के वास्ते सात आठ कोस से अधिक नही जाना पड़ता । कांगड़े से दो मंज़िल वायुकोन की तरफ़ कोहिस्तान मे समुद्र से दो हज़ार फुट ऊंचा नूरपुर बसा है, शालबाफ़ों की दूकान है, पर थोड़ी और शाल भी अच्छी नही बनती । कांगड़े से ७० मील ईशानकोण पूर्व को झुकता मणिकर्ण का तप्त कुंड है, उस कुंड का पानी इस क़दर गर्म रहता है, कि जो चावल रूमाल मे बांधकर उसे डाल दो, देखते ही देखते पक पकाकर भात हो जाता है । कांगड़े से अनुमान पच्चीस मील इधर, व्यास नदी के सात मील पार, ज्वालामुखी हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है । शिवालय और देवस्थान वहां कई पक्के बने हैं, और कुंड भी निर्मल पहाड़ी जल से सुथरे भरे हैं । ज्वालाजी का मंदिर ऐन पहाड़ की जड़ मे है, उस के कलस और गुम्बज़ पर बिलकुल सुनहरी मुलम्मा

किया है। दर्वाज़े पर चांदी के पच जड़े हैं, और सभामंडप मे नयपाल के राजा का चढ़ाया जिस पर उस्का नाम भी खुदा हुआ है एक बड़ा सा घंटा लटकता है। मंदिर के अंदर बीचोंबीच मे एक कुंड तीन हाथ लंबा डेढ़ हाथ चौड़ा और दो हाथ गहरा बना है, उस कुंड के अंदर बायुकोन की तरफ़ चार पांच अंगुल का चौड़ा एक मोखा है, उसी मोखे के अंदर से आग की ज्वाला प्राय हाथ भर ऊंची निकलती है, सिवाय इस मोखे के उस कुंड मे आग निकलने के और भी कई छोटे छोटे सूराख़ हैं। कुंड से बाहर उसी रुख़ को मंदिर की दीवार के कोने मे भी एक मोखा है, उस मे से भी हाथ भर ऊंची एक ज्वाला निकलती है, इस को वहांवाले हिंगलाज की लाट पुकारते हैं। पश्चिम की दीवार मे चांदी से मढ़ा एक छोटा सा आला है, उस से भी छोटे छोटे दीए की टेम की तरह आग निकलने के सूराख़ हैं। उत्तर दीवार की जड़ से भी इस तरह के कई छेद हैं, पर हिंगलाज की लाट के सिवाय बाकी सभों का कुछ ठिकाना नहीं है, कभी कभी बंद भी हो जाती हैं, और किसी समय से थोड़े और किसी समय मे अधिक तेज के साथ जलती हैं। अकसर जब किसी सूराख़ मे से आग का निकलना बंद हो जाता है, और उस्के मुंह पर जलती रूई बत्ती ले जाते हैं, तो उस्मे से फिर आग की ज्वाला निकलने लगती है, जैसे किसी झरोखे की राह से हवा की झकोर आया करती है। उसी तरह इन मोखों से आग की लाटें निकला करती हैं। क्या महिमा है सर्व-

शक्तिमान जगदीश्वर की, कि बिना ईंधन आग पडी दहकती है, और बिना तेल बत्ती दीपक जला करते हैं। मंदिर के बाहर लेकिन उस के हाते के अंदर उसी रुख को अर्थात वायुकोन की तरफ एक हाथ भर लंबा चौडा छोटा सा पानी का कुंड है, पहाड से जो नहर आई है वह उसी कुंड मे होकर बहती है, वहांवालों ने उस का नाम गोरखडिब्बी रक्खा है, छूने से पानी उस कुंड के भीतर शोरे की तरह ठंढा, पर देखने मे अदहन सा खौलता हुआ, और यदि उस्के पानी को जरा हाथ से हिलाकर एक जलती हुई बत्ती उस के पास ले जाओ, तो फौरन् रंजक की तरह एक आग का गोला सा उड जाता है। निदान इन सब बातों से साफ मालूम होता है, कि यह आग, अथवा जलती हुई हवा, गंधक हरिताल इत्यादि किसी धातु की खान मे उत्पन्न हो कर वायुकोन से पहाड के नीचे ही नीचे ज़मीन के अंदर चली आती है, जहां कहीं शिगाफ या दरार पाई प्रगट होती हुई कुंड से आकर बिलकुल तमाम हो जाती है। गोरखडिब्बी मे पानी के खौलने का भी यही सबब है, कि उस आग का रस्ता पानी के नीचे से गुज़रता है, पानी बहता हुआ है इस कारन गर्म नही होता, यदि पानी न होता तो वहां ज्वाला प्रगट होती। मंदिर के अंदर भी कुंड के उत्तर और पश्चिम तरफ, जो उस जलती हुई हवा के आने का रास्ता है, उसी फर्श के पत्थर तपा करते हैं, और दक्षिण और पूर्व के सदा ठंढे रहते हैं। अंगरेज़ी मे इस तरह की हवा को जो सदा जलती रहती है हैड्रोजनगैस

कहते हैं। जिन्हों ने किमिस्ट्री अर्थात रसायन विद्या पढ़ी है वे इस के भेद से खूब वाक़िफ़ हैं। यदि किसी शीशी के अंदर थोड़ा सा लोहचुन रखकर उस पर पानी से घुला हुआ सल्फ़्यूरिकएसिड अर्थात गंधक का तेज़ाब डालो, तो हैड्रोजनगैस बन जावेगा, और उस शीशी के अंदर से वही चीज़ निकलेगी, कि जो ज्वालाजी में कुंड के मोखे से निकलती है। जैसे वहां पंडे लोग ज्वाला ठंढी होने पर बत्ती दिखला देते हैं, उसी तरह यदि तुम भी उस शीशी के मुह पर जलती हुई बत्ती लेजाओ, तो जिस तौर पर ज्वालामुखी ले सुराखों से आग की लाटें निकलती हैं, उस शीशी के मुह पर भी आग जलने लगेगी। बाज़ आदमी ऐसी चीज़ें देखकर बड़ा अचरज मानते हैं, बरन उन को सृष्टकर्ता ईश्वर जानकर उन की पूजा करते हैं, और बाज़ जो उन के भेद से वाक़िफ़ हैं उन्हें भी औरों की तरह स्वाभाविक वस्तु समझकर सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की अद्भुत अपार रचना पर बलिहारी जाते हैं, और उस जगह उसी के ध्यान मे मग्न होकर उसी की पूजा करते हैं।—१६—अमृतसर जालंधर के पश्चिम उत्तर को झुकता हुआ व्यास नदी के पार। सदरमुक़ाम अमृतसर सिखों का तीर्थ लाहौर से ३५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता बड़े बेवपार की जगह है, लाख आदमी से ऊपर बसते हैं। शहर के बीच एक सुंदर स्वच्छ जल से भरा हुआ तालाब अमृतसर नाम १३५ क़दम लंबा और इतना ही चौड़ा पक्का बना है,

और उस तालाब के बीच एक छोटे से संगमर्मर के मकान मे, जिस के गुम्बज पर सुनहरी मुलम्मा हुआ है, ग्रंथ साहिब अर्थात् सिखों के मत का पुस्तक गुरु गोविंदसिंह के हाथ का लिखा रखा है। पहले इस शहर का नाम चक था, जब से गुरु रामदास ने यह तालाब बनाया तब से अमृतसर रहा। शालबाफों की दूकानें बहुत हैं, और सर्कारी अमलदारी के सबब महसूल न लगने से माल पशमीने का बहुधा इसी जगह से दिसावरों को जाता है। पास ही गोविंदगढ़ का मजबूत क़िला बना है, रंजीतसिंह का खज़ाना उसी मे रहता था।—१७—बटाला अमृतसर के ईशानकोन। सदरमुकाम गुरदासपुर लाहौर से ७५ मील ईशानकोन पूर्व को झुकता है।—१८—हवां लाहौर अमृतसर के पश्चिम दक्षिण को झुकता। बादशाही जमाने से यही नाम इस सारे सूबे का था। शहर लाहौर, अथवा लहावर, रावी के बांए कनारे पर समुद्र से ६०० फुट ऊंचा कलकत्ते से ११०० मील और सड़क की राह १२५२ मील (१) वायुकोन को सात मील के घेरे से पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। हिंदू इस शहर को रामचंद्र के पुत्र लव का बसाया और असली नाम उस का लवकोट बतलाते

(१)नकशे की नाप मे सड़क की नाप मे फ़र्क पड़ता है, क्यों कि सड़कें सीधी नहीं रहतीं घमफिरकर जाती हैं। देखो नकशे की नाप से हमने मुंगेर को २५० मील कलकत्ते से लिखा है, लेकिन सड़क की राह जाओ तो ३०४ मील पड़ेगा।

हैं। बसती उसमें अनुमान लाख आदमियों की होगी। दिल्ली की तरह इस शहर के गिर्दनवाह में भी बहुत से खंडहर और मक़बरे पड़े हैं। शहर से दो मील पर रावी पार शाहदरे में अकबर के बेटे जहांगीर का मक़बरा देखने लाइक़ है। शहर से तीन मील ईशानकोन को बादशाही समय का बना हुआ ४ मील के घेरे में शाला-मार बाग़ है, रंजीतसिंह को इमारत का शौक़ न था मरम्मत के बदल और भी उस्के पत्थर उखाड़कर अमृत-सर भिजवा दिये, अब सर्कार की तरफ़ से उस की सफ़ाई हुई है। इस बाग़ में ४५० फ़व्वारे छुटते हैं, और कई हौज़ संगमर्मर के बने हैं, और उस्के पानी के लिये सवा सौ मील से नहर काट लाए हैं। पंजाब के लेफ़्टि-नंट गवरनर इसी जगह रहते हैं, और पासही मीया मीरमें छावनी भी बहुत बड़ी हैं।—१९—शेख़ूपुरा लाहौर के पश्चिम रावी पार। सदरमुक़ाम गूजरांवाला लाहौर से ४० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ रंजीतसिंह के पुरखाओं की जन्मभूमि है।—२०—स्यालकोट शेख़ूपुरे के उत्तर। सदरमुक़ाम स्यालकोट लाहौर से ६५ मील उत्तर ईशानकोण को झुकता हुआ चनाब नदी के बांए कनारे ५ मील हटकर बसा है।—२१—गुजरात स्यालकोटके प-श्चिम चनाब पार। सदरमुक़ाम गुजरात लाहौर से ७५ मील उत्तर चनाब के दहने कनारे अढाई कोस के तफ़ावत पर शहरपनाह के अंदर बसा है।—२२—शाहपुर गुजरात के नैर्ऋतकोन। सदरमुक़म शाहपुर लाहौर से १२५ मील

पश्चिम वायुकोन को झुकता झेलम नदी के बांएं कनारे है। इस ज़िले को गैरूपुरे के साथ जिस का ज़िकर ऊपर लिखा गया शास्त्र मे मद्र देश कहा है।—२३—पिंड-दादनखां गुजरात के पश्चिम। सदरमुकाम झेलम लाहौर से १०० मील वायुकोन उत्तर को झुकता झेलम नदी के दाहने कनारे हैं। मंज़िल एक पर पहाड़ मे नमक की खान है। छ मील वायुकोन को सवा कोस लंबा रुहतास का मज़बूत क़िला टूटा हुआ बेमरम्मत पड़ा है, दीवार उस की ३० फुट चौड़ी संगीन है।—२४—रावलपिंडी पिंड-दादनखां के उत्तर। सदरमुकाम रावलपिंडी लाहौर से १६० मील उत्तर वायुकोन को झुकता शहरपनाह के अंदर बसा है। रावलपिंडी से ६० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता अटक का मशहूर क़िला ८०० गज़ लंबा ४०० गज चौड़ा सिंधु के बांएं कनारे एक पहाड़ी पर मज़बूत बना है, कोई इसे अटकबनारस भी कहता है, क़िला देखने से बहुत अच्छा बना है, पर उस्के पास एक पहाड़ उस्से उंचा है, इस कारण उस्की मज़बूती मे खलल पड़ गया, क्योंकि वह उस पहाड़ की मार मे है। रावलपिंडी से अग्निकोन को अनुमान १५ मील पर मानिकयाला गांव के पास बौध मत का एक देहगोप सत्तर फुट ऊंचा ३२५ फुट के घेरे मे उसी तरह का बना है जैसा काशी मे सारनाथ के नज़दीक मौजूद है, और इस्के सिवाय उस गिर्दनवाह मे और भी पंदरह देहगोप हैं, जेम्सप्रिंसिप साहिब की तरह जेनरल वंतूरा और अबीतबेला ने उन

से से दो देहगोप खुदवाए थे, तो उन के अंदर से बनारस के देहगोप की तरह राख और हड्डी निकली, और उस्के साथ कुछ अशरफी रुपए और पैसे भी मिले, और उन से से कई रुपयों पर रूम के बड़े बादशाह जूलियस् कैसर का नाम खुदा था।—२५—पाकपट्टन लाहौर के दक्षिण नैर्ऋत कोन को झुकता सतलज और रावी के बीच से है। सदरमुकाम फ़तहपूरगूगेरा लाहौर से ८० मील नैर्ऋतकोन रावी के बांए कनारे है। पाकपट्टन वहां से ४५ मील दक्षिण अग्निकोण को झुकता सतलज के दहने कनारे छ मील के तफ़ावत पर बसा है, उस्से शेखफ़रीद की दर्गाह है।—२६—मुल्तान पाकपट्टन के पश्चिम। इस ज़िले के दक्षिण और पूर्व भाग से रेगिस्तान बहुत है। बादशाही अमलदारी से उसी नाम के सूबे की राजधानी था, जिस्की हद ठट्ठे और कच्छ तक गिनी जाती थी। सदरमुकाम मुल्तान लाहौर से २०० मील नैर्ऋतकोन को चनाब के बांए कनारे से दो कोस पर चौदह पंदरह हाथ ऊंची शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला उस का मज़बूती से मशहूर है। शेखबहाउद्दीन ज़करिया का वहां मक़बरा है। रेशमी कपड़े खेस दाराई इत्यादि वहां अच्छे बनते हैं, कालीन भी बुने जाते हैं। ज़मीन शहर के गिर्दनवाह से उपजाऊ है।—२७—झंग मुल्तान के वायुकोन। सदर-मुकाम झंग अथवा झंगसियाल लाहौर से ११५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता चनाब के बांए कनारे पर कोस एक के फ़ासिले से बसा है।—२८—खानगढ़ मुल्तान के

दक्षिण नैर्ऋत कोन को झुकता। सदरमुकाम खानगढ़ लाहौर से २२५ मील नैर्ऋतकोन है।—२९—लैया खानगढ़ के उत्तर। सदरमुकाम लैया लाहौर से २०० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सिंधु नदी के बांए कनारे पर पांच कोस के फासिले से बसा है। बरसात मे जब दर्या बढता है बारह बारह कोस तक पानी फैल जाता है। बहुत लोग जो दर्या के समीप रहते हैं इसी डर से आठ दस हाथ ऊंचे लट्ठे गाड़कर उस पर अपने छान छपर बनाते हैं। शास्त्र मे इस का नाम सिंधुसौबीर लिखा है।—३०—डेरागाज़ीखां खानगढ़ के नैर्ऋत कोन सिंधु पार। इस ज़िले मे मुसलमानों की बस्ती बहुत है। सदरमुकाम डेरागाज़ीखां लाहौर से २३० मील नैर्ऋतकोन को सिंधु के दहने कनारे पर बसा है।—३१—डेराइस्माईलखां डेरेगाज़ीखां के उत्तर। इस ज़िले मे बलूच और पठान बहुत और हिंदू अति अल्प। सदरमुकाम डेराइसमाईलखां लाहौर से २१५ मील पश्चिम सिंधु के दहने कनारे खजूर के दरख्तों मे बसा है। इसी ज़िले मे पिशौर से सैंतीस कोस इधर सिंधु के कनारे सेंधे नमक का पहाड़ है, कि जो अफ़ग़ानिस्तान मे सफ़ेदकोह से निकलकर झेलम के कनारे तक चला आया है। जगह देखने योग्य है, दोनो तरफ़ पहाड़ आजाने के कारन दर्या बहुत तंग और गहरा होगया है, धरती बिलकुल लाल, पहाड़ नमक का जिस के नीचे दर्या बहता है गुलाबी बिल्लौर सा चमकता, दहने तट पर पहाड़ के ऊपर कालाबाग़ बसा

हुआ, नमक के डले खान के खुदे हुए, मनों वज़न से एक एक, ढेर के ढेर लगे रहते हैं, और बैपारियों के ऊंट क़तार की कतार लदे हुए दिखाई देते हैं।—३२—हज़ारा रावलपिंडी के वायुकोन पहाड़ों के अंदर। सदरमुक़ाम हज़ारा लाहौर से १८० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ है।—३३—पिशौर हज़ारे के पश्चिम सिंधु पार। यह इस तरफ़ हिंदुस्तान का सब से परला ज़िला है, इस्से आगे ख़ैबर घाटे के पार जो शहर से १५ मील है अफ़ग़ानिस्तान का मुल्क शुरू होता है। इस के चारों तरफ़ पहाड़ है, और बीच से मैदान। मुसलमान बहुत हैं, और ज़ुबान वहांवालों की पश्तो। सदरमुक़ाम पिशौर अथवा पिशावर जो इस समय हिंदुस्तान से सब से बड़ी छावनी है लाहौर से सवा दो सौ मील वायुकोन को सिंधुपार ४४ मील के तफ़ावत पर समुद्र से १००० फ़ुट ऊंचा बड़े बेवपार की जगह है, ईरान तूरान अफ़ग़ानिस्तान सब जगह के सौदागर वहां आते हैं। सरा बहुत अच्छी बनी है। शहर के उत्तर एक पहाड़ पर बालाहिसार का क़िला है, लड़ने के गौं का तो नहीं, पर रहने को अच्छा है। गोरखनाथ का मंदिर वहां कनफटे जोगियों का तीर्थ है। शहर से ८ मील पर काबुल की नदी बहती है।—३४—कोहाट पिशौर के दक्षिण। सदरमुक़ाम कोहाट लाहौर से २१५ मील वायुकोन है। वहां एक क़िस्म का पत्थर होता है उसको पानी से उबाल कर मोमियाई बनाते हैं।

अवध की चीफ़ कमिश्नरी।

नीचे वे ज़िले लिखे जाते हैं जो अवध के चीफ़ क-मिश्नर के तावे हैं शास्त्रमे इसे उत्तर कोशल कहा हैं, और बादशाही दफ़्तर मे सूबै अवध लिखा जाता था। उत्तर की तरफ़ उसके नयपाल है, और दक्षिण की तरफ़ गंगा बहती हैं।—१—ज़िलाउन्नांव कान्हपुर के पूर्ब गंगा पार हैं। सदरमुक़ाम उस का उन्नांव लखनऊसे २५ मील नैऋत कोन है।—२—लखनऊ उन्नांव के ईशान कोन। सदर मुक़ाम लखनऊ अनुमान तीन लाख आदमी की बस्ती २८ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांस और ८० अंश ५० कला पूर्ब देशांतर मे कलकत्ते से ५७५ मील और सड़क की राह ६१८ मील वायुकोन गोमती के दहने कनारे बसा है। असल नाम इसका लक्ष्मणावती बत-लाते हैं, और कितने ही लोग ऐसा भी कहते हैं कि नैमिषारण्य जहां सूत जी ने साठ हज़ार मुनियों के समाज मे पुराण सुनाए थे इसी जगह पर था, अब जहां आती जाते हैं और जिसे नीमखार कहते हैं वह जगह गोमती के कनारे लखनऊ से बहुत हटकर है। यद्यपि शहर की गलियां बहुत तंग और ग़लीज़ हैं, पर सड़कें ख़ूब चौड़ी और निहायत साफ़ हैं। यदि किसी ऊंची

जगह पर चढ़कर इस शहर को देखो, तो जहां तक नज़र जाती है, दरख़्त बाग़ मीनार गुम्बज़ आलीशान मकान और चमकती ऊई सुनहरी कलसियां नज़र पड़ती हैं। सड़कों के आस पास विशेषकरके ऊसैनाबाद के निकट हौज़ और फ़ुव्वारे और संगमर्मर इत्यादि के निहायत ख़ूबसूरत बड़े बड़े खिलौने बने हुए हैं। शहर निहायत आबाद है, हज्जामों के बदन पर भी दुशाले, हलालख़ोरों के पैर में भी ज़र्दोज़ी जूते, जिन के घर में चूल्हे पर तवा नहीं, वे भी बाज़ार में मोरज़ा बने फिरते हैं। दुकानों में सब तरह की चीज़ अच्छी से अच्छी मौजूद रहती है, चार कौड़ी को भी जो लड़के ख़ानचेवालों से दौना लेते हैं, उस्मे सारी न्यामतों का मज़ा मिलता है। अंगरेज़ी अमलदारी से पहले वहां बादशाही मकानों की तयारी देखकर अ़क़्ल दंग होजाती थी, भाड़ फ़ानूस दीवारगीर आइने तसवीर घड़ी खिलौने विलायती कलें जो चीज़ देखिये नादिर, सफ़ाई हद के दर्जे पर, फ़रह बख़्श मुबारक मंज़िल इन्द्रासन मोतीमहल पंजमहल शीशमहल ऊसैनाबाद मूसाबाग़ हैदरबाग़ क़ैसरबाग़ परिस्तान दिलकुशा दौलतख़ाना कुतुबख़ाना तारेवाली कोठी, जिस्मे ग्रह नक्षत्रादिकों के देखने के लिये बऊत बड़ी बड़ी दूर्बीनें पत्थर के खंभों पर लगी थीं, सारे मकान देखने योग्य थे। सिवाय इन के और भी बऊत से इमामबाड़े इत्यादि सैरके लाइक़ थे। आसिफ़ुद्दौला के इमामबाड़े की छत एक सौ बीस फ़ुट लंबी और साठ फ़ुट चौड़ी

बिलकुल लदाव की बनी है, खंभे विना इतनी बड़ी छत शायद दुनिया मे दूसरी न निकलेगी। शहर से बाहर जेनरल मार्टीन की कोठी कांस्टेंशिया जिस्की तयारी मे उस्का पंदरह लाख रुपया खर्च पड़ा था बहुत आलीशान और बेनजीर है, और उस्के दरदीवारों पर गुलबूटे और तसवीरें बहुत सुंदर बनी हैं। अंगरेजी अमल्दारी से पहले इस शहर की सैर मुहर्रम के दिनों मे देखनी चाहिये थी कि जब इमामबाड़ों मे हजारों कंवल कंदील और मोमबत्तियों की रोशनी होती थी विशेष करके हुसैनाबाद मे कि जहां यह नहीं मालूम होता था कि इमामबाड़ा रौशन हुआ या रौशनी का इमामबाड़ा बन गया। यद्यपि लखनऊवाले अपनी तराशखराश और बोलचाल के आगे दूसरों को दिहकानी गवांर समझते हैं, और कहते हैं कि यह लखनऊ हिंदुस्तान का नमूना है जो कुछ जिंदगी का मजा है इसी जगह मे है, यदि कुंदैनातराश भी आवे यहां खराद पर चढ़जाता है, पर सच पूछो तो जो आदमी होगा लखनऊ और लखनऊवालों से अवश्य नफरत करेगा, क्योंकि उन के चलन बहुत खराब हैं, ईश्वर को भूल कर दुनिया के झूठे मजे से तन मन से लयलीन रहते हैं, ऐयाशी और जनानापन उन की सूरतसे बरसता है, जब बादशाह ही ने नाचने और तबला बजानेपर कमर बांधी तो फिर रैयत की क्या गिनती है, बदकारी को सब जगह छिपाते हैं, पर वहां इस का न करना ऐब है, दिन मे कस्बियों के साथ बरामदों मे बैठे हुए उसी शहर के अमी-

रों को देखा। गोमती पर पक्का पुल तो पहले से बना है, और एक पुल कश्तियों का भी रहता है, पर लोहे का पुल अब हाल से तयार हुआ है। साहिब चीफ़ कमिश्नर इसी जगह रहते हैं, एक नया क़िला बड़ी धूमधाम से तयार कर रहे हैं।—३—रायबरेली लखनऊ के दक्षिण। सदरमुक़ाम रायबरेली लखनऊ से ४६ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सई के बाएं कनारे बसा है।—४—सुलतानपुर रायबरेली के पूर्व। सदरमुक़ाम सुलतान्पुर लखनऊ से ८५ मील अग्निकोन पूर्व को झुकता गोमती के बाएं कनारे बसा है।—५—सलोन रायबरेली के दक्षिण अग्निकोन को झुकता। सदरमुक़ाम परतापगढ़ लखनऊ से ६५ मील अग्निकोन को सईके दहने कनारे है। —६—फैज़ाबाद सुलतानपुर के उत्तर। सदरमुक़ाम फैज़ाबाद लखनऊ से ७८ मील पूर्व है, इसे बंगला भी कहते हैं शुजाउद्दौला केवक्त से सूबै अवधकी राजधानी था, सन १७७५ मे उसके बेटे आसिफुद्दौला ने लखनऊ को राजधानी बनाया। पास ही सरयू नदी के दहने कनारे अयोध्या अथवा अवध का पुराना शहर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। शास्त्रमे लिखा है कि मनु ने सब से पहले यही शहर बसाया। किसी समय मे वह रामचन्द्र की राजधानी था। वाल्मीक ने उसे अपनी पोथी मे १२ योजन (१) लंबा लिखा है।

(१) कोई तो योजन चार कोस का मानता है, और कोई उससे न्यूनाधिक।

अबुलफ़ज़ल लिखता है कि वह शहर अपने ज़माने मे १४८ कोस लंबा और ६६ कोस चौड़ा बसा था, यद्यपि यह तो बढ़ावा है, पर इमारतों के निशान दूर दूर तक मिलने से यह बात बख़ूबी साबित है, कि वह पहले दर्जे का शहर था। राम लक्ष्मण सीता और हनुमान के मंदिर बने हैं। प्राचीन बड़े बड़े मंदिर और रामचन्द्र के समय की इमारतें जो कुछ रही सही थीं वह मुसल्मानों ने सब तोड़ताड़ कर बराबर कर दीं, बरन उन की जगह पर मसजिदें बनगईं।—७—गोंडा फ़ैज़ाबाद के वायुकोन उत्तर को झुकता सदर मुक़ाम गोंडा लखनऊ से ६५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता बसा है।—८—बहराइच गोंडे के वायुकोन सदर मुक़ाम बहराइच लखनऊ से ६४ मील उत्तर, वहां सुलतान मसऊदग़ाज़ी की दर्गाह और रजब सालार का मक़्बरा है।—९—मुल्लापुर बहराइच के वायुकोन। सदर-मुक़ाम मुल्लापुर लखनऊ से ६१ मील उत्तर ईशान कोन को झुकता सरयू के दहने कनारे बसा है।—१०—सीतापुर मुल्लापुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम सीतापुर लखनऊ से ५२ मील उत्तर बसा है।—११—दर्याबाद सीतापुर के वायुकोन। सदर मुक़ाम दर्याबाद लखनऊ से ४५ मील वायु कोन उत्तर को झुकता हुआ है।—१२—मुहम्मदी दर्याबाद के उत्तर है। सदर मुक़ाम मुहम्मदी लखनऊ से ८० मील वायुकोन उत्तर को झुकता बसा है।

मंदराज हाता।
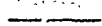
अब वे जिले लिखे जाते हैं जो मंदराज की गवर्नरी के तावे हैं —१—गंजाम कटक से दक्षिण चिलकिया झील से सिकाकोल नदी तक। समुद्र के तट के निकट धरती उपजाऊ है। सदरमुकाम गंजाम मंदराज से ५५० मील ईशान कोन समुद्र के कनारे पर बसा है, और उस्के नीचे एक नदी भी उसी नाम की समुद्र से मिली है। गंजाम से ११० मील नैर्ऋतकोन की तरफ़ सिकाकोल जिसे चिका कूल भी कहते हैं उसी नाम की नदी के बाएं कनारे बसा है, सिपाहियों के रहने की बारकें और साहिब लोगों के कई बंगले भी वहां बने हैं।—२—विज़िगापट्टन गंजाम के नैर्ऋतकोन। यह जिला पर्वतस्थली से बसा है। सदरमुकाम विजिगापट्टन जिसे विशाखपट्टन् भी कहते हैं मंदराज से २८० मील ईशानकोन समुद्र के तट पर बसा है। आब-हवा वहां की ख़राब है।—३—राजमहेंद्री विजिगापट्टन से नैर्ऋतकोन। सदरमुकाम राजमहेंद्रवरं मंदराज से २८० मील ईशानकोन उत्तर को झुकता समुद्र से पच्चीस कोस गोदावरी के बाएं कनारे एक ऊंचे करारे पर बसा है। बज़ार उस का पटा हुआ दो खंड का है। इन ऊपर लिखे हुए तीनों जिलों के पश्चिम भाग में जंगल पहाड़

बहुत हैं, और उन मे निरे असभ्य आदमी रहते हैं। —४—मछलीबंदर जिसे अंगरेज़ मौसलीपट्टन कहते हैं राजमहेंद्री के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। इन दोनों ज़िलों का नाम शास्त्र मे कलिंग देश लिखा है। सदर मुक़ाम मछलीबंदर मंदराज से २२५ मील उत्तर ईशान कोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। बंदर अच्छे होने के कारन तिजारत की जगह है। छींट वहां की मशहूर है ईरान को बहुत जाती है। क़िला कृष्णा नदी की एक धारा के समीप शहर से पौन कोस पर दलदल मे बना है। मछलीबंदर से पैंतीस मील उत्तर इल्लौर का शहर है।—५—गंतूर मछलीबंदर के नैर्ऋतकोन। पेड़ इस ज़िले मे कम हैं, मुसाफ़िरों को कहीं कहीं इमली की छाया अच्छी मिलती है। हीरे की खान है, पर अब उस्से कुछ फ़ाइदा नहीं होता। सदरमुक़ाम गंतूर अथवा मुर्तज़ानगर मंदराज से २३० मील उत्तर है। इन ऊपर लिखे हुए दोनों ज़िलों मे अर्थात् मछलीबंदर और गंतूर मे गर्मी बहुत शिद्दत से पड़ती है, यहां तक कि शीशे टूट जाते हैं, और लकड़ी की चीजें इतनी खुश्क हो जाती हैं कि उन के अंदर से कील कांटे झड़ पड़ते हैं, कृष्णा के मुहाने पर बालू के पटपर से गर्मियों के दर्मियान थर्मामेटर मे १०८ दर्जे पर पारा रहता है। —६— नेल्लूर गंतूर के दक्षिण। तांबे की खान है। सदरमुक़ाम नेल्लूर मंदराज से १०० मील उत्तर पन्नार अथवा पेन्ना नदी के दहने कनारे बसा है। इस नदी का

शुद्ध नाम पिनाकिनी है।—७—कडप नेल्लूर के पश्चिम हीरे की खान है। सदरमुक़ाम कडप जिस्का शुद्धोच्चारण कृपा है उसी नाम की नदी के कनारे मंदराज से १४० मील वायुकोन उत्तर को भुकता हुआ है।—८—बल्लारी कडप के पश्चिम वायुकोन को भुकता। सदरमुक़ाम बल्लारी जिसे बलहरी भी कहते हैं मंदराज से २६० मील वायुकोन की तरफ़ हगरी नदी के बांए कनारे दो कोस हटकर बसा है। क़िला चौखूंटा एक पहाड़ पर बना है। पास ही छावनी है। बल्लारी से उनतीस मील वायुकोन को तुङ्गभद्रा के दहने कनारे विजयनगर का प्रसिद्ध और पुराना शहर कम से कम आठ मील के घेरे मे उजड़ा हुआ पड़ा है। यह शहर एक ऐसे मैदान मे है, कि जिस्के गिर्द बड़े बड़े ढोके पत्थर के पड़े हैं, बरन किसी किसी जगह मे उन के ऐसे ऐसे ढेर लगे हैं कि मानो छोटे छोटे पहाड़ हैं, शहर के बीच मे भी कहीं कहीं ऐसे बड़े बड़े पत्थर पड़े हैं कि कई जगह रस्ता उन की छांव से चलता है, रास्तों से बिलकुल पत्थर का फ़र्श, नहर तालाव और कूए पत्थर काट कर बने हुए, क़िला महल बुर्ज कंगूरे फाटक मंदिर धर्मशाला और मकान बहुत बडे बडे पुरानी हिंदुस्तानी चाल के, दीवार खंभे मिहराब और छत्त सारी चीज़ें निरे पत्थरों की, और वे पत्थर भी इतने बड़े कि समझ नही पड़ता बिना काल के बल क्योंकर आदमी उन्हें अपनी जगह से हटा सके, पंदरह पंदरह फुट के लंबे चौडे और मोटे पत्थर

उन से लगे हैं, और बहुत खूबसूरती से उन्हें तराशा और जमाया है, बजार के सिरे पर जो नव्वे फुट चौड़ा है एक शिवाला दस मरातिब का १६० फुट ऊंचा बना है, रामचंद्र के मंदिर में काले पत्थर के खंभों पर बहुत बारीक नकाशी की है, शहर के बीचों बीच में एक बहुत उमदा मंदिर जिस के मकानों की लंबान ४०० फुट और चौड़ान २०० फुट होगी वैष्णवी मत का बना है, उस्में एक रथ निराले पत्थर का धुरी पैये इत्यादि सब समेत सच्चे रथ की तरह निहायत बारीकी और कारीगरी के साथ बनाकर रखा है। यह शहर कुछ न्यूनाधिक ५०० बरस गुज़रते हैं महाराज बीरबुक्काराय ने बसाया था, और वह उस की राजधानी था। पहले उस्का नाम विद्यानगर था, फिर विजयनगर हुआ। माधवाचार्य जिस ने बड़े बड़े ग्रंथ संस्कृत में बनाए हैं इसी राजा का मंत्री था। विजयनगर के साम्हने तुङ्गभद्रा पार इसी तरह दूसरा शहर अन्नागुंडी का उजड़ा हुआ पड़ा है, केवल कुछ थोड़े से आदमी रहते हैं। कहते हैं किसी समय में यहां से वहां तक नदी के दोनों तरफ़ यह एक ही शहर था, और चौबीस मील के घेरे में बस्ता था। बल्लारी से ४४ मील पूर्व समुद्र से कुछ ऊपर २१०० फुट ऊंचा गूटी का क़िला एक पहाड़ पर मज़बूत बना है—९—चित्तूर कडप के दक्षिण। सदरमुक़ाम चित्तूर अथवा चेतूर मंदराज से ८० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ है।—१०—आर्कांडु अथवा अर्कांडु जिसे अर्काट कहते हैं कडप के दक्षिण। इस ज़िले में चारों

ज़मीन बहुत है, क्योंकि ३५८८ गांव के बीच ४००० तालाब और १८००० से ऊपर कूए सिवाय उन नहरों के जो नदी और झरनों से काटकर लाए हैं बने हैं। सदरसुकाम आर्कोडु, जिसे पंडित लोग अरकाटि भी कहते हैं, सूबे कर्नाटक की पुरानी राजधानी मंदराज से पैंसठ मील पश्चिम पालार नदी के दहने कनारे कि जो गर्मी में सूख जाती है शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला और नव्वाबों के पुराने महल अब खंडहर होगए। वहां से १५ मील पश्चिम पालार के उसी कनारे पर वेल्लोर का, जिसे बहुधा विल्लर कहते हैं, शहर क़िला और छावनी है। आर्कोडु से प्राय चालीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता ५०० फुट ऊंचे पहाड़ पर झिंजी का मज़बूत क़िला ऊजड़ पड़ा है। झिंजी के पश्चिम एक मंज़िल पर तिरुनमालीमें हिंदुओं के मंदिर धर्मशाला और कुंड हैं, उन में बड़े मंदिर का दर्वाज़ा जो पहाड़ की जड़ से बना है बारह मरातिब का २२२ फुट ऊंचा है झिंजी से मंज़िल एक अग्निकोन को तिरुविकेरा गांव के पास बहुत से पेड़ पत्थर होकर पड़े हैं, और खोदने से धरती के अंदर भी निकलते हैं (१) एक पेड़ इस तरह का वहां साठ

(१) जिस पानी में पत्थर के अत्यंत सूक्ष्म परमाणु मिले रहते हैं, उसमें लकड़ी पड़ने से काल पाके पत्थर हो जाती है, क्योंकि लकड़ी के परमाणु दिन पर दिन गलते जाते हैं, और पत्थर के परमाणु उन की जगह पर उस लकड़ी के छेदों की राह इस ढब से बैठते जाते हैं, कि यद्यपि वह लकड़ी से पाषाण होजाती है, परंतु रंग रूप और रग रेशे उसमें उसी लकड़ी के से बने रहते हैं।

फुट का लंबा पड़ा है, अब उस को जिला देने से यशम और अक़ीक़ से भी अच्छा रूप दिखलाती है। साहिब लोग अकसर उस के माला और गहने बनाते हैं। अर्काडु से ८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता कडालूर का बंदर हैं, अंगरेजों के बंगले भी वहां बहुत से बने हैं।—११— चेंगलपट्टु नेल्लूर से दक्षिण। ज़मीन अकसर पथरीली। ताड़ के पेड़ बहुत। इस ज़िले को जागीर भी कहते हैं, क्योंकि अर्काडु के नव्वाब ने सन १७५० और १७६३ से सर्कार कम्पनी को बतौर जागीर के देदिया था। सदरमुक़ाम चेंगलपट्टु जिसे लोग सिंहलपेटा भी कहते हैं मंदराज से ३५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता एक छोटी सी नदी पर, जो पालार से गिरती है, पहाड़ों के बीच बसा है। क़िला मज़बूत था पर अब बेमरम्मत है। मंदराज, जिस्का शुद्धोच्चारण मंदिरराज है, और जिसे चीनापट्टन भी कहते हैं, उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ८५० मील और सड़क की राह १०६३ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता ठीक समुद्र के तट पर बसा है। क़िला सेंटजार्ज का बहुत मज़बूत है, यदि फैलाव मे फ़ोर्टविलियम् से छोटा है, पर लड़ाई के गौं का उस्से भी अधिक है। लहरें समुद्र की यहां बेतरह टकराती हैं, बंदर कोई नहीं, जहाज़ों का ठहरना बहुत मुश्किल बरन अक्तूबर नवम्बर और दिसम्बर से तो तबाह होजाने का डर लगा रहता है, जब हवा तेज़ चलती है, मुम्किन नहीं कि जहाजवाले कनारे आ सकें, या कनारेवाले जहाज पर

जा सकें, बरन जब हवा मुवाफ़िक़ रहती है तब भी लोगों को जहाज़ तक, कि जो हमेशः कनारे से कुछ तफ़ावत पर लंगर डालते हैं, आने जाने के लिए उसी शहर की नावों पर सवार होना पड़ता है, जहाज़वालों का मक़दूर नहीं कि अपने बोट उस लहर से खोल सकें, ये नाव हलकी और चमड़े की तरह लचकती रहती हैं, कि जिस्से लहरों के ज़ोर से टूटने न पावें, और उन के मल्लाह ऐसे उस्ताद होते हैं, कि लहर पर अपनी नाव चढ़ाकर उस्के साथ ही कनारे पर ला डालते हैं, ज़रूरत के वक्त वे मल्लाह लकड़ी के लट्ठों पर जो दो तीन आपस से बंधे रहते हैं सवार होकर चिट्ठी इत्यादि जो पानी से बचाने को अपनी चटाई की टोपियों से रख लेते हैं जहाज़ तक पहुंचा देते हैं, जब पानी का ज़ोर उन्हें गेंद की तरह उठाकर दूर फेंकदेता है, तो वे तैर कर फिर अपने बेड़े पर आ चढ़ते हैं, जब किसी समय ये आदमी की जान बचाते हैं, तो इन्हें सर्कार से तग़मा मिलता है। समुद्र के कनारे सर्कारी और साहिब लोगों के मकान बहुत उमदा बने हैं चूना वहां कौड़ी जलाकर बनाते हैं, इस कारन बहुत साफ़ और सफ़ेद होता है। गवर्मिंटहौस के नज़दीक कर्नाटक के नव्वाब का बनवाया चिपाक बाग़ है। सड़क साहिब लोगों के हवा खाने की सुंदर बनी है। दोनों तरफ़ सायादार पेड़ों के लगे रहने और अंगरेज़ों के बाग़ और बंगलों के होने से फूलों की मीठी मीठी सुगंध हर तरफ़ से चली आती है। यद्यपि अच्छे बंदर या कोई

बड़ी नदी के न होने के कारन यह शहर कलकत्ते और बंबई की तरह तिजारत की जगह नहीं है, पर तो भी चीजें सब तरह की मिल जाती हैं। सन १८०३ में शहर से ईन्नौर नदी तक एक नहर १०५६० गज़ लंबी ऐसी खोदी गई कि उस से नाव भी चल सकती है। सिपाही पलटन के वहां बंगालहाते की बनिसबत छोटे और कमज़ोर होते हैं, पर चुस्ती चलाकी और क़वाइद में इन से भी अधिक हैं। मंदराज के गवर्नर कमांडरिं-चीफ़ सुप्रिमकोर्ट और सदरनिज़ामत व दीवानी के जज और बोर्डअवरवन्यू के साहिब लोग इसी जगह रहते हैं। सन १६३९ में विजयनगर के राजा श्रीरंगराइल ने इस शर्त से अंगरेज़ों को मंदराज में क़िला बनाने की इजा-ज़त दी थी, कि वह क़िला उस्के नाम से श्रीरंगरायपट्टन पुकारा जाय, पर इन्हों ने क़िले का नाम तो सेंटजार्ज रखा और शहर जो बसाया उस्का नाम वहां के कारदार ने स्वामी की अवज्ञा कर के अपने बाप चिनापा के नाम पर चीनापट्टन रखा। अब इस शहर में गिर्दनवाह समेत सात लाख आदमी बसते हैं। मंदराज से ४८ मील नैर्ऋतकोण को कुंजवरं का शहर है, जिस्का असली नाम शास्त्र में कांचीपुर लिखा है। वहां बाज़ार में दोनो तरफ़ नारियल के पेड़ लगे हैं। शिव का एक बहुत बड़ा मंदिर बना है, उस मंदिर के भीतर एक धर्मशाला है जिसमें हज़ार खंभे बतलाते हैं, सीढ़ी के दोनो तरफ़ दो हाथी स्याह संगीन पत्थर के बने हैं, दर्वाज़े पर चढ़ने से दूर दूर

के जंगल झील और पहाड़ दिखलाई देते हैं। कोस एक के तफ़ावत पर विष्णुकुंजी अथवा विष्णुकांची से वरदराज विष्णु का मंदिर नक़ाशी और कारीगरी मे इस्से भी बढ़कर है, दर्वाज़े के आगे एक खंभा तांबे का सुनहरी मुलम्मा किया हुआ गड़ा है। मंदराज से पैंतीस मील दक्षिण समुद्र के तट पर महाबलिपुर से कई जगह पहाड़ के पत्थर काटकर गुफा मंदिर और मूर्तें वैष्णव मत की पुराने समय की बनी हुई मौजूद हैं, देखने योग्य हैं। वहांवाले कहते हैं, कि शहर पुराना महाबलिपुर बिलकुल समुद्र मे डूब गया, और देखने से भी वहां ऐसा मालूम होता है कि समुद्र का जल दिन पर दिन तट की तरफ़ हटता आता है। यदि यही हाल रहेगा तो ये मंदिर इत्यादि भी कुछ दिन से जलमग्न होजायंगे। मंदराज से अस्सी मील वायुकोन को पहाड़ों से त्रिपतिनाथ का बड़ा प्रसिद्ध मंदिर है। मंदराज से ४० मील नैर्ऋतकोण को पालार नदी के बांए कानारे वालाजाहनगर बड़े बेवपार की जगह है।—१२—शेलं अर्काड के नैर्ऋतकोन। पहाड़ ५००० फुट तक समुद्र से ऊंचे हैं, और इसी कारन वहां गर्मी बहुत नही पड़ती। सदरमुक़ाम शेलं मंदराज से १७० मील नैर्ऋतकोन है।—१२—तिरुच्चिनापल्ली शेलं के दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ। सदरमुक़ाम तिरुच्चिनापल्ली मंदराज से १६० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता कावेरी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर एक पहाड़ी पर

बसा है। बाहर बहुत बड़ी छावनी है। शहर के साम्हने कावेरी के एक सुंदर टापू मे जो १२ मील लंबा होवेगा श्रीरंगजी का बड़ा भारी मंदिर बना है, उस्की बाहर की दीवार का घेरा प्राय चार मील होवेगा, उस्के दर्वाजे में तेंतीस फुट लंबे और पंदरह फुट दौर के मोटे पत्थर के खंभे लगे हैं, इस दीवार के अंदर साढ़े तीन तीन सौ फुट के तफ़ावत पर एक के अंदर एक फिर छ दीवारें और हैं, पच्चीस पच्चीस फुट ऊंची, और चार चार फुट मोटी, और उन मे चारों दिशा को चार चार दर्वाजे लगे हैं। निदान इन सात दीवारों के अंदर श्रीरंगजी का मंदिर है, उस्के गुम्बज पर सुनहरी मुलम्मा किया है, और उन सब दीवारों के बीच बीच मे मकान दुकान देवालय और धर्म्मशाला बनी हैं। एक धर्मशाला इतनी बड़ी है कि जिस्मे हज़ार खंभे लगे हैं। अंगरेज़लोग चौथी दीवार के आगे नही जाने पाते, पर पंडे लोग श्रीरंगजी की पालकी और छत्र जो निरे सोने के बने हैं और रत्न जटित आभूषण बाहर लाकर दिखलादेते हैं।—१४—तंजाउरू जिसे तंजौर अथवा तंजावर और तंजनगर भी कहते हैं, और संस्कृत पुस्तकों मे चोलदेश के नाम से लिखा है, तिरुच्चिनापल्ली के पूर्व। वर्द्वान के बाद ऐसा उपजाऊ कोई दूसरा ज़िला नही है। नहरें जो कावेरी से काट काटकर हर तरफ़ ले गए हैं, उन से बहुही अन्न पैदा होता हैं, और आबादी मे भी इस जिले को मानों बंगाले का एक टुकड़ा समझना चाहिये, सदरमुक़ाम

तंजौर मंदराज से १८० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कावेरी के दहने कनारे दक्षिण मे संस्कृत विद्याके लिये बहुत प्रसिद्ध स्थान और पहले दर्जे का शहर गिना जाता है। किला और शहरपनाह अच्छी मजबूत, खाई गहरी पत्थर से से काटी हुई, मकान सुथरे रास्ते सीधे और चौड़े, मंदिर बहुतायत से, उन मे एक मंदिर तो महादेव का किले के अंदर १६६ फुट ऊंचा पत्थर का ऐसा उमदा बना है कि शायद उस साथ का शिखरदार मंदिर इस मुल्क मे दूसरा न निकलेगा, उस मंदिर के सभामंडप मे एक नंदी काले पत्थर का आठ हाथ ऊंचा बहुत तुहफा बना है। कम्बुकोनम् जिसे कोई कुंभाकोलम् भी कहता है तंजाउरू के पूर्व कावेरी के मुहानों मे। सदरमुकाम नागौर अथवा नगर मंदराज से १६० मील दक्षिण समुद्र के तट पर बसा है, बेवपार की जगह है, माल के जहाज आते हैं। वहां एक चौखूंटा मीनार १५० फुट ऊंचा है, पर मालूम नही कि किस काम के लिये बनाया गया था, और किस ने बनवाया। कोम्बुकोनम् अथवा कुंभघोन का पुराना शहर वहां से ३५ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता कावेरी की दो धारा के बीच चोल वंशी राजाओं की कदीम राजधानी है। वहां चक्रेश्वर के मंदिर के आगे कुंड पर बारहवें बरस अथवा रामस्वामी के लिखने बमूजिब तीसवें बरस माघ के महीने मे बड़ा भारी मेला हुआ करता है।—१६—मथुरा, जिसे अंगरेज मदुरा और बहुत लोग मीनाक्षी भी कहते हैं,

तंजोर के नैर्ऋतकोन। ज़मीन ऊंची नीची दलदल और बहुधा जंगल और पर्वतस्थली है। दलदल के समीपस्थ बस्तियों की आबहवा ख़राब है। वहां एक क़ौम तोतियार है, वे लोग भाई भतीजे चचा इत्यादि सारे कुनबे के लोग मिलकर एक ही स्त्री से विवाह करलेते हैं। सदर-मुक़ाम मथुरा मंदराज से २६५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कुमारी अंतरीप से १३० मील व्यागारूनदी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर बसा है। कचहरी के पास एक सुंदर तालाब है, और उस्के मध्य मे एक देवालय है। शहर के रास्ते बहुत चौड़े, मंदिर अगले समय के कई बहुत बड़े और ऊंचे बने हैं। महल टूट गए केवल एक गुम्बज़ ३० गज़ चौड़ा बच रहा है। मथुरा से अनुमान ७५ मील अग्निकोन को रामेश्वर का टापू, जहां व्यागारूनदी समुद्र से मिली है उस्से थोड़ी ही दूर पूर्ब, तट से एक मील के तफ़ावत पर, ग्यारह मील लंबा छ मील चौड़ा, हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। धरती रेतल है, खेती बिलकुल नहीं होती, छोटे छोटे बबूल के जंगलों से घिरा हुआ मंदिर सेतबंध रामेश्वर महादेव का संगीन बहुत बड़ा प्राचीन समय का चमत्कारी बना है। मुसलमान बादशाहों की अ़मलदारी वहां तक न पहुंची इस कारन ढहने से बचगया, दरवाज़ा इस मंदिर का सौ फुट ऊंचा है और उस मे चालीस फुट ऊंचे एक एक पत्थर के दासे लगे हैं, बस इसी से उस मंदिर की इमारत का हाल दर्याफ़्त कर लो। महादेव को सिवाय गंगा के और

किसी जगह का जल नहीं चढ़ता। मंदिर से ८ मील समुद्र के तट पर पामवन का बंदर है, वहां यात्री लोगों की नौका आकर लगती है, सड़क वहां तक बिलकुल फ़र्श की ऊई, गली बाज़ार चौड़े, धर्मशाला अच्छी अच्छी, वहां के पंडे ने अपनी हवेली के हाते से अंगरेज़ी चाल का एक बंगला तयार किया है, उस्पर से दूर दूर तक समुद्र, और लंका की तरफ़ से पत्थर और पहाड़, जिसे हिंदू लोग रामचंद्र का बनाया पुल कहते हैं, पानी से एक काली सी लकीर की तरह दिखलाई देता है। पहले वह सेत समूचा था, सन१४८४ तक लोग उस्के ऊपर से आते जाते थे, पर अब समुद्र की लहरों के धक्के से जाबजा टूट गया है। हिंदूलोग इस सेत को करामात समझते हैं, पर हम उस्में कोई बात करामात की नहीं देखते, क्योंकि लंका और हिंदूस्तान के बीच जो साठ मील चौड़ी खाड़ी पड़ी है, पानी उस्में ऐसा छिछला है, कि जहाज़ नहीं निकल सकते, घूमकर अर्थात् लंकाके पूर्व तरफ़ से जाते हैं। रामेश्वर के टापू और हिंदुस्तान के बीच, और मन्नार के टापू और लंका के दर्मियान, जो सेत टूटने से छोटी मोटी नाव निकल जाने के रस्ते होगए, वहां भी पानी पांच फुट से अधिक गहरा नहीं रहता, और मनार और रामेश्वर के बीच तो पानी इतना कम है, कि जब समुद्र की लहर हटती है, तो बिलकुल रेता दिखलाई देने लगता है। निदान इसी रेते के बीच में एक पहाड़ का करारा सा निकल आया है, और उस्पर

बड़े बड़े ढोके पत्थरों के पड़े हैं, उसी को वहांवाले रामचंद्र का सेत कहते हैं, उस्के अंत से लंका के तट से समीप मन्नार का टापू १८ मील लंबा और अढ़ाई मील चौड़ा है, गढ़ भी उस्मे एक बना है, और वह समुद्र की खाड़ी जो लंका और हिंदुस्तान के बीच मे पड़ी है, उसी टापूके नाम से पुकारी जाती है।—१७—तिरुनेल्लुवलि मथुरा के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। इस जिले मे पर्व्वत कम हैं, पर जंगल उजाड़ बहुत, विशेष करके पूर्व भाग मे। सदरमुकाम तिरुनेल्लुवलि मंदराज से ३५० मील दक्षिण नैर्ऋत कोन को झुकता कुमारी अंतरीप से ५८ मील है। तिनैल्लवलि से पूर्व समुद्र के तट पर तूतिकोरिन ले गोतेखोर लोग सीप से मोती निकालते हैं। —१८—कोयम्बुत्तूर मथुरा से वायुकोन। यह जिला प्राय ९०० फुट समुद्र से ऊंचा होगा, पर सब जगह बराबर नहीं कहीं इस्से न्यून और कहीं अधिक। जंगल उजाड़ बहुत है। लोहे और गोदन्त की खान हैं। यहां के लोग सांड़ की पूजा करते हैं, और जब सांड़ मरते हैं तो बड़ी धूमधाम से गाड़े जाते हैं। सदरमुकाम कोयम्बुत्तूर मंदराज से २७० मील नैर्ऋतकोन है। उतकमंद वहां से ४० मील वायुकोन नीलगिरि के पहाड़ पर समुद्र से कुछ ऊपर ७००० फुट ऊंचा साहिबलोगों के हवा खाने की जगह है। बहुत सी कोठी और बंगले बन गए हैं, गर्मी वहां बिलकुल नहीं व्यापती। पास ही उन पहाड़ों मे एक झीलभी सुंदर छ सात मील के घेरे मे पानी से भरी

है। ऊपर लिखे हुए ये सातों ज़िले अर्थात् शेलं से कोयम्मुत्तूर तक द्राविड देश मे गिने जाते हैं, और इसी द्राविड़ का नाम शास्त्र मे दंडकारण्य भी लिखा है।—१८—मलीवार जिसे मलय और तिरियाराज और केरल भी कहते हैं, और कोयम्मुत्तूर के पश्चिम घाट उतरकर समुद्र तक चला गया है। इस ज़िले मे वन और पर्वत बहुत हैं, और नदी नाले भी इफ़रात से मिट्टी लाल सुरख़ी की तरह, किसी किसी पहाड़ी नदी का बालू धोने से सोना भी हाथ लगता है। यहां के ज़मीदार इकट्ठा होकर गांव मे नही बसते, वरन अपने अपने खेत के पास बहुधा अलग अलग मकान बनाकर रहते हैं, पर मकान इन के सुथरे और साफ़ होते हैं। बारबर्दारी यहां अकसर मज़दूर करते हैं, बैल लादने लाइक़ नहीं होते। ज़ात का बड़ा बचाव है, ब्राह्मण शूद्र का स्पर्श नही करते वरन उन्हे अपने समीप भी नही आने देते, पर नायर अर्थात् शूद्र जाति की स्त्रियों का रखना ऐब नही समझते। यहां नायर लोग दस बरस की उमर मे सादी करते हैं, पर स्त्री को अपने घर नहीं बुलाते, खाने पहनने को दिया करते हैं, और वह अपने बाप के घर रहा करती और जिस मर्द को चाहती है अपने पास बुलाती है, और यही कारन है कि वहां के आदमी अपने बाप का नाम नही जानते, और बहन के पुत्र को वारिस बनाते हैं। मा घर की मालिक है, और माके पीछे बड़ी बहन। जब कोई मरता है तो उस्की बहनों के लड़का लड़की उस्का माल असबाब बांट

लेते हैं। हक़ीकत से बेवक़ूफ़ हैं वहां वे मर्द, जो विवाह करते हैं। औरतें सुंदर होती हैं, पर अफ़सोस कि इतनी बेवफ़ा। इस ज़िले के आदमी प्राय डेढ़ लाख क्रिस्तान हैं। यह भी याद रखना चाहिये कि केरल देश, जिस्का हमने वर्णन किया है, घाटों के नीचे नीचे उत्तर तरफ़ चंद्रगिरि नदी तक चला गया है, और कल्लीकोट और तेल्लिचेरी ये दोनों ज़िले भी जिन का आगे वर्णन होता है इसी देश से गिने जाते हैं, और यही सारी बातें उन से भी मौजूद हैं। सदरमुक़ाम इस ज़िले का कोच्ची मंदराज से ३५५ मील नैर्ऋतकोन समुद्र के तट पर बसा है।—२०—कल्लीकोट मलबार के उत्तर। सदरमुक़ाम कल्लीकोट मंदराज से ३३५ मील नैर्ऋतकोन पश्चिम को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। यह वही जगह है जहां पहले ही पहल फ़रंगियों का जहाज़ आकर लगा था। —२१—तेल्लिचेरी कल्लीकोट के उत्तर। सदरमुक़ाम तेल्लिचेरी अथवा तालचेरी मंदराज से ३४० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है।—२२— मंगलूर अथवा कानडा, जिसे वहांवाले तुलव कहते हैं, तेल्लिचेरी के उत्तर। इस्मे मलबार से भी अधिक पहाड़ हैं। गाय बैल वहां के बड़ी बकरी से ज़ियादः बड़े नहीं होते। ज़मींदार इस ज़िले से भी मलबार की तरह अपने खेतों के पास घर बनाकर रहते हैं। वहां जैन लोग बहुत हैं, और क्रिस्तान भी अधिक हैं। टीपू के बाप हैदर ने बहुतों को क़त्ल किया था। कहते हैं कि ६००००

क्रिस्तान पकड़के मैसूर को लेगया था, उन में से केवल १५००० लौटे। सदरमुक़ाम मंगलूर, जिसे कोडिआलबंदर भी कहते हैं, मंदराज से ३७५ मील पच्छिम समुद्र के तट पर है।—२३—हैनोर मंगलूर के उत्तर गोवे तक, जो पुर्टगीज़ों (१) के दखल में हैं। यह भी ज़िला तुलव देश में गिना जाता है, और सारी बातें वैसी ही रखता है।

वम्बई हाता।

अब बंबई हाते के ज़िले लिखे जाते हैं—१—धारवार गोवे के पूर्व। सदरमुक़ाम धारवार, जिसे मुसल्मान नसराबाद कहते हैं, बम्बई से २८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता है। धारवार से पचास मील उत्तर गोकाक के पास गतपर्ब नदी एक जगह पहाड़ से १७४ फुट ऊंचे पत्थर से चादर के तौर पर गिरती है, बरसात मे इस चादर की चौड़ान १६८ गज़ से कम नहीं होती, महादेव का वहां एक मंदिर हैं, और जंगल भी आस पास से सुंदर है, वह स्थान उदासीन जनों के मन को बहुत लुभाता है।—२—बेलगांव धारवार के वायुकोन। आबहवा अच्छी। सदरमुक़ाम बेलगांव बंबई से २४५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता। क़िला मज़बूत बना है। खंदक़

(१) पुर्टगाल के रहनेवालों को पुर्टगीज़ कहते हैं।

पहाड़ मे से कटी है। सर्कारी फौज की छावनी है।—३—कोकण, जिसे कोङ्कण, और कङ्कन भी कहते हैं, बेलगांव के वायुकोन। जंगल पहाड़ और नदी नालों से भरा है। सदरमुकाम रत्नगिरि बम्बई से १४० मील दक्षिण समुद्र के कनारे है।—४—ठाणा कोकण के उत्तर। सदरमुकाम ठाणा साष्टी के टापू मे, जिसे वहांवाले सालसेत और गासेत और अंगरेज सालसिट कहते हैं, बम्बई से बीस मील ईशानकोन उत्तर को झुकता हुआ समुद्र के तट पर बसा है। किला भी बना है। २०० गज चौड़ी समुद्र की खाड़ी उस टापू को ज़मीन से जुदा करती है। ठाणा से कोस तीन एक पर किनेरी के दर्मियान इस टापू मे किसी समय पहाड़ काट कर जो बौध मत वालों ने गुफा और मंदिर बनाए थे, उन मे दो मूर्ति बुध की बीस बीस फुट ऊंची अब तक मौजूद हैं, और एक खंभे पर कुछ पुराने हर्फ़ भी खुदे हुए हैं।—५—बम्बई का टापू साष्टी टापू के दक्षिण। थोड़े दिन हुए कि यह टापू पानी और जंगल झाड़ियों से ऐसा छा रहा था, कि अगले लोग उस की आबहवा की ख़राबी यहां तक लिख गए हैं कि इस टापू मे आकर कोई मनुष्य तीन बरस से अधिक न जीयेगा, अब वही बम्बई सर्कार के प्रताप से ऐसा आबाद और साफ़ हो गया कि आबहवा सफ़ाई दौलत और पार्सियों की चालाकी अक़ल और अच्छे स्वभाव के कारन बहुत लोग कलकत्ते से भी उसे श्रेष्ठ समझते हैं। कोई तो कहता है कि वहां जो बम्बादेवी है उसी के नाम पर इस टापू

का नाम बम्बई रखा गया, और कोई इस का असल नाम बम्बहिया बतलता है। बम्बहियाका अर्थ पुर्टगाली भाषा में अच्छी-खाड़ी है। पहले यह टापू पुर्टगीजों के दखल में था, सन १६६१ में जब उन के बादशाह ने अपनी लड़की इंगलिस्तान के बादशाह को व्याही तो यह टापू यौतक में दिया। पहले ये दोनों टापू जुदा जुदा थे, और इन के बीच में चार सौ हाथ समुद्र की खाड़ी थी, दक्षिण तरफ़ का टापू ८ मील लंबा और अढ़ई मील चौड़ा था, और उत्तर तरफ़ साष्टी का टापू १८ मील लंबा और १२ मील चौड़ा था, पर अब उन दोनों के बीच में बंध बंध जाने से एक हो गए। धरती इन टापुओं की पथरीली है, इमारत में काठ बहुत लगाते हैं, अंगरेजों की कोठियों में भी बहुधा काठ के खंभे और तख़्तों का फ़र्श रहता है। सिपाही पल्टनों के यदि नाप में पांच फुट तीन इंच से ऊंचे नहीं होते, पर लड़ाई में मिहनती हैं। बम्बई हाते के गवर्नर क़मांडरिंचीफ़ बोर्डअवरवन्यू सुप्रिमकोर्ट और सदरनिज़ामत और दीवानी के जज इसी जगह में रहते हैं। किला मज़बूत और इस ढब का बना है कि समुद्र तीन तरफ़ से मानो उस की खाई हो गया है। ज़ुबान यहां गुजराती बहुत बोलते हैं, और उस्से उतरकर मरहठी और कोकणी, और उन से उतरकर फिर और सब बोली जाती हैं। यहां पारसी लोग बहुत रहते हैं, और बड़े धनाढ्य हैं। औरतें उन की अकसर पतिव्रता, कस्बी उस क़ौम में कोई नहीं। जब ईरान में

मुसल्मानों का अमल हुआ तो इन के पुरखा वहां से भागकर यहां आ बसे। ये लोग अब तक उसी तार से सूर्य और अग्नि को पूजते हैं, सवेरे नित्य सूर्योदय के समय सब के सब समुद्र के कनारे मैदान मे जाकर जो सूर्य को सिजदा करते हैं, वह कैफ़ियत देखने लाइक़ है। इन लोगों के दखमे अर्थात् मुर्दे रखने के मकान वहां पांच से ऊपर हैं, सब से बड़ा दखमा चौफेर दीवार से घिरा अनुमान पचास गज़ के घेरे मे एक खुला हुआ मकान है, और उस के बीच मे एक कूआ है, जो पारसी मरता है उसे एक चादर से लपेट कर उस मकान के अंदर रख आते हैं, निदान मास तो उस्का कव्वे और गिध नोच लेजाते हैं, और हड्डियां जो रहजाती हैं उन्हे उस कूए मे डाल देते हैं। एक कुत्ता भी वहां बंधा रहता है, और उन का यह निश्चय है कि शैतान उस मुर्दे की जान पकड़ने को वहां आता है, और वह कुत्ता भूंक कर उसे भगा देता है। यह भी उन का मत है कि जिस मुर्दे की दहनी आंख गिध पहले खावे वह अच्छा है, और जिस मुर्दे के मुंह मे से रोटी जो मरने के बाद रख देते हैं कुत्ता खींच ले जावे उस के स्वर्ग प्राप्त होने मे कुछ संदेह नहीं। कूए को हड्डियों से साफ़ करने के वास्ते उस मकान के नीचे से एक सुरंग लगी रहती है, कि जिस्से वह कूआ भरने न पावे। अमीर लोग अपने कुनबे के लिये बहुधा ऐसा एक जुदा मकान बनवा रखते हैं। बम्बई कलकत्ते से ९५० मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता और सड़क की

राह ११८५ मील पड़ता है। बम्बई के क़िले से सात मील और कोकण के कनारे से पांच मील गोरापुरी का टापू, जिसे अंगरेज़ एलिफेंटाआइल कहते हैं, छ मील के घेरे मे है। एलिफेंट अंगरेज़ी मे हाथी को कहते हैं, और वहां उतरने की जगह पहाड़ पर एक पत्थर का हाथी इतना बड़ा कि सच्चे हाथी से तिगना ऊंचा बना था, इसी कारन यह नाम रहा, अब वह हाथी टूट गया है। इस टापू मे किसी समय पहाड़ कटकर अद्भुत मंदिर बने हैं। बड़ा मंदिर उसे मिले हुए मकानों के साथ २२० फुट लंबा और १५० फुट चौड़ा है, और २६ उसे खंभे हैं, बीच मे एक बहुत बड़ी त्रिमूर्त्ति १५ फुट ऊंची रखी है, अर्थात् एक ही मूर्ति मे ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों के चिहरे बनाए हैं, दहनी तरफ़ एक मकान मे महादेव की अर्धंगी मूर्ति १६ फुट ऊंची बनी है, सिवाय इन के और भी बहुत मूर्तें इन त्रिदेव और इंद्र इंद्रानी इत्यादि की बनी हैं। जगह देखने लाइक़ है, पर बहुत बेमरम्मत, कहीं कहीं टूट भी गई है। जहां किसी ज़माने मे ब्राह्मणों के सिवाय कोई पांव भी रखने न पाता होगा, वहां अब सांप बिच्छुओं की दहशत से कोई जाना भी नहीं चाहता।—६—पूना टाणा के पूर्व। पर्वत और नदी नाले उसे बहुत हैं। आबहवा अच्छी है। ज़मीदार क़द के नाटे होते हैं। सदरमुक़ाम पूना बम्बई से ७५ मील अग्निकोन समुद्र से २००० फुट ऊंचा एक पटपर मैदान मे मूता नदी के दहने कनारे बसा हैं। बाज़ार चौड़ा, मकानों मे लकड़ी का काम बहुत, बस्ती लाख आदमी से ऊपर,

माड़ी रेशमी वहां अच्छी बुनी जाती है। २५ मील वायु-कोन को एक खड़े पहाड़ पर लोहगढ़ का क़िला मज़बूत बना है, और पानी का उसमे बहुत आराम है। पूना से ३० मील वायुकोन उत्तर को झुकता कारली गांव के पास पहाड़ काटकर बौध मत के मंदिर जो बने हैं, वे देखने लाइक हैं, बड़ा मंदिर १२६ फुट लंबा और ४६ फुट चौड़ा है, उसमे बुध की मूरतें और स्त्री पुरुष और हाथीयों की मूरतें तरह बतरह की खोदी हैं। पूना के दक्षिण नैर्ऋत-कोन को झुकता अनुमान ५० मील और समुद्र के तट से २५ मील पश्चिम घाट मे महाबलेश्वर का पहाड़ जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, साहिबलोगों के हवा खाने की जगह है। बलंदी के बाइस सदा शीतल रहा करता है, बहुत से बंगले बन गए हैं, गर्मी भर बम्बई हाते के बहुतेरे साहिब बरन गवर्नर बहादुर भी उसी जगह आकर निवास करते हैं, कृष्णा नदी उसी जगह से निकली है, इस लिये हिंदू लोग उसे तीर्थस्थान मानते हैं।—७—सितारा पूना के दक्षिण। सदरमुकाम सितारा बम्बई से १३० मील अग्नि-कोन दक्षिण को झुकता प्राय आठ सौ फुट ऊंचे खड़े पहाड़ पर मज़बूत क़िला है, और पहाड़ के नीचे शहर बसा है, शहर से कोस एक पर छावनी है। सितारे से ३० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता पश्चिमघाट के २००० फुट ऊंचे एक खड़े पहाड़ पर वासोटाह नाम एक मज-बूत क़िला बना है। सितारे से १०० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता भीमा नदी के दहने कनारे पंडरपुर हिंदुओं का

तीर्थ है, वहां वैष्णवी मत का एक मंदिर बना है। सितारे से १५० मील अग्निकोन बीजापुर अथवा विजयपुर शहर-पनाह के अंदर बसा है, वह किसी समय मे दखन के बाद-शाहों की राजधानी था, और फिर दिल्ली के तख्त मे एक सूबा रहा। उस वक्त उसे ६८४००० घर और १६०० मस्-जिद बतलाते हैं, यद्यपि यह केवल बढ़ावे की बात है, और कदापि बुद्धिमानों के मानने योग्य नहीं, तथापि उस के आसपास दूर दूर तक खंडहर और मकानों के निशान जो अबतक मौजूद हैं देखने से यह बात साबित है कि वह शहर किसी ज़माने मे बहुत बड़ा बस्ता था। इस शहर का गिर्दनवाह दिल्ली के गिर्दनवाह से बहुत मिलता है, जैसे वहां शहर के बाहर कुतबसाहब तक हर तरफ़ खंडहर और मक़बरे दिखलाई देते हैं, उसी तरह विजयपुर के गिर्द भी टूटे फूटे मकान और मक़बरे नज़र पड़ते हैं। दूर से उस के गुम्बज़ और मीनारों के नज़र आने पर यही मालूम होता है कि किसी बहुत बड़े शहर मे पहुंचे पर दर्वाज़े के अंदर क़दम रक्खो तो हर तरफ़ खंडहर दिखलाई देने लगते हैं, क़िला टूटा, महल फटा, मस्जिद मक़बरे ढहे, दूकान मकान गिरे हुए, दीवार बेमरम्मत, फाटक सड़े गले, शहरपनाह का घेरा आठ मील का, दर्वाज़े सात, मुहम्मदशाह का मक़बरा जिस का गुम्बज़ १५० फुट बलंद, और जिस्मे आवाज़ ऐसी गूंजती है कि मानो दूसरा आदमी बोलता है, नौबाग़ की बावली, जामेमस्जिद, इबराहीम-आदिलशाह की मस्जिद जो सत्तर लाख रुपया लगकर

बनी थी, और मक़बरा जिस के गिर्द सारी कुरान इस खूब-सूरती से खुदी है और उस पर सोने का काम और रंगा-मेज़ी ऐसी की है कि शायद अच्छी अच्छी किताबों की लौह पर भी वह काम न मिलेगा, देखने लाइक़ है। बाज़ा-र अब भी, जो कुछ कि बाक़ी रहगया है, तीन मील लंबा पचास फुट चौड़ा और बिलकुल फ़र्श कीया ज़आ है। एक जगह मे, जिसे हलालखोर की बनाई ज़ई बतलाते हैं, पत्थर की ज़ंजीरें लटकती हैं, लोहे की सांकल के तौर पर बनी ज़ई, और जोड़ उसमे कहीं नहीं। क़िले पर मलिकु-लमैदान नाम एक पीतल की तोप रखी है कि जिसमे तेतीस मन तीन सेर का गोला समाता है, हम जानते हैं कि इतनी बड़ी तोप सारी दुनिया मे दूसरी न निकलेगी। —८—शोलापुर सितारा के पूर्व। धरती उपजाऊ। सदर-मुक़ाम शोलापुर बम्बई से २३० मील अग्निकोन शहरपनाह के अंदर है। क़िला मज़बूत और छावनी बड़ी है।—९—अहमदनगर पूना के ईशानकोन। धरती ऊंची और पहाड़ी मौसिम मोतदिल। सदरमुक़ाम अहमदनगर, जो बादशाही अमलदारी मे उसी नाम के सूबे की राजधानी था, बम्बई से १२५ मील पूर्व शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला पाव कोस के तफ़ावत पर संगीन बना है।—१०—नासिक अहम-दनगर के वायुकोन। सदरमुक़ाम नासिक बम्बई से ९५ मील ईशानकोन को गोदावरी के बांएं कनारे उस के उद्गम के पास बसा है। हिंदुओं का तीर्थ है। ब्राह्मण बज़त बसते हैं। कहते हैं कि रामचंद्र ने इस जगह शूर्पनखा की नाक

काटी थी इसी कारण इस का नाम नाशिक रहा। शहर से पांच मील पर एक पहाड़ से पत्थर काटकर गुफा की तरह पुराने समय के बौधमती मंदिर बने हैं. उन मे कुछ अक्षर भी प्राचीन खुद रहे हैं। नासिक से २० मील नैर्ऋत-कोन को त्रिम्बक का किला पहाड़ के ऊपर मज़बूत बना है, और नीचे शहर बस्ता है। गोदावरी इसी पहाड़ से निकली है, हिंदुओं का तीर्थस्थान हैं।—११—खानदेस नासिक के उत्तर और सातपुडा पहाड़ के दक्षिण जो भीलों के रहने की जगह है। वे नाटे काले प्राय नंगे भागलपुर के पहाड़ियों से मिलते हुए धनुष बान लिये रहते हैं, और सब कुछ खाते पीते हैं, मुर्दों को ज़मीन मे गाड़ते हैं, और ज़ात पूछो तो अपने तईं हिंदू असल रज-पूतबच्चा बतलाते हैं। यद्यपि इस ज़िले मे जंगल पहाड़ और मैदान तीनों हैं, परंतु निर्मल जल के सोते जो पहाड़ों से निकलकर तापी नदी मे गिरते हैं बहुत शोभायमान हैं। बादशाही वक़्त मे यह एक सूबा गिना जाता था। सदर-मुक़ाम धूलिया बम्बई से २०० मील ईशानकोन को पींजरा नदी के कनारे बसा है। धूलिये से १०० मील पूर्व ईशान-कोन को झुकता असीरगढ़ अथवा आसेरगढ़ का किला ७५० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर, जिस्से १०० फ़ुट तो ऊपर का निरा दीवार की तरह खड़ा है, ११०० गज़ लंबा ६० गज़ चौड़ा निहायत मज़बूत बना है, पानी भी उस्के अंदर बहुत है। इन ऊपर लिखे हुए ज़िलों मे, जो बम्बई के गवर्नर के ताबे हैं, एक तो वह मुल्क ही दुर्गम है, और तिस से सर-

मर्हठों के वक़ मे पहाड़ों के शिखर पर क़िले इतने बनाए थे, कि एक आदमी ने एक जगह खड़े होकर एक दिन के रस्ते के अंदर बीस क़िले गिने, पर सर्कार ने बेकाम और लुटेरों की पनाह समझ कर बहुत से तुड़वा दिये, और बाक़ी बेमरम्मत पड़े हैं।—१२—सूरत खानदेश के पश्चिम। पूर्व और दक्षिण पहाड़ बाक़ी मैदान, शहर सूरत का बम्बई से १७५ मील उत्तर तापी के बाएं कनारे पर छ मील के घेरे से शहरपनाह के अंदर बसा है। तीन तरफ़ शहरपनाह और चौथी तरफ़ तापी से घिरा है। नदी के कनारे एक छोटा सा क़िला भी है। वहां जैनियों ने जानवरों के लिये एक अस्पताल बनाया है, जिस्में जूं और खटमलों को जो उस्मे छोड़े जाते हैं खून पिलाने के लिये फ़क़ीरों को कुछ देकर इस बात पर राज़ी कर लेते हैं कि वे वहां रात भर चारपाई मे बंधे हुए पड़े रहें और जूं खटमल उन्हें काटा करें। किसी वक़ मे यह शहर जब सूबे खानदेश की राजधानी था बड़ी रौनक़ पर था, बम्बई के बसने से उस की रौनक़ घट गई, अब भी डेढ़ लाख से ऊपर आदमी बसते हैं। छावनी बहुत बड़ी है। यहां तक अर्थात् नर्मदा के दक्षिण जो ज़िले बम्बई हाते के ताबे हैं शास्त्र मे प्राय इन सब को महाराष्ट्र देश कहते हैं।—१३—भड़ोंच सूरत के उत्तर। बम्बई हाते मे यह ज़िला बहुत आबाद और उपजाऊ गिना जाता है। सदरमुक़ाम भड़ोंच जिस्का असली नाम भृगुक्षेत्र था बम्बई से २१५ मील उत्तर और समुद्र से २५ मील नर्मदा के दहने तट एक ऊंचे से स्थान मे बसा है,

पर अब कुछ वीरान और बेरौनक सा है। यहां भी जैनियों ने जानवरों के लिये अस्पताल बनाया है, और उसका नाम पिंजरापोल रखा है, जो जानवर मांदा और शक्ति हीन होता है, उसे वहां रखते और पालते हैं।—१४—खेडा भडौंच के उत्तर गाइकवाड की अमलदारी से बहुत बेडौल मिलजुल रहा है, अकसर इस के हिस्से चारों तरफ़ ग़ैरअमलदारियों से घिर गए हैं। सदरमुक़ाम खेडा बम्बई से २८० मील उत्तर दो छोटी छोटी नदियों के संगम पर शहरपनाह के अंदर बसा है। शहर के अंदर जैनियों का एक बड़ा मंदिर है, लकड़ी का काम उसमें अच्छा किया है। कोस एकके तफ़ावत पर नदी पार छावनी है।—१५—अहमदाबाद खेडे के उत्तर। शास्त्र मे सौराष्ट्र इसी देश को लिखा है लोग अब सोरठ कहते हैं। सदरमुक़ाम अहमदाबाद बम्बई से ३०० मील उत्तर साभरमती के बाएं कनारे शहरपनाह के अंदर बसा है। किसी ज़माने मे यह शहर इसी नाम के सूबे की बहुत आबाद राजधानी था, तीस मील के घेरे मे अब तक भी पुरानी इमारतों के निशान मौजूद हैं, मरहठों ने तबाह कर दिया था, अब फिर सर्कार के साए मे आबाद होता चला है। लाख आदमी से ऊपर बसते हैं। वहां की जामेमसजिद मे यह एक अजीब बात है कि जो उसकी मिहराब पर धक्का लगाओ तो मीनार थरथरा उठें, और एक मसजिद निरे संगमर्मर की बनी है, उसमे सीप चांदी हाथीदांत और क़ीमती पत्थरों का काम किया है। किसी ज़माने मे कमख़ाब वहां का मशहूर था, पर अब वैसा

और उतना नही बनता।—१६—सिंध समुद्र से सिंधु नदी के दोनों कनारे बहावलपुर की अमलदारी तक चलागया है। मुंज-अंतरीप इस इलाके की समुद्र के तट मे पश्चिम सीमा है। इस को ज़िला न कहकर एक कमिश्नरी कहना चाहिये, क्योंकि उस्के लिये एक कमिश्नर मुक़र्रर है, और कमिश्नर के नीचे तीन असिस्टंट बतौर कलक्टर मजिस्ट्रट के तीन ज़िलों मे, अर्थात् हैदराबाद करांची और शिकारपुर मे, काम करते हैं। इस इलाके मे उजाड़ और रेगिस्तान बहुत है, और कहीं कहीं छोटे छोटे पहाड़ भी हैं, परंतु सिंधु नदी की तटस्थ धरती खूब उपजाऊ है। लोहे की खान है। मुसल्मान जट और बलूची बहुत बस्ते हैं। बलूची वहां के बड़े बदज़ात हैं। किसी समय यह मुल्क बहुत आबाद था, निशान मकान और क़बरों के अकसर जगह मिलते हैं, पर अब तो मुद्दतों की बदअमली से यह हाल होगया है कि बहुधा मंज़िलों तक गांव भी नही मिलते। ये लोग सिखों की तरह बाल बढ़ाते हैं, और पगड़ी इतनी बड़ी शायद दुनिया मे कोई नही बांधता, कितनो ही की पगड़ी अस्सी गज़ से भी अधिक लंबी होती है। औरतें सुंदर, फ़क़ीर बहुत। सदरमुक़ाम हैदराबाद सिंधु की उस धारा के जिस्का नाम फुलाली है दहने कनारे पर बसा है। क़िला एक पहाड़ी पर पक्का बना है। सिंधुबड़ी धारा वहां से तीन मील पश्चिम है। छ मील उत्तर मियानी के पास सन १८४३ मे जेनरल नेपियर साहिब ने २८०० सिपाहियों से बाईस हज़ार बलूचियों को शिकस्त दी

था। हैदराबाद से अनुमान पचास मील दक्खिण ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता सिंधुके दहने कनारे पर ठट्ठे का पुराना शहर है, किसी समय मे निहायत आबाद और बड़े बेवपार की जगह था, पर अब उस मे बीस हज़ार आदमी भी नही निकलेंगे, हर तरफ़ मुसलमानों के मक़बरे और खंडहरों के ढेर नज़र पड़ते हैं। अब उस शहर की आबादी के बदल पचास मील पच्छिम हटकर करांची बंदर ने रौनक़ पाई है, और दिन पर दिन बढ़ता जाता है, माल के सब जहाज़ अब उसी मे आकर लगते हैं। करांची से ८ मील ईशानकोन को गर्मपानी के सोते हैं। हैदराबाद से २१० मील दक्षिण शिकारपुर भी बड़े बेवपार की जगह है। हैदराबाद से दो सौ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता सिंधु के एक टापू मे छोटी सी पहाड़ी पर बक्कर अथवा भक्खर का क़िला है, दीवार उस्से कच्ची पक्की ईटों की दुहरी बनी हैं, क़िले के दोनों तरफ़ अर्थात् सिंधुके दोनों कनारों पर रोड़ी और सक्कर दो शहर बस्ते हैं, रोडी बांए कनारे प्राय आठ हज़ार आदमियों की बस्ती बेरौनक़ और टूटा फूटा सा है, और सक्कर उस्से भी घटकर है। हैदराबाद के अग्निकोन को जहांलोनी नदी रन मे गिरती है उसी के पास दक्खिण रन और उत्तर रेगिस्तान के जंगल से घिरा हुआ पार्कर के पर्गने मे नगर नाम पांच सौ झोपड़ों की बस्ती है, किसी समय मे वहां १०००० आदमी बस्ते थे, निदान यह जगह जैनियों के तीर्थ की है, बहुतेरे यात्री उस रेगिस्तान के सफ़र की तकलीफ़ उठा कर वहां

गौडी पार्श्वनाथ की मूर्तिके दर्शन को आते हैं, मूर्त्ति यह सफेद पत्थर की हाथ भर से कुछ अधिक ऊंची है, माथे और आखों मे जवाहिर जड़ा हैं, गौड़ी इस वास्ते नाम रखा कि पहले वह बंगाले मे गौड़के दर्मियान थी। यह मूर्त्ति वहां के ज़मीदारों के इख़्तियार मे है, ज़मीन मे गाड़कर अथवा बालू मे छुपा रखते हैं, जब यात्रियों से अच्छी तरह पुजा लेते हैं तब दर्शन कराते हैं, पर रास्ते की तकलीफ़ से अब वहां यात्री लोगों का जाना कम हो गया, इस लिये उन्हों ने यह क़ाइदा बांधा है कि जब यात्रियों के आने की ख़बर सुनते हैं तो अकसर मूर्त्ति ही को वहां से तीन मंजिल वरे मोड़वाड़ गांव मे जो रन के तट पर बसा है उठा लाते हैं।

हिन्दुस्तानीअमलदारी

निदान जितने मुल्क मे सर्कार कम्पनी की अमलदारी है, अर्थात् जिस्का पैसा सर्कारी ख़ज़ने मे आता है, और जहां दीवानी फ़ौजदारी की कचहरियां सर्कार की तरफ़ से मुक़र्रर हैं, उतने का तो वर्णन हो चुका, अब जो शेष रहा वह हिंदुस्तानियों के क़ब्ज़े मे है। यद्यपि उन मे से बहुतेरे राजा और नव्वाब पुराने अहदनामों के अनुसार नाम के लिये स्वाधीन कहलाते हैं, परंतु वस्तुतः सब के सब

सर्कार की दीऊई जागीरें खाते हैं, क्योंकि राज्य की जड़ सेना है, सो किसी के पास नहीं, एक नयपालवाले ने पंद्रह हज़ार जंगी सिपाही रखछोडे हैं, इसी कारन हम अब भी उस्को स्वाधीन राजा पुकारते हैं। बऊत ग्रंथकारों ने इन रजवाड़ों को पुराने अहदनामों के बमूजिब स्वाधीन और पराधीन मानकर उन्हीं अहदनामों के लिखे ऊए दर्जों के अनुसार वर्णन किया, पर जो कि अहदनामे बऊधा बदलते रहते हैं और शर्तें उन की समय के फेरफार से सदा घटा बढ़ा करती हैं, हम उस नियम को छोड़कर पहले उत्तराखंड और फिर मध्यदेश और उसे पीछे दक्षिण के रजवाड़ों को लिखते हैं, पर जिन सब रजवाड़ों का अहवाल आगे लिखा जाता है, उन के सिवा यदि किसी जगह का कोई राजा नव्वाब या रईस सुन्ने से आवे, तो समझना चाहिये कि वह ज़मीदार या मुआफ़ीदार है, अर्थात् या तो सर्कार अथवा किसी और राजा को कर देता है, या उन की दीऊई मुआफ़ी खाता है, दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार कुछ नहीं रखता, और उन के इलाक़ों का ज़िकर इन्हीं ऊपर लिखे ऊए ज़िलों से आगया, या नीचे लिखे ऊए रजवाड़ों मे आ जावेगा। निदान उत्तराखंड मे—१—राज नयपाल है। उसे पश्चिम से कालीनदी जो मानसरोवर के दक्षिण हिमालय से निकल शरयू मे गिरती है कमाऊं के सर्कारी इलाक़े से, और पूर्व से कंकईनदी जो हिमालय से निकल दूसरी नदियों से मिलती मिलाती गंगा मे जा गिरती है शिकम के राज से जुदा करती हैं, उत्तर

मे इसके हिमालय पार तिब्बत का मुल्क है, और दक्षिण मे पहाड़ों से नीचे कुछ दूर तो अवध का इलाका और फिर सूबे बिहार और बंगाले के सर्कारी ज़िले हैं। ४६० मील लंबा और ११५ मील चौड़ा है, बिस्तार उस्का ५४५०० मील मुरब्बा होवेगा। दक्षिण तरफ़ पहाड़ों के नीचे दस बारह कोस जो मैदान का मुल्क है, उसे तराई कहते हैं। तराई के ऊपर, अर्थात् उत्तर को, दस दस बारह बारह कोस तक पहाड़ हैं, उन पहाड़ों को चढ़कर बड़ी बड़ी लंबी चौडी दूनें मिलती हैं, ऐसी कि जिन मे कोसों तक सिवाय मिट्टी के पत्थर देखने को भी नही, फिर उन के उत्तर हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ हैं। ज़बर्दर सोनामखी लोहा सीसा तांबा रांगा गंधक हरिताल और सिंदूर की खान है। नदियों का बालू धोने से कुछ सोना भी मिलजाता है। दूध वहां गाय का बहुत मीठा और चिकना होता है। रहनेवाले असली वहां के सूरत मे चीनियों से मिलते हैं। राजा और ठाकुर लोग अपने तईं उदयपुर के राना की औलाद से समझते हैं। मकान और गलियां बस्तियों की निहायत ग़लीज़ रहती हैं, मानों जगह साफ़ रखना जानते ही नही। मास खाने की इतनी चाह रखते हैं कि बलिदान के समय लहू तक पी जाते हैं। चावल और लहसन बहुत खाते हैं। लड़ाई मे दिलेर और खूब मज़बूत हैं। आमदनी बत्तीस लाख रुपया साल है। पचास बरस भी नही बीते कि इन लोगों ने कांगड़े तक पहाड़ों मे अमल करलिया था, और उस किले को जा घेराथा,

परंतु सन १८१५ ईसवी मे जेनरल अक्टरलोनी साहिब ने उन की फ़ौज को सतलज इस पार मलौन के क़िले मे ऐसी शिकस्त दी कि वे लोग फिर अपनी असली हद मे आगए, तब से पैर बाहर नही निकाला। वहां के राजा के निशान पर हनूमान का चिन्ह है। लौंडी गुलाम वहां अब तक बिकते हैं। वहां के राजा का वज़ीर जरनैल जंगबहादुर कुछ दिन हुए इंगलिस्तान को गया था, इस कारन उस ने बड़ा नाम पाया, और यह वज़ीर बहुत होशयार और अक़लमंद है, इंगलिस्तान मे जो जो अच्छे बंदोबस्त बालकों की शिक्षा और राज्य के शासन इत्यादि को देख आया है, उन मे से बहुत सी बातें धीरे धीरे नयपाल मे भी यथाशक्ति जारी करना चाहता है। क्याही अच्छी बात हो कि हमारे और राजा रईस भी इंगलिस्तान की सैर का चाव करें और अपनी प्रजा का भला चाहें। राजधानी नयपाल की काठमांडू, जिस्का शुद्ध नाम काष्ठमंदिर है, २७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ८५ अंस पूर्व देशांतर मे एक दून के दर्मियान, जो प्राय २२ मील लंबी और २० मील चौड़ी होवेगी, और जिस का किसी समय मे झील होना पत्थरों के निशान और वहांवालों की पोथियों से साफ़ साबित है, बंगाले के मैदान से प्राय ४८०० फुट ऊंचा विशनमती नदी के पूर्व तटपर जहां वह बाघमती से मिली है बसा है। पुरानी पोथियों से उस का नाम गूंगुलपट्टन लिखा है। घर ईंट लकड़ी और खपरैल के, पर सब के सब ख़राब और नाकारे, राजा के रहने का मकान भी कुछ देखने लाइक़

नही है। पास ही उस के तुलसीभवानी का मंदिर है, मूर्त्ति के बदल उस में यंत्र लिखा है, राजा रानी राजगुरु और पुजारी के सिवाय गैर आदमी अंदर नही जाने पाता। रजीडंट भी नयपाल के इसी काठमांडू मे रहते हैं। प्रसिद्ध बर्फी पहाड़ जो वहां से दिखलाई देता है, उस का नाम धैवन, समुद्र से कुछ ऊपर २४६०० फुट ऊंचा है। चंद्रगिरि जो काठमांडू के पास है, कुछ कम ८५०० फुट ऊंचा होवेगा। काठमांडू से दो मील दक्षिण पूर्व को झुकता बाघमती नदी के पार ललितपट्टन अनुमान २५०० आदमियों की बस्ती है, और काठमांडू की अपेक्षा इस की इमारत फिर भी कुछ दुरुस्त है। काठमांडू से आठ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हुआ भातगांव अनुमान १२०० आदमी की बस्ती है, पुराना नाम उस्का धर्मपत्तन था, ब्राह्मण उस में बहुत हैं, और महाराज के महल भी बने हैं। काठमांडू से ४१ मील पश्चिम वायुकोन को झुकती पहाड़ पर एक बस्ती गोरखा नाम २०० घरों की नयपाल के वर्त्तमान राजाओं की क़दीम जन्मभूमि है, और इसी कारन बहुधा नयपालियों को विशेष करके साहिबलोग गोरखिये और गोरखाली भी कहते हैं, गोरखनाथ का वहां एक मंदिर बना है। हिमालय के पहाड़ों मे गंडक नदी के बाएं तट से अति निकट मुक्तिनाथ हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है, वहां सात गर्म सोते हैं कि जिन से पानी निकलकर नारायणी नदी के नाम से गंडक मे गिरता है, उन मे से अग्निकुंड का सोता बहुत अद्भुत है, वह एक मंदिर के अंदर पहाड़ से

निकलता है, और उस्के पानी पर अग्नि की ज्वाला दिख-लाई देती है, कारण इस का वही समझना चाहिये जो ज्वालामुखी मे गोरखडिब्बी के लिये लिखआए हैं। काठ-मांडू से आठ मंज़िल उत्तर दिशा के बर्फ़िस्तान मे नीलकंठ महादेव का एक तीर्थस्थान है, वहां भी गर्म पानी का कुंड है।—२—कश्मीर–व–जम्बू। रावी और सिंधु नदी के बीच प्राय सारा कोहिस्तान इसी इलाके मे गिनना चाहिये, बरन हिमालय पार लद्दाख़ का मुल्क भी, जो हिंदुस्तान की हद से बाहर और तिब्बत का एक भाग है, अब इस इलाके के साथ महाराज गुलाबसिंह के बेटे रनबीर सिंह के पास है, और इस हिसाब से यह राज वायुकोन से अग्निकोन की तरफ़ अनुमान साढ़े तीन सौ मील लंबा और ईशान से नैर्ऋतकोन को अढ़ाई सौ मील चौड़ा होवेगा। बिस्तार पच्चीस हज़ार मील मुरब्बा है। हद उस की उत्तर और पूर्व को चीन की अमलदारी, और पश्चिम को अफ़ग़ानि-स्तान, और दक्षिण को पंजाब के सर्कारी ज़िले और चंबा और बिसहर के छोटे छोटे पहाड़ी रजवाड़ों से मिली है। इन मे कश्मीर की इन पोथी और किताबों मे बहुत प्रसिद्ध है, और सच है कि उस की जहां तक तारीफ़ कीजिये सब बजा है, और दुनिया मे जितनी प्रशंसा है कश्मीर के लिये सब रवा है। जहान के पर्दे पर कदाचित इस साथ का दूसरा स्थान हो तो होसकता है, पर इस बात का हम मुचलका लिख देते हैं कि उस्से बिहतर कोई दूसरी जगह नही है, क्योंकि हो ही नही सकती। मानो विधाता ने

सृष्टि की सारी सुंदर वस्तुओं का वहां नमूना इकट्ठा किया है। यह कश्मीर हिमालय के बीच मे पड़ा है, जैसे कोई बादामी थाली हो इस तरह पर यह स्थान चौफेर हिमाच्छादित पर्वतों से घिर रहा है, और बीच मे ७५ मील लंबा ४० मील चौड़ा सीधा मैदान बहाढाल है। पहाड़ों समेत यह मैदान अनुमान ११० मील लंबा और ६० मील चौड़ा है। पुरानी पुस्तकों मे लिखा है कि किसी समय मे यह सारा इलाका पानी के अंदर डूबा हुआ था, और उस झील को सतीसर कहते थे। लोहे तांबे और सुरमे की इस इलाके मे खान है। दरख़्त सायादार और मेवों के इस इफ़रात से हैं, कि सारे इलाके को क्या पहाड़ और क्या मैदान एक बाग़ हमेशः-बहार कहना चाहिये। कोई ऐसी जगह नही जो सब्ज़े और फूलों से ख़ाली हो, सब्ज़ा ऐसा मानों अभी इस पर मेह बरस गया है, पर ज़मीन ऐसी सूखी कि उस पर बेशक बैठिये सोइये मजाल क्या जो कपड़े मे कहीं दाग़ लग जावे, न कांटा है न कीड़ा मकोड़ा, न सांप बिच्छू का वहां डर है, न शेर हाथी के से मूज़ी जानवरों का घर। जहां बनफ़शा गाय भैंसों के चरने मे आता है, भला वहां के सब्ज़:ज़ारों का क्या कहना है, मानों पथिकजनों के आराम के लिये किसी ने सब्ज़ मख़मल का बिछौना बिछा रखा है, और उन के बीच लाल पीले सफ़ेद सैकड़ों क़िस्म के फूल इस रंग रूप से खिले रहते हैं कि जी नही चाहता जो उन पर से निगाह उठाकर किसी दूसरी तरफ़ डालें। कहीं नर्गिस है और कहीं सोसन, कहीं

लाला है और कहीं नस्तरन, गुलाब का जंगल, चंबेली का वन। मकान की छतें वहां तमाम मिट्टी की बनी हैं, बहार के मौसिम में उन पर फूलों के बीज छिड़क देते हैं, जब जंगल से हर तरफ़ फूल खिलते हैं, और मेवों के दरख़्त कलियों से लद जाते हैं, शहर और गांव भी चमन के नमूने दिखलाते हैं। लोग दरख़्तों के नीचे सब्ज़ों पर जा बैठते हैं, चाय और कबाब खाते हैं, नाचते गाते हैं, एक आदमी दरख़्त पर चढ़कर धीरे धीरे उन्हें हिलाता है, तो फूलों की बर्खा होती रहती है, इसी को वहां गुलरेज़ी का मेला कहते हैं। पानी भी वहां फूलों से ख़ाली नहीं, कमल और कमोदनी इतने खिले हैं, कि उन के रंगों की आभा से हर लहर इंद्र-धनुष का समा दिखलाती है। भादों के महीने में जब मेवा पकता है, तो सेव नाशपाती के लिये केवल तोड़ने की मिहनत दर्कार है, दाम उन का कोई नहीं मांगता, जंगल का जंगल पड़ा है, और जो बाग़ों में हिफ़ाज़त के साथ पैदा होती हैं, वह भी रुपए की तीन चार सौ से कम नहीं बिकतीं। नाशपाती कई क़िस्म की होती है, बटंक सब से बिहतर है। इसी तरह सेव भी बहुत प्रकार के होते हैं। बसंत बिलकुल नहीं होती। पहाड़ इस के गिर्द इतने ऊंचे हैं, कि बादल जो समुद्र से आते हैं, उन के अधोभाग ही में लटकते रह जाते हैं, पार होकर कश्मीर के अंदर नहीं जा सकते। जाड़ों में दो तीन महीने बर्फ़ ख़ूब पड़ती है, और सर्दी भी शिद्दत से होती है, यहां तक कि झीलों पर पाले के तख़्ते जम जाते हैं,

और वहां के लोग कांगडियों मे, जो जालीदार डब्बे की तरह मिट्टी की अंगेठियां होती हैं, आग सुलगाकर गले मे लटकाए रहते हैं, जिस्से छाती गर्म रहे, बाकी नौ दस महीने बहार है, न गर्मी न जाड़ा, और धूल गर्द और लू और आंधी का तो क्यों होना या वहां गुजारा। मई और जून मे दो चार छींटे मेह के भी पड़ जाते हैं। झेलम अथवा वितस्ता इस इलाके के पूर्व से निकलकर पश्चिम को इस मजे से बहती चली गई हैं, कि मानो ईश्वर ने जैसी वह भूमि थी वैसी ही उस के लिये यह नदी रची, न बहुत चौड़ी न संकड़ी, जल गहरा मीठा ठंढा और निर्मल, न उस्से ऐसा तोड़ कि नाव को खतरा हो, न ऐसा बंधा हुआ कि जिस्से गंदा हो जावे, न यह दर्या कभी बहुत बढ़ता है न घटता, कनारे भी न ऊंचे हैं न बहुत नीचे, कहीं हाथ कहीं दो हाथ, परंतु बालू का नाम नहीं, पानी के लब तक फूल खिले हुए हैं, और दरखत सायादार और मेवदार दुतरफा इतने खड़े हैं, और उन की टहनियां इतनी दूर तक पानी पर झुकी हैं, कि नाव मे बैठ कर आराम से छाया ही छाया से चले जाओ, और बैठे ही बैठे मेवे तोड़ो और खाओ। कहीं बेदमजनू पानी मे झुके हैं, कहीं चनार जो बहुत बड़े दरखत और जिन की छांव बहुत घनी और ठंढी होती है पत्ते का चतर सा बांधे खड़े हैं। कहीं सफेदे के दरखत जो सर्व की तरह सीधे और उस्से भी अधिक ऊंचे और सुंदर होते हैं कतार की कतार लगे हैं, और कहीं उन के बीच मे गांव और कस्बे बस्ते

हैं। दर्या के बाढ़ की दहशत न रहने से वहांवाले अपने मकानों की दीवारें ठीक पानी के कनारे से उठाते हैं, जिस्में नाव उन के दर्वाज़ों पर जा लगे। नाव की सवारी यहां बहुत है, और उसी से सारे काम निकलते हैं। सब मिलाकर इस इलाके में अनुमान दो हज़ार नाव चलती होंगी, पर नाव भी कैसी, सबुक हलकी साफ़ ख़ूबसूरत हवादार, नाम उन का परंदा, यथानामस्तथागुणः। वेरी-नाग अर्थात् जिस जगह से यह नदी निकली है, वह भी दर्शनीय है। एक पहाड़ की जड़ में लेवों के जंगल के दर्मियान एक अष्टकोन पच्चीस फुट गहरा कुंड है, घेरा उस का अनुमान अढ़ाई सौ हाथ होगा, पानी ठंढा और निर्मल, मछलियां बहुत, गिर्द इमारत बादशाही बनी हुई, निदान इस कुंड में पानी उबलता है, और उस से जो नहर बहती है, वही आगे जाकर और दूसरे सोतों से मिल के वितस्ता होगई है। दो चार ब्राह्मण उस जगह पर रहा करते हैं, क्योंकि हिंदुओं का तीर्थ है, स्थान बहुत एकांत रम्य और मनोहर है। सिवाय इन के उस इलाके में और भी बहु-तेरे कुंड और सोते हैं, जिन से नदी और नहरें इस इफ़रात से बहती हैं, कि सारी खेतियां जो बहुधा धान की होती हैं उन्ही के पानी से सींचते हैं। छोटे कुंड को वहां नाग और बड़ों को डल कहते हैं। तीर्थ भी हिंदुवों के वहां कई एक हैं, पर सब से प्रसिद्ध श्रीनगर से आठ मंज़िल उत्तर दिशा को बर्फ़ के पहाड़ों में ज्योतिर्लिंग अमरनाथ महादेव के दर्शन हैं। बरस भर में एक दिन श्रावण की पूर्णि

सा को उस का दर्शन होता है, बड़ा मेला लगता है। रस्त बहुत विकट है, अंत मे सात आठ कोस बर्फ पर चलन पड़ता है, कपड़ा पहनकर वहां कोई नही जाने पाता, एक मंज़िल पहले से नंगे हो जाते हैं, अथवा भोजपत्र की लंगोटी बांध लेते हैं। मंदिर मूर्ति वहां कुछ नही है, एक गुफा सी है, उस मे पहाड़ की बर्फ ढलकर पिंडी सी बन जाती है, इसी को महादेव का लिंग मानकर पूजा करते हैं। उस गुफा के अंदर कबूतर भी रहते हैं, जब यात्रीयों का शोर गुल सुनते हैं, तो घबराकर बाहर निकल जाते हैं वहांवालों का यह निश्चय है, कि साक्षात महादेव पार्वती कबूतर बन कर उन को दर्शन देते हैं। श्रीनगर के अग्नि कोन को एक दिन की राह पर मटनसाहिब नाम एक कुं हिंदुओं का तीर्थ है, उस के गिर्द इमारतें बनी है, तवारीखों से मालूम हुआ कि किसी समय मे वहां सूर्य का एक बहुत बड़ा मंदिर था, और असली नाम उस स्थान का मार्तंड है, खंडहर उस मंदिर का अबतक भी खड़ा है, वहाँ वाले उसको कौरवपांडव कहते हैं, स्थान देखने योग्य है पास ही एक बहुत पुराना गहरा कूआ है, मुसलमान उस को हारूत और मारूत का कैदखाना समझते हैं, और चाहबाबिल के नाम से पुकारते हैं। कश्मीरियों के निश्चय अनुसार मटनसाहिब मे श्राद्ध करने से गया बराबर पुण्य होता है। इस इलाके के दर्मियान अकसर जगह पुराने समय की इमारतें मुसलमानों की तोड़ी हुई दिखलाई देती हैं, वहांवाले उन्हें पाँडवों की बनाई बतलाते हैं

पर बहुधा उन में से बौध राजाओं की हैं। श्रीनगर के वायुकोन अनुमान तीन दिन की राह पर रुसलू के गांव में एक कुंड है, जब पहाड़ों पर बर्फ़ गलती है, तो ज़मीन के नीचे ही नीचे उस कुंड मे इस ज़ोर से पानी की बाढ़ आती है, कि भंवर सा पड़ जाता है, और जो कुछ लकड़ी घास उस की थाह मे रता है सब पानी पर तिरने और घूमने लगता है, नादान ख़याल करते हैं, कि पानी मे देवता उतरा। श्रीनगर से चालीस मील वायुकोन पश्चिम को झुकता निच्छीहमा गाँव के पास एक ज़मीन का टुकड़ा है, वह सदा गर्म और जलता रहता है, वहांवाले उस ज़मीन को सुहोयम पुकारते हैं, मालूम होता है कि उस ज़मीन के नीचे गंधक हरिताल इत्यादि से किसी चीज़ की खान है। लोग यहां के परम सुंदर लेकिन दगाबाज़ और झुठे परले सिरे के, लड़ाक भी बड़े होते हैं, विशेष करके स्त्रियें भटियारियों से भी अधिक लड़ती हैं, पैर मे सूप बांध बांध कर और हाथ मे मूसल ले लेकर झगड़ती हैं। बस्ती वहां मुसलमानों की है, हिंदू जितने हैं सब के सब भ्रष्ट, मुसलमानों की छुई रोटी खाने मे कुछ भी दोष नही सम-झते। ये कश्मीरी दूसरे मुल्कों मे आकर पंडित और ब्रा-ह्मण बन जाते हैं, और वहां मुसलमान का पकाया खाना खाते हैं। कारीगर यहां के प्रसिद्ध हैं, और शालबाफ़ तो यहाँ के से कहीं नही होते। शाल पर यहां की आबहवा का भी बड़ा असर है, क्योंकि यही कारीगर यदि इस इलाके से बाहर जाकर बुनें, कदापि वैसी शाल उन से नही बुनी

आवेगी, पर इन शालबाफ़ों को वहाँ दो चार आने रोज़ से अधिक हाथ नही लगता, महसूल बड़ा है, जितने रुपए का माल तयार होता है, उतना ही उस पर शालबाफ़ों से महसूल लिया जाता है। अब वहां सब मिलाकर चार पांच हज़ार दूकानें शालबाफ़ों की होवेंगी, हमिल्टन साहिब के लिखने बमूजिब एक ज़माने मे सोलह हज़ार गिनी जाती थीं। पश्मीना जिस्में ये शाल बुने जाते हैं कश्मीर मे नही होता, तिब्बत से आता है। वे छोटी छोटी लंबे बालोंवाली बकरियां जिन के बदन पर पश्मीना होता है सिवाय तिब्बत के दूसरी जगह नही जीतीं। केसर वहां साल भर मे सत्तर अस्सी मन पैदा होती है। श्रीनगर कश्मीर की राजधानी है। यह शहर ३३ अंश २३ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ४७ कला पूर्व देशांतर मे समुद्र से ५५०० फुट ऊंचा वितस्ता के दोनो कनारों पर चार मील लंबा बसा है, और शहर के बीच मे से यह नदी इस तरह पर निकली है, कि लोग अपने मकान की खिड़की और बरामदों से बैठे हुए उस्मे पानी खींच लेते हैं। यहां इस नदी का पाट डेढ़ सौ गज़ से अधिक है। एक कनारे से दूसरे कनारे जाने के लिये सात पुल काठ के बने हैं। जब किसी को किसी के यहां जाना होता है, बेतकल्लुफ़ कश्ती पर बैठकर चला जाता है, दूसरी सवारी की इहतियाज नही पड़ती। गलियां तंग और ग़लीज़, हम्माम बहुत। नहाने के लिये दर्या कनारे पानी पर काठ के संदूक से बने हैं, कि जब चाहो एक जगह से खोल कर दूसरी जगह ले जाओ,

जिस्को दर्या मे नहाना होता है, वह उन्ही के अंदर पर्दे
साथ नहा लेता है। इमारत ईंट और काठ की, खि
कियों मे जालियां चोबी बहुत अच्छी बनी हुईं, और
के अंदर बर्फ़ के दिनों मे ठंढी हवा रोकने के लिये वार्
कागज़ लगा देते हैं, शीशा नही मिलता। शहर के उ
कनारे पर अढ़ाई सौ फुट ऊंचा हरीपर्बत नाम एक छो
सा पहाड़ है, उस पर एक छोटा सा क़िला बना है, ज
चढ़ने से शहर और डल दोनो की सैर बखूबी दिखलाई दे
है। हाकिम के रहने के मकान शहर के दक्षिण त
वितस्ता के कनारे क़िले के तौर पर बुर्ज दे कर बने
उसे शेरगढ़ी कहते हैं। बादशाही मकानों का अब क
पता भी नहीं लगता, जहां दौलतसरा अर्थात् जहांगीर
महलों का निशान देते हैं, वहां अब धान की खेतियां हो
हैं, एक दर्वाज़े के पत्थर पर जो बाक़ी रह गया है, फ़ार
शेर खुदे हैं, उन के पढ़ने से मालूम होता है, कि कि
समय से वहां नागरनगर नाम क़िला बनाया गया था, औ
उस के खर्च के लिये, सिवाय कश्मीर की आमदनी के
बिलकुल उसी मे बन चुकने तक लगा की, एक करोड़
लाख रुपया बादशाह ने अपने खज़ाने से भेजा। नसी
नशात और शालामार यह तीनों बाग़ उस वक़्त के जो
तक डल के कनारे मौजूद हैं, उन मे से नसीम मे तो ज
बादशाह घोड़ा फेरते थे केवल हज़ार अथवा बारह सौ द
ख़्त बड़े बड़े चनारों के खड़े हैं, और नशात और शाल
मार ये दोनों बाग़ उजड़ पड़े हैं। फ़व्वारे टूटे हुए, मक

गिरे ऊए, हौजों मे पानी की जगह सूखी काई जमी ऊई, क्यारियों मे फूल के बदल खेती बोई ऊई यह हाल है उन बागों का, जिन मे जहांगीर नूरजहां के गले मे हाथ डालकर दोनों जहान से बेखबर फिरा करता था, और जिन को पृथ्वी पर स्वर्ग का नमूना बतलाते थे। सारे जहान की खूबियों का खुलासा कश्मीर, और कश्मीर की खूबियों का खुलासा डल है। यह झील निर्मल जल की जो निहायत गहरी है प्राय दस मील के घेरे मे होवेगी। दो तरफ़ उस्के पहाड़ है लेकिन पांच पांच सात सात कोस के तफ़ावत से, और दो तरफ़ श्रीनगर का शहर बसा है। नालों के वसीले से वह वितस्ता से मिली ऊई है, कनारों पर बाग़ हैं, बीच बीच मे टापू, उन मे अंगूर बेदमजनू इत्यादि सुंदर पेड़ों के अंदर लोगों के मकान, तख्तों पर खीरे खर्बुज़े की खेतियां, (१) मुर्ग़ाबियां कलोलें करती ऊई कहीं नाव कमलों के बीच से होकर निकलती है, और कहीं अंगूर और बेदमजनू की कुंजों के नीचे ही नीचे चली जाती है। जुमे के रोज क्या ग़रीब और क्या अमीर नाव मे बैठ कर सैर्के

---

(१) डल के कनारे जहां पानी छिछला रहता है, घास पत्ते बहुत जमते हैं। वहां के आदमी उन सब घास पत्तों को जड़ से काट देते हैं। और जब वे पानी पर इकट्ठा होकर तिरने लगते हैं, तो उन को आपस मे बांधकर ऐसा मज़बूत करदेते हैं कि जिस्से फिर बिखरने न पावें, और ऊपर थोड़ी थोड़ी सी मिट्टी रखकर खीरे खर्बुज़े तर्बूज़ इत्यादि के बीज बो देते हैं, सिवाय बीज बोने के और कुछ भी मिहनत नही करनी पड़ती, जब फल लगता है तो जाकर तोड़लाते हैं। चौड़ान उस तख़्ते की दो गज़ रहती है, और लंबान का कुछ ठिकाना नही, पानी पर नाव की तरह फिरा करते हैं।

लिये डल से जाते हैं, इन्हीं टापूओं से चाय रोटी खाते हैं, नाच गाने का भी शगल रखते हैं, यह कैफ़ियत देखने की हैं, लिखने की कदापि लेखनी को सामर्थ्य नही। अगले लोग जो कश्मीर की तारीफ़ से यह बात लिख गए हैं, कि बूढ़ा भी वहां जाने से जवान होजाता है, सो इतना तो वहां अवश्य देखने मे आया कि मन उस का जवानों का सा हो जाता है, जैसे रेगिस्तान मे जेठ वैसाख के झुलसे हुए मनुष्य को यदि कहीं वसंत ऋतु की हवा लगजावे तो देखो उस का मन कैसा बदल जावेगा, और तिस्से कश्मीर की हवा के आगे तो और जगह का वसंत ऋतु भी नर्कऋतु है। जो लोग निर्जन एकांत रम्य और सुहावने स्थान चाहते हैं, उन के लिये कश्मीर से बढ़कर दूसरी जगह कोई भी नही है॥ दोहा॥ स्वर्ग लोक यदि भूमि पर तौहै याही ठौर। जो नाहीं या भूमि पर याते सरस न और॥१॥ कश्मीर स्वर्ग है परंतु बिलफ़ैल राक्षसों के क़बज़ मे, क्योंकि वहां के लोग महाराज के जुल्म से बहुत तंग हैं। अदना सा जुल्म उस्का यह है कि ज़मीदारों से आधा अन्न तो बटाई करके लेता हैं, और आधा उन से मोल ले लेता है। जो बज़ार मे मन भर का भाव है तो वह दो मन के हिसाब से लेवेगा, परंतु इस पर भी ज़मीदार का गला नही छुटता, उस का मक़दूर नही कि बोने को बीज दूसरी जगह से ख़रीद सके, जो बज़ार मे मन का भाव है तो उसे बीस सेर के भाव राजा की दुकान से लेना पड़ेगा! और फिर तमाशा यह कि

उन लोगों से वेगार मे नौकरी ली जाती है, कितने जमीदार राजा की वतक पालकर और उन के अंडे छावनी मे वेच के रुपया राजा के खज़ाने मे दाखिल करते हैं, और कितने ही उस के फ़ाइदे के लिये जंगल से घास लकड़ी काटकर वज़ार मे वेचते हैं। जितने वहां पेशेवाले हैं सब पर महसूल मुकर्रर है, ठीकेदार वसूल करता है। यदि धोबी को धुलाई का टका हवाले करो, तो उस्मे से एक पैसा राजा का हो चुका, रंडी अगर कसब करके एक रुपया कमावे आठ आना महाराज का हक़ है। महाराज ने घाटियों पर पहरे वैठा दिये हैं, कि कोई आदमी उस्के जुल्म से भागकर वाहर न जाने पावे। रुपया उस्की टकसाल से जो निकलता है, आधा उस्मे चांदी और आधा तांवा रहता है। इन कश्मीरियों ने तो अव तक उस्का गला काट डाला होता, पर उस्ने उन्हें झांसा दे रखा है, कि जो कोई उस्की गुनाह करेगा वह सर्कार अंगरेजी से सज़ा पावेगा। महाराज रनवीर सिंह को हम स्वाधीन नही कह सकते, क्योंकि वह हर साल कुछ दुशाले और घोड़े इत्यादि सर्कार से नज़राना दाखिल करता है। आमदनी उस्की सब मिलाकर अनुमान प्राय करोड़ रुपए की होवेगी, पच्चीस लाख तो केवल कश्मीर से आता है, कि जिस्मे आठ लाख शाल का महसूल और लाख से ऊपर पेशेदारों का कर है, निदान इस पच्चीस लाख मे केवल वारह लाख धरती की जमा, और वाकी विलकुल महसूल और नज़राना हैं। जम्बू और चीन-

गर से १०० मील दक्षिण, जहां से कोहिस्तान शुरू होता है, एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा है। न वहां पीने को पानी अच्छा मिलता है, और न कोई अच्छा सायादार दरख़्त है, थूहर और कांटों से हर तरफ़ घिरा है, वहांवाले इन झाड़ झंखाड़ों को मज़बूती का बाइस समझते हैं, पर सन १८४५ से सिखों की फ़ौज ने वह जगह सहज से जा घेरी थी। जम्बू से तेइस कोस के फ़ासिले पर पुरमंडल से गुलाबसिंह ने महादेव का एक मंदिर अच्छा बनाया है, शिखर पर उस्के तमाम सुनहरी मुलम्मा है। श्रीनगर से ८० मील दक्षिण चनाब के बांए कनारे एक खड़े पहाड़ पर रिहासी का मज़बूत क़िला बना है, गुलाबसिंह का ख़ज़ाना उसी में रहता है।—२—शिक्कम पश्चिम तरफ़ कंकई नदी उसे नयपाल से, और पूर्व तरफ़ तिष्टा भुटान से, जुदा करती है, दक्षिण को कुछ दूर तक नयपाल और कुछ दूर तक सर्कारी इलाक़ा है, और उत्तर को हिमालय पार चीन की अमलदारी है। अनुमान ६० मील लंबा और ४० मील चौड़ा है। विस्तार १६०० मील मुरब्बा है। नयपाल के मुल्क से बहुत मिलता है, लोग वहां के जिन्हें लपचा कहते हैं सब कुछ खाते पीते हैं, यहां तक कि गोमांससे भी परहेज़ नहीं करते। तीरों को ज़हर से बुझाते हैं। बौध मतवाले बहुत हैं। राजधानी शिक्कम, जिसे दमूजंग भी कहते हैं, २७ अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश ३ कला पूर्व देशांतर से भामीबूमा नदी के कनारे पर बसा है। दार्जिलिंग

का पहाड़ जो समुद्र से ७००० फुट ऊंचा है इस राज के अग्निकोन से पड़ा है, सर्कार ने उसे साहिब लोगों के हवा खाने के वास्ते राजा से ले लिया, और अब उसपर बहुत से बंगले बन गए हैं, दानापुर की छावनी से दार्जलिंग सीधा ८४ और सड़क की राह १०५ मील है।—४—भुटान। यद्यपि हमलोग हिमालय पार पर्बतस्थली मे ल्हासे से लेकर लद्दाख पर्यन्त तिब्बत के सारे मुल्क को भुटान अथवा भोट कहते हैं, परंतु अंगरेज़ बहुधा इसी इलाके को भोट के नाम से लिखते हैं, जिस का यहां वर्णन होता है। जानना चाहिये कि यह इलाका शिकम के पूर्व हिंदुस्तान के ईशानकोन मे हिमालय के दर्मियान सौ कोस से अधिक लंबा और प्राय पचास कोस चौड़ा चीन के ताबे है।—हमिलटन साहिब मद्र देश इसी का नाम बतलाते हैं। बर्सात बहुत नही होती। टांगन वहां के मशहूर हैं, जिन पहाड़ों से वे होते हैं, उन का नाम टांगस्थान है। आदमी बडे मज़बूत, छ फुट तक लंबे, रंग सांवला, बदन गटीला आंखें छोटी पर नोकें निकली हुई, भौं बरौनी और दाढी मूंछे बहुत कम और हलकी, घेघे की बीमारी मे बस्ती का छठा हिस्सा फंसा हुआ, तीर उन के ज़हर से बुझे हुए, खाना आटा गोश्त चाय नमक और मक्खन इकट्ठा पानी मे उबला हुआ, मज़हब बौध, राजा धर्मराजा साक्षात भगवान बुधका अवतार कहलाताहै, और जो आदमी उस्के नीचे मुल्क का कारोबार करता है उसे देवराजा पुकारते हैं। राजधानी उस्की

तसीसूदन २७ अंश ५ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश ४० कला पूर्व देशांतर से पहाड़ों के बीच बसा है। राजा के रहने का गढ़ सात मरातिब का चौखूंटा संगीन बना है, उस्का हर एक मरातिब पंदरह फुट से कम ऊंचा नहीं है, और उस्के ऊपर सुनहरी मुलम्मे का बड़ा सा तांबे का एक छत चढ़ा है। बैद हकीमों की वहां बड़ी कम्ब-ख़्ती है, जो दवा राजा को देते हैं चाहे वह जुल्लाब हो और चाहे कुछ और बला पहले उस्मे से बैद को पिलाते हैं, यदि हम वहां के हकीम होते तो राजा के लिये सदा अच्छी अच्छी मीठी माजून याकूती और नोशदारुओं ही का नुस्ख़ा लिखा करते चाहे उसे हैज़ा होता चाहे सरसाम और चाहे वह चंगा होता चाहे मर जाता उसी ग्रास। कागज़ वहां का मज़बूत होता है, अकसर सुनहरी रंग कर कैंची से कतर के कलाबतून की जगह कपड़े के साथ बुनकर पहनते हैं। तसीसूदन से चालीस मील दक्षिण चूका के क़िले के पास तेहिंच्यू नदी पर लोहे की ज़ंजीर का पुल बना है वहांवाले उसे देवताओं का बनाया समझते हैं।—५—चंबा सुकेत और मंडी ये तीनों पहाड़ी राज कश्मीर के अग्निकोन चनाब और सतलज के बीच में हैं। चंबेका इलाका रावी के दोनों तरफ़ महाराज रनबीर सिंह की अमल्दारी से कांगड़े के सर्कारी ज़िले तक चला गया है। आमदनी उस की लाख रुपए साल से कम है। राजधानी चम्बा ३२ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५ कला

पूर्व देशांतर से रावी के दहने कनारे बज्जत रम्य और सुहावने स्थान मे बसा है। सुकेत सतलज से १२ मील दहने कनारे पर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५८ कला पूर्व देशांतर से बसा है। सतलज के कनारे गर्म पानी का एक सोता है, वहांवाले उसे तत्तापानी कहते हैं, पानी के साथ गंधक भी ज़मीन से निकलती है। इस की आमदनी अस्सी हज़ार रुपए साल अनुमान करते हैं, और मंडी जो इन तीनों मे सब से बड़ा है, अर्थात साढे तीन लाख रुपए साल की आमदनी का मुल्क गिना जाता है, सुकेत और सर्कारी ज़िले कांगड़े के बीच मे पड़ा है। लोहे और नमक की खान है, पर नमक अच्छा नहीं होता। राजधानी मंडी ३१ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५३ कला पूर्व देशांतर मे व्यासा नदी के बांए कनारे बसा है। वहां से २५ मील वायुकोन व्यासा के बाएं कनारे १५०० फुट ऊंचे एक पहाड़ पर कमलागढ का क़िला बज्जत मज़बूत बना है। मंडी से १० कोस मैदान की तरफ़ रैवालसर हिंदुओं का तीर्थ है, बरन वहां की यात्रा के लिये बौधमती भोटिये भी आते हैं। हाल उसका यह है कि पहाड़ों के बीच से प्राय पाव कोस के घेरे मै निर्मल जल से भरी ज़ई एक भील है, नहाने के लिये पश्चिम कनारे पर एक छोटा सा पक्का घाट बना है, उस भील के अंदर सात बेड़े तिरते हैं, देखने से वे हबह छोटे छोटे टापू मालूम होते हैं, पर वहांवाले उन को बेड़ा ही पुकारते हैं, घास पत्ते बरन बेलबूटे नर-

कट भंगरैया इत्यादि भी उन पर जम गए हैं, लेकिन सब से बडा दस हाथ से अधिक लंबा नही है, जब वे कनारे पर आकर लगते हैं, तब यदि कोई पानी में गोता लगाकर उन पेड़ो के पेंदों को जांचे और ऊपर नीचे अच्छी तरह से निगाह करे तो बखूबी मालूम होजायगा कि उन सब बेलबूंटों की जड़ आपस मे इस तरह मजबूत गुथी ऊई हैं, और आंधी पानी से उन पर कंकर मिट्टी भी इतनी पड़ गई है, कि देखने से तो वे पत्थर की शिला से मालूम होते हैं, और तिरने मे स्वभाव काठ का रखते हैं। जानना चाहिये कि बऊतेरे ऐसे पेड़ होते हैं जिन की जड़ें आपस मे गुथी रहती हैं, और अकसर मिट्टी भी इस प्रकार की होती है कि जब गर्मी से सूखकर पपड़ा जाती है और फिर बर्सात से पानी की बाढ़ आती है तो उन पेड़ों की जड़ आपस मे गुथी रहने के कारन वह तख्ते का तख्ता ज़मीन से जुदा होकर पानी मे तिरने लगता है। देखो अमरीका मे मक्सीकोहर के पास ऐसे बड़े बड़े बेड़े पानी पर तिरते हैं, कि उन पर खेतियां होती हैं और बाग़ और छप्पर बनाते हैं। फ़रासीस मे सेंटउमर के पास जो बेड़े तिरते हैं उन पर गाय बैल चरते हैं। कश्मीर मे भी झीलों के दर्मियान बेड़ों पर खेतियां बोते हैं। निदान जो कोई वहां कुछ दिन रहे तो बखूबी देख सकता है कि वे बेड़े हवा और पानी के ज़ोर से वहां तिरा करते हैं, और कभी कभी जब कनारे पर जा लगते हैं तो यात्रियों की निगाह बचाकर पंडे लोग भी उन्हे धक्का दे देते हैं।

लोगों का यह कहना सरासर झूठ है कि रैवालसर में पत्थर के पहाड़ तिरते हैं, और पंडों के बुलाने से यात्रियों की पूजा लेने को कनारे चले आते हैं।—६—सतलज और जमना के बीच पहाड़ी राजा राना और ठाकुरों के इलाके। इन में कहलूर सिरमौर और बिसहर ये तीन तो अनुमान लाख लाख रुपए साल की आमदनी के रजवाड़े हैं, और बाकी बारह ठकुराइयों के राना तीस हज़ार से लेकर तीन सौ रुपए साल तक की आमदनी रखते हैं। कहलूर की राजधानी बिलासपुर ३१ अंश १६ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर में सतलज के बांए कनारे सुंदर मनोहर जगह में समुद्र से १५०० फुट ऊंचा बसा है। बिलासपुर के पश्चिम दो दिन की राह पर सतलज के कनारे प्राय तीन हज़ार फुट ऊंचे एक पहाड़ के ऊपर नयनादेवी का मंदिर है, मैदान से पहाड़ पर चढ़ने को अनुमान चार हज़ार के लग भग सीढ़ियां कहीं पहाड़ काट कर और कहीं पत्थर जोड़ कर बनाई हैं, मंदिर से अजब कैफ़ियत नज़र पड़ती है, एक तरफ़ अम्बाले और सरहिंद का मैदान और दूसरी तरफ़ हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ और नीचे दूर तक सतलज का बहना। सिरमौर की राजधानी नाहन ३० अंश ३० कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर से समुद्र से २००० फुट ऊंचा जमना से बीस मील बांए कनारे है। बिसहर का इलाका सतलज के कनारे कनारे हिमालय पार चीन की हद से जा मिला है। राज-

धानी उस्की रामपुर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३८ कला पूर्व देशांतर से समुद्र से ३३०० फुट ऊंचा सतलज के ठीक बांए कनारे पर बहुत तंग और बुरी जगह से बसा है। पहाड़ वहां ऐसे ऊंचे नीचे और दरख्तों से खाली कि वह कदापि आदमी के बसने की जगह न थी जबर्दस्ती जाबसे हैं। रामपुर मे अलवान के तौर पर पश्मीने की सफ़ेद चादरें बीस बीस रुपए को बहुत अच्छी बनती हैं, तारीफ़ उस के नर्म और गर्म होने की है, साहिब लोग बहुत पसंद करते हैं, और विलायत को ले जाते हैं। कनावर का पर्गना इस राज से बहुत अच्छा है, साहिबलोग बरसात मे शिमला से हवा खाने को उसी तरफ़ जाते हैं, बरफ़ के ऊंचे पहाड़ आड़े आ जाने के कारण कश्मीर की तरह वहां भी बर्सात नही होती, आबहवा निहायत अच्छी, यहां अब तक भी पांडवों की तरह बहुत से भाई एक ही औरत से शादी कर लेते हैं, और इन पहाड़ों से औरत के वास्ते एक ख़ाविंद को छोड़ कर दूसरे के पास चले जाना ऐब नही समझते, ऐसी कम मिलेंगी जिन्हों ने दो तीन बार अपने ख़ाविंद नही बदले। शिमला से नीचे पहाड़ियों का यह भी एक अजब दस्तूर है कि जहां उन का लड़की लड़का छ सात महीने का हुआ तो उसे सुबह होते ही गांव के पास पेड़ों की छाया से पानी के झरनों के नीचे ऐसी जगह से लेजाकर सुला देते हैं, कि उस झरने का पानी झारी की धार की तरह ठीक उस की चांदी पर गिरा

करता है, निदान एक दो औरतों की निगहबानी से गांव के सारे लड़के वहां पानी के तले दिन भर सोए रहते हैं यदि इस प्रकार पानी का नालुआ नित उन के सिर पर न दिया जाय कदापि न सोवें, और सिर खुजलाते खुजलाते मरजावें।—७—गढ़वाल बिसहर की हद से मिला हुआ जमना और गंगा के बीच ४५०० मील मुरब्बा के बिस्तार मे अनुमान लाख रुपए साल की आमदनी का मुल्क है। राजा टीहरी से रहता है, वह ३० अंश २३ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर से समुद्र से २२०० फुट ऊंचा गंगा के बांए कनारे बसा है॥

निदान उत्तराखंड के रजवाड़े तो हो चुके अब मध्य देश के रजवाड़े लिखे जाते हैं।—१—बघेलखंड इलाहाबाद और मिरजापुर के दक्षिण शोणनद के दोनों तरफ़ विंध्य की पर्वतस्थली मे बसा है। उत्तर दक्षिण और पूर्व सूबैइलाहाबाद और बिहार के सर्कारी ज़िले हैं, और पश्चिम मे उस्के बुंदेलखंड का इलाक़ा है। बिस्तार उस्का दस हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बीस लाख रुपया साल। इस राज मे नदियों का पानी कई जगह ऐसे ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से गिराता है कि वह देखने योग्य है, उन जंगल और पहाड़ों से इस पानी के गिरने का शब्द और जलकणों का हवा से उड़ना विरक्त जनों के मन को बहुत सुख देता है। बीहर का झरना प्राय सवा सौ गज़ की ऊंचान से जल की एक धारा होकर गिरता है, इस्से कोस एक के तफ़ावत

पर टोंस का पानी गिरता है, यद्यपि ऊंचान से तो वह सत्तर गज़ से अधिक नही है पर धार उस्के जल की जब फुलर्टन साहिब ने सिप्तम्बर महीने मे देखी थी बीस गज़ चौड़ी और तीन गज़ मोटी थी। राजधानी रेवा जिसे रीवां कहते हैं बिछिया नदी के दहने कनारे २४ अंश ३४ कला उत्तर अक्षांस और ८१ अंश १६ कला पूर्व देशांतर मे बसा है। राजा के रहने का किला संगीन ठीक नदी के तट पर बना है।—२—बुंदेलखंड, पर्व उस के रेवा है, और पश्चिम ग्वालियर की अमलदारी और झांसीकी कमिश्नरी, उत्तर और दक्षिण को सूबेइलाहाबाद के सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ है। यह इलाका सारा विंध्य की पर्वतस्थली मे बसा है, आकाश से कोई बुंदेलखंड को देखे तो उस के पहाड़ों का उतार चढ़ाव ठीक समुद्र की लहरों की तरह नज़र पड़ेगा, पर दो हज़ार फुट से अधिक ऊंचा उन मे कोई नही है। लोहे की खान है। इस इलाके मे दतिया उरछा चारखाड़ी छतरपुर अजयगढ़ पन्ना समथर और बिजावर ये आठ तो छ हज़ार मील मुरब्बा के बिस्तार मे रजवाड़े हैं, और बाकी चौबीस के करीब बहुत छोटे छोटे जागीरदार हैं। २५ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश २५ कला पूर्व देशांतर मे दतिया पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है, बीच मे राजा के महल हैं, आमदनी इलाके की दस लाख रुपया साल। दतियासे ७५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता टीहरी उरछा के राजा की राजधानी है,

आमदनी इस इ़लाके की सात लाख रुपया साल राजा के टीहरी मे आरहने से उरछा जो दतिया और टीहरीके बीच से बेत्वा के बांएं कनारे पुरानी राजधानी था वीरान होगया। दतिया से ७५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता चारखाड़ी एक पहाड़ी के नीचे बसा है, कि़ला उस पहाड़ी पर अधबना रहगया, शहर के बीच राजा के रहने के मकान हैं, और बाहर चौगिर्द जंगल खड़ा है, आमदनी चार लाख रुपया साल। दतिया से ८० मील अग्निकोन छतरपुर तीन लाख रुपए साल की आमदनी का इ़लाक़ा है। दतिया से १२० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता अजयगढ़ सवातीन लाख रुपए साल की आमदनी का इ़लाका है। दतिया से ११० मील अग्निकोन पन्ना एक पथरीले मैदान से बसा है, हीरे की खान है, अकबर के वक़्त मे उस की पैदा आठ लाख रुपए साल अनुमान की गई थी, पर अब बहुत कम है, सारे इ़लाक़े की आमदनी मिलकर चार लाख रुपया होता है। दतिया से ३० मील ईशानकोन समथर साढ़े चार लाख रुपए साल की आमदनी का इ़लाक़ा है, और दतिया से १०० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता बिजावर सवा दो लाख रुपए साल की आमदनी रखता है।—३— ग्वालियर अथवा सेंधिया की अ़मल्दारी। उत्तर को वह सूबेअकबराबाद के सर्कारी जि़ले और धौलपुर और करौली के इ़लाक़ों से मिला है, और पूर्व को उस्के बुंदेलखंड भपाल और सागर नर्मदा के सर्कारी जि़ले हैं।

पश्चिम सीमा पर जयपुर कोटा उदयपुर परतापगढ़ बांसवाड़ा और बड़ोदे के इलाके हैं, और दक्षिण की तरफ़ हैदराबाद और इंदौर की अमल्दरी से मिलगया है। दक्षिण को यह राज नर्मदा पार बरन तापी पार तक चला गया है, पर राजधानी इस की नर्मदा वार मध्यदेश मे पड़ी है, इस कारन इसे मध्यदेश ही के रजवाड़ों मे लिखदिया। विस्तार उस्का तेंतीस हज़ार मील मुरब्बा है, और आमदनी अठत्तर लाख रुपया साल। दक्षिण भाग विंध्य के पर्वतों से आच्छादित है, और उन मे, बहुधा नर्मदा के तट पर, भील लोग बस्ते हैं। अंगरेज़ी अमल्दारी से पहले नित की लूटमार और आपस मे लड़ई रहने के कारन उजाड़ बहुत होगया है, जंगल झाड़ी हर तरफ़ दिखलाई देते हैं। खान मे लोहा निकलता है। धरती मालवे की प्रसिद्ध उपजाऊ है, कहावत मशहूर है। धरती मालव गहर गंभीर। मग मग रोटी पग पग नीर। मिट्टी काली बरसात के बाद पानी सूखने पर जगह जगह से फट जाती है, इस कारन घोड़ों को सड़क से बाहर चलने मे पैर टटजाने का बड़ा ख़तरा रहता है। राजधानी ग्वालियर २६ अंश १५ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश १ कला पूर्व देशांतर मे एक पहाड़ी के नीचे बसा है। उस पहाड़ी पर जो ३४२ फ़ुट वहां से ऊंची है एक बहुत मज़बूत क़िला प्राय पौन कोस लंबा बना है, जल के टांके उस्मे बहुत बड़े बड़े हैं। सन १७८० मे जब मेजर पोफ़म् साहिब ने सर्कार के हुक्म बमजिब इस क़िले को घेरा था तो उन

को उसपर किसी तरफ़ से भी चढ़ने की राह न मिली, लेकिन एक चोर जो उस किले मे चोरी को जाया करता था उन से मिल गया, और अपना रास्ता बतलाया, यद्यपि वह आदमी के जाने का न था केवल बंदर लंगूर जाते थे, पर पोफ़म् साहिब अपनी सारी फ़ौज को रात ही रात मे उस राह चढ़ा लेगए, और किला फ़तह किया। इस शहर को लश्कर भी कहते हैं, कारन यह कि पहले सेंधिया की राजधानी उज्जैन थी, और उस्का लश्कर सदा चढ़ाई और लड़ाई पर रहता था, पर जब से उस्के लश्कर का डेरा ग्वालियर मे पड़ा, फिर वहां से न हिला, और वही मुकाम छावनी और राजधानी होगया। पास ही सुवर्णरेखा नदी के पार मुहम्मदग़ौस के मक़बरे मे मीयांतानसैन, जो अकबर का बड़ा मशहूर कलावंत था, गड़ा है, और उस की क़बर पर एक इमली का दरख़्त है। बेवक़ूफ़ों का यह निश्चय है कि जो उस इमली की पत्ती चबावे आवाज़ उस्की बहुत मीठी होजावे। उज्जैन बहुत पुराना शहर है, शास्त्र मे इस्का नाम उज्जयनी और अवन्ती लिखा है, वह समुद्र से १७०० फुट ऊंचा १२ अंश ११ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश २५ कला पूर्व देशांतर मे सिप्रा नदी के दहने कनारे ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता बसा है, इमारतों मे लकड़ी का काम बहुत है, पर घाट पक्के नदी के दोनो तरफ़ सुहावने बने हैं, ज़मीन खोदने मे दूर दूर तक पुरानी आबादी के निशान मिलते हैं। यह शहर महा-

राज विक्रमादित्य के समय से बड़ी रौनक पर था, और बादशाही ज़माने से सूबेमालवा की, जिसे संस्कृत में मालव देश कहते हैं, राजधानी रहा। पंडित ज्योतिषी शास्त्र की रीति से अपने देशांतर का हिसाब इसी शहर से करते हैं, शहर के बाहर राजा जयसिंह के बनवाए ज्योतिष सम्बंधि बेधशाला और यंत्र अबतक भी टूटे फूटे पड़े हैं। जिस मकान को भर्टहरि की गुफा बतलाते हैं, किसी पुरानी हवेली का एक हिस्सा जो मिट्टी के तले दब गई है मालूम होता है। महाकाल-महादेव का मंदिर इस जगह में बहुत प्रसिद्ध है, पर जो मंदिर विक्रमादित्य के समय का बना था वह शमशुद्दीनइलतमिश ने जो सन १२१० में तख़्त पर बैठा था तुड़वा डाला। शहर से चार मील उत्तर कालियादह गांव के पास सिपरा के टापू में बादशाही वक्त का एक पुराना मकान बना हुआ है, गर्मियों में रहने की बहुत अच्छी जगह है, नदी का पानी उस्के हौज़ फ़व्वारों में होता हुआ बहता है। उज्जैन से प्राय असी मील नैर्ऋतकोन बाग नाम एक छोटी सी बस्ती है, उस्से कोस दो एक पर किसी ज़माने में पहाड़ के पत्थर काटकर गुफा के तौर पर चार मंदिर बौधमत के बने हैं, देखने योग्य हैं, एक का चौक उन में से ८४ फुट मुरब्बा नापा गया है। ग्वालियर के दक्षिण बेत्वा अथवा बेत्वंती नदी के दहने कनारे भिलसा, जिस्का असली नाम बिल्वेश और भद्रावत भी बतलाते हैं, शहर पनाह के अंदर अनमान ५००० घर की

बस्ती है। वहां दो देहगोप अर्थात गुम्बज, बौध लोगों के बनाए उसी तरह के मौजूद हैं, जैसा बनारस के ज़िले मे सारनाथ के पास लिखागया है। भिलसावाले उन्हे सास बहू की भीत और सुमेर का नमूना कहते हैं। बड़ा ४२ फुट ऊंचा है, और १२० फुट का व्यास रखता है। छोटे का व्यास कुल ४८ फुट है। महाराज चंद्रगुप्त ने उन की पूजा के लिए कुछ धरती दान दी थी, यह बात पुराने पाली अक्षरों मे उन के पत्थरों के ऊपर खुदी है। ग्वालियर से चार सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता बुर्हानपर तापी के दहने कनारे एक सुंदर मैदान मे शहरपनाह के अंदर जिस्का घेरा अनुमान बारह मील का होगा बसा है, इमारत मे लकड़ी का काम बहुत, चौक सुथरा, राजबज़ार चौड़ा, नहर गली गली घूमी हुई, धनाढ्य बहुरे मुसल्मान, अरबों की सूरत और वही पोशाक, नदी के करारे पर बादशाही महल और क़िले के निशान अब तक नमूदार हैं। किसी समय मे यह खानदेश के सूबे की राजधानी था। ग्वालियर से चालीस मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता काली सिंध के दहने कनारे पहाड़ के नीचे नरवर का पुराना शहर बसा है, और पहाड़ के ऊपर क़िला है, किसी समय मे वह निषधदेश के राजा नल की राजधानी था। ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन नीमच की छावनी है और उसी तरफ़ ३८५ मील पर चम्पानेर अथवा पवनगढ़ का क़िला एक खड़े पहाड़ पर जो २५०० फुट से कम ऊंचा

नहीं है बहुत मज़बूत बना है, पहाड़ के नीचे किसी समय से कई कोस तक चम्पानेर का शहर बस्ता था, पर अब उजाड़ और जंगल है, खंडहरों में शेर और भील रहते हैं। बड़ोदा वहां से कुल बाईस मील नैर्ऋतकोन को रह-जाता है।—४—भूपाल पूर्व को सागर नर्मदा के सर्कारी ज़िले और बाक़ी तीन तरफ़ ग्वालियर के राजसे घिरा है। यह हिस्सा मालवे का पठानों के दखल में है। जंगल पहाड़ इसमें भी ग्वालियर के दक्षिण भाग से हैं। विस्तार सात हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल हैं। सन१८२० में इस इलाक़े के दर्मियान ३४१६ गांव आबाद और ७१४ ऊजड़ गिने गये थे। शहर भूपाल का जहां नव्वाब रहता है २३ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३० कला पूर्व देशांतर में पक्की शहर-पनाह के अंदर बसा है। यह शहर सूबेमालवा और गोंदवाने की हद्पर राजाभोज के मंत्री ने अपने नाम पर बसाया था। शहर के नैर्ऋतकोन एक पहाड़ी पर पक्की गढ़ी बनी है, और उस गढ़ीके नैर्ऋतकोन पर साढ़े चार मील लंबा और डेढ़ मील चौड़ा एक तालाब है। मकान शहर के अकसर टूटे फूटे रौनक़ कहीं नहीं। भूपाल से २० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकती सिहोर में सर्कारी फ़ौज की छावनी है, साहिबअजंट उसी जगह रहते हैं।—५—इंदौर अथवा हुलकर की अमल्दारी। यह भी इलाक़ा कुछ दूर तक नर्मदा के पार चला गया है। पूर्व उसके ग्वालियर की अमल्दारी, उत्तर को

ग्वालियर और धार और देवास के दो छोटे छोटे रज-वाड़े, पश्चिम में बड़ोदा और दक्षिण में खानदेश के सर्कारी ज़िले। लंबान चौड़ान इस इलाके की नापना कठिन है, क्योंकि बीच बीच में दूसरे इलाकों से बहुत बेतरह मिलगया है, विशेष करके ग्वालियर से। कहते हैं कि जब हुलकर और संधिया के बीच मुल्क बंटा, तो उन्हों ने उसें चुंदरी बांट बांटा, अर्थात चुंदरी की तरह एक पर्गना संधिया ने लिया तो दूसरा हुलकर ने और दूसरा हुलकर ने लिया तो तीसरा फिर संधिया ने, निदान इसी कारन एक अमल्दारी के गांव दूसरी के बीच में आगए हैं। विस्तार उस्का आठ हज़ार मील मुरब्बा से कम नही है, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल। झाड़ पहाड़ इस अमल्दारी में बहुत हैं। क्योंकि विंध्य का तटस्थ है, और भीलों का विंध्य मानो घर है। राजधानी इंदौर २२ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ५० कला पूर्व देशां-तर में समुद्र से २००० फुट ऊंचा एक ढालुवे मैदान में पेड़ों के बीच बसा है, थोड़ी थोड़ी सी दूर पर पहाड़ दिखलाई देते हैं, उचान के सबब गर्मी बहुत नही होती, बज़ार चौड़ा है, पर इमारत चोबी, और देखने लाइक़ उन में कोई भी नही। साहिब रज़ीडंट इंदौर में रहते हैं। सर्कारी फ़ौज की छावनी इंदौर से दस मील दक्षिण मऊ में पड़ी है। इंदौर से अनुमान चालीस मील दक्षिण नैर्ऋ-तकोन को झुकता नर्मदा के दहने कनारे महेश्वर बसा है, वहांवाले उसे महेशवती और सहस्रबाहु की बस्ती भी कहते

हैं, किले के अंदर अहिल्याबाई के रहने के महल, और नदी कनारे नहाने को सुंदर पक्के घाट बने हैं। महेश्वर से पांच मील पूर्व नर्मदा के उसी कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर मंडलेश्वर एक बड़े बेवपार की जगह है, किला भी छोटा सा पक्का बना है। मंडलेश्वर से थोड़ी ही दूर पूर्व नर्मदा के दहने कनारे पर ओंकारनाथ महादेव का मंदिर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है, घाट भी स्नान के लिये पक्के बहुत अच्छे बने हैं, मंदिर के पास एक पहाड़ी पर दो वीरान किले हैं, जिन्हें वहांवाले मानधाता और मुचकुंद के बनाए बतलाते हैं, उन के अंदर बाहर बहुत से खंभे चौकठ देवताओं की मूरतें और तरह बतरह की मूरतें सब पत्थर की टूटी फूटी इतनी पड़ी हैं, कि उन के देखने से साबित होता है, कि वह जगह बहुत पुरानी है, और किसी समय में खूब आबाद थी, मुसल्मानों की बदौलत इस नौबत को पहुंची।—६—धार और देवास यह दो नों छोटे छोटे रजवाड़े हुलकर और संधिया की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। धार तो एक हज़ार मील मुरब्बा के विस्तार में १७६ गांव पौने पांच लाख रुपए साल की आमदनी का इलाक़ा है, और देवास कुछ न्यूनाधिक चार लाख साल का होगा। धार की राजधानी धारानगर, जो किसी समय में महाराज भोज के रहने की जगह थी, २२ अंश २५ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १९०० फुट ऊंचा एक कच्ची शहरपनाह के अंदर

बसा है, और क़िला शहर से अलग एक ऊंची सी ज़मीन पर बना है। भोज सम्वत् ५४१ मे एक बहुत बड़ा राजा होगया है, संस्कृत का ऐसा क़द्रदान विक्रम के पीछे कोई नही हुआ, एक एक श्लोक पर उस्ने लाख लाख तक रुपए दिये हैं, और बहुततेरे ग्रंथ उस के समय के बने अब तक मौजूद हैं, वह आप भी बड़ा पंडित था, और कहते हैं कि उस्की राजधानी मे बहुत कम ऐसे लोग थे जो संस्कृत न जानते, मार्शमेन साहिब अपने भारतवर्षीय इतिहास मे लिखते हैं कि इस राजा को कुल सात सौ बरस हुए। देवास के इ़लाक़े की राजधानी देवास छ हजार आदमियों की बस्ती २२ अंश ५८ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश १० कला पूर्व देशांतर मे बसा है। धार से अनुमान १५ मील दक्षिण ज़रा अग्निकोन को झुकता प्राय २००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा एक पहाड़ पर मांडू का क़िला और शहर उजड़ा हुआ पड़ा है, अकबर के वक्त मे यह शहर बहुत लंबा चौड़ा बस्ता था, अब भी नापने से उस्की शहरपनाह जो बाक़ी है २८ मील होती है, पर बिलकुल जंगल, शेर और भीलों के रहने की जगह है, बाज़बहादुर का मकान, दो तालावों के बीच जहाज़ का महल, जामेमस्जिद, हुसैनशाह का संगमर्मर का मक़बरा इस क़िले मे यह सारे मकान देखने लाइक़ हैं। —७—बड़ोदा अथवा गाइकवाड का राज हुलकर और संधिया की अमल्दारी के पश्चिम समुद्र पर्यंत, और उदयपुर और सिरोही के दक्षिण नर्मदा तक, पर इस के

बीच में बहुत जगह सर्कारी ज़िले भी आगए हैं। यह इलाका सूबेगुजरात में है, जिसे संस्कृत में गुर्ज्जर देश कहते हैं। विस्तार उस्का चौबीस हज़ार मील मुरब्बा से कम नहीं है। यद्यपि जंगल पहाड़ भीलों से भरे हैं, पर तौ भी मुल्क आबाद और धन की बहुतायत है, विशेष करके राजधानी के आसपास। काठियावाड़ अर्थात् काठियों का देश जो गुजरात के प्रायद्वीप का मध्य भाग है बिलकुल जंगल पहाड़ों से भर रहा है, पर पहाड़ अकसर नीचे और दरख़्तों से ख़ाली, धरती रेतल, वहांवाले अपना नाम काठी होने का यह कारण बताते हैं, कि जब पांडव लोग दुर्योधन से दाव हारकर बारह बरस के लिये वहां आकर छुपे, और पता लगने पर दुर्योधन ने उन को वहां से ज़ाहिर करने के लिये यह तदबीर ठहराई, कि उस देश की गौ हर लेजावे, जो चत्री होगा अवश्य गौ बचाने को साम्हने आवेगा, पर ऐसा बुरा काम अर्थात् गौ का चुराना उस्के आदमियों में किसी ने स्वीकार नहीं किया, तब कर्ण ने अपनी छड़ी ज़मीन पर मारी, और उस्से एक आदमी पैदा हुआ, काठ की छड़ी से पैदा हुआ इसलिये उस्का नाम काठी रहा, और कर्ण ने उसे वर दिया जा तुज को और तेरी औलाद को भगवान के घर से चोरी मुआफ़ है, चोरी का पाप और कलंक नहीं लगेगा। निदान ये काठी सूर्य को, जिसे कर्ण का बाप समझते हैं, बहुत मानते हैं, अपने सब काग़ज़ों की पेशानी पर उस्की तसवीर लिखते हैं, और चोरी डकैती को बुरा नहीं

समझते, बदमआशोंने क्या कहानी रची है! औरतें सुंदर होती हैं। बैल गुजरात के प्रसिद्ध हैं। आमदनी अनुमान सत्तर लाख रुपए साल की होवेगी। अकीक की उम्दे खान है। राजधानी बड़ोदा २२ अंश २१ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश २३ कला पूर्व देशांतर से शहर-पनाह के अंदर बिस्वमित नदी के बांए कनारे बसा है। उस नदी पर पक्का पत्थर का पुल बना हुआ है। बस्ती उस्सी लाख आदमियों से अधिक है। बाज़ार चौड़ा और चौपड़ के डौल का, इमारतों में काम अकसर काठ का। साहिब रज़ीडंट के रहने की जगह है। इस गुजरात मे और भी बहुत से नव्वाब और राजा हैं, पर उन के इलाके निहायत छोटे, यहां तक कि बहुततेरे उन मे से एक ही गांव के मालिक हैं, और सिवाने उनके आपस मे मिले जुले, इस लिये हमने उन सब को इसी अमल्दारी के साथ रखना मुनासिब समझा, बहुतेरे तो उन मे से अब तक भी महाराज गाइकवाड़ को कर देते हैं, पर कोई सर्कार की हिमायत मे भी आगया है। गुजरात की पश्चिम सीमा पर द्वारका का टापू है, हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है, द्वारका के मंदिर को जो एक सौ चालीस फुट ऊंचा है जगतखूंट भी कहते हैं, मूर्ति रणछोड़जी की जो आदि थी उस को कोई छ सौ बरस गुज़रता है मुसल्मानों की दहशत से पंडेलोग गुजरात मे डाकौर के दर्मियान जो गुजारात की पूर्व अलंग मे भड़ौंच के साम्हने खंभात की खाड़ी पर घोघेबंदर के पास है ले आए, और वहां

नई स्थापन की. उसे भी वहां न रखसके और पासही एक छोटे से टापू मे जिसे शंकुद्वार कहते हैं और जहां पहले शंकुनारायण की पूजा होती थी उठा लेगए, निदान अब प्राय डेढ़ सौ बरस से एक और नई मूर्त्ति बनाई है। यात्री लोग गोमती नदी मे स्नान करके मूर्त्ति के दर्शन करते हैं, फिर १८ मील पर रामडा अथवा अरामराय मे जाकर लोहे के तप्तमुद्रा से शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह अपने बाज. पर लेते हैं, गोपीचंदन, जिस्से वैष्णवलोग तिलक देते हैं, इसी जगह एक तालाब से निकलता है। असली द्वारका पूरबंदर से जिसे सुदामापुर भी कहते हैं तीस मील बतलाते हैं, और कहते हैं, कि समुद्र मे डूबी है। बड़ोदे से १७० मील वायुकोन उत्तर को झुकती ऊई बन्नास नदी के बांए कनारे देसा मे सर्कारी छावनी है। गुजरात के प्रायद्वीप की दक्षिण सीमा के ऊपर समुद्र के कनारे हरिना कपिला और सरस्वती इन तीन नदियों के संगम पर जूनागढ़वाले नव्वाब की जागीर मे पट्टन सोमनाथ बसा है। किसी ज़माने मे वह बऊत बड़ा शहर था, और ज्योतिर्लिंग सोमनाथ महादेव का वहां मंदिर था, उस के ५६ खंभों मे जवाहिर जड़े थे, और सोने की दीवटों मे दीये जलते थे, और कई मन सोने की जंजीरों मे घंटे लट्कते थे, दो हज़ार पुजारी पांच सौ कंचनी और तीन सौ गवैये इस मंदिर की सेवा करते थे। सन १०२५ मे महमूदगज़नवी ने वहां से प्राय दस करोड़ रुपए का माल लूटा, और मूर्त्ति को भी तोड़ा, एक टुकड़ा

गज़नी की मसजिद के ज़ीने में जड़ दिया, और दूसरा बग़दाद में ख़लीफ़ा को तुहफ़ा भेजा। अब वह पुराना मंदिर तो खंडहर पड़ा है, परंतु पास ही अहिल्याबाई ने एक नया मंदिर बनाकर फिर महादेव स्थापन किया है। सन १८४२ में सर्कारी फ़ौज गज़नी से महमूदसाह के मक़बरे का जो संदली किवाड़ उतार लाई, और अब आगरे के क़िले में रखा है, वह किवाड़ इसी सोमनाथ के मंदिर के फाटक से महमूद लेगया था। पट्टन सोमनाथ के पास ही वह मैदान है, जहां यादव लोग आपस में लड़कर कट मरे थे, और सरस्वती के तीर उस पीपल का पता देते हैं, जहां कृष्णचंद्र के पैर में व्याधे ने तीर मारा था। पट्टन सोमनाथ से उत्तर अनुमान चालीस मील की राहपर जूनागढ़ के पास, जो नव्वाब की जागीर है, समुद्र से २५०० फुट ऊंचे रेवताचल पर्वत पर, जिसे गिरनार और गिरनगर भी कहते हैं, जैनियों का बड़ा भारी मंदिर और तीर्थ है। चढ़ने के लिये पहाड़ पर सीढ़ियां बनी हैं। दूर दूर से वहां उस मत के यात्री आते हैं। गिरनार पर्वत की जड़ से ४ मील और जूनागढ़ से कोस आध एक पूर्व पहाड़के एक टुकड़े पर मगध देश के राजा महाराज अशोक का उसी पाली भाषा और अक्षर में जो प्रयाग के शिलास्तंभ पर है यह हुक्म खुदा हुआ है, कि उसके सारे राज्य में और यवन राजा अन्तिओकस और तलमि के राज्य में भी सब जगह मनुष्य और पशु पक्षियों के वास्ते दवाईख़ाने अर्थात अस्पताल बनाए जावें, और

उन के सुख के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर कूए खोदकर सड़क के दोनो तरफ़ दरख़्त लगाए जावें। इस लिपि से ऐसा मालूम होता है कि यवनराजा अन्तिओकस और मिसर देश के राजा तलमिफ़िलदेलफ़सदावोनिसस के साथ, जैसा कि यूनानी किताबों से लिखा है, महाराज अशोक की बड़ी दोस्ती थी। कटक के ज़िले से भवानेश्वर के पास धवली गांव से भी पहाड़ के एक टुकड़े पर यही हुक्म खुदा है। खंभात नव्वाब की जागीर बड़ोदे से ३५ मील पश्चिम समुद्र की खाड़ी के कनारे मही नदी के मुहाने पर बसा है। आगे समुद्र उस्की दीवार से टकराता था, अब डेढ़ मील पीछे हट गया है। जब अहमदाबाद गुजरात की राजधानी था, तो खंभात उस्का बंदर था, माल के जहाज़ उसी जगह लगते थे। अहमदाबाद की रौनक़ घटने से अब वह भी बिगड़ गया, नव्वाब को इस जागीर से साल से तीन लाख रुपया वसूल होता है।

—८—कच्छ बड़ोदे के पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ। यह इलाक़ा टापू की तरह सब से निराला बसा है। दक्षिण को उसे समुद्र की खाड़ी गुजरात से जुदा करती है, पश्चिम को सिंधु की एक धारा उसे सिंध से जुदा करती है, और बाकी दोनों तरफ़ वह रन से घिरा है, कि जो उसे उत्तर को सिंध के सर्कारी ज़िलों से, और पूर्ब को गुजरात से जुदा करता हैं। कच्छ से पहले अब कुछ हाल इस रन का सुन लेना चाहिये, असल इस की संस्कृत का शब्द अरण्य मालुम होता है, जिस्का अर्थ

जंगल उजाड़ है, पर यह तो जंगल नहीं बरन खारे पानी का एक दलदल है, विस्तार उसका आठ हजार मील मुरब्बा से कम नहीं, बरसात में तो वह सारा जल मग्न होजाता है, पर दूसरी ऋतों में किसी जगह छिछली झीलें होती हैं, और किसी जगह अगम्य नमक के दलदल, किसी मुकाम पर बालू के टीले नमक से ढके हुए, और किसी स्थान पर घास भी जमी हुई जिसमें गाय भैंस इत्यादि पशु चरते हैं। मालूम होता है कि यह किसी समय में समुद्र था, पानी हट गया इस कारण रन होगया। यहां जो नमक पैदा होता है उसके महसूल में सर्कार भी हिस्सेदार है। नमक के जमे हुए तख्ते अफ़िस्तान की तरह कोसों तक नज़र पड़ते हैं, और उन पर जब सूरज चमकता है तो महा अद्भुत और चमत्कारी तमाशे दिखलाई देते हैं, अर्थात छोटी छोटी घास और झाड़ियां जो उस पर जमी रहती हैं बड़े बड़े भारी ऊंचे पेड़ों के जंगल दिखलाई देती हैं, कभी वह जंगल हिलते और झकोरे खाते हैं, कभी अलग अलग होजाते हैं, और कभी फिर इकट्ठा, कभी ऐसा देख पड़ता है कि लसकर और फ़ौजें मैदान में चली जाती हैं, और कभी गढ़ और किले उठते बनते और बिगड़ते नज़र आने लगते हैं, कारण दृष्टि के ऐसा धोका खाने का इन जगहों में बिना उस विद्या की पुस्तकें पढ़े समझ में आना कठिन है इस लिये यहां नहीं लिखा, इन्हीं तमाशों को संस्कृत में गंधर्व नगर और यहां के रजपूत सीकोट कहते हैं। रन के ... रों

पर गोरखर अर्थात जंगली गधे अकसर मिलते हैं, घरेल
गधों से मज़बूत होते हैं, साठ साठ सत्तर सत्तर का झुंड
इकट्ठा फिरा करता है, और वहां की नमकीन घास को
बड़ी चाह से खाता हैं। निदान कच्छ का इलाका पहाड़ी
धरती मे बसा है। पूर्व से पश्चिम को १६० मील लंबा और
रन समेत उत्तर से दक्षिण को ८५ मील चौड़ा है। इस
इलाके के पहाड़ किसी समय मे ज्वालामुखी थे, अर्थात् उन
मे से आग निकलती थी, क्योंकि अब तक भी उन के पास
मे सब धातें पड़ी हैं, जो आग के साथ पहाड़ों से निक-
लती हैं। धरती रेतल पथरीली और बहुधा ऊसर,
पानी कम और अकसर खारा, वृक्ष बहुत थोड़े कहीं
कहीं बस्ती के पास नीम पीपल बबूल और खजूर देखप-
ड़ते हैं, बड़ इमली और आम बहुत थोड़े, लोहे कोयले
और फिटकिरी की खान है। आदमी वहां के बड़े
दग़ाबाज, बरन कहावत होगई है कि जो ऋषी मुनी
भी कच्छ का पानी पीयें शैतान बनजायें। आमदनी उस
की आठ लाख रुपए साल से अधिक नहीं। पालकी
और रथ पर वहां सिवाय राजा के और कोई नहीं
चढ़ने पाता है। धरती रेतल, और सड़क अच्छी न होने
के कारण गाड़ियां कम चलती हैं, सवारी ऊंट और घोड़े
की बहुत है। राजधानी भुज २३ अंश १५ कला उत्तर
अक्षांस और ६९ अंश ५२ कला पूर्व देशान्तर मे एक
पहाड़ की बगल मे जिसपर गढ़ बने है बसा है। उत्तर दिशा
से दूर पर यह शहर बहुत बड़ा मालूम देता है, और सफ़ेद

सफ़ेद मकान मसजिद और मंदिर खजूर के पेड़ों में बड़ी शान से चमकते हैं, पर नज़दीक आने से वह रौनक़ और बात बाक़ी नहीं रहती। राजा के महल क़िले के अंदर हैं, और उनकी गुमजियों पर ऐसा रोग़न चढ़ाया है, कि वह चीनी सा मालूम होता है। बीस हज़ार आदमियों से ऊपर उसमें बसते हैं, और कारीगर वहां के सोने चांदी की चीजें अच्छी बनाते हैं। भुज से २५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को भुकता समुद्र के तट पर मंडवी बंदर बड़े बेवपार की जगह है।—६—सिरोही बड़ोदे की अमलदारी के उत्तर। पूर्व उसके उदयपुर, और पश्चिम और उत्तर को जोधपुर। बिस्तार तीन हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल है। राजधानी इस छोटे से इलाक़े की सिरोही २४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश १५ कला पूर्व देशांतर में है। सिरोही से १८ मील नैर्ऋतकोन को आबू का पहाड़ जिसे अर्बुदाचल भी कहते हैं समुद्र से पांच हज़ार फुट ऊंचा है। जल की बहुतायत, झील सुंदर, जंगल और हरियाली हर तरफ़, हवा ठंढी, मानो हिमालय का नमूना दिखलाता है। गर्मी से आस पास की छावनियों के बहुत साहिब लोग वहां हवा खाने आते हैं, विशेषकरके रोगी, कोठी बंगले उसपर कितने ही बन-गए हैं, और बनते जाते हैं। अचलेश्वर महादेव की पूजा होती है, और जैनियों के दो मंदिर वहां संगमर्मर के बहुत उमदा बने हैं, नक्काशी का काम उन पत्थरों पर

निहायत बारीकी के साथ किया है, पत्थर को मानों शीशा और हाथीदांत बनादिया है, सवा सवा लाख रुपए की लागत के तो उन मंदिरों में एक एक ताक बने हैं, जगह काबिल देखने के है, नक़्क़ाशी के काम का ऐसा मंदिर हिंदुस्तान में दूसरा नही निकलेगा। टाड साहिब अपनी किताब में लिखते हैं, कि ताजगंज का रौज़ा छोड़कर सारी दुनिया में कोई ऐसी इमारत नही है कि जो आबू के मंदिरों की बराबरी करसके। जो फूल पत्ते इन मंदिरों में पत्थर काटकर निकाले हैं अंगरेज़लोग भी इंगलिस्तान में इस्से बिहतर नही बना सकते। ये करोड़ों रुपए लागत के मंदिर कुछ न्यूनाधिक हज़ार बरस गुज़रते हैं एक साहूकार ने बनाए थे।—१०—

उदयपुर अथवा मेवाड़। पश्चिम उसे अर्बली पहाड़ सिरोही और जोधपुर से जुदा करता है, अजमेर का सर्कारी ज़िला उत्तर को है, दक्षिण की तरफ़ बड़ोदा डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ पड़ा है, और पूर्व सीमा उस की बूंदी और संधिया की अमल्दारी से मीली है। यद्यपि इलाक़ा कुछ बहुत बड़ा नही है, पर कुल और दर्जे में उदयपुर का राना हिंदुस्तान के सब राजाओं से बड़ा गिना जाता है, मुसल्मानों की सल्तनत के पहले जिन दिनों में उन का इख़्तियार था, सारे राजा उन्हीं से गद्दी नशीनी का तिलक लेते थे, और वे उन के माथे पर अपने पैर के अंगूठे से तिलक करते थे। मार्शमेन साहिब अपनी किताब में उदयपुर के रानाओं को ननिहाल

के संबंध से क्रिस्तान के जने लिखते हैं, क्योंकि नौशेरवां ने रूम के क्रिस्तान बादशाह मारिस की बेटी व्याही थी, और फिर उसकी बेटी उदयपुर के राना को आई। इस इलाके का बिस्तार ११६०० मील मुरब्बा है, और आमदनी अनुमान १२५००००। धरती पहाड़ी, रास्तों मे बहुधा घाटे और झाड़ियां। लोहे तांबे जस्ते और गंधक की खान है। राजधानी उदयपुर २४ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर मे पहाड़ों के घेरे के अंदर समुद्र से २००० फुट ऊंचा बसा है। शहर के पश्चिम तरफ़ एक झील है, और उस के बीच मे राना का महल जगमंदिर संगममर का और बाग़ बहुत उमदा बना है। सिवाय इस के एक और झील राजसमुद्र नाम पहाड़ों के बीच बारह मील के घेरे मे शहर से पच्चीस मील उत्तर को है, उसमे ३ मील लंबा संगममर का बंध बांधा है, झील मे उतरने के लिये बराबर ज़ीने लगे हुए हैं, और ज़ीनों पर ज़ीनत के लिये बड़े बड़े हाथी उसी पत्थर के तराशकर लगादिए हैं, पूर्वतरफ़ एक पहाड़ पर महल बना हैं। उदयपुर से २२ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता बनास नदी के दहने कनारे श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर, जिसे लोग नाथद्वारा भी कहते हैं, हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। चित्तौड़ अथवा चीतौड़ का क़िला ७० मील उदयपुर के पूर्व ईशानकोन को झुकता हुआ पुरानी तवारीखों से बहुत मशहूर है। आगे वही राजधानी था। यह क़िला एक पहाड़ पर जो दीवार की तरह खड़ा है और जहां खड़ा न

था वहां संगतराशों ने सौ सौ फुट तक ऊंचा छीलकर दीवार की तरह खड़ा करदिया है बारह मील के घेरे मे बना है, उसपर जाने के लिये आध कोस की चढाई का एक ही रास्ता है, और उस रास्ते मे छ दर्वाज़े पड़ते हैं, दर्वाज़ा किले का बहुत ऊंचा और पुराने हिंदुस्तानी डौलका बना है, मुसल्मानों की इमारतों से कुछ भी नही मिलता, उस्के अंदर कई शिवाले और छोटे छोटे महल बहुत उमदा बने हैं, नक़ाशी उन के पत्थरों पर देखने लाइक़ हैं, औरंगज़ेब के पोते अज़ीमुश्शान ने उस मे एक मकान मुसल्मानों की वज़ा का बनाकर उस का नाम फ़तहमहल रखा है, पानी के कुंड उस किले मे बहुत इफ़रात से हैं, गिनती मे चौरासी हैं, पर बारह उन मे से बारहों महीने भरे रहते हैं, सब से अधिक देखने लाइक़ वस्तु वहां दो कीर्तिस्तंभ अर्थात् मीनार हैं, छोटा तो टूट गया पर बड़ा चौखूंटा नौ मरातिब का १२२ फुट ऊंचा मीरांबाई के पति राना कुंभ का बनाया संगमर्मर का अभी तक खड़ा है, उस्के अंदर हर जगह महादेव पार्बती की मूर्ति बनाई है, और बहुत उमदा नक़ाशी का काम किया है, चढ़ने को उसमे सीढ़ियां हैं, ऊपर चढ़ने से दूर दूर तक नज़र जाती है, किले का आदमियों से खाली और सुनसान होना, हरतरफ़ टटी हुई इमारतों का नज़र पड़ना, किले के अंदर और पहाड़ के तले दस दस बारह बारह कोस तक जंगल उजाड़ का दिखलाई देना, और किताबों के लिखे हुए इस किले के पुराने हाल का याद आना, दिल को

अजब एक इबरत लाता है। इसी किले के अंदर राजा भीम की पद्मिनी रानी सारे रनवास के साथ सन १२०३ मे अलाउद्दीन बादशाह के जुलम से अपना सत बचाने के लिये सती हुई थी, और इसी किले के अंदर रानी किरणवती सन १५३३ मे बहादुरशाह गुजरातवाले की दहशत से तेरह हज़ार स्त्रियों के साथ आग मे जली थी, और बत्तीस हज़ार रजपूत केसरिये बागे पहनकर लड़ाई मे कटे थे, और इसी किले के अंदर सन १५६७ मे जब अकबर ने आकर घेरा था उस्के किलेदार जयमल के मरने पर किलेवालों ने जौहर किया था, कि जिस्मे तीस हज़ार आदमी मारे गए। अब यह किला बिलकुल बेमरम्मत और वीरान पड़ा है, इस की आबादी के लिये लाखों ही आदमियों की फौज चाहिये। किले के नीचे चीतोड़ का शहर जो अब केवल एक क़सबा रह गया है बस्ता है।—११—डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ यह तीनों छोटे छोटे इलाके, प्राय दो दो लाख रुपए साल की आमदनी के उदयपुर के दक्षिण संधिया और गाइकवाड़ की अमलदारी के बीच मे पड़े हैं। डूंगरपुर का विस्तार एक हज़ार मील मुरब्बा, उस्से पूर्व परतापगढ़ का विस्तार १५०० मील मुरब्बा, उन दोनों के दक्षिण बांसवाड़े का विस्तार भी १५०० मील मुरब्बा अनुमान करते हैं। डूंगरपुर के इलाके की राजधानी डूंगरपुर २३ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश ५० कला पूर्व देशांतर मे बसा है, उस्की झील का बंध संगमर्मर के ढोकों से बांधा है। परतापगढ़ के इलाके

की राजधानी परतापगढ़ २४ अंश २ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर से समुद्र से १७०० फुट ऊंचा शहरपनाह के अंदर बसा है, उस्के चौगिर्द नाले खोले और जंगल उजाड़ बहुत हैं, चार कोस के फ़ासिले पर देवला नाम एक क़िला है। बांसवाड़े के इलाके की राजधानी बांसवाड़ा २३ अंश ३१ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ३२ कला पूर्व देशांतर से शहरपनाह के अंदर बसा है, शहर के बाहर एक पक्का तालाब है गिर्द उस के पीपल और इमली की घनी घनी छांव, उस्से आगे एक पहाड़ पर क़िले के बुर्ज हैं जो किसी समय से वहां के राजा के रहने की जगह था।—१२—बूंदी उदयपुर के पूर्व कोटे के पश्चिम और जयपुर के दक्षिण, निदान इन तीनों अमल्दारियों से यह इलाक़ा घिरा हुआ है। बिस्तार उस्का २२०० मील मुरब्बा, आमदनी अनुमान दस लाख रुपए साल। राजधानी बूंदी २५ अंश २८ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३० कला पूर्व देशांतर से बसी है। एक हिस्सा उस का नया और दूसरा पुराना कहलाता है। नई बूंदी शहरपनाह के अंदर है, और वह शहरपनाह पहाड़ों पर जाकर जो प्राय ४०० फुट ऊंचे होवेंगे क़िले और महलों से मिल गई है। शहर का पुराना डौल, मंदिरों की बहुतायत, चौक की फ़राखी, हौजों से फ़व्वारों का छुटना, शहर के पास ही एक सुंदर झील का होना आंखों को बहुत भला मालूम होता है, बिशेषकर के बाज़ार जो महलों के साम्हने है। पुरानी बूंदी नई बूंदी के पश्चिम है।

शहर से उत्तर पहाड़ के घाटे से बज्जत सुंदर सुंदर तालाब और राजा के महल और बाग और छतरियां बनी हैं, विशेषकरके सुखमहल जो ऐन झील के बंध पर बनाया है, और जहां से बरसात के दिनों मे पानी की चद्दर गिरा करती है।—१३—कोटा उस की सरहद उत्तर मे बूंदी के सिवा कुछ थोड़ी जयपुर से भी मिली है, बाकी सब तरफ़ संधिया की अमल्दारी है। विस्तार उस्का साढ़े छ हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी अनुमान पैंतालीस लाख रुपए साल, पर इस्मे से तिहाई मुल्क सर्कार ने वहां के दीवान राजराना ज़ालिमसिंह की औलाद को दिलवा दिया, क्योंकि उसने लड़ाइयों के वक़्त जब राजा महज़ नाबालिग़ था बड़ी बड़ी खैरख्वाहियां की थीं। वे लोग अब झालरापाटन मे जो कोटे के दक्षिण अग्निकोन को झुकता कुछ न्यूनाधिक ५० मील होगा रहते हैं। यह भी शहर अब बज्जत खासा आबाद होगया है, जयपुर की तरह चौपड़ का बाज़ार और गलियां निकली हैं, शहरपनाह भी मज़बूत है। राजधानी कोटा २५ अंश १२ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर मे चम्बल के दाहने कनारे शहरपनाह के अंदर बसा है। खाई शहरपनाह के गिर्द पहाड़ काटकर खोदी है। शहर आबाद है, पर नामी जगह राजा के महलों के सिवा और कोई नहीं। ये ऊपर लिखे ज्जए दोनों रजवाड़े अर्थात बूंदी और कोटा हाडौती मे गिने जाते हैं।—१४—टोंक बूंदी के उत्तर जयपुर की अमल्दारी से घिरा ज्जआ। आमदनी उस्की

अनुमान दसलाख रुपया साल होवेगी। यह इलाका नव्वाब मीरखां की औलाद के कबज़े से है। राजधानी टोंक २६ अंश १२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३८ कला पूर्व देशांतर मे बसा है। दो तरफ़ उस्के पहाड़ है, और तीसरी तरफ़ पत्थर कि दीवार की जिस्को पहाड़ों पर ले जाकर उन से मिला दिया है, पास ही एक छोटी सी झील है। नव्वाब के मकान बन्नास नदी पर जो शहर के उत्तर बहती है बने हैं। कुछ थोड़ी सी ज़मीन नव्वाब की सिरैंज के साथ जिस का असली नाम शेरगंज है कोटे और ग्वालियर की अमल्दारी के वीच में, और नीम बहेड़ा मेवाड़ के दर्मियान है। सब मिलाकर उस इलाके का विस्तार अठारह से मील मुरब्बा होता है।—१५—जयपुर अथवा ढुंढार, टोंक बूंदी कोटा और करौली के उत्तर, और वीकानेर और अलवर के दक्षिण, पूर्व को उस्के भरथपुर है, और पश्चिम को सर्कारी जिला अजमेर का और किश-नगढ़ और जोधपुर की अमल्दारियां। यह इलाका १७५ मील लंबा और १०० मील चौड़ा है। विस्तार पंदरह हजार मील मुरब्बा धरती रेतल और बहुधा लोनी। भाग से शेखावाटी के दर्मियान पहाड़ भी छोटे छोटे बहुत हैं, पर उत्तर आबहवा अच्छी। तांबे और फिटकिरी की खान है। आमदनी अनुमान पचासी लाख रुपया साल है, पर इस्से चालीस लाख रुपया जागीर और कृष्णार्पण से जाता है। रुपया अशरफ़ी राजा की टकसाल से निहायत चोखा निक-लता है। राजा यहां का अपने तईं रामचंद्र की औलाद

और उन्हीं का जानशीन बतलाता है। राजधानी जयपुर अथवा जयनगर कुछ ऊपर लाख आदमी की बस्ती है। राजा जयसिंहसवाई का बसाया २६ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर से पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। यह शहर अपनी किता और वजा में सब से निराला हैं। दक्षिण के सिवा तीनों तरफ़ पहाड़ों से घिरा है, और उन पहाड़ों पर किले बने हैं, दक्षिण तरफ़ भी जिधर मैदान पड़ता है शहर से कुछ फ़ासिले पर मोतीडूंगरी का किला बहुत मज़बूत बना है। यह शहर तीन मील लंबा डेढ़ मील चौड़ा बालू के मैदान में बसा है। बाज़ार चौपड़ का बहुत चौड़ा और तीर की तरह सीधा, बरन गलियां भी चौपड़ के खानों की मिसाल सब सीधी आपस में मुक़ाबिल और ऐसी कोई नहीं जिसमें गाड़ी न जासके, दूकानें ऊंची खूबसूरत और एक सी, मकान जाली झरोखों से आरास्ता, गुम्ज़ियों पर सुनहरी कलसियां चढ़ी हुईं, चूना उन का ऐसा सफ़ेद साफ़ और चमकदार कि संगमर्मर भी उस के आगे पानी भरे, सब के सब बराबर एक क़तार से लैनडोरी डालकर और दागबेल लगाकर बनाए हैं, अब मक़दूर नहीं कि कोई अपना मकान उस लैन से बाहर बढ़ा सके, यदि बढ़ावे या घटावे तो उसी दम राज का गुनहगार ठहरे, मंदिर सरा बगियों के लाखों रुपए की लागत के बने हैं, ठाकुरद्वारे भी अच्छे अच्छे इमारात से, कहते हैं कि यह शहर जयसिंह ने एक फ़रंगी कारीगर इटाली के रहनेवाले से बनवाया

था। महल महाराज के चौथाई शहर रोके खड़े हैं, और निहायत उमदा बने हैं, बाग़ हौज़ फ़ुव्वारे मकान तसवीरें सब देखने लाइक़ हैं, गोविंददेवजी का मंदिर महलों के अंदर है, दर्बार का क़रीना अब तक भी पुरानी हिंदुस्तानी चाल पर चला जाता है, मशालची और कहार भी बिना खूंटेदार पगड़ी और जामा पहने हुए महलों के दर्वाज़े पर नहीं जाने पाता, और यदि कोई आदमी दुशाला और रूमाल दोनों साथ ओढ़कर वहां जावे तो दर्बान उन में से उसी दम एक चीज़ उतारकर ज़ब्त कर लेता है, ऐसा ही उन्हें राजा का हुक्म है। बारह बरस की उमर तक वहां के राजा को कोई मर्द नहीं देखने पाता, रनवास में रहा करता है। औरतें यहां की बहुत शौक़ीन वज़ादार और मर्दों के शिकार में होशयार होती हैं। आदमी झूठे। बर्तन वहां बालू से मलकर कपड़े से पोंछ डालते हैं, पानी से कदापि नहीं धोते। कबूतर दूकान्दारों से दाना पाने के कारन बाज़ार में इतने इकट्ठा रहते हैं, कि पांव तले दबजाने की दहशत हुआ करती है। बरसात में तो बड़े आराम की जगह है, नंगे पांव सारे बाज़ार फिरकर घर में चले आओ, फ़र्श पर कीचड़ का दाग़ न लगेगा, क्योंकि ज्योंही मेह पड़ता है बालू सोख लेता है, पहाड़ों पर भी सब्ज़ी जमजाती है और झरने हर तरफ़ जारी होते हैं, पर गर्मी में निहायत तकलीफ़ है, जब धूप से बालू तप जाता है तो भाड़ में चनों की तरह पैर भुनने लगते हैं, और बालू भी कैसा कि जिस

पिंडली तक धसजावे। तीन मील पूर्व अग्निकोन को झुकता पहाड़ के बीच गलता से सुंदर मंदिर और पानी के कुंड बने हैं, बरसात में सैर की जगह है। शहर से चार मील पर पहाड़ों में आमेर उस राजकी पुरानी राजधानी है, वहां भी महाराज के महल निहायत उमदः बने है, विशेष-करके शीशमहल जिस्के झरोखों में रंगीन शीशे अत्यंत ख़ूबसूरती से लगाए हैं। क़िला आमेर का पहाड़ के ऊपर बहुत बड़ा और मज़बूत है, उस के अन्दर कूए की तरह कई खत्ते हैं, जिसे वहांवाले खाश कहते हैं, जिस आदमी से राजा नाराज़ होता है उस मे डाला जाता है, और जवकी रोटी और खारा पानी खाने पीने को पाता है, खाश के अन्दर से जीता विरला ही निक-लता है, ग़ैर आदमी उस क़िले के अन्दर नहीं जाने पाता, साहिबलोगों ने भी अबतक उसे नहीं देखा। क़िले इस अमल्दारी में बहुत हैं पर रणथंभौर का क़िला जयपुर से ७५ मील अग्निकोन रुख से मज़बूत है, उस्के अन्दर भी ग़ैर आदमी अथवा साहिबलोग नहीं जाने पाते। यह वही क़िला है जिस्के अन्दर सन १२९८ में हमीर चौहान अलाउद्दीन खिलजी से लड़कर बड़ी वीरता के साथ मारा गया, और उस के रनवास की सारी रानियां मुसल्मानों की ज़ियादती से बचने के लिये चिता में आग लगाकर जलीं, जयपुर से साठ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता विराट के पास एक पहाड़ पर महाराज अशोक की आज्ञा-नुसार वही धर्मलिपि खुदी है, जो इलाहाबाद के शिला-

खंभ पर है, केवल इतना अधिक है, कि वेद मुनियों ने बनाए। राजा जयसिंह विद्या की बड़ी क़दर करता था, व्रजभाषा ने उसी के समय से रौनक़ पाई, बिहारी को सतसई के दोहरों के लिये वह एक एक अशरफ़ी देता था, बनारस दिल्ली मथुरा उज्जैन और जयपुर उसी ने पांचों जगह में ज्योतिषसंबंधि वेधशाला और यंत्र बनवाए हैं।—१६—करौली उत्तर और पश्चिम जयपुर की अमल्दारी से घिरा हुआ, और दक्षिण को ग्वालियर, और पूर्व को धौलपुर से मिलाहुआ। विस्तार उस्का उन्नीस सौ मील मुरब्बा। आमदनी पांच लाख रुपया साल। राजधानी करौली २६ अंश ३२ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५५ कला पूर्व देशांतर में पुशपेरी नदी के तट पर बसा है। क़िला राजा के रहने का शहर के बीच में है।—१७—धौलपुर पश्चिम करौली, दक्षिण ग्वालियर, उत्तर भरथपुर, पूर्व सर्कारी ज़िला आगरे का। विस्तार सवा सोलह सौ मील मुरब्बा। आमदनी सात लाख रुपया साल। राजधानी धौलपुर २६ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में चंबल के बाएं कनारे कोस आध एक के तफ़ावत पर बसा है।—१८—भरथपुर दक्षिण धौलपुर, उत्तर अलवर, पश्चिम जयपुर, पूर्व आगरा और मथुरा के सर्कारी ज़िले। विस्तार दो हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी बीस लाख रुपया साल। रूपबास के पर्गने में लाल पत्थर की खान है, इमारत के वास्ते दिल्ली आगरे इत्यादि आस पास के

शहरों में बहुत जाता है। राजधानी भरथपुर २७ अंश १० कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश २३ कला पूर्व देशांतर में कच्ची शहरपनाह के अन्दर प्राय आठ मील के घेरे में बसा है। शहरपनाह बहुत चौड़ी और ऊंची है, यदि मरम्मत अच्छी तरह रहे तो तोप के गोलों से हर्गिज़ उसको सदमा नहीं पहुंच सकता, जो गोला आवेगा उसी में रहजावेगा, पत्थर की दीवार से कच्ची दीवार का ढाहना बहुत मुश्किल है, बहुतेरी ऐसी जगह हैं जहां सख़्ती से नर्मी ज़ियादः काम आती है। शहरपनाह के गिर्द खाई भी खुदी है, और झीलें इस तरह की हैं कि यदि उन के बंध काट देवे तो शहर से बाहर कोसों तक पानी ही पानी होजावे, दुश्मन की फ़ौज को कभी खड़े रहने को भी जगह न मिले। शहर के बीच में पक्का किला है, उसमें राजा रहता है। किले के गिर्द ऐसी चौड़ी खाई है, कि अच्छी ख़ासी एक छोटी सी नदी मालूम होती है। भरथपुर से कोस आठ एक पर डीग में महाराज का बाग़ बहुत उमदा और लाइक़ देखने के है, मकान भी उसमें अच्छे अच्छे बने हैं, और नहर फ़व्वारे और चादरें इफ़रात से हैं एक बारहदरी में जिसे मच्छी-भवन कहते हैं, इतने फ़व्वारे लगे हैं, कि दर दीवार खंभे हर जगह से पानी निकलता है, और उनकी फुहार ऐसी उड़ती है कि जब सूरज उन के साम्हने रहता है तो उस की किरणों से उस मकान के अंदर उन फुहारों में दो इन्द्र धनुष बहुत रंगीन और चटकीले बनजाते हैं।

राजा वहां का अभी बालक है इस कारण मुल्क का इंति-
ज़ाम साहिब अजंट करते हैं। क़िला बयाने का भरथपुर
के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ एक दिन के रस्ते
पर प्रसिद्ध है, किसी समय मे बहुत बड़ा शहर था, और
आगरा आबाद होने के पहले यही शहर उस सूबे की
राजधानी था, बरन सिकंदरलोदी ने उसे अपना पायतख्त
किया। क़िला पहाड़ पर मज़बूत बना है, कुंड पानी के
ऐसे गहरे हैं कि उन मे घड़ियाल तैरते हैं, बीच मे एक
लाट पत्थर की खड़ी है उस पर कुछ पुराने हर्फ़ भी खुदे
हुए हैं, और महलों के खंभे पर दो थापे पंजों के लगे हैं,
वहांवाले बतलाते हैं की जब बादशाही फ़ौज का चढ़ाव
हुआ तो रानियों ने जौहर किया, और यह एक रानी ने
उस समय आप अपने लहू से थापे लगाए थे।—१६—अल-
वर अथवा माचेडी दक्षिण भरथपुर, और जयपुर और प-
श्चिम केवल जयपुर, बाक़ी दोनों तरफ़ मथुरा और गुड़गावें
के सर्कारी ज़िलों से घिरा है। बिस्तार इसका ३५०० मील
मुरब्बा। जंगल पहाड़ बहुत हैं। वह इलाक़ा जिसे
तवारीखों मे मेवात के नाम से लिखा है इसी अमल्दारी
मे आगया, केवल थोड़ा सा भरथपुर के राज मे है। आम-
दनी अठारह लाख रुपया साल। कुछ न्यूनाधिक पैंतालीस
बरस का अर्सा गुज़रता है कि वहां के राजाको यह
जुनून सूझा कि जैसे मुसल्मानों ने किसी ज़माने मे हिंदु-
ओं को सताया था उसी तरह वह उन को सताने लगा,
बहुत से मुसल्मान मुल्लाओं के नाक कान कटवाकर फ़ौरी-

भ्पुर के नव्वाब के पास भेज दिये, क़बरें सारी खुदवा डालीं और हड्डियां गधों पर लदवाकर अपने इलाक़े से बाहर फिकवादीं, और मसजिदें ढाहकर उन के पत्थरों पर तेल सेंदुर चढ़ा भैरव बना दिया। राजधानी अलवर २० अंश ४४ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश ३२ कला पूर्व देशांतर से एक पहाड़ के तले बसा है, और उस पहाड़ पर जो वहां से प्राय १२०० फुट ऊंचा होवेगा एक क़िला बना है।—२०—किशनगढ़ पूर्व और दक्षिण जयपुर, और उत्तर और पश्चिम जोधपुर और अजमेर के सर्कारी ज़िले से घिरा हुआ है। विस्तार ७०० मील मुरब्बा। आमदनी तीन लाख रुपया साल। राजधानी किशनगढ़ २६ अंश ३७ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ४३ कला पूर्व देशांतर से शहरपनाह के अंदर बसा है।—२१—जोधपुर अथवा माड़वाड़ पूर्व जयपुर सर्कारी ज़िला अजमेर का और उदयपुर से, दक्षिण उदयपुर सिरोही और बड़ोदे से, पश्चिम सिंध और जैसलमेर से, और उत्तर जैसलमेर और बीकानेर से घिरा हुआ है। अनुमान अढ़ाई सौ मील लंबा और डेढ़ सौ मील चौड़ा और विस्तार में पैंतीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा। ज़मीन बिलकुल रेगिस्तान है, कूए बहुत गहरे खोदने पड़ते हैं, तिसपे भी पानी खारा निकलता है। संस्कृत में रेगिस्तान को जहां पानी न हो मरु-भूमि कहते हैं, इसी कारण इस इलाक़े का नाम माड़वाड़ रहा। सीसे और संगमर्मर की खान है। आमदनी सत्तरह लाख रुपया साल। ऊंट

और बैल अच्छे होते हैं, दो दो सौ रुपए तक की बैल की जोड़ी बिकती है, और ऊंटों को वहां अकसर हल ने भी जोत देते हैं। आदमी वहां के अफ़यून बहुत खाते हैं, यहां तक कि पान इलायची की तरह अपने मुलाक़ातियों की तवाज़ो अफ़यून की गोलियों से करते हैं। राजधानी जोधपुर अनुमान ८०००० आदमी की बस्ती २६ अंश १८ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश पूर्व देशांतर मे छ मील के घेरे से बसा है, क़िला बहुत मज़बूत है।—२२—वीकानेर दक्षिण जोधपुर, और जयपुर उत्तर बहावलपुर और पटियाला, पश्चिम जैसलमेर, और पूर्व सर्कारी ज़िला हरियाने का। वीकानेर और जैसलमेर और बहावलपुर की अमल्दारियों के बीच मे बड़ा भारी रेगिस्तान का मैदान पड़ा है, कि जिस्के दर्मियान सैकड़ों कोस के घेरों मे नाम को भी बस्ती नही मिलती, पानी के बदल मृगतृष्णा का जल, अथवा कहीं कहीं बड़े बड़े जंगली तर्बूज़ होते हैं, उन्हीं से मुसाफ़िर लोग अपनी प्यास बुझा लेते हैं। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की जहां देखने को भी बूंद भर पानी नही मिलता, वहां बालू ने आप से आप ऐसे रसीले फल पैदा कर दिये हैं। धरती इन दोनों इलाक़ों की अर्थात वीकानेर और जैसलमेर की रेतल है, सौ सौ दो दो सौ हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। खेती ज्वार बाजरे के सिवा और चीज़ों की बहुत कम, दरख़्तों का नाम नही, बाग़ कौन जनता है, करील फोक झड़बेरी और आक तो अलबत्ता दिखलाई देते हैं, नदी नाले

कसम खाने को भी इन इलाकों मे नहीं हैं। लंबान इस की डेढ़ सौ मील से ऊपर और चौड़ान प्राय सवा सौ मील बिस्तार सत्तर हजार मील मुरब्बा, और आमदनी साढ़े छ लाख रुपया साल। राजधानी बीकानेर २७ अंश ५७ कला उत्तर अचांस और ७३ अंश २ कला पूर्व देशांतर मे शहरपनाह के अंदर बसा है, बगल मे किला भी ऊंचा और दीदारु बना है।—२३—जैसलमेर पूर्व बीकानेर, पश्चिम सिंध, उत्तर बहावलपुर, दक्षिण जोधपुर। बिस्तार बारह हजार मील मुरब्बा। इस मे बीकानेर से भी बढ़कर रेगिस्तान और उजाड़ है। बस्ती फ़ी मील मुरब्बा सात आदमी की भी नहीं पड़ती। आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल। राजधानी जैसलमेर २६ अंश ४३ कला उत्तर अक्षांस और ७० अंश ५४ कला पूर्व देशांतर मे बसा है। जोधपुर के रस्ते से गर्मियों के दर्मियान यहां से तीन मंजिल तक बिलकुल पानी नहीं मिलता, मुसाफ़िर लोग मश्कें भरकर ऊंटों पर अपने साथ रख लेते हैं। ये ऊपर लिखे हुए पंद्रहों इलाके अर्थात् सिरोही से जैसलमेर तक रजपुताने मे गिने जाते हैं, और सब के सब अजमेर की अंगटी के ताबे हैं।—२४—बहावलपुर दक्षिण जैसलमेर और बीकानेर, उत्तर पंजाब के सर्कारी ज़िले, पश्चिम सिंध, और पूर्व बीकानेर और पटियाला। यह इलाका सतलज और सिंधु के कनारे कनारे तीन सौ दस मील तक लंबा चला गया है, और चौड़ान मे एक सौ दस मील है, बिस्तार प्राय

बीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा। नदियों के तटस्थ तो भूमि उपजाऊ है, पर दक्षिण की तरफ़ निरा बालू का मैदान उजाड़ पड़ा है। आमदनी अनुमान पंदरह लाख रुपया साल। नव्वाब के रहने की जगह बहावलपुर २९ अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ७१ अंश २९ कला पूर्व देशांतर से सतलज के बांए कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर प्राय बीस हज़ार आदमियों की बसती है। यहां सतलज को गर्रा पुकारते हैं। मकान इस शहर मे कच्ची ईंटों के बहुत हैं, लुंगी और रेशमी खेस वहां अच्छे बनते हैं, ऊंट भी वहां के चालाक होते हैं। बहावलपुर से ५० मील दक्षिण रेगिस्तान मे देवरावल अथवा देरावल का मज़बूत क़िला है, नव्वाब का ख़ज़ाना उसी मे रहता है। बहावलपुर से पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता अनुमान तीस मील के तफ़ावत पर पंजनद के बांए कनारे जो सतलज का चनावके साथ मिलने पर वहां नाम पुकारते हैं ऊच का पुराना शहर बसा है।—२५—अंबाले की अजंटी के ताबे रजवाड़े बहावलपुर के पूर्व। यह इलाक़े पश्चिम और दक्षिण तरफ़ कुछ दूर तक बीकानेर की अमल्दारी से मिले हैं, बाक़ी सब तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरे हैं। इन मे सब से बड़ा इलाक़ा महाराजपटियाले का जो सिखों की क़ौम से हैं बहावलपुर की हद से लेकर पहाड़ों मे शिमला की छावनी तक चला गया है, उस के बीच बीच मे दूसरे इलाक़े इस ढब से आगए हैं कि लंबान और चौड़ान अनुमान करना बहुत कठिन है, यदि बटिंडे से

शिमला तक इस अमल्दारी को नापो तो १७५ मील होती है, परंतु विस्तार उस्का साढ़े चार हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नही है। आमदनी बीस लाख रुपए साल की होवे गी। राजधानी पटियाला ३० अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश २२ कला पूर्व देशांतर मे कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है, बीच मे क़िला है, उस्के अंदर महाराज के रहने के महल अच्छे अच्छे बने हैं। शहर से पांच छ कोस के तफ़ावत पर बहादुरगढ़ का क़िला और उस मे महल जो महाराज ने अब बनवाए हैं देखने लाइक़ हैं। बहावलपुर की हद की तरफ़ लुधियाने से ७५ मील नैर्ऋतकोन को बटिंडे का क़िला रेगिस्तान के मैदान मे बहुत मज़बूत बना है, ख़ज़ाना महाराज का उसी मे रहता है, इस के गिर्दनवाह को लखी-जंगल कहते हैं, घोड़ों की चराई के लिये वहां कोई चालीस कोस के घेरे मे बहुत अच्छी जगह है। पटियाले से ३५ मील उत्तर सरहिंद जो बादशाही ज़माने मे एक बहुत बड़ा आबाद शहर था अब वीरान पड़ा है, खंडहर पुरानी इमारतों के दूर दूर तक दिखलाई देते हैं, पर बस्ती अच्छे क़स्बे के बराबर भी नही है। इस अमल्दारी के दर्मियान शिमला की राह से पहाड़ों के नीचे कालका से दो कोस इधर पिंजौर के बीच औरंगज़ेब बादशाह के कोका फ़िदाईख़ां का बाग़ बहुत नादिर बना है, वहां पहाड़ से जो पानी का सोता आता है उसी को उस बाग़ के फ़ौवारों का ख़ज़ाना बना दिया है, निदान इस पहाड़ के

पानी की बदौलत उस बाग़ मे सैंकड़ों फ़व्वारे चादरें और नहरें आप से आप रात दिन जारी रहती हैं, कहीं हौज़ों के बीच मे बारहदरियां बनी हैं, और कहीं बारहदरियों के बीच मे हौज़ बनें हैं। पिंजौर जगह बहुत रम्य और सुहावनी है, पर बर्सात मे वहां की हवा बिगड़ जाती है। बाक़ी रजवाड़े जिन के रईसों को अपने इलाके मे दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तिआर हासिल है, इस अजंटी मे नाभा जींद मालेरकोटला फ़रीदकोट ममदौत बूढ़िया छिछरौली और रायकोट हैं। बिस्तार इन सब का तेईस सौ मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। इन मे नाभा जींद और मालेरकोटला यह तीनो तो तीन तीन लाख रुपए सालकी आमदनी के हैं, और बाक़ी सब इलाके बहुत छोटे छोटे हैं। मालेरकोटला फ़रीदकोट और ममदौत मे मुसल्मानों की अमल्दारी है, यह तीनों रईस नव्वाब कहलाते हैं। नाभा पटियाले से पंदरह मील पश्चिम वायुकोन को झुकता, जींद पटियाले से सत्तर मील दक्षिण, मालेरकोटला पटियाले से पैंतीस मील वायुकोन, फ़रीदकोट पटियाले से १०५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोण को झुकता, ममदौत पटियाले से १३० मील पश्चिम वायुकोण को झुकता, बूढ़िया पटियाले से ६० मील पूर्व अग्निकोण को झुकता, छिछरौली पटियाले से ६० मील पूर्व और रायकोट पटियाले से ४० मील ईशानकोण को बसा है।

—२६—कपूरथला अथवा सिख राजा आलूवालिये का इलाक़ा सतलज और व्यासा के बीच चारों तरफ़ पंजाब

के सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ, आमदनी दो लाख रुपया साल, राजधानी कपूरथला ३१ अंश २४ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश २१ कला पूर्व देशांतर मे ब्यासा नदी के बांए कनारे दस मील हटकर बसा है। —२७—रुहेलों का रामपुर मुरादाबाद और बरेली के सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ। बिस्तार सात सौ मील मुरब्बा। आमदनी दस लाख रुपया साल। रामपुर नव्वाब के रहने की जगह २८ अंश ४६ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर मे कौशिल्या नदी के बांए कनारे बसा है।—२८—मनीपुर ब्रह्मपुत्र के पार हिंदुस्तान की पूर्व हद पर है। पश्चिम और उत्तर सिलहट और आशाम के सर्कारी ज़िलों से, और पूर्व और दक्षिण बर्म्हा की अमल्दारी से मिला हुआ है। बिस्तार साढ़े सात हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी लाख रुपए साल से कम है। मुल्क जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है, और पहाड़ चार हज़ार फुट तक ऊंचे हैं। लोहे की खान है। आदमी वहां के खसिये जिन की सूरत और बोली भोटियों से मिलती है प्राय जंगली से हैं। नागे वहां बहुत बसते हैं, देवी के उपासक हैं, और आदमी का बल देते हैं। राजधानी मनीपुर २४ अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ९४ अंश ३० कला पूर्व देशांतर मे उसी नाम की नदी के दहने कनारे बसा है। इसे अंगरेज़ कसाइयों का मुल्क कहते हैं क्योंकि बर्म्हावाले उन्हें कासी पुकारते हैं औ बंगाली उन्हें मघालु कहते हैं, पर वे अपना नाम मोइते बतलाते हैं॥

अब इसके आगे नर्मदा पार दक्षिण के इलाके लिखे जाते हैं—१—हैदराबाद, यह बड़ा इलाका तापी नदी से लेकर जहां वह संधिया की अमल्दारी से मिलता है दक्षिण मे तुङ्गभद्रा और कृष्णा नदी तक चला गया है। ईशानकोन की तरफ़ वरदा नदी प्राणहत्या से और प्राण-हत्या गोदावरी से मिलकर इस इलाके को नागपुर के इलाके से जुदा करती है, और बाकी सब तरफ़ वह बंगाल बम्बई और मंदराज हाते के सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ है। जिस ज़मीन का नाम संस्कृत मे तैलंग देश है, वह बहुत सी इस इलाके के अंदर आगई है। यह इलाका २८० मील लंबा और ११० मील चौड़ा और प्राय लाख मील मुरब्बा बिस्तार रखता है। बादशाही अमल्दारी मे यह एक सूबा गिना जाता था, पर अब उस्की हद्दों मे बड़ा फ़र्क़ पड़ गया, क्योंकि बिदर और औरंगाबाद के सूबों के हिस्से भी दाखिल होगए हैं। ज़मीन बलंद उपजाऊ और पहाड़ी है, पर पहाड़ ऊंचा कोई नहीं, हवा मोतदल, बेइंतिज़ामी के सबब ज़मींदार कंगले, और ज़मीन बहुधा परती, जहां किसी समय मे सुंदर नगर बस्ते थे वहां अब गीदड़ रोते हैं। मुल्क डेढ़ करोड़ रुपए से ऊपर का है, पर इंतिज़ाम अच्छा न होने के सबब नव्वाब के ख़ज़ाने मे अब इस का आधा रुपया भी नहीं आता। वहां के नव्वाब के पास एक पल्-टन औरतों की है, नाम उस्का ज़फ़रपल्टन, वर्दी और क़वाइद अंगरेज़ी पल्टन के सिपाहियों की सी, तनखाह

पांच पांच रुपया महीना। ये औरतें जो सिपाहियों का काम करती हैं, गारदनी कहलाती हैं। सन १७९५ मे जब वहां के नव्वाब ने दौलतराव संधिया से लड़कर शिकस्त खाई थी, तो उस लड़ाई मे करदला के मैदान के दर्मियान दो पलटनें इन गारदनियों की मामा बर्न और मामा चंबेली के जेरहुक्म उस्के साथ थीं, और बहरसूरत वह नव्वाब के सिपाहियों से कुछ बुरा नही लड़ीं। राजधानी हैदराबाद अथवा भागनगर १७ अंश १५ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश ३५ कला पूर्व देशांतर मे मूसा नदी के दाहने कनारे जिस्पर पक्का पुल बना हुआ है पक्की शहरपनाह के अंदर चार मील लंबा तीन मील चौड़ा बसा है। रस्ते तंग और फ़र्श भी उन से बुरा, बस्ती उस्मे अनुमान दो लाख आदमियों की है। नव्वाब के महल और कई एक मसजिदें देखने लाइक हैं। छ मील पश्चिम एक पहाड़ पर गोलकुंडे का प्रसिद्ध मजबूत क़िला है, वहां नव्वाब का खज़ाना रहता है। तीन मील उत्तर सिकंदराबाद मे सर्कारी फ़ौज की बहुत बड़ी छावनी है, कि जो नव्वाब की हिफ़ाज़त के वास्ते बमूजिब अहदनामें के वहां रहती है, खर्च उस्का नव्वाब देता है और उसके सहजमे वसूल होजाने के वास्ते बराड का इलाक़ा अपनी अमलदारी के वायुकोन मे सर्कार के सपुर्द कर दिया है। सर्कार की तरफ़ से एक साहिब रज़ीडंट उस दर्बार के वास्ते मुक़र्रर हैं। हैदराबाद के वायुकोन की तरफ़ प्राय तीन सौ मील के फ़ासिले पर औरंगाबाद

का शहर, जो मुसल्मानों की बादशाहत से उस नाम के सूबे का राजधानी था, और फिर बहुत दिन तक हैदराबाद के नव्वाब का भी राजधानी रहा, अब वीरान सा होगया, और बेरौनक़ पड़ा है। साठ हज़ार आदमी से अधिक नहीं बसते पुराना नाम उस का गर्क है, पहाड़ से काटकर शहर में पानी की नहर लाए हैं, हरतरफ़ साफ़ पानी से भरे हुए हौज़ और उन से फ़व्वारे छुट रहे हैं, बाज़ार लंबा चौड़ा, औरंगज़ेब के महल खंडहर, एक तरफ़ को उस्की बेटी का मक़बरा संगमर्मर के गुम्बज़ का और एक फ़क़ीर की क़बर है, उस से बहुत से हौज़ चादरें और फ़व्वारे बने हुए हैं। औरंगाबाद से सात मील वायुकोन को दौलताबाद का मशहूर क़िला है, यह किला महादेव की पिंडी की तरह एक खड़े पहाड़ पर बना है, प्राय ५०० फुट वहां से ऊंचा और चारों तरफ़ से बेलाग है, उस पहाड़ का अधोभाग प्राय एक तिहाईतक छील छील कर दीवार की तरह सीधा करदिया है, राह चढ़ने को उस पर किसी तरफ़ भी नहीं, पहाड़ के गिर्द खाई है, और फिर खाई के गिर्द तिहरी दीवार, उन तीनों दीवारों के बाहर शहर बसता है, और शहर के बाहर फिर शहरपनाह है, क़िले के अंदर जाने के लिये सुरंग की तरह पहाड़ के अंदर ही अंदर पत्थर काटकर सीढ़ियां बनाई हैं, जैसे किसी मीनार पर चढ़ते हैं उसी तरह उस्में भी मशाल बालकर जाना होता है, पहले तो वह रास्ता ऐसा तंग है कि आदमी को झुककर दुहरा हो

आना पड़ता है, पर फिर तीन गज़ चौड़ा और तीन गज़ ऊंचा है, बीचं बीच मे एक आदमी के जाने लाइक़ ओगे काटकर पानी लाने के लिये खाई तक रस्ते बना दिये हैं, ज़खीरे रखने के वास्ते बड़े बड़े तहखाने बने हैं, और फिर जहां वह रस्ता पूरा हुआ उस्के मुह पर एक बड़ा भारी लोहे का तवा रखा है, कि यदि शत्रु इस रास्ते मे भी आ घुसे तो उस तवे को उस के मुह पर डालकर आग फूंक दें, जिससे मारे गर्मी के वह उसी रास्ते मे भुनकर कबाब हो जावे, किले के अंदर एक मीनार १६० फुट ऊंचा बना है, पहाड़ की चोटी पर जहां नव्वाब का निशान खड़ा है एक तोप पीतल की १८ फुट लंबी बारह सेर के गोलेवाली रखी है, किले के अंदर कई एक पानी के कुंड हैं, मालूम नहीं कि यह किला किस ज़माने से और किस ने बनाया, पर जब पहाड़ छीलने और सुरंग काटने की मिहनत पर खयाल करते हैं, तो अक़्ल भी हैरान सी रहजाती है, लड़कर इस किले को फ़तह करना कठिन है, केवल किले-वालों की रसद बंद करने से हाथ आ सकता है। पहले इस जगह का नाम देवगढ़ था, चौदहवीं सदी के शुरू मे मुहम्मदतुगलक़शाह दिल्ली उजाड़कर वहांवालों को देवगढ़ मे बसाने के लिये लेगया था, और उस का नाम दौलता-बाद रखकर अपनी राजधानी मुक़र्रर किया, पर फिर अंत मे उसे दिल्ली ही को आना पड़ा। दौलताबाद से सात मील वायुकोन को इलूरू गांव के पास, जिसे अंगरेज़ लोग इलोरा कहते हैं, और किसी समय मे संगीन शहर-

पनाह के अंदर अच्छा खासा शहर बसता था, कोई एक मील लंबे अर्धचंद्राकार पहाड़ को काटकर महाअद्भुत मंदिर बनाए हैं। पहाड़ मे काटे हुए जिन सब मंदिरों का वर्णन इस पुस्तक मे हुआ है ये इलूरूवाले मंदिर उन सब से अधिक उत्तम हैं, उन की खूबी देखने ही से समझ मे आसकती है, इस जगह केवल कैलास जिस्मे निहायत उमदा काम किया है, और बड़े मंदिर का विस्तार मात्र लिख देते हैं ....फुट

कैलास का दर्वाज़ा ऊंचा १४

रस्ता दर्वाज़े के अंदर जिस्मे दुतरफ़ा मकान बने हैं लंबा ४२

भीतर का चौक ...... लंबा २४७

चौड़ा १५०

बड़ा मंदिर दर्वाज़े से पिछली दीवार तक लंबा १०३

चौड़ा ६१

ऊंचा १८

आदिनाथसभा जगन्नाथसभा परशुरामसभा इंद्रसभा लंका तीनलोक नीलकंठ दुखघर जनवासा रावन की खाई इत्यादि और सब मंदिरों से भी इन दोनों के सिवा निहायत बारीकी और कारीगरी के साथ तरह तरह की मूर्तें और सुंदर सुंदर सूरतें बनाई हैं, और तमाशा यह कि ये सारे मंदिर एक उसी पत्थर के पहाड़ को काटकर निकाले हैं। बड़ा आश्चर्य वहां इस बात से आता है कि उत्तर तरफ़ के मंदिर तो जैन और दक्षिण के बौध और बीचवाले शैवमत के बने हैं। विश्वकर्मा की सभा मे एक

बहुत बड़ी बुध की मूर्ति रखी है, वहांवाले उसे विश्व-कर्मा बतलाते हैं, कैलास मे मध्य महादेव का लिंग है, बाकी चारों तरफ़ और सब देवता हैं, जैन मंदिर मे नंगी मूर्ति दिगंबरी आमनायवालों की बनी हैं। बरसात मे जब पहाड़ों से झरने झरते हैं, और कुंड सब भरजाते हैं, तो यह जगह बड़ी बहार दिखलाती है। मालूम नहीं कि यह मंदिर किसने और किस समय मे बनाए थे, पर बड़ा ही रुपया खर्च पड़ा होगा। दौलताबाद से छ मील इल्लूरू के रस्ते से ४५० फुट ऊंचे उसी पहाड़ के घाटे पर जिसमे मंदिर काटे हैं शहरपनाह के अंदर रौज़ा नाम एक बस्ती है, यद्यपि अब वीरानी पर है तौ भी स्थान सुहावना है, वहां सय्यदज़ैनुलआबिदीन और-औरंगज़ेब बादशाह की क़बरें हैं, सिवाय इन के और भी ज़ियारतगाहें कई हैं। हैदराबाद से ७२ मील वायु-कोन को खाई और शहरपनाह के अंदर जिस्का दौर छ मील होवेगा बिदर का पुराना शहर बसा है। बादशाही अमल्दारी मे उस्के साथ उसी नाम का एक सूबा गिना जाता था, और शास्त्रो मे उस्का नाम विदर्भ लिखा है, पर बहुत लोग नागपुर को बिदर्भ मानते हैं। वहां के हुक्के रकाबी आबखोरे इत्यादि रूपजस्त के प्रसिद्ध हैं, और उस शहर के नाम से बिदरी कहलाते हैं। अमीर बरीद का मक़बरा वहां देखने लाइक़ है। हैदराबाद से १२५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गोदावरी के बांए कनारे नांदेड़ मे, जो किसी समय उस नाम के सूबे की

राजधानी था, सिखलोगों का तीर्थ है। गुरुगोविंदसिंह उसी जगह मारागया था। औरंगाबाद के उत्तर ईशान-कोन को झुकता हुआ तिरपन मील पर अजंती अथवा अ-जयंती के घाटे के पास पहाड़ खोदकर गुफा के तौर किसी ज़माने के मंदिर बने हुए हैं, देखने लाइक़ हैं। अजंती से पच्चीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ असाई अथवा अस्से का गांव है, वहां सन १८०३ में जेनरल विलिज़ली ने ४५०० सिपाहियों से महाराजैनागपुर और दौलतराव सेंधिया दोनो की इकट्ठी फ़ौज को जो ३०००० से कम न थी शिकस्त दी थी।—२—मैसूर, हैदराबाद के दक्षिण, चारों तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ २०० मील लंबा और १५० मील चौड़ा विस्तार में सैंतीस हज़ार मील मुरब्बा है। यह इलाक़ा पूर्व और पश्चिम दोनों घाटों के बीच समुद्र से बहुत ऊंचा चबूतरे की तरह पड़ा है। जो कोई उस इलाक़े में जाना चाहे, पहले उसे घाटों पर चढ़ना होगा, पर सब जगह से बराबर बट्टाढाल नहीं है, कहीं १८०० फ़ुट कहीं २००० कहीं २५०० कहीं इस्से भी न्यूनाधिक ऊंचा है, और फिर इस बलंदी पर भी ऊंचे ऊंचे पहाड़ हैं, शिवगंगा का पहाड़ जो सब से बडा है ४६०० फ़ुट ऊंचा है। इसी ऊंचाई के कारण यहां की आबहवा, बहुत अच्छी है, और मौसिम एतिदाल के साथ रहता है, बरन सदा बहार है। जंगल भी बड़े बड़े हैं, बहुधा खजूर के। धरती अक्सर लाल और पथ-रीली। लोहे की खान है। दीमक बहुत होते हैं, यहां

तक कि घर मे तसवीर लगाओ और थोड़े ही दिनो उस्की खबर न लो तो केवल शीशा ही दीवार मे चिपका रहजायगा, कागज़ और चौकठा बिलकुल नदारद, पर ऊंचे पहाड़ों पर नही होते। वहां के हिंदू दान देने से दान लेने मे अधिक पुण्य समझते हैं, यहां तक कि जब बीमार होते हैं, तो कितने ही मन्नत मानते हैं, कि जो अच्छे होजांय तो इतने दिन भीख की रोटी खाकर जीयें, और जब किसी से गांव मे तकरार होजाती है तो गधा मारकर रास्ते मे डालदेते हैं, उसी दिन वह सारा गांव वीरान होजाता है, यदि वह गधा मारनेवाला भी उसी गांव मे रहता हो तो उसे भी अपना घर छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि वहांवाले जिस गांव से गधा मारा जाय फिर उस्मे नही बस्ते। आमदनी इस इलाके की सत्तर लाख रुपया साल है। राजधानी मैसूर, जिस्का शुद्ध नाम महिशासुर अथवा महिशुर बतलाते हैं, १२ अंश १८ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ४२ कला पूर्व देशांतर मे लाल मिट्टी की शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला अंगरेजी तौर का बहुत बड़ा बना है, और उसी के अंदर राजा के महल हैं। थोड़े ही फ़ासिले से एक ऊंची ज़मीन पर अजंटो का मकान है। क़िले के पास से पहाड़ तक जो शहर से पांच मील पर १००० फुट का ऊंचा होवेगा एक बड़ा तालाव है, और उस पहाड़ की चोटी पर साहिब अजंट ने एक बंगला बनवाया है, वहां से बहुत दूर दूर तक की सैर दिखलाई देती है, पहाड़ की बग़ल मे

सोलह फुट ऊंचा एक पत्थर का नन्दी बहुत उमदा बना है। राजा के यहां हाथियों के रथ हैं, एक उन से इतना बड़ा जिस्मे दो सौ आदमी सवार होते हैं, सड़कें वहां की बहुत चौड़ी हैं। मैसूर से नौ मील उत्तर कावेरी के टापू में श्रीरंगपट्टन जो टीपूसुलतान के वक्त में उस मुल्क की राजधानी था शहरपनाह के अंदर बसा है, पास ही एक बाग़ में टीपू और उस्के बाप हैदरअली का मक़बरा संगमूसा का बना है, उस्के महल शहर के अंदर जो अब टूटे फूटे पड़े हैं कुछ देखने योग्य नहीं हैं, बाज़ार सोधा और चौड़ा है, पर गलियां ख़राब, श्रीरंगनाथ जी का मंदिर और बड़ी मसजिद देखने लाइक़ है, दो पुल निरे पत्थर के कावेरी की दोनों धारा में बने हैं, दोनों हिंदुस्तानी डौल पर हैं, मिहराब किसी में नहीं, एक ही एक पत्थर के चौखूंटे खंभे तराशकर पानी में ख़ूब मज़बूती के साथ खड़े करदिये हैं, और फिर उन पर पत्थर की सिला पाट दी हैं, उत्तर की धारा में जो पुल बना है उस में सरसठ सरसठ खंभों की तीन क़तार खड़ी हैं, और दक्षिण धारावाले पुल पर से पानी की नहर भी आई है। बंगलूर का शहर श्रीरंगपट्टन से सत्तर मील ईशानकोन की तरफ़ समुद्र से ३००० फुट ऊंचा लाल मिट्टी की शहरपनाह के अंदर बसा है। बाज़ार चौड़ा, दुतरफ़ा नारियल के दरख़्त लगे हुए, क़िला बहुत मज़बूत, खाई गहरी पहाड़ में काटी हुई, कोस एक पर सर्कारी फ़ौज की छावनी है। साहिब अजंट व कमिश्नर

के रहने का यही सदरमुकाम है। बंगलूर से ३६ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता चिकाबालापुर है, कि जहां मिसरी और कंद निहायत उमदा बनता है, पर मंहगा बहुत। चिकाबालापुर से अनुमान अस्सी मील वायुकोन को चितलदुर्ग अथवा चितदुर्ग का किला, जिसे वहांवाले सीतलदुर्ग भी कहते हैं, पहाड़ों के झुंड पर जो ८०० फुट तक ऊंचे हैं बहुत मज़बूत बना है, दीवार के अंदर दीवारें और दर्वाज़ों के अंदर दर्वाज़े कोई ऐसी जगह बिना रोके नहीं छोड़ी जिधर से दुश्मन हल्ला कर सके, पानी इफरात से, फौज इस से सर्कारी रहती है। इस गिर्दनवाह में भी लोग बंगाले की तरह चरखपूजा करते हैं, अर्थात अपनी पीठ लोहे की हुक से छेदकर महादेव के साम्हने बांस से लटकते और चर्खी की तरह घूमते हैं। बंगलूर से बीस मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सुवर्णदुर्ग एक पाव कोस ऊंचे खड़े पहाड़ पर बहुत मज़बूत किला बना है। मैसूर से ४० मील ईशानकोन को, जिस जगह कावेरी दो धारा होकर शिवसमुद्र अथवा सोवनसमुद्र का टापू बनाती है, जिसपर किसी समय में गंगपारा अथवा गोंगगोंदपुर का शहर बसा था, उस का जल सौ फुट से लेकर दो सौ फुट तक के ऊंचे पत्थरों से कई धारा होकर इस ज़ोर शोर के साथ चद्दरों की तरह नीचे गिरता है कि जब उसके आस पास के मनोहर जंगल पहाड़ों पर और उस स्थान के निर्जन एकांत होने पर नज़र करो। विशेष करके बरसात के दिनों में तो शा-

यह ऐसी रम्य और सुहावनी दूसरी जगह दुनिया में मुश्किल से मिलेगी। हमने यह इलाका मैसूर का रजवाड़ों में इस लिये लिखा है कि आमदनी वहां की सर्कारी खजाने में नहीं आती, हुकूमत का खर्च काटकर बिलकुल वहां के राजा को दे दी जाती है, पर इतना याद रखना चाहिए कि राजा को मुल्क के बंदोबस्त में कुछ भी इख्तियार नहीं है, यह काम साहिब कमिश्नर और उन के असिस्टंटों के सपुर्द है, अजंटी और कमिश्नरी दोनों काम एक ही साहिब करते हैं, और कुडग का इलाका भी जो मैसूर और कानडे के बीच में पड़ा है, और वहां के राजा की सर्कशी के सबब सर्कार की ज़ब्ती में आगया, इसी कमिश्नर के ताबे है, वहां मरकाडे में जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, उस का एक असिस्टंट रहता है। कुडग सारा जंगल पहाड़ों से भरा है, और वहांवालों का चलन मलवारियों से बहुत मिलता है।

—२—कोची अथवा कच्छी, जिसे अंगरेज लोग कोचीन कहते हैं, मैसूर के दक्षिण। उस के पश्चिम को समुद्र है और दक्षिण को त्रिवाङ्कोड़ की अमलदारी से मिला है, बाकी दोनों तरफ़ सर्कारी ज़िले हैं। बिस्तार उस्का प्राय दो हज़ार मील मुरब्बा। पहाड़ों की जड़ में तो ताड़ केले और आम के पेड़ों में ज़मीदारों के घर हैं और ऊपर बड़े बड़े भारी दरख़्तों के जंगल हैं। ईसाई और यहूदी इस इलाके में बहुत रहते हैं, यहां तक कि गांव के गांव उन्हीं के बस्ते हैं। उस तरफ़ के बेवक़ूफ़ लोग

कोची और तिवाङ्कोड़ के आदमियों को जादूगर खयाल करते हैं । आमदनी वहां की प्राय पांच लाख रुपया साल । राजधानी कोची जिस्का जिक्र मलबार के जिले मे हुआ है सर्कार के कबजे मे है ।—४—तिवाङ्कोड़ अथवा तिरु-वनंतपुर । उत्तर उस के कोची दक्षिण और पश्चिम को समुद्र, पूर्व को तरफ सर्कारी जिले मथुरा और तिरुने-ल्वल्लि के । लंबान अनुमान १४० मील और चौड़ान ४० मील । विस्तार पांच हजार मील मुरब्बा है । पहाड़ों पर बड़े भारी जंगल हैं, पानी की इफरात से खेतों से अन्न बहुत पैदा होता है, और सबजा हर तरफ दिखलाई देता है । चाल यहां की मलयालवालों से बहुत मिलती है, स्त्री बिलकुल मालिक रहती है, खाविंद का इखतियार कुछ भी नहीं । मनुष्य यहां के बहुधा झूठे और बद-कार । प्राय लाख आदमियों के उस इलाके मे क्रिस्तान हैं । आमदनी चालीस लाख रुपया साल । इस इलाके मे खारे पानी के दर्मियान एक जानवर जलचर सील की किस्म से और ऊदबिलाव से मिलता हुआ चार फुट लंबा मुह गोल कान छोटे गर्दन मोटी पैर के पंजे बतक की तरह मुड़े हुए बाल तेलिये बदन और दुम मछली की तरह होता है, शायद लोगों ने उसी को देखकर कहा-नियों मे जलमानसों की बात बनाली । राजधानी त्रिविं-द्रम् ८ अंश ८ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर मे बसा है, उसी मे राजा के रहने का किला और मकान अंगरेजी तार का और रजीडंटी

है।—५—कोलापुर हैदराबाद के पश्चिम। चारों तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरा और उन के साथ ऐसा मिला हुआ कि उस का लंबान चौड़ान बतलाना कठिन है। विस्तार साढ़ेतीन हज़ार मील मुरब्बा है। यह इलाक़ा कुछ तो घाट के पहाड़ों से है और कुछ घाट से नीचे। आमदनी पंदरह लाख रुपया साल हैं। राजधानी कोलापुर १६ अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश २५ कला पूर्व देशांतर से पहाड़ों के बीच एक नदी के समीप बसा है। क़िला कुछ मज़बूत नहीं है, लेकिन शहर से दस मील के तफ़ावत पर वायु-कोन को पवनगढ़ और पिनौलगढ़ के क़िले २०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ के ऊपर अलबत्ता मज़बूत बने हैं, पिनौलगढ़ साढ़े तीन मील के घेरे से कम नहीं है।—६—सावंतवाड़ी कोलापुर के नैर्ऋतकोन की तरफ़ और गोवे के उत्तर, पश्चिम घाट और समुद्र के बीच ले, प्राय हज़ार मील मुरब्बा का विस्तार रखता है। धरती बीहड़ पहाड़ी और ऊसर, जंगल बहुत, खेतियां हलकी, आमदनी दो लाख रुपया साल है। राजधानी वाड़ी १५ अंश ५६ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश पूर्व देशांतर से बसा है, पर राजा के नालाइक़ होने के सबब इंतिज़ाम इस इलाक़े का बिल-फ़ेल सर्कार करती है, जो कुछ रुपया हुकूमत के ख़र्च से बचता है वह राजा को मिलता है।

सिवाय सर्कारी और हिंदुस्तानी अमल्दारियों के जिन का ऊपर बर्णन हुआ कुछ थोड़ी थोड़ी सी ज़मीन इस

हिंदुस्तान में फ़रासीस डेनमार्क और पुर्टगाल के बादशाहों के दखल में है। फ़रासीस के दखल में पटुचेरी कारीकाल और चंद्रनगर है। पटुचेरी का सुंदर शहर जिसे अंगरेज़ पांडिचेरी कहते हैं दक्षिण में पालार और कावेरी के मुहानों के बीच समुद्र के तट पर ११ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में मंदराज से ८५ मील एक बालू के मैदान के दर्मियान बसा है, और कारीकाल १० अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में मंदराज से १५० मील दक्षिण तंजाउर के पर्व ईशानकोन को ज़रा झुकता हुआ समुद्र के तट कावेरी के मुहाने पर है, और चंद्रनगर बङ्गाले में २२ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश २८ कला पर्व देशांतर में कलकत्ते से बीस मील उत्तर गङ्गा के दहने कनारे पर पड़ा है। पटुचेरी फ़रासीसियों ने सन १६७४ में वहां के हाकिम से मोल लिया था, और चंद्रनगर सन १६८८ में औरङ्गज़ेब से उन्हें मिला था। ८२ गांव पटुचेरी के साथ हैं, और १०७ गांव कारीकाल के इलाक़े में, और कुछ थोड़े से गांव चंद्रनगर के भी आस पास हैं, सिवाय इस के कुछ थोड़ी थोड़ी ज़मीनें और भी चार पांच शहरों में हैं। आमदनी इन सब को सन १८३८ में ३७८६६३ रुपए साल की हुई थी, और आदमी इस अमलदारी के अंदर सन १८४० में कुछ ऊपर एक लाख सत्तर हज़ार गिने गए थे, उन की हिफ़ाज़त के वास्ते दो कम्पनी सिपाहियों की मुक़र्रर हैं।

गवर्नर फ़रासीसियों का पटुचेरी से रहता है। वहां सूत कातने की एक कल फ़रासीस से बहुत अच्छी आई है, उस्से बहुत ग़रीबों का गुज़ारा होता है। सिवाय इस के वहांवालों ने एक कारख़ाना ऐसा मुकर्रर किया है, कि उस से जो मुहताज क्रिस्तान उस जगह का जाकर मिहनत करे उसे खाने को मिलता है, और दो चार पैसे भी रोज़ दिये जाते हैं, फिर जब वे चीजें जो उन से बनवाते हैं बिक जाती हैं, तो उन का फ़ाइदा रुपए से बारह आना उन्हीं लोगों को मिलता है, और बीमारी से भी उन को ख़बर ली जाती है, निदान इस कारख़ाने की बदौलत बहुतेरे आदमी भीख मांगने से बचते हैं, और हलाल की रोटी खाते हैं, यदि और शहरों के लोग भी मिलकर ऐसे कारख़ाने खड़े करें तो दीन दुखियों का क्याही उपकार हो।

डेनमार्क के बादशाह के दख़ल से तिरकम्बाड़ी कारीकाल से ६ मील उत्तर समुद्र के तट कावेरी की एक धारा के मुहाने पर १० अंश ६७ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५४ कला पूर्व देशांतर से नंदराज से १४५ मील दक्षिण तेरह गांव के साथ है। आदमी उस्में सन १८२५ मे २३१८२५ गिने गए थे। अटारह बीस बीघे ज़मीन इस बादशाह की बलेश्वर में भी है।

पुर्टगालवाले बादशाह के दख़ल मे गोवे का इलाक़ा सावंतवाड़ी के दक्षिण और कानड़ा के उत्तर पश्चिमघाट और समुद्र के बीच मे ६२ मील लंबा और १६ से ३२ मील

तक चौड़ा है। आमदनी वहां की सब मिलाकर नौ लाख रुपया साल है। राजधानी पुरानी अर्थात गोवा जो १५ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश २ कला पूर्व देशांतर में बम्बई से २५० मील दक्खिण अग्निकोण को झुकता बसा था अब बिलकुल बेरौनक़ और वीरान सा पड़ा है, गवर्नर पुर्टगीजों का गोवे से ५ मील पश्चिम समुद्र के तट पर पंजिम में रहता है, और अब वही उस इलाक़े की राजधानी हो गया है। वहां किवाड़ों में शीशे की जगह सीपलगाते हैं, और पालकी की जगह पहाड़ियों की तरह बांस में झोली बांधकर उसी में बैठते हैं, और उस को दो आदमी सिर पर उठाते हैं, नाम इस सवारी का डंडी है॥

निदान इस भारतवर्ष में जो सब देश प्रदेश और नदी पर्वत हैं थोड़ा बहुत उन सब का वर्णन हो चुका, यदि उन्हें किसी नक़शे में देखो तो साफ़ नज़र पड़ जायगा कि ऊपर (१) अर्थात उत्तर में सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक सरासर हिमालय पहाड़ की श्रेणी चली गई है, जिस्में उत्तरखंड के सुंदर ठंढे और अति रम्य और मनोहर मुल्क बसते हैं। शास्त्र में भी उस की बड़ी प्रशंसा की है, उदासीन जनों के चित को उस्से अधिक प्यारा दूसरा कोई

---

(१) अंगरेज़ी क़ाइदे बमूजिब नक़शे पर हर्फ़ सदा उस्की उत्तर अलंग ऊपर रखकर लिखते हैं, इसलिये जब नक़शे को दीवार से सीधा लटकाओगे उस्की उत्तर अलग ऊपर और दक्खिन नीचे होगी, और पूर्व दहने, और पश्चिम बांए हाथ पड़ेगी।

स्थान नहीं है। इन पहाड़ों की जड़ मे कोई तीस चालीस मील चौड़ा बड़े भारी घने जंगलों से घिरा ज़ुआ वह स्थान है। जिसे तराई कहते हैं, गर्मी और बसांत मे इस तराई की हवा बिशेष करके नयपाल से नीचे नीचे ऐसी बिगड़ जाती है कि बज़धा पशु पक्षी भी अपनी जान बचाने के लिये वहां से निकल भागते हैं। बांए हाथ अर्थात पश्चिम को जोधपुर जैसलमेर बीकानेर और सिंध और बहावलपुर के वे हिस्से जो सतलज और सिंधु के कनारों से दूर हैं रेगिस्तान के पटपर मैदान मे बसे हैं, जहां पानी भी कम और तृण बीरूध का भी अभाव, जिधर देखो समुद्र की लहरों की तरह बालू के ढीले दिखलाई देते हैं। जब गर्मियों मे लुएं चलती हैं और आंधियां आती हैं, और वह बालू गर्म होकर हवा मे उड़ती है, तो मानो बदन पर छर्रें बरसने लगते हैं, देखते ही देखते वे टीले उड़कर एक जगह से दूसरी जगह इकट्ठा होजाते हैं, अकसर आदमी इस तरह के खतरे मे आए हैं, और रेत के नीचे दबकर मर गए हैं। वहां सिवाय ऊंट के और किसी भी सवारी का गुज़र नहीं होसकता, बज़धा मुसाफ़िर लोग रात को तारों के निशान से चलते हैं, नहीं तो रेगिस्तान मे सड़क पगडंडी बस्ती पेड़ इत्यादि चीज़ों का आसरा और पता कुछ भी नहीं मिलता, केवल कहीं

कहीं फोक झड़बेरी आक और करील अवश्य नज़र पड़जाते हैं। अरवली पहाड़, जो सिरोही और जोधपुर को उदयपुर सर्कारी ज़िलै अजमेर और किशनगढ़ से जुदा करता शेखावाटी और अलवर की अमलदारी से होता हुआ दिल्ली के पास जमना के कनारे तक चला गया है, इस मरु देश की पूर्ब सीमा है। दहने हाथ अर्थात पूर्ब की तरफ़ सूबैबंगाला समुद्र और हिमालय के बीच सीधा बट्टाढाल, जिस्मे पहाड़ तो क्या कहीं पत्थर का रोड़ा भी देखने को नही मिलता, नदियों की बहुतायत से ऐसा सेराव है कि बरसात मे प्राय आधे से अधिक जलमग्न होजाता है। आबादी बहुत, धरती उपजाऊ परले सिरे की, धान हरतरफ़ लहलहाते हैं। पूर्ब भाग से बर्म्हा की सर्हद पर ऐसे सघन और अगम्य जंगल पड़े हैं, कि जैसा उत्तर से इस देश को हिमालय से बचाव है, वैसा ही इधर इन जंगलों की मानो दीवार खड़ी है, शत्रु उस राह से कदापि नही आ सकता। निदान यह बंगाले का मैदान नदियों से सिंचा हुआ गंगा के दोनों तरफ़ हिमालय और विंध के बीच हरिद्वार तक चला गया है, और गंगा यमुना के बीच जो देश पड़ा है उसे अंतरवेद और दुआबा भी कहते हैं, और यही दो चार सूबे अर्थात दिल्ली आगरा अवध और इलाहाबाद यथार्थ मध्य देश अर्थात असली हिंदुस्तान

है। वायुकोन मे सिक्खों का मुल्क पंजाब है, जिस्के पांचो दुआबे जिन जिन नदियों के बीच मे पड़े हैं उन दोनों नदियों के नाम के हर्फ़ों से पुकारे जाते हैं; जैसे व्यासा और सतलज के बीच मे दुआबेब-स्तजालंधर, व्यासा और रावी के बीच मे दुआबे-बारी, रावी और चनाब के बीच मे दुआबेरचना, झेलम और चनाब के बीच मे दुआबेजच, और झेलम और सिंधु के बीच सिंधसागर दुआब। मध्य मे बिंध्याचल के तटस्थ नर्मदा और शोण के कनारों पर, और फिर शोण के कनारे से सूबेउड़ेसा और नागपुर की अमल्दारी के बीच मे गोदावरी तक, वे सब जंगल और झाड़ झंखाड़ और उजाड़ हैं जिन मे भील गोंद धांगड़ कोल चुवाड़ और संठाल इत्यादि असभ्य अर्धबनमानस तुल्य प्राय जंगली मनुष्य बसते हैं। नीचे नर्मदा पार दक्षिण देश पूर्व और पश्चिमघाटों के बीच एक चबूतरा सा उठा हुआ, ज्यों ज्यों दक्षिण गया ऊंचा होता गया, यहां तक कि मैसूर की धरती प्राय तीन हज़ार फुट समुद्र से बलंद है, और बलंदी के सबब वहां मौसिम भी अच्छा रहता है, गर्मी की शिद्दत नहीं होती। यह ऊंचा देश दोनों घाटों के बीच कृष्णा नदी से दक्षिण बालाघाट कहलाता है, और घाटों से उतरकर समुद्र की तरफ़ जो नीचा देश है वह पांईघाट। असल मे कर्नाटक उसी बालाघाट का नाम था, पर अब अंगरेज़ लोग पांईघाट को भी उसी नाम से पुकारते हैं, और कृष्णा के मुहाने से कावेरी के

मुहाने तक समुद्र के तटस्थ देश को कारोमंडल भी कहते हैं। कारोमंडल चोलमंडल का अपभ्रंश है, कि जो नाम अबतक भी वहांवालों की जुबान पर जारी है (१) इस कनारे समुद्र के निकट धरती बिलकुल रेतल और ऊसर है। कृष्णा पार दक्षिण देश मे मुसलमानों का राज्य पक्का न जमने के कारन वहां अब भी बहुतेरी बातें असली हिंदू धर्म की देखपड़ती हैं, मंदिर औ शिवालय बहुत बड़े बड़े प्राचीन बने हुए, धर्मशाला और सदाबर्त हर-तरफ़ मुसाफ़िरों के लिये, ब्राह्मण वेदपाठी और अग्नि-होती जगह जगह इफ़रात से, और नाम नगर औ ग्रामों के अहमद महमूद पर कोई नहीं वही पुराने हिंदी चले आते हैं। यद्यपि हिसाब से प्राय दो तिहाई मुल्क अर्थात प्राय सात लाख मील मुरब्बा अब भी हिंदुस्तानियों के दखल मे है, परंतु वह आबादी और आमदनी मे सर्कारी मुल्क के आधे हिस्से की भी बराबरी नहीं कर सकता। सर्कारी अमल्दारी मे नौ करोड़ आदमी बसते हैं, हिंदुस्तानी अमल्दारी मे कुल पांच करोड़। सर्कार के यहां तीस करोड़ रुपया तहसील होता है, हिंदुस्तानियों को ग्यारह करोड़ भी पल्ले नहीं पड़ता। यह केवल नियत की बर्कत है, और इंतिजाम की खूबी ॥

---

(१) रामस्वामी अपनी किताब मे लिखता है कि कारोमंडल कारोमनाल का अपभ्रंश है, और कारोमनाल उस गांव का नाम है जो पुर्टगाल वालों ने पहले हो पहल उस कनारे पर देखाया ॥

भूगोलहस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN TWO VOLUMES

दो जिल्दों से

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी श्रीयुत लेफ़्टिनंट गवर्नर
बहादुर की आज्ञानुसार

बाबू शिवप्रसाद ने बनाई ।

BY

BA'BU' SIVAPRASA'D

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब से देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द ।

PART III.

तीसरा हिस्सा

दूसरी बार

कलकत्ते के संस्कृत प्रेस से छपी

१८५९ ।

नक़्शा हिन्दुस्तान के रजवाड़ों के विस्तार और आमदनी का वर्णमाला के क्रम से।

संख्या	नाम इलाके का	विस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल से
१	अंबाले की अजंटी	२३००	
	जींद		३०००००
	पटियाला	४५००	२००००००
	मालैरकोटला		३०००००
२	अलवर	३५००	१८०००००
३	इन्दौर	८०००	२२०००००
४	उदयपुर	११६००	१२५००००
५	कच्छ(तूल१६०अर्ज़६५मील)		८०००००
६	कपूरथला		२०००००
७	करौली	१६००	५०००००
८	कश्मीर	२५०००	१०००००००
९	किशनगढ़	७००	३०००००
१०	कोची	२०००	५०००००
११	कोटा	६५००	४५०००००
१२	कोलापूर	३५००	१५०००००
१३	गढ़वाल	४५००	१०००००
१४	ग्वालियर	३३०००	७८०००००
१५	चम्बा		१०००००

संख्या	नाम इलाके का	विस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल में
१६	जयपुर	१५०००	८५०००००
१७	जैसलमेर............	१२०००	१०००००
१८	जोधपुर......	३५०००	१७०००००
१९	टोंक..................	१८००	१००००००
२०	डूंगरपुर......	१०००	२०००००
२१	लिवाङ्कोडू..................	५०००	४००००००
२२	देवास		४०००००
२३	धार............	१०००	४७५०००
२४	धौलपुर	१६२५	७०००००
२५	नयपाल	५४५००	३२०००००
२६	पर्तापगढ़....	१५००	२०००००
२७	वघेलखंड............	१००००	२००००००
२८	वड़ोदा	२४०००	७००००००
२९	वहावलपुर	२००००	१५०१०००
३०	वांसवाड़ा............	१५००	२०००००
३१	वीकानेर......	१७०००	६५००००
३२	वुंदेलखंड............	१००००	
	दतिया............		१००००००
	उरछा		७०००००
	चारखाड़ी.....		४०००००
	छतरपुर......		३०००००

संख्या	नाम इलाके का	विस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल मे
	अजयगग		३२५०००
	पन्ना		४०००००
	समथर		४५००००
	बिजावर		२२५०००
३३	बूंदी	२२००	१००००००
३४	भरथपुर	२०००	२००००००
३५	भुटान (तूल १०० मील अर्ज ५० मील)		
३६	भूपाल	७०००	२२०००००
३७	मनीपुर	७५००	१०००००
३८	मैसूर	३७०००	७००००००
३९	मंडी		३५००००
४०	रामपुर	७००	१००००००
४१	शिकम	१६००	
४२	सतलज और जमना के बीच के रजवाडे		
	कहलूर		१०००००
	बिसहर		१०००००
	सिरमौर		१०००००
४३	सावन्तवाड़ी	१०००	२०००००
४४	सिरोही	३०००	१०००००
४५	सुकेत		८००००
४६	हैदराबाद	१०००००	१५०००००

लंका अथवा सिंहलद्वीप

ईश्वर ने जिस तरह और सब चीज़ें इस भारतवर्ष के लिये अच्छी से अच्छी बनाईं, एक टापू भी उसके वास्ते बहुत सुंदर रचा है। नक़्शा देखने से मालूम होगा कि जैसे किसी धुगधुगी मे आवेज़ा लटकता है उसी सूरत से यह सिंहल का टापू हिंदुस्तान के दक्षिण तरफ़ पड़ा है। शास्त्र मे इसका नाम लंका और सिंहल द्वीप लिखा है, मुसल्मान सरन्दीप और सीलान पुकारते हैं, और अंगरेज उसे सीलोन कहते हैं। इस टापू के लंका होने मे कुछ संदेह नही है, क्योंकि सेतबंध रामेश्वर के साम्हने है, और सेत उसी से जाकर मिलता है, और प्राचीन यूनानी ग्रंथो मे इस का नाम टापरोबेन अर्थात रावन का टापू लिखा है (१) फिर सिवाय इन बातों के दूसरा कोई टापू उधर ऐसा है नही जिसे लंका ख़याल करें, फ़रंगियों के जहाज़ों ने सारा समुद्र छान डाला, और जो कहो कि शास्त्र मे लंका के दर्मियान सोने का कोट और विभीषण का राज लिखा है, तो हम यह पूछते हैं कि क्या उसी शास्त्र से काशी को भी सोने की नही

---

(१) कोई कोई ऐसा भी कहते हैं कि टापरोबेन ताम्रपर्णी का अपभ्रंश है, बौधलोगों के पुराने ग्रंथों मे इस टापू का नाम ताम्रपर्णी ही लिखा है।

लिखा, अथवा साक्षात महादेव को वहां का राजा नहीं कहा। निदान लंका २७० मील लंबा और २४५ मील चौड़ा ७५० मील के घेरे में एक टापू है। कुछ ऊपर ८००० फुट तक ऊंचे उस में पहाड़ हैं। नदी सब से बड़ी महावलि गंगा है, प्राय २०० मील लंबी, और उस में नाव बेड़े चलते हैं। लोहे और फिटकिरी की वहां खानें हैं, और माणक लसनिया नीलम कटैला गोमेदक बिल्लौर नदियों के बालू से मिलता है। नमक भी वहां बनता है, दारचीनी बहुत होती है, और निहायत उमदा, क़हवा इलायची और कालीमिर्च की भी इफ़रात है। जंगलों में वहां के हाथी इतने होते हैं, कि एक अंगरेज़ ने दो बरस के शिकार में चार सौ हाथी मारे, मज़बूती और चालाकी में वहां का हाथी सब जगह मशहूर है। हुमा पच्छी भी, जिस्के परों की कलगियां बादशाह टोपियों में लगाते हैं, वहां बहुत होते हैं। समुद्र के कनारे गोते-खोर सर्कार की तरफ़ से मोती निकालते हैं, सन १८३५ में ३८०००० रुपए इन मोतियों के नीलाम से सर्कारी खज़ाने में आए थे, उस्से पहले ६ साल की आमदनी का पड़ता फैलाने से १४५०००० रुपया साल पड़ता है, शंख भी समुद्र से वहां बहुत निकलते हैं। आब हवा बहुत अच्छी, मौसिम मोतदल। आदमी वहां सिंहली मलबारी और मुसल्मान इन तीनों क़िस्म के बहुत हैं, सिंहली मालूम होते हैं कि वहां के असली रहनेवाले और हिंदुस्तानियों से मिलकर पैदा हुए हैं। मत इन का बौध, सीधे सच्चे

ग़रीब मिलनसार और ख़ूबसूरत, बर्म्हा और हिंदुस्तान-वालों में मिलते हुए, बोली उन की जुदी है, पर ग्रंथ उन के प्राकृत अथवा संस्कृत में लिखे हैं। मलबारियों का मज़हब शैव और चालचलन उन के अपने देश के से, पर अकसर अब अंगरेज़ी तरीक़ा इख़तियार करते चले हैं, कुरसी मेज़ लगाकर खाते हैं, और अपनी स्त्रियों के साथ मजलिसों में नाचते हैं। इस्कूल सन १८३३ मे १७ तो सर्कार की तरफ़ से और ८८४ पादरी इत्यादि लोगों की तरफ़ से गिने गए थे। एक क़ौम वहां विड्डस लोगों की है जो भील गोंद चुवाड़ों की तरह जंगल पहाड़ों में रहा करते हैं, और वन के फल फूल और कंदमूल अथवा शिकार से अपना गुज़ारा करते हैं, अंगरेज़ लोग उन्हें वहां के असली भूमिये ठहराते हैं। सिंहलियों की तवारीख़ बमूजिब जो बहुधा ठीक मालूम होती है यह टापू राजाविजय सूर्यबंशी ने सन ईसवी से प्राय ५४३ बरस पहले वहां के असली भूमियों से छीना था, और श्रीविक्रमराजसिंह उस के घराने से आख़िरी राजा हुआ, जो सन १८१५ ईसवी में अंगरेज़ों के हाथ से निकाला गया। पहले वहां के राजा ने अरब और मलबारियों के हल्लों से बचने के लिये पुर्टगीज़ों की मदद चाही थी पर जब पुर्टगीज़ों ने उसी को ज़ेर करना चाहा, तो उस ने डच-लोगों को बुलाया, उन्हों ने भी धीरे धीरे उस का मुल्क दबाना शुरू किया, लेकिन जब फ़रंगिस्तान में डचलोगों ने अंगरेज़ों के साथ लड़ने पर कमर बांधी, तो सन १७९६

से अंगरेजों ने उन्हें इस टापू से भी बेदखल करदिया, और जब वहांवालों ने अपने राजा के जुल्म से तंग होकर विशेष इस बात से कि उसने अपने मंत्री के लड़के उन्हीं की माके हाथ से उखली से कुटवाए अंगरेजों की हिमायत से आना चाहा तो सर्कार ने भी मज़लूम समझकर उन की अभिलाषा पूरी की, और सन १८१५ से राजा को निकालकर सारा टापू अपने कब्जे मे करलिया, तब से बराबर वह इंगलिस्तान के बादशाह के दखल मे चला आता है आमदनी वहां की सब मिलाकर तेंतीस लाख रुपया साल है। फ़ौज चार पल्टन गोरे की और एक मलबारियों की रहती है। राजधानी कोलम्ब जहां गवर्नर रहता है ६ अंश ५७ कला उत्तर अक्षांस और ८० अंश पर्व देशांतर से उस टापू के पश्चिम बग़ल मंदराज से ३६८ मील दक्षिण है, क़िला ठीक समुद्र के तट पर अच्छा मजबूत बना है, तोपें उस पर तीन सौ चढ़ी ऊई हैं। आदमी उस शहर के अंदर सन १८३२ से ३२००० गिने गए थे, सूरत शहर की अंगरेज़ी छावनियों से बऊत मिलती है। कोलम्ब से ६० मील ईशानकोन कांडी के दर्मियान, जहां उस टापू के पुराने राजा रहते थे, एक मंदिर के अंदर पिंजरे की तरह लोहे के कटहरे से सोने के छ ढकनों से ढका ऊआ एक दांत रखा है, और उन छओं ढकनों के ऊपर एक सातवां ढकना पीतल का घंटे की सूरत ढका है, और फिर उसके ऊपर अनुमान डेढ लाख रुपए का ज़ेवर और जवाहिरात रखा है।

उस लोहे के कटहरे से, जिस्के अंदर ये सब चीज़ हैं, ताला बंद रहता है. और कुंजी उस्की हाकिम के पास रहती है, क्योंकि सिंहलियों का यह निश्चय है कि वह दांत बुध का है, और जिस के पास रहे वही उस टापू का राजा होवे, सर्कार ने इस दूरंदेशी से कि कोई बदमाश उसे लेकर बलवा न उठावे अपने कबज़े से रखा है, जब साल से एक बार मेला होता है तो साहिब कलक्टर ताला खोलकर लोगों को दर्शन करा देते हैं। कोलम्ब से ४५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हमालल पहाड़ के ऊपर, जिसे अंगरेज़ आदम का शिखर कहते हैं, और समुद्र से ७००० फुट ऊंचा है, एक पत्थर की चटान पर आदमी के पैर का निशान बना है, पर दो फुट लंबा। सिंहली लोग कहते हैं कि वह बुध के पैर का निशान है, और बुध उसी जगह से स्वर्ग को चढ़ा था, और मुसल्मान उस को आदम के पैर का बतलाते हैं, और कहते हैं कि वह उसी जगह स्वर्ग से गिरा था॥

बर्मा

यह मुल्क जो एशिया के अग्निकोण की तरफ़ हिंदुस्तान के पूर्व है ८ अंश से २६ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९२ अंश से १०४ अंश पूर्व देशांतर तक चलागया है। असल नाम उस मुल्क का वहां के आदमी म्रम्मा पुकारते
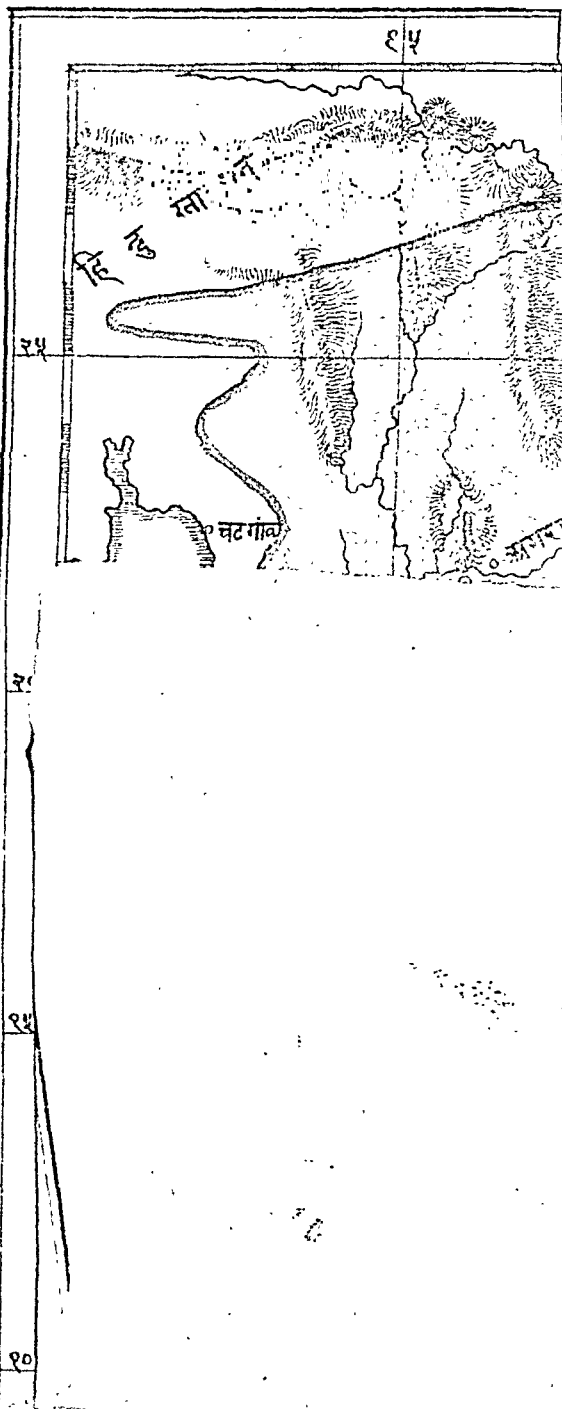
होता, गाय भैंस का दूध पहा

हैं, और ब्रह्मा बम्हा और बर्मा इत्यादि सब उसी मन्मा का अपभ्रंश है। पश्चिम तरफ़ उस्के हिंदुस्तान और बंगाले की खाड़ी, और पूर्व तरफ़ उस्की सरहद कम्बोज देश जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं और चीन के मुल्क से लगी है, उत्तर को उस्के चीन है, और दक्षिण स्याम और समुद्र और मलाका है। लंबान उस्की प्राय एक हज़ार मील और चौड़ान प्राय छ सौ मील और बिस्तार अनुमान १९४००० मील मुरब्बा गिनाजाता है। आदमी उस्मे ७४ फ़ी मील मुरब्बा अर्थात १४०००००० बस्ते हैं। दक्षिण तरफ़ अर्थात समुद्र के निकट तो इस मुल्क मे मैदान है, और उत्तर भाग मे बिलकुल जंगल और कोहिस्तान। नदियों मे ऐरावती सब से अधिक मशहूर है, वह तिब्बत के पूर्व से निकलकर १८०० मील बहने के बाद कई धारा होकर समुद्र मे मिलती है, उस्मे नाव बहुत दूर तक चलती है, और उस्के पानी से कनारे की खेतियों को भी बड़ा फ़ाइदा है। अमरपुर के नज़दीक १४ मील लंबी एक झील बहुत गहरी है, और उस्के चारों तरफ़ पहाड़ों के होने से बहुत रम्य और सुहावनी मालूम होती है। गल्लों मे वहां चावल बहुत इफ़रात से पैदा होता है, और उसी का बड़ा ख़र्च है। चाय इस मुल्क मे ख़राब होती है, केवल तर्कारी और अचार बनाने के काम मे वहां के आदमी लाते हैं। सागौन की जंगलों मे इफ़रात है। टांगन वहां से बिहतर कहीं नही होता, गाय भैंस का दूध वहां कोई नही पीता, शेर और

हाथियों का जंगल पेगू के नज़दीक है, लेकिन गीदड़ उस विलायत भर मे नही। खान से उस मुल्क मे सोना चांदी मानक नीलम लोहा रांगा सीसा सुरमा गंधक हरिताल संखिया कहरुबा कोयला और कई किस्म के क़ीमती पत्थर बहुतायत से निकलते हैं। अमरपुर के नज़दीक संगमर्मर की बहुत उमदः खान है, लेकिन उस पत्थर से सिवाय देवताओं की मूर्ति के और कुछ नहीं बनेपाता, सब से ज़ियादः रुपया इन खानकी चीजों मे राजा को नफ़्त अर्थात मटियातेल से वसूल होता है, लोग उस को ज़मीन मे तीस तीस पुरसे गहरे कूए खोदकर निकालते हैं, वह वहां चराग़ जलाने के काम मे आता है। मौसिम वहां भी हिंदुस्तान के से हैं, लेकिन एतिदाल के साथ, अर्थात न तो वहां कभी ज़ियादः जाड़ा पड़ता है, और न कभी सख़्त गर्मी होती है। राजधानी वहां की अइन्वा जिसे अंगरेज़ आवा और वहांवाले रत्नपुर भी कहते हैं २१ अंश ४५ कला उत्तर अक्षांस और ९६ अंश पूर्व देशांतर मे ऐरावती के वांए कनारे बसा है, उस की शहरपनाह दस गज़ ऊंची, और बहुत गहरी और चौड़ी खाई से घिरी हुई है। क़िला चौखूंटा २४०० गज़ लंबा और चौवीस ही सै गज़ चौड़ा है। मकान बिलकुल काठ के हैं, ईंट का घर सिवाय राजा के और कोई नही बनाने पाता। शहर मे एक मंदिर बौध मत का बहुत ख़ूबसूरत और आलीशान है, और उस मंदिर के अंदर एक मूर्ति गौतम की आठ गज़ ऊंची एक संग-

मर्मर की बैठी ऊई बनी है। आदमी उसमें प्राय २०००० बसते हैं। लोग वहां के खुशदिल तेजमिजाज और बेसबरे होते हैं, हिंदुस्तानियों की तरह सुस्त और आलसी नहीं होते। औरतें वहां की शर्म और पर्दा नही करतीं, और घर का सारा काम और मिहनत उन्ही के जिम्मे है, मर्द मजे से बैठे पान चबाया और हुक्का पिया करते हैं, हकीकत में उन औरतों की जिंदगी लौंडी और बांदियों से भी बत्तर है, मिहनत मजदूरी के सिवाय वहां के आदमी अपनी बहू बेटियों से कसब भी करवाते हैं, और इस बात से शर्म नही खाते, बरन जो औरत जितना जियादः रुपया कमालाती है उतना ही अपने घरवालों से नाम पाती है। सूरत शकल में वहां के आदमी चीनियों से मिलते हैं, औरतें गोरी होती हैं, लेकिन भद्दी, मर्द नाटे गठीले, हजामत नहीं बनाते, दाढ़ी मूछों के बाल मुचने से उखाड़ डालते हैं, सुरमा और मिस्सी मर्द औरत दोनों लगाते हैं। शादी कम उमर में नही करते, और एक औरत से अधिक नही व्याहते। जाति भेद उन लोगों में नही है, और मत बुध का मानते हैं, जीव की हिंसा करनी उस मजहब के विरुद्ध है, परंतु वे लोग बेखटके मास मछली खाते हैं, और शराब भी पीते हैं। पुनर्जन्म का निश्चय रखते हैं, और अपने मुर्दों को आग से जलाते हैं। जुबान उन लोगों की मुश्किल है, और किसी दूसरी से नहीं मिलती। हर्फ भी उन के गोल गोल खास एक तरह के हैं, और हिंदी की तरह

बाएं से दहनी तरफ़ लिखे जाते हैं। पोथियां उन की तालपत्र पर लिखी रहती हैं; और कभी कभी सोने के पत्रों पर लिखते हैं। कविताई और शास्त्र उस भाषा से भी बज्जत हैं, और कई उन की मज़हबी पोथियां प्राकृत बोली में लिखी हैं। मुलम्मे का काम वे लोग खूब करते हैं, और धात और मिट्टी के बर्तन और रेशम के कपड़े और संगमर्मर की मूरतें और जहाज़ भी अच्छा बनाते हैं। रुपए पैसे की जगह वहां चांदी और सीसे का कुर्स चलता है। बाहर की आमदनी से अंगरेज़ी बनात और कपड़े और हथियार और धात के बर्तन और रेशमी रूमाल बहुत ख़र्च होते हैं, और निकासी के माल से सगौन इत्यादि क़ीमती लकड़ियों की वहां बड़ी पैदा है, सिवाय इस्के वे लोग रूई कहरुवा हाथीदांत जवाहिर पान और एक क़िस्म की चिड़ियों के घोंसले, जो उस देश के आदमी बज्जत मज़े के साथ खाते हैं, चीनियों को देते हैं, और उस के बदले रेशम धात के बर्तन मख़मल मुरब्बे और सोने के तबक़ उन से लेते हैं। तहसील में वहां का राजा जो कुछ कि मुल्क से पैदा होता है और जो कुछ कि बाहर से आता है सब का दसवां हिस्सा लेता है, और वहां का यह आईन है कि जब कोई लड़ाई या हंगामा आ पड़े तो मुल्क के सारे मर्द राजा की चाकरी में हाज़िर होवें, और इसी बाइस से वहां का राजा बड़ा भारी लशकर मैदान में ला सकता है, लेकिन ऐसा गबर्दल की भरती को हम फ़ौज नहीं कह सकते। नाव भी

लड़ाई की वहां के राजा ने बज्जत सी तयार कर रक्खी हैं, उन पर अकसर सुनहरा काम किया ज्जआ है, और पानी से बज्जत ही जल्द चलती हैं। यद्यपि धर्मशास्त्र तो वहां भी मनु का जारी है, परंतु मुआमले मुक़द्दमों में बड़ी बेइंसाफ़ी होती है, ऐसा कोई मुजरिम नहीं जो मक़दूर मुवाफ़िक़ नज़राना अदा करने से रिहाई न पा सके। यह भी इस मुल्क का आईन है कि राजसंबंधी जो बात कही जावे उस्के साथ सोने का शब्द ज़रूर कहना चाहिये, जैसे हम को कहना है कि राजा के कान तक यह बात पज्जंची अथवा राजा की नाक से इतर की खुशबू गई तो अवश्य कहना पड़ेगा कि सोने के कान तक यह बात पहुंची और सोने की नाक से इतर की खुशबू गई। वहां के राजा का निशान हंस है। सब से ज़ियादः तअ़ज्जुब की बात इस राज में यह है, कि राजा की सवारी का जो सफ़ेद हाथी है, उस्का भी दरजा राजा के बराबर समझा जाता है, उस हाथी का दर्बार जुदा ही लगता है, और उस्के वज़ीर दीवान मुनशी मुतसद्दी नक़ीब चोबदार अलग नौकर हैं, जो इलची वकील क़ासिद इत्यादि राजा के दर्बार में जाते हैं, उन को इस हाथी के साम्हने भी मुजरा बजा लाकर नज़र दिखलानी पड़ती है, उस के रहने का मकान राजा के महल से कुछ कम नहीं, ज़र-दोज़ी मखमल की गद्दी उस्के सोने के वास्ते बिछाई जाती है, और रत्नजटित सोने के बरतनों में उस का खाना पीना होता है, इतरदान पानदान और पीकदान भी उस्के

साम्हने रहता है ! वहां का राजा आदमी के कंधे पर उस्के मुंह मे रूमाल की लगाम देकर घोड़े की तरह सवार होता है !! कहते हैं कि उस देश के पहले राजा मगध अर्थात विहार से वहां गए थे, और इस बात को वे लोग कुछ कम अढ़ाई हजार बरस बीते बतलाते हैं। सन १८२४ मे सर्हद पर उन लोगों की जियादतियों के सबब करीब ५००० सिपाहियों के सर्कारी फ़ौज का चढ़ाव हुआ था, और दो बरस तक बराबर लड़ाई होती रही, यद्यपि नया और अजनबी मुल्क होने के सबब सर्कारी फ़ौज को सख़्तियां बहुत झेलनी पड़ीं, लेकिन आख़िर जब दुश्मन के आदमियों को शिकस्त देती हुई और फ़तह के निशान उड़ाती हुई आवा से कुल दो मंजिल के तफ़ावत पर यंडाबू मे जा दाख़िल हुई, तो नाचार राजा ने पैग़ाम सुलह का भेजा, सर्कार ने भी उस्से जुर्माने के तौर पर एक करोड़ रुपया लड़ाई का ख़र्च और टेनासेरिम अर्थात मौलमीन का इलाक़ा हमेशः के वास्ते इस क़ौल के साथ कि फिर कभी बर्म्हा का राजा सर्हद पर कुछ जियादती न करे और सर्कारी रऐयत से जो उस के मुल्क मे बेवपार के वास्ते आवे सिवाय मामूली महसूल के और कुछ जियादः तलबी न करे लेकर अपनी फ़ौज उस्के मुल्क से हटा ली। सन १८५१ मे वहां के राजा के सिर मे फिर खुजली आई, अर्थात जब अहदनामे के बख़िलाफ़ उस्के नाजिम ने रंगून मे सर्कारी रऐयत के जहाज़वालों को तंग करके उनसे ज़बर्दस्ती रुपए लिए, और गवर्नर जेन-

रल बहादुर ने उन जहाज़वालों का रुपया लौटवाने के लिए और उस नाज़िम को सज़ा देने के लिए राजा को ख़त लिखा, तो उस ने दोनों से एक काम भी न किया। नाचार सर्कार ने फ़ौज भेजी, और वह मुल्क भी समुद्र के तटस्थ जो आराकान और मौलमीन के बीच उस्के क़बज़े से था अपने दख़ल से कर लिया, न उस्के पास समुद्र के तटस्थ कोई जगह रहेगी, न वह फिर सर्कारी जहाज़वालों पर ज़ियादती कर सकेगा। निदान बर्म्मा में आराकान तो सर्कार के पास पहले ही से था, और मौलमीन सन १८२४ की लड़ाई में लिया था, अब इस नए मुल्क अर्थात रंगून पेगू इत्यादि के हाथ आने से बर्म्मा राज्य का पूर्ब भाग चटगांव से लेकर मलाका की हद तक बंगाले की खाड़ी के तटस्थ बिलकुल सर्कार अंगरेज़ बहादुर का होगया। यह सर्कारी बर्म्मा तीन कमिश्नरियों में बटा है, उत्तर आराकान की कमिश्नरी, दक्षिण मौलमीन की, और बीच में पेगू की, और इन कमिश्नरियों के नीचे मजिस्ट्रट कलक्टरों की तरह डिपटीकमिश्नर और असिस्टंट मुक़र्रर हैं। आराकान का कमिश्नर आवा से दो सौ मील नैर्ऋतकोन आकयाब में रहता है, मौलमीन का कमिश्नर आवा से चार सौ मील दक्षिण अग्निकोन को भुकता मौलमीन में रहता है, और पेगू का कमिश्नर आवा से तीन सौ मील दक्षिण पेगू में रहता है। पेग से साठ मील दक्षिण ऐरावती के दहने कनारे रंगून में एक मंदिर सोमदेव का अष्टकोण ३६१ फ़ुट ऊंचा बना

है, और उस्के शिखर पर लोहे का छत्र सुनहरा मुलम्मा किया हुआ पचास फुट घेरे का चढ़ा हैं, यह मंदिर बौधमती देहगोप की तरह अंदर से ठोस है, और दर्वाजा उस्मे कहीं नहीं।

स्याम।

यह मुल्क जिस्को वर्म्हा के आदमी स्यान और शान पुकारते हैं १० अंश से १८ अंश उत्तर अक्षांस और ९८ से १०५ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। हदें उस की उत्तर और पश्चिम तरफ़ वर्म्हा, दक्षिण तरफ़ स्याम की खाड़ी और पूर्व तरफ़ कम्बोज से मिली हैं। प्राय ६५० मील लंबा और प्राय ३६० मील चौड़ा। विस्तार १५५००० मील मुरब्बा। आबादी फ़ी मील मुरब्बा १८ आदमी के हिसाब से २८४५००० आदमी की। यह मुल्क दो पहाड़ों के दर्मियान एक बड़ा मैदान है, और उस्के बीच से मीनम नदी बहती है। बर्सात में अकसर जगह दलदल होजाने के बाइस आबहवा वहां की ख़राब रहती है, परंतु ज़मीन उपजाऊ जो जो चीज़ें बंगाले में पैदा होती हैं वे सब वहां भी हो सकती हैं, वरन चावल तो इस इफ़रात से शायद सारी दुनिया में कहीं पैदा न होता होवेगा, सिवाय इसके इलायची दारचीनी तेजपात कालीमिर्च और अगर

भी बहुत होता है। मेवों मे मंगोस्तीन आम से भी अधिक सुस्वाद है, इस्से बढ़कर दुनिया मे कोई मेवा अच्छा नही होता। गीदड़ और खरगोश का उस मुल्क मे अभाव है। खान मे वहां हीरा नीलम माणक यशम लोहा रांगा सीसा तांबा और सुरमा निकलता है, और नदियों का रेत धोने से सोनाभी मिलता है, चुम्बुक का वहां एक पहाड़ है। राजधानी इस मुल्क की बंकाक है, वह शहर १२ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और १०१ अंश १० कला पूर्व देशांतर मे मीनम नदी के दोनों कनारों पर बसा है। बाज़ार वहां का बिलकुल पानी के ऊपर है, बांस के बेड़े बनाकर उन्ही पर दूकानदार रहते हैं, और अपना माल बेचते हैं, बरन मकान भी जो लोग नदी के तीर बनाते हैं तो ज़मीन मे बांस और शहतीरें गाड़कर इतना ऊंचा रखते हैं कि बरसात मे दर्या चढ़ने से डूब न जावें, मकान सब काठ के होते हैं, और उन मे जाने के वास्ते सीढ़ी ज़रूर चाहिये। उस शहर मे सड़क बिलकुल नही है, लोग घोड़े गाड़ियों की बदल एक एक छोटी सी नाव अपने घरों मे बंधी रखते हैं, उसी से सब काम निकल जाते हैं। बस्ती इस शहर की प्राय ४०००० आदमी के है। नामी मंदिर इस शहर का दो सौ फुट ऊंचा होवेगा। चालचलन और मज़हब इस मुल्कवालों का बर्म्हा के आदमियों से बिलकुल मिलता है। नाख़न ये लोग बढ़ने देते हैं तराशते नही, और बैद उन के यदि बीमार को आराम न हो तो उस्से कुछ भी नही

लेते। जुबान इन की जुदा है, और गाने बजाने का बड़ा शौक रखते हैं। ये लोग तिजारत के वास्ते अपने देश से बाहर नहीं जाते, गैर मुल्क के आदमी बाहर से भी माल लाते हैं और वहां का भी माल बाहर ले जाते हैं। राजा खुद तिजारत करता है, बिना उस्की आज्ञा के रांगा हाथीदांत सीसा इत्यादि का कोई भी सौदा नहीं करसकता। वहां के आदमी सोने के तवक़ खूब बनाते हैं, और बुरी भली बारूत भी अपने काम लाइक़ तयार कर लेते हैं, यहां का राजा लड़ाई के वास्ते अपनी रऐयत को उसी तरह जमा करसकता है कि जैसे बर्म्हा मे दस्तूर है।

मलाका का प्रायद्वीप।

जिसे वहां के आदमी मलयदेश कहते हैं १ अंश २२ कला उत्तर अक्षांस से लेकर ८ अंश तक चला गया है। वह तीन तरफ़ समुद्र से घिरा है, और चौथी तरफ़ अर्थात उत्तर को उसे का नाम डमरूमध्य बर्म्हा के मुल्क से मिलाता है। लंबान उस की प्राय ८०० मील और चौड़ान प्राय १२० मील होवेगी। इस मुल्क मे छोटे छोटे कई राज हैं। लौंग जायफल कालीमिर्च चंदन सुपारी और चावल वहां इफ़रात से होता है, मंगोस्तीन मेवों का राजा है। भेड़ी बैल और घोड़े कम होते हैं, पर

भैंस बहुत। रांगा खान से निकलता है, और नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। आवहवा मोतदल, और खास मलाका के ज़िले की तो बहुत ही अच्छी और निरोगी है, अकसर साहिब लोग बीमारी से वहां हवा खाने के वास्ते जाते हैं, पर धरती उपजाऊ नहीं है। आदमी वहां के मलाई कहलाते हैं, और लूट मार से बड़े चालाक और दिलेर हैं, समुद्र से जाकर जहाज़ोंको लूट लेते हैं, सिवाय इस के कीना भी दिल से बड़ा रखते हैं, और जब कभी घात पाते हैं दुश्मन से बिना बदला लीये नहीं छोड़ते, परदेसियों के साथ अकसर दग़ाबाज़ी करजाते हैं, पर सभी एक से नहीं हैं, कितने ही उनमें सच्चे और मिलनसार भी होते हैं। पहाड़ों के दर्मियान एक क़ौम जंगली इस तरह की बस्ती है, कि उस की सूरत हबशियों से मिलती है, रंग काला होंठ मोटे नाक चिपटी बाल घूंघरवाले, मगर क़द में बहुधा नाटे डेढ़ गज से अधिक ऊंचे नहीं होते, नंगधड़ंग जंगलों में फिरा करते हैं, और फल फूल कंदमूल अथवा शिकार से अपना पेट भरते हैं। इस मुल्क के आदमी जूआ बहुत खेलते हैं, विशेष करके मुर्ग़ की लड़ाई से, यहां तक कि अपने जोरू लड़के और बदन के कपड़े तक हार देते हैं। अफ़्यून बहुत खाते हैं, और बाज़े वक़्त उस्के नशे से दीवाने बनकर बड़ी ख़राबियां करते हैं। हाकिम वहां का सुलतान कहलाता है, क़ौम का सुन्नी मुसल्मान है। सन १२७६ तक वहां के राजा हिंदू थे। ज़ुबान में उन की

बहुत से शब्द अरबी और संस्कृत के मिले हुए हैं, और हर्फ़ उन के अरबी से मुवाफ़िक़ हैं। जहाज़ और कश्तियां वे लोग बहुत अच्छी बनाते हैं। लौंग जायफल कालीमिर्च मोम बेंत सागू रांगा हाथीदांत वहां से दिसावरों को जाता है, और अफ़यून रेशम इत्यादि वहां बाहर से आता है। राजधानी वहां की मलाका २ अंश १४ कला उत्तर अक्षांस और १०२ अंश १२ कला पूर्व देशांतर से समुद्र के तट पर बसा हैं, यह शहर खास मलाका के ज़िले के साथ सर्कार के क़ब्ज़े से है। विस्तार उस ज़िले का प्राय ८०० मील मुरब्बा होवेगा। सन १५१० मे उसे पुर्टगालवालों ने मुसल्मानों से लिया था, सन १६४० मे उसे डच लोगों ने फ़तह किया, अब सन १७९५ से अंगरेज़ों के क़ब्ज़े से है। मलाका के अग्निकोन १२० मील के तफ़ावत मे सिंहपुर और वायुकोन २४० मील के तफ़ावत से पूलोपिनांग ये दोनों टापू भी सर्कार के दख़ल मे और मलाका की गवर्नरी के ताबे हैं। सिंहपुर २६ मील और पिनांग १५ मील लंबा है। सिंहपुर की आबहवा बहुत अच्छी है। अंगरेज़ पिनांग को वेल्स के शाहज़ादे के नाम से पुकारते हैं, और हिंदुस्तानी इन टापुओं को कालापानी कहते हैं, भारी गुनहगार बंधुए क़ैद रहने के वास्ते इन टापुओं मे भेजे जाते हैं। आबहवा अच्छी होने के कारण कितने ही साहिबलोग वहां जा रहे हैं, और बहुतेरी कोठियां और बाग़ और बंगले बनगए हैं॥

कोचीन

वहां के बादशाह के कब्ज़े मे तीन मुल्क हैं कोचीन, टांकिंग अथवा ऐनम, और कम्बोज जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं। कम्बोज ८ अंश से १५ अंश उत्तर अक्षांस तक, और कोचीन ८ अंश से १८ उत्तर अक्षांस तक, और टांकिंग १८ अंश से २३ अंश उत्तर अक्षांस तक, १०५ और १०९ अंश पूर्व देशांतर के बीच चला गया है। उत्तर तरफ़ उस के चीन है, दक्षिण और पूर्व समुद्र, और पश्चिम को उस्की सर्हद स्याम बर्म्हा और चीन से मिली है। बिस्तार इन मुल्कों का प्राय डेढ़ लाख मील मुरब्बा है, और आबादी फ़ी मील मुरब्बा ९२ आदमी के हिसाब से १३९५०००० आदमी की। इस बिलायत मे मैदान और पहाड़ दोनों हैं। नदी सब से बड़ी कम्बोज की है, चीन के मुल्क से निकलकर सात सौ कोस बहने के बाद समुद्र मे गिरती है। पैदाइश वहां भी उन्हीं मुल्कों की सी होती है कि जिनका बयान ऊपर लिखा गया। बैल वहां बहुत कम, हल भैंसों से चलाते हैं, भेड़ी और गधा बिलकुल नहीं होता, हाथी बहुत बड़े होते हैं। खान से लोहा चांदी और सोना निकलता है। धरती उपजाऊ है, साल मे दो फ़सलें धान की पैदा होती हैं। हुय वहां के बादशाह की दारुस्सलतनत एक नदी के किनारे पर बसा है, और किले के अंदर बहुत खासा बादशाही

महल और एक मंदिर बना है। कहते हैं कि वह किला बहुत मजबूत है, और दो हजार तोपें उस पर चढ़ी हुई हैं। आदमी वहां के नाटे और गठीले और चालाक और मजबूत होते हैं, पायजामा पगड़ी और आधी जांघ तक के लंबी आसतीनवाले कुरते पहनते हैं, बाल लंबे और जूड़े के तौर पर बंधे रहते हैं, औरतें सिर पर टोपी रखती हैं, जूता कोई नहीं पहनता, मिहनत का काम अकसर औरतों के हिस्से से आता है, यहां तक कि बेचारियां हल जोतती हैं और नाव खेती हैं, मिस्सी से दांत काले और पान से होंठ लाल मर्द और औरत दोनों रखते हैं, हाथी का गोश्त ये लोग बहुत मजे से खाते हैं। जुबान वहां की चीन से मिलती है, और मजहब बुध का मानते हैं। जब किसी का कोई मरता है तो उसे दो बरस तक संदूक में बंद करके घर में रख छोड़ते हैं, और नित्य उस के साम्हने गाना बजाना हुआ करता है, भोग भी चढ़ाते हैं, और लोग भी उस के दर्शनों को आते हैं, फिर दो बरस बाद उस को बड़ी धूमधाम से जमीन में गाड़ते हैं। कारीगर वहां के चीनियों की तरह बहुत चालाक और होशयार हैं, विशेष करके रेशम तयार करने में। आमदनी वहां बनात छींट शोरा गंधक सीसा चाय रेशम अफ़्यून और गर्म मसालों की है, और निकास वहां से रेशम घास के कपड़े सीप की चीजें चटाई हाथीदांत कचकड़ा आबनूस दारचीनी इत्यादि का होता है। फौज वहां के बादशाह की प्राय
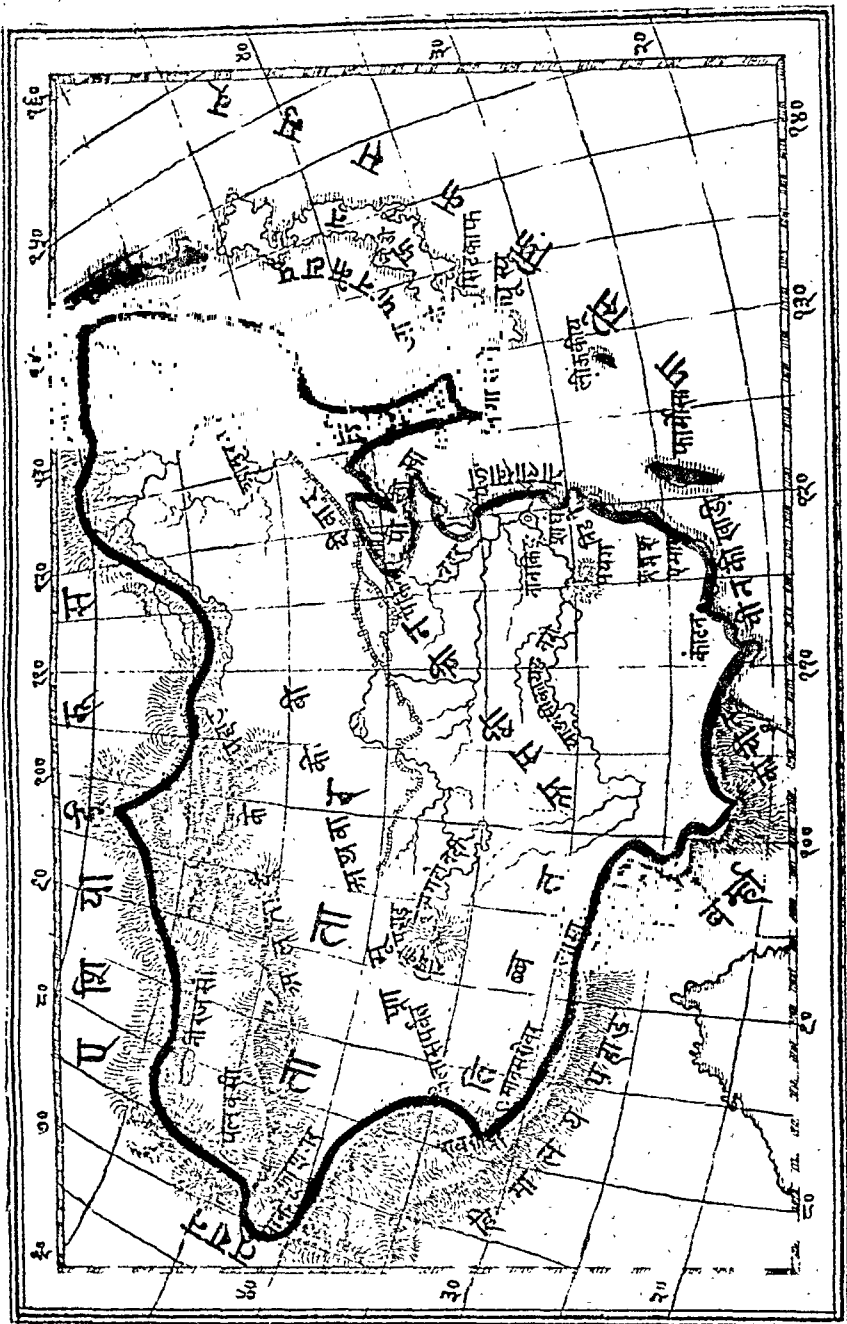
...७०० मील और चौड़ान उत्तर से

पचास हज़ार होवेगी, सिवाय इस के जब काम पड़े तो वह अपने मुल्क के सारे आदमी अठारह बरस से साठ बरस तक की उमर के बेगार से चाहे जिस खिदमत पर भेज सकता है, और आदमी वहां के बादशाह की आज्ञा बिना अपने मुल्क से कहीं बाहर नहीं जा सकते। किसी ज़माने से यह मुल्क चीन के बादशाह के ताबे था॥

चीन

साबिक़ से इस मुल्क के दर्मियान ज़िले ज़िले के जुदा जुदा राजा थे, और हमेशः आपस में लड़ा भिड़ा करते पहला बादशाह जिस ने उन सब छोटे छोटे राजाओं को अपने बस में करलिया चीनङ्गअङ्गती था कि जिस को प्राय दो हज़ार बरस गुज़रते हैं, इस बादशाह के संतान चीन-वंशी कहलाए, और उसी वंश से वह मुल्क चीन कहलाया। वहांवालों के उच्चारण में यह शब्द छिन है कि जिस्को अरबवाले सीन बोलते हैं, और अंगरेज़ी में चायना कहते हैं। यह मुल्क २१ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७० अंश से १४२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। उस्के पश्चिम तरफ़ तूरान, पूर्व तरफ़ पासिफ़िक़ समुद्र, उत्तर तफ़र एशियाई रूस, और दक्षिण तरफ़ हिमालय का पहाड़ बर्हा और कोचीन का मुल्क है। लंबान उस की पूर्व से पश्चिम को प्राय ४७०० मील और चौड़ान उत्तर से

दक्षिण को प्राय २००० मील है, और विस्तार कुछ न्यूनाधिक ५०००००० मील मुरब्बा होवेगा। यद्यपि वस्तुतः इस विस्तार के दर्मियान चार मुल्क बसते हैं, अर्थात असली चीन तिब्बत तातार जिसे महाचीन भी कहते हैं और कोरिया का प्रायद्वीप, लेकिन एक बादशाह के आधीन रहने के कारन अब यह सब एक ही नाम से अर्थात चीन का मुल्क पुकारा जाता है। असली चीन उत्तर तरफ़ तातार से मिला है, और उस के पूर्व और दक्षिण पासिफ़िक समुद्र की खाड़ियां हैं, नाम उन का पीली नीली और चीन की खाड़ी है, और दक्षिण कोचीन और बर्म्हा से, और पश्चिम बर्म्हा और तिब्बत से घिरा है, और २१ से ४१ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९७ अंश ४२ कला से १२२ अंश ५३ कला पूर्व देशांतर तक चला गया है। उसमे १८ सूबे हैं, बहुतेरे उन से सूबेबंगाला से भी बड़े और अधिक आबाद हैं। तिब्बत हिमालय के उत्तर है, उसी पहाड़ की तराई मे ८१ अंश से लेकर १०० अंश पूर्व देशांतर तक और २८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांस तक चला गया है, वह लंबा पूर्व से पश्चिम प्राय १३०० मील और चौड़ा उत्तर से दक्षिण ४५० मील है। तातार जो ३५ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७२ अंश से १४२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है प्राय २५०० मील लंबा और १००० मील चौड़ा होवेगा, उत्तर तरफ़ अलताई का पहाड़ उस को रूस से जुदा करता है, दक्षिण तरफ़ तिब्बत है, पश्चिम मे तूरान पड़ा है, और पूर्व को असली

चीन और समुद्र से घिरा है। कोरिया का प्रायद्वीप जो असली चीन के ईशानकोन की तरफ़ ३४ और ४२ उत्तर अक्षांस और १२४ और १३० पूर्व देशांतर के बीच में पड़ा है प्राय ७०० मील लंबा और २०० मील चौड़ा होवेगा, और तीन तरफ़ समुद्र से और चौथी अर्थात उत्तर की तरफ़ तातार से घिरा है। सिवाय इन मुल्कों के बहुत से टापू भी पास ही पासिफ़िक समुद्र में फ़ार्मोसा और लीऊकीयू इत्यादि वहां के बादशाह के दखल में हैं, यहां तक कि उस की रऐयत उस को खुशामद की राह से दस हज़ार टापुओं का मालिक पुकारती है। यह मुल्क दुनिया के सारे मुल्कों से अधिक आबाद है, तीस करोड़ आदमी उस्में बस्ते हैं कि जो दुनिया की बस्ती का प्राय तीसरा हिस्सा होता है, और फ़ी मील मुरब्बा ६० आदमी पड़ते हैं, लेकिन इन तीस करोड़ में तिब्बत तातार और कोरिया में पूरे करोड़ भी नहीं बस्ते और असली चीन की आबादी फ़ी मील मुरब्बा २७७ आदमी की अनुमान करते हैं। यह राज इतना पुराना है कि उस्की इब्तिदा से कोई भी पक्की खबर नहीं देता, अंगरेज़ लोग खयाल करते हैं कि तूफ़ान से थोड़े ही दिनों बाद यह सलतनत खड़ी हुई, हिंदू के शास्त्रों में भी इस मुल्क का चरचा बहुत जगह लिखा है, और दूसरी क़ौमों की पुरानी क़िताबों में भी जहां कहीं उस का बयान है बड़ाई और मान ही के साथ किया है। इस देश के आदमी खेती करना और रेशम बुन्ना प्राचीन

समय से जानते हैं, चुम्बक का गुण उन्हीं लोगों ने प्रकट किया। विद्या अभ्यास मे वे लोग बज़्त दिल देते हैं, गांव गांव मे बादशाह की तरफ़ से इस्कूल मुकर्रर हैं, उन मे लिखना पढ़ना हिसाब और नीतिशास्त्र सिखलाया जाता है, और लड़कों को आठ बरस की उमर होते ही उन के मा बाप वहां भेजदेते हैं, उस मुल्क मे गरीब और अमीर लिखना पढ़ना सब जानते हैं। इकसीर और कीमिया-गरी इस वाहियात की बुनियाद भी उसी मुल्क से उठी बतलाते हैं। उत्तर और पश्चिम तरफ़ यह मुल्क कोहिस्तान है, बाकी सब जगह बराबर मैदान, और नदीनाले और नहरों के पानी से बिलकुल सिंचा ज़ुआ। कोरिया के मध्य से पहाड़ों की एक श्रेणी है, दक्षिण भाग तो उपजाऊ और आबाद है, पर उत्तर वह प्रायद्वीप बिलकुल ऊसर और वीरान है। तातार की धरती आस पास की विलायतों के बनिस्बत बज़्त बलंद है, और मैदान उस के दर्मियान बज़्त बड़े बड़े। शामू का पट पर जिसे कोबी अथवा गोबी भी कहते हैं प्राय १४०० मील लंबा है, और उसे अकसर काला रेगिस्तान है। तातार की धरती बज़धा वीरान और पटपर पानी से खाली है। ज़मीन तिब्बत की भी तातार की तरह बलंद है, पर इसे मैदान कम और कोहिस्तान बहुत, और दरख़्तों से दोनों खाली, इस मुल्क मे आबादी बहुत कम है, और गल्ला भी थोड़ा पैदा होता है, कैलास का पहाड़, जिसे हिंदू लोग महादेव के रहने की जगह बतलाते हैं,

हिमालय का टुकड़ा तिब्बत के मुल्क से समुद्र से तीस हज़ार फुट ऊंचा है, वहां के पहाड़ अकसर बहुत ऊंचे और बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं। चीन और बर्मा के बीच से हिमालय की शाखा समुद्र तक चली गई है, ज्यों ज्यों पूर्व को बढ़ी नीची होती गई। नदियां चीन में बहुत हैं, लेकिन हुअंगहो और याङ्सीकायङ मशहूर और बड़े दर्या हैं। हुअंगहो तो तिब्बत और तातार के बीच रथिको पहाड़ से निकलकर २६०० मील बहने के बाद समुद्र में गिरती है, और याङ्सीकायङ तिब्बत से निकलकर २२०० मील बहने के बाद नान्किङ शहर से कुछ दूर आगे बढ़ कर हुअंगहो से मिल जाती है। इन में बहुतेरी छोटी छोटी नदियों का पानी आता है, और इन से कितनी ही नहरें काटी गई हैं, कि जिन से खेतियां भी सींची जाती हैं, और तरी का रास्ता भी कश्तियों के आने जाने के वास्ते खुला रहता है। बादशाही नहर कांटन के पास से पेकिन तक प्राय आठ सौ मील लंबी होयेगी, चौड़ी एक सौ फुट है, और गहरी ६॥ फुट। आमुर नदी जिसे साघालियन भी कहते हैं २००० मील तातार में बहकर साघालिअन के टापू के साम्हने समुद्र से मिल गई है। झीलें चीन के मुल्क में बहुत सुथरी सुहावनीं निर्मल नीर से भरी हुई रम्य और मनोहर स्थानों में हैं, विशेष करके पयंग की झील, कि जिस के चारों तरफ़ पहाड़ और जंगल पड़ा है। तातार में नोरज़ैसां झील १५० मील लंबी और ४० मील चौड़ी, और पलकसी झील

२०० मील लंबी और १०० मील चौड़ी है। तिब्बत मे कैलास और हिमालय के बीच मानसरोवर और रावणह्रद जिन्हें वहांवाले माफा अथवा मानतलाई और राकसताल कहते हैं दो झील हैं, मानसरोवर प्राय १५ मील लंबा और ११ मील चौड़ा है और वैदिक और बौध दोनों मज़हबवालों का तीर्थ है। धरती चीन की उपजाऊ है, वहां के आदमी खेतों के सींचने और खात से दुरुस्त करने मे बड़ी मिहनत करते हैं। चावल इफ़रात से पैदा होता है, और बहुधा उस मुल्क के आदमियों की वही खुराक है, फ़सल इस की साल मे दो और कहीं कहीं तीन भी पैदा करलेते हैं, गेहूं इत्यादि अन्न और तरह बतरह के फल फूल भी अच्छे पैदा होते हैं, पर सब से ज़ियादः क़ीमती चीज़ ख़ास उस मुल्क की पैदाइशों मे चाय है। दो प्रकार के पेड़ वहां ऐसे पैदा होते हैं, कि उन मे से दो चीजें मोम और चर्बी की तरह निकलती हैं, और बत्ती बनाने के काम आती हैं। कपूर के पेड़ भी वहां बहुत होते हैं, काट काट कर घास के साथ लोहे के देगों मे उन का मुंह बंद करके आग पर चढ़ा देते हैं, कुछ देर मे काफ़ूर उन दरख़्तों के पत्ते और टहनियों से जुदा होकर घास से जम जाता है (१) जंगलों मे चीन के हाथी गैंड़े अरने शेर जंगली बैल और हिरन इत्यादि की बहुतायत हैं, और

(१) सुमित्रा और वर्मिओ के टापुओं मे दरख़्त के पिंडों के अंदर गूदे की जगह कपूर रहता है, चीर कर निकाललेते है, आग पर नही चढ़ाना पड़ता।

घरेलू जानवरों में घोड़े कुत्ते सूवर मुर्ग और बत्तक इत्यादि गिने जाते हैं। कस्तूरिये हिरन याक अर्थात सुरागाय भेड़ी शाल की बकरी और जंगली गधे तिब्बत में होते हैं, और गोरखर तातार में। खान से चीन में सोना चांदी तांबा लोहा पारा और कई प्रकार के जवाहिर निकलते हैं। कोरिया में सोने चांदी दोनों की खान है, और समुद्र से मोती निकालते हैं। तिब्बत में नमक सुहागा और शंगर्फ की खान है, और सोना भी कई जगहों से निकलता है। उत्तराखंड इस मुल्क का सर्द है, पर आबहवा दक्षिण की भी जो गर्मसेर है अच्छी बतलाते हैं। तातार के दर्मियान गर्मी के दिनों में शिद्दत से गर्मी और जाड़ों में सख्त जाड़ा पड़ता है। तिब्बत में जाड़ा हद से जियाद पड़ता है, और हवा वहां की निहायत खुश्क है। चीन की राजधानी का नाम पेकिन अथवा पेचिन है, वह शहर ४० अंश उत्तर अक्षांस और ११७ अंश पूर्व देशांतर में पच्चीस मील के घेरे का बसता है, और उसकी शहरपनाह तीस फुट ऊंची है, दर्वाज़े उसमें नौ बहुत खूबसूरत हैं, और उसके अंदर बादशाही महल बड़े शानदार बने हैं, रास्ते चौड़े और सीधे हैं, और नहर उनके दर्मियान में बहती है। लार्डमेकार्टनीसाहिब इस शहर में तीस लाख आदमी की आबादी अनुमान करते हैं। चोरी न होने के वास्ते वहां हुक्म है कि शाम बाद बिना रौशनी लिये कोई घर से बाहर न निकले। शहर के बीचोंबीच एक तालाब कोस एक लंबा और कुछ कम चौड़ा बहुत

उमदा बना है, उस के चारों तरफ़ बेदमजनू के दरख़्त लगे हैं, और बीच मे एक टापू है, उसपर एक मंदिर बना है, और पुल उस तालाब के ऊपर संगमर्मर का बांधा है। तातार मे यार्कंद पेकिन से २४०० मील पश्चिम और काशग़र यारकंद से १५० मील वायुकोन को मशहूर हैं। तिब्बत का बड़ा शहर लासा पेकिन से १८०० मील नैर्ऋतकोन है, लामा गुरु उसी जगह रहता है, वह शहर प्राय चार मील लंबा और एक मील चौड़ा है। शहर के बीच मे एक बहुत बड़ा मंदिर बना है, उस पर तमाम सोने का काम हुआ है। आदमी की बनाई हुई तअ़ज्जुब की चीज़ों मे इस मुल्क मे एक बहुत बड़ी दीवार है, यह दीवार असली चीनकी उत्तर हद्द पर है, पंद्रह सौ मील अर्थात साढ़े सात सौ कोस से अधिक लंबी और बीस फ़ुट से लेकर तीस फ़ुट तक ऊंची है और चौड़ी भी इतनी ही है कि उस के ऊपर छ सवार बराबर रकाब से रकाब मिलाकर चल सकते हैं, और सौ सौ गज़ के तफ़ावत पर बुर्ज रखे हैं, जहां पहाड़ और दर्या दर्मियान मे आगए हैं वहां भी इस दीवार को उन पर पुल डालकर लेगए हैं, अर्थात खड और नदियों पर पुल बनाया है और फिर पुल के ऊपर दीवार उठाई है। चीनी का मीनार याङ्कत्सीक्यांयङ के दहने कनारे नान्किङ् के शहर मे अष्टकोन दो सौ फ़ुट ऊंचा बना है, उस्का व्यास अर्थात दल ४० फ़ुट होगा और नौ उस्मे मरातिब हैं, ऊपर चढ़ने के लिये ८८४ सीढ़ियां लगी हैं। वहांवाले उस्की लागत अस्सी

लाख बतलाते हैं (१) आदमी असली चीन के खुदपसंद कायर कपटी हासिद शक्की कीनःवर चालाक मिहनती मुतहम्मिल हलीम और खुशअखलाक होते हैं। चिहरे उन के जर्द पेशानियां बलंद आंखें छोटी और बाल काले। औरतों के पैर के पंजों का छोटा होना इस मुल्क की खास और मशहूर बातों से है, जितना जिस औरत के पैर का पंजा छोटा होता है उतनी ही वह खूबसूरत गिनी जाती है, यहां तक कि उस मुल्क में जनाने जूते चार इंच से अधिक लंबे नहीं बनते, यह रस्म वहां हजार बरस से निकली हैं। कहते हैं कि एक दफ़ा औरतों ने मिलकर बादशाहपर हमला किया था, तभी से यह आईन जारी हुआ, छोटी ही उमर से उन के पैर के पंजे ऐसे कसकर पट्टियों से बांध रखते हैं, कि फिर बड़े होने पर वे बढ़ने नहीं पाते, और यही कारन है कि यद्यपि वहां की औरतें पर्दा नहीं करतीं, जाली झरखों में मुह खोले बैठी रहती हैं, पर तौभी घर से बाहर कम नजर पड़ती हैं, क्योंकि पंजा पैर का छोटा रहने से चलना फिरना उन को बहुत कठिन है। लड़कियों को वहांवाले भी रजपूतों की तरह हलाक करडालते हैं, पर बहुत कम। मजहब चीनियों का बौध है, गोश्त चीन के बादशाह की अमलदारी में सब खाते हैं। देवी देवतों की वहां हिंदुस्तान से भी जियादती है, ऐसा पहाड़ दून जंगल जिला घर और

---

(१) सुनते हैं कि बदमाशों ने बलवा करके अब इस मीनार को बिलकुल ढाह डाला।

मकान कोई नहीं कि जिस्का एक जुदा देवता मुकर्रर न हो बरन गरजना चमकना बरसना आग अन्न दौलत जन्म मृत्यु सीतला नदी झील चिड़ियें मछली जानवर इत्यादि के भी अलग अलग देवता हैं, एक पादरी बढ़ावे की राह से कहता है कि चीनियों के देवता दर्या के बालू से भी अधिक हैं। वे लोग ज्योतिष और यंत्र मंत्र से भी बड़ा निश्चय रखते हैं, बौध मत के अनुसार पुनर्जन्म का होना सत्य मानते हैं, और हिंसा करना बहुत बुरा जानते हैं। उस मत से नीचे लिखे हुए पांच महावाक्य हैं। हिंसा मत करो १। चोरी मत करो २। झूठ मत बोलो ३। शराब मत पीयो ४। और जो साधु संत बनो तो बिवाह न करो ५। मुसलमान भी उस अमलदारी में बहुत रहते हैं। तातार के आदमी खूंख़ार लड़ाक आज़ादमनिश और शिकारदोस्त हैं, घोड़े बहुत रखते हैं, उन का गोश्त भी खाते हैं, और घोड़ियों का दूध बड़े स्वाद के साथ पीते हैं। वे गांव और शहरों में नहीं बसते, जहां अच्छी चराई और नज़दीक पानी पाते हैं उसी मुक़ाम पर कुछ दिनों के वास्ते अपनी भेड़ी बकरी और शकट लेजाकर ख़ेमे खड़े कर देते हैं। कोई उन में से अपने मुर्दों को आग में जलाता है, कोई मिट्टी में गाड़ता है, कोई कुत्तों को खिला देता है, और कोई काट काट कर आप ही खाजाता है। तिब्बत के आदमी मिहनती और संतोषी हैं, लेकिन आदमीयत की बूबास कम रखते हैं, वे हमेशः गर्म कपड़े पहनते

हैं, गर्मी से केवल ऊनी और जाड़ों में पोस्तीन समेत। चीन के आदमी तीरंदाज़ी में उस्ताद हैं, कुर्सियों पर बैठते हैं, और मेज़ पर खाना खाते हैं, कांटे की जगह दो पतली पतली सलाइयां हाथीदांत अथवा सोने चांदी की रखते हैं, उसी से उठा उठाकर खाना खाते हैं, हाथ नहीं लगाते। खाना बहुत किस्म का पकाते हैं, रीछ के पंजे, घोड़े के सुम, चौपायों के खुर, और चिड़ियों के घोंसलों तक उन के शोरबे में काम आते हैं, बिरली चीज़ दुनियां में ऐसी होवेगी कि जिस्को चीन के आदमी नहीं खाते। अमीरों के मकान की दीवारें साटिन इत्यादि कीमती कपड़ों से मढ़ी रहती हैं, और उन पर नीत के बचन बहुत खूबसूरती के साथ लिखे रहते हैं। औरतें सिर के ऊपर बालों का जूड़ा बांध कर उन में फूल लगाती हैं। यद्यपि वहां बिधवा औरतों को दूसरी शादी करने का इख्तियार है, लेकिन तो भी न करना बड़ी इज्ज़त की बात है। मसहरी में वहां के ग़रीब ज़मीदार भी सोते हैं,। चाय और तंबाकू वे लोग बहुत पीते हैं, यहांतक कि हर शख्स एक ज़रदोज़ी बटुआ तंबाकू से भरा हुआ कमर में रख-ता है, बरन औरतें भी तंबाकू पीती हैं। पोशाक वहां वालों की लंबी आस्तीनोंवाला कुरता पाजामा पोस्तीन और चुग़ा है, लेकिन टोपियां मर्दों की इतनी चौड़ी होती हैं कि मेंह पानी में छतरी की कुछ ऐसी इहतियाज नहीं पड़ती। पंखी एक छोटी सी सदा सब के हाथ

से रखती है, बाएं हाथ के नाखुन वहां के आदमी नहीं तराशते बढ़ने देते हैं, कि जिसमे लोग उनको मिहनती मजूर न समझें, पतंग उड़ाने का बड़ा शौक़ रखते हैं, लाखों आदमी वहां अपने घरबार समेत कश्तियों ही पर गुज़ारा करते हैं, और रात दिन जल ही मे डेरा रखते हैं, एक किस्मकी चिड़िया को ऐसा सधाते हैं कि वह पानी मे से मछली पकड़ कर उन्हें ला देती है, इन चिड़ियों के गले मे छल्ले पड़े रहते हैं जिस मे मछलियों को निगलने न पावें, जब हज़ारों चिड़ियें इस तरह की एकबारगी छूटती हैं तो देखते ही देखते शिकारी के साम्हने मछलियों का ढेर लग-जाता है। सती अगले ज़माने मे चीन और तातार के दर्मियान होती थीं, अब यह ख़राब रस्म बहुत दिनों से मौकूफ़ होगई। पीला रंग वहां बादशाह का है, अर्थात इस रंग का कपड़ा सिवाय बादशाह के और कोई नहीं पहने पाता, जिस किसी के पास इस रंग का कपड़ा दिखलाई देवे उस को ज़रूर शाहज़ादों से ख़याल करना चाहिये। चीनी लोग अपने मुर्दों को ज़मीन पर रख के ऊपर से क़बर बनादेते हैं, अकसर वहां के आदमी अपने बुज़ुर्गों की लाश को मसाले लगाकर मुद्दत तक संदूक के दर्मियान घर मे रख छोड़ते हैं, जो हो वहां के आदमी अपने पुरखा और पितरों को बहुत मानते हैं, और मुद्दतों तक याद रखते हैं। इल्म की क़दर होने के बाइस यहां के आदमी पढ़ने लिखने मे बड़ी

मिहनत करते हैं, भिसकानर लिखती है कि एक गरीब का लड़का जो दिन भर अपने मावाप का पेट भरने के वास्ते उद्यम करता था और इतना भी मक़दूर न रखता था कि रात को चराग़ जालाने के लिये तेल बाज़ार से खरीद लावे तो वह क्या काम करता कि जंगल से जुगनू पकड़ लाता और उन को बारीक कपड़े मे रखकर उन्हीं की रौशनी से किताब पढ़ा करता, और इसी तरह पढ़ते पढ़ते कुछ दिनों मे ऐसा फ़ाज़िल ज़ुआ कि बादशाह ने उस को अपना वज़ीर बनाया, निदान वहां विद्या का बड़ा प्रचार है, बिरला ऐसा होगा जो लिखना पढ़ना न जाने। जब से तातारियों ने चीन को फ़तह किया वहांवाले उन के ज़ुक्म बमूजिब सारे सिर के बाल मुड़वाकर केवल एक पतली सी पैर तक लंबी छोटी रखते हैं। चीन मे सिपाही की बनिस्बत मुंशी की इज़्ज़त बज़ुत जियादः है, और वहांवाले महाजन और सौदागर की बनिस्बत किसान और ज़मीदारों की बड़ी क़दर करते हैं, यहां तक कि साल मे एक दिन खुद बादशाह अपने हाथ से हल जोतता है, और उस दिन को बड़ा त्योहार मानते हैं। जब बादशाह मरजाता है तो सारे मुल्क के आदमी सौ दिन तक मातम रखते हैं, और कोई काम खुशी का नहीं करते। वहां के हाकिम जब बाहर निकलते हैं, उन के जलेब मे जल्लाद और कोड़े बर्दार और ज़ंजीर वाले आगे चलते हैं, यदि रास्ते मे किसी को कुछ बुरा काम करते ज़ुए पाते हैं, तो उसी दम और उसी

जुम्हान पर उसे मजा दे देते हैं। रुपए अशरफियों के बदले यहां चांदी सोने के कुर्स (१) और छेदवाले (२) तांबे के पैसे चलते हैं। तिब्बतवालों की जुबान वही है जिसे भोटियाबोली कहते हैं, पर शास्त्र उन के बहुधा प्राकृत भाषा में लिखे हैं। येलोग अपनी विद्या की जड़ काशी बतलाते हैं। चीनियों की भाषा में भूगोल खगोल वैद्यक काव्य अलंकार इत्यादि सारी विद्या मौजूद हैं, और तवारीख़ अर्थात इतिहास तो उन के यहां सारी क़ौमों से बढ़कर हैं। शब्द उन के समस्त एकाक्षरी हैं, अर्थात प्रत्येक शब्द के वास्ते एक जुदा अक्षर मौजूद है, और इसी कारण उन की वर्णमाला में ८०००० अक्षर गिने जाते हैं, इन में २१४ तो असली हैं, और बाकी संयुक्ताक्षर अथवा युक्ताक्षर हैं, और इसी वास्ते ग़ैर मुल्कवालों को उन की जुबान का लिखना पढ़ना सीखना बहुत मुश्किल है। वहांवालों के लिये गांव गांव में इस्कूल मुकर्रर हैं, छ बरस धर्मशास्त्र कंठ करने में जाता है, और छ बरस में व्याकर्ण काव्य अलंकार और इबारत लिखना सीखते हैं, निदान बारह बरस बाद वे परीक्षा देने के योग्य होते हैं, और हर ज़िले में तीन साल के बीच दो बार परीक्षा ली जाती

(१) कुर्स सौ सौ पचास पचास तोले के और इससे न्यूनाधिक भी होते हैं सूरत उनकी नाव की तरह॥

(२) पैसों के बीच में छेद रहता है और उनको एक रस्सी में माला की तरह पिरो रखते हैं, जिसको जितने पैसे देने होते हैं उतने पैसों पर गिरह देकर रस्सी काट देते हैं।

है, जो विद्यार्थी इस पहली परीक्षा से पूरे उतरते हैं वे उस सूबे के जिस्मे वह ज़िला होता है हाकिम के पास दूसरी परीक्षा के लिये भेजे जाते हैं, और जो विद्यार्थी उस हाकिम की परीक्षा से जचते हैं उन को वह एक एक सर्टिफ़िकट देकर बड़े सूबेदार के पास भेजदेता है, इस तीसरे स्थान से बड़ी कड़ी परीक्षा होती है, पहले सारे विद्यार्थियों की तलाशी लेलेते हैं कि जिस्से उन के पास कोई लिखा हुआ काग़ज़ या किताब न रहे, और फिर एक एक को जुदा जुदा कोठरी से बंद करदेते हैं, वहां वे प्रश्नों का उत्तर लिखकर दूसरों के साथ मिल न जाने के लिये उन पर चिन्ह मात्र कर देते हैं नाम लिखने की मनाही है कि जिस्से परीक्षक किसी की तरफ़दारी न करें, निदान इस तीसरी परीक्षा से जो निपुण ठहरता है उसे पहले दर्जे का विद्यार्थी कहते हैं, और वह नीले रंगका कपड़ा सियाह गोट लगा हुआ पहनता है, और अपनी टोपी पर एक चांदी की चिड़िया रखता है, चौथी परीक्षा सूबे के सदरमुक़ाम से तीसरे साल बादशाह के दीवान और उस सूबे के सारे हाकिमों के साम्हने होती है, कोठरियों पर पहरे तैनात रहते हैं, यदि प्रश्नों का उत्तर लिखने से एक अक्षर की भी भूल रहे तो परीक्षकलोग उस काग़ज़ को फेंक देते हैं, और उस्से से विद्यार्थी का निशान काटकर दर्वाज़े पर चिपका देते हैं, जिस्से विद्यार्थी को इस बात की ख़बर भी पहुंच जाय और सभा के साम्हने लज्जित भी न होना पड़े, जो विद्यार्थी इस

चौथी परीक्षा में पार हुए उनके मानो भाग्य जागे उन के नाम टिकटों पर लिखकर शहर में हर तरफ़ लटकाए जाते हैं, हाकिम उन के मा बाप और रिश्तेदारों को बुलाकर बड़ी ख़ातिर करते हैं, उमरा उन की दावत करते हैं, और ख़िलत देते हैं, फिर उन को वहांवाले क्वूजिन अर्थात श्रेष्ठजन पुकारते हैं, और वे ऊदे रंग का कपड़ा काली गोट लगाकर पहनते हैं, और टोपी पर सोने की चिड़िया रखते हैं, उन को सब तरह के सर्कारी उहदे मिल सकते हैं, और यदि वे बुद्धि और विवेक के साथ काम करें थोड़े ही दिनों में धनवान और बड़े आदमी बन जाते हैं, पर चौथी परीक्षा के ऊपर दो दर्जे और भी रखे हैं, जो क्वूजिन लोग उन दर्जों के पाने की चाह रखते हैं उन्हें पेकिन में जाना पड़ता है, और वहां उन की परीक्षा तीसरे साल राजधानी के बड़े पाठशाला हानलिनकालिज में ली जाती है, प्राय दस हज़ार क्वूजिन, जो परीक्षा देने के लिये आते हैं, उन में से प्राय तीन सौ पक्के ठहरते हैं, और तब उन तीन सौ की परीक्षा बादशाह के साम्हने ली जाती है, इस आख़िरी परीक्षा में जो जीते वह अपने मन की मुराद को पहुंचे, डंके निशान के साथ बड़े जुलूस से शहर में घुमाते हैं, और उसी दम हानलिनकालिज में भरती होजाते हैं, वज़ीरी इत्यादि बड़े उहदे ख़ाली होने पर उन्ही को मिलते हैं, और इस बंदोबस्त से गांव के कारदारों को भी सारा धर्मशास्त्र जिस्के बमजिब काम करना पड़ता है कंठ याद

रहता है। हिक्मत और कारीगरी चीनियों की मशहूर है, यद्यपि वे लोग अबतक धूंएं के जहाज़ और गाड़ियां और टेलिग्राफ़ अर्थात तार की डाक इत्यादि काम की चीजें और तरह बतरह की कलें जो इंगलिस्तान से तयार होती हैं बनानी नही जानते, पर तौ भी बारीकी सफ़ाई नज़ाकत और खूबी से वहां के कारीगरों की किसी मुल्क के भी आदमी बराबरी नहीं करसकते। ये लोग छापना और बारूत बनाना और चुम्बक को काम मे लाना अर्थात दिशा देखने के लिये कम्पास इत्यादि तयार करना उस्से भी पहले जानते थे कि जब से वह फ़रंगिस्तान से ईजाद हुए। बर्तन चीनी स्वच्छ और सुंदर होते हैं (१) यह हिक्मत चीनियों ने बारह सौ बरस से पाई है। क़ंदीलें चीन की मशहूर हैं, निहायत उमदा रंग बरंग की बड़ी हिक्मत से तयार करते हैं, और इस को मकान की सजावट मे पहली चीज़ समझते हैं, जो क़ंदील दर्वाज़े पर लटकाई जाती है उस्पर मकान के मालिक का नाम भी बहुत खूबसूरती के साथ लिखा रहता है। आगे ये लोग शीशा बनाना नहीं जानते थे, लेकिन अब यह फ़न भी उन लोगों ने फ़रंगियों से सीख लिया। इस बात से वहां के आदमी बड़े उस्ताद हैं कि जैसी चीज़ देखें वैसी ही बना लेवें, एक फरंगि-

(१) वहां एक तरह का पत्थर होता है, उस्को एक प्रकार की मिट्टी के साथ कि वह भी खास उसी मुल्क मे होती है मिलाकर ये बर्तन बनाते हैं।

स्तान का सौदागर बड़ा कीमती मोती बेचने के लिये उस मुल्क में ले गया था, वहां के आदमी हर रोज़ उस मोती के देखने को आया करते, एक दिन एक चीनी ने कई सौ रुपए बयाने के देकर उस मोती की डिबिया पर मुहर कर दी, और यह क़रार किया कि जब बिलकुल रुपया दूंगा मोती लेजाऊंगा, ग़रज़ वह चीनी फिर न आया, और उस सौदागर के जहाज़ खुलने का दिन पहुंचगया, यद्यपि मोती न बिका पर तौभी उस का मन निश्चिन्त था, क्योंकि बयाने में उस की राहखर्च से भी अधिक रुपया मिलगया था, निदान जब घर आकर उस चीनी की मुहर को तोड़कर मोती डिबिया से बाहर निकाला, और एक जौहरी को बेचने के वास्ते देने लगा तो मालूम हुआ कि वह मोती झूठा है, चीनी ने हथफेर किया, सच्चा मोती तो उड़ा लिया और वैसा ही मोती झूठा बनाकर उस डिबिया में रख दिया। वहां के आदमी हाथीदांत पर ऐसी नक़्क़ाशी करते हैं कि गोले के अंदर ही अंदर दूसरे जालीदार गोले तराशते और उन पर नक़्क़ाशी करते चले जाते हैं। यद्यपि बारूत का बनाना ये लोग बहुत दिनों से जानते थे, परंतु तोप का ढालना डेढ़ ही सौ बरस से सीखा है। चाय रेशम नानकीन कपड़ा चीनी के बर्तन शक्कर दारचीनी काफ़ूर कागज़ हाथीदांत और कचकड़े की चीज़ें और खिलौने इत्यादि वहां से दिसावरों को जाते हैं। पौने सात लाख मन चाय हर साल कांटन से जहाज़ों पर लदती है। छींट बनात कपड़े

ऊदबिलाव के चमड़े गैंड़े के खाग मोर के पर और शंख इत्यादि अंगरेजी और हिंदुस्तानी चीजें अक्सर तिब्बत की राह भी चीन से पहुंचती हैं। तिब्बत से पश्मीना कश्मीर मे आता है, और फिर वहां से शाल दुशाले बनकर चीन को जाते हैं। यद्यपि चीन के आदमी अपनी तवारीखों से बहुत पुराने जमानों का हाल लिखते हैं, लेकिन जिन पर कि एतिमाद हो सकता है वह इकतीस सौ बरस से इधर के हैं कि जब चौ बादशाह और कानफ्यूशियस हकीम पैदा हुए, प्राय ८०० बरस वहां की बादशाहत चौ के खानदान मे रही, परंतु उस समय खंड खंड के जुदा जुदा राजा थे बादशाह केवल नाम को था, चीन बादशाह ने उन सब को अपने अधीन किया, और तातारियों के हमले से बचने के वास्ते वह बड़ी दीवार बनाई कि जिस्का हाल ऊपर लिख आए हैं, प्राय सौ बरस बादशाहत उस्के खानदान से रहकर फेर हान के वंश मे आई। सन ६२२ से ८९७ तक तांग के खानदान मे रही, फिर ५२ बरस बदअमली रहकर सुंग के घराने मे आई। तेरहवीं सदी के अखीर से मुगलों ने उस विलायत को फतह किया, और ८५ बरस अपने कबजे मे रखा। काबलेखां चंगेजखां का पोता इस खानदान मे बड़ा नामी हुआ। सन १३६६ से सन १६४४ तक यह सलतनत फिर चीनियों के हाथ मे अर्थात मिंग के खानदान मे रही। सन १६४४ से तातारियों ने उसे दबाया, और शंची नाम उन का बादशाह वहां के तख्त पर बैठा, तब से अब तक

उसी घराने मे यह सलतनत चली आती हैं, और चीन और तातार दोनों विलायतों को एक ही बादशाहत गिनी जाती है। इन तातारी बादशाहों ने बिलकुल चाल-चलन और तरीके चीनियों के इख़्तियार करलिये, इस बाइस से वह बादशाह उन को परदेशी नहीं मालूम होते। इन लोगों का यह आईन है कि परदेशी को अपने मुल्क मे नहीं आने देते, केवल एक बंदर कांटन का ग़ैर मुल्क के सौदागरों के वास्ते मुक़र्रर था, उसी मुक़ाम पर फ़रंगिस्तान के भी सब सौदागर लोग आकर चीनियों के साथ लेनदेन किया करते थे, अंगरेज़ लोग अफ़्यून की तिजारत से बड़ा फ़ाइदा उठाते थे, और बादशाह के यहां से अफ़्यून बेचने की इन लोगों को मनाही थी, क्योंकि इस के खाने से उस्की रऐयत का नुक़सान था, और सब लोग अफ़्यूनी हुए जाते थे, नाचार जब अंगरेज़ अफ़्यून बेचने से न रुके तो उसने सन १८३८ से उनके जहाज़ों की तलाशी लेकर प्राय बीस हज़ार अफ़्यून के संदूक दर्या से डुबा दिये, उस को सर्कार अंगरेज़ी की क़ुदरत औ ताक़त मालूम न थी, वह तब तक दुनिया मे अपने से अधिक बरन बराबर भी किसी को नहीं समझता था, निदान इस ज़ियादती का बदला लेने के वास्ते कई एक दुखानी (१) और जंगी जहाज़ कुछ फ़ौज के साथ सर्कार की तरफ़ से चढ़गए, और बाद बहुत सी लड़ाइयों के यह सर्कारी फ़ौज फ़तह फ़ीरोज़ी के निशान उड़ाती हुई

(१) दुखानी जहाज़ उसे कहते हैं जो धूंएं के ज़ोर से चलता है।

नानकिङ शहर में दाखिल हुई, और करीब था कि दारुस्सल्तनत पेकिन को लेलेवे, परंतु उनतीसवीं अगस्त १८४२ को बादशाह के मोतमदों ने आकर बमूजिब सर्कार की तजवीज़ की हुई शर्तों के सुलह करली, और सुलहनामे पर दस्तखत कर दिये, इस सुलहनामे की रूसे चीन के बादशाह को हाङ्काङ का टापू हमेशः के वास्ते अंगरेज़ों के हवाले करदेना पड़ा, और एक बंदर कांटन की जगह पांच बंदर अर्थात कांटन एमाय फ़ूचूफ़ू निङ्पो और शांघे उन के वास्ते खोलना और चार करोड़ साढ़े बहत्तर लाख रुपया लड़ाई का खर्च और अफ़्यून का नुकसान अदा करना पड़ा। एक साहिब जो उस लड़ाई में मौजूद थे चीनियों की जवांमर्दी और लड़ने का हाल इस तरह पर बयान फ़र्माते हैं, कि जब सर्कारी फ़ौज की कश्तियां एक किले के नज़दीक पहुंची कि जो दर्या कनारे था तो क्या देखते हैं कि उस किले के सब आदमी बाहर दर्या कनारे आकर बड़े बड़े कागज़ के अजदहे और देव अंगरेज़ी फ़ौज को दिखला दिखला कर कलों के ज़ोर से उन के हाथ और मुंह हिलाते हैं, निदान जब सर्कारी फ़ौज ने देखा कि उन के पास न तोप है न कोई दूसरा हथियार केवल लड़कों की तरह खिलौनों से डराना चाहते हैं तो उन के लड़कपन पर रहम खाकर सिपाहियों ने फ़ौरन् कारतूसों से गोलियां दांत से काट काटकर निकाल डालीं और खाली बंदूकें छोड़ीं, आवाज़ ही भी बंदूक की उन पर ऐसी दहशत ग़ालिब हुई कि सब के सब एक लहज़े में काफ़ूर होगए।

बादशाह वहां का शहंशाह कहलाता है, मुसल्मान उस्को खाकां और फ़गफ़ूर कहते हैं (१) और रऐयत उस्को अपने बाप की तरह जानती है, और बाप के नाम से पुकारती है। अंगरेज़ लोग वहां के सर्दारों को मैंडरिन कहते हैं। तिब्बत का मालिक लामा गुरु कहलाता है, लेकिन वह केवल पूजने के वास्ते है, चीनी लोग उस को सचात बुध का अवतार मानते हैं, और कहते हैं कि वह अमर है, जब उस का बदन बुढ़ापे से जीर्ण होता है तो शरीर बदल लेता है, पर अंगरेज़ लोग इस बात को केवल उस्के कार्दारों का फ़िरेब समझते हैं, और इस तौर पर ख़याल करते हैं, कि जब लामा गुरु मरजाता है तो उस्के कार्दार किसी तुर्त के जन्मे हुए लड़के को लाकर गद्दी पर बैठा देते हैं, और फिर उस्को ऐसे ढब से सिखाते पढ़ाते हैं, कि वह सारी बातें पहले लामाओं के वक़्त की बतलाने लगता है, और उस के चेले और शिष्य उन को करामात समझकर निश्चय मान जाते हैं। सन १७८३ से जब कप्तान टर्नर साहिब सर्कार की तरफ़ से सफ़ीर अर्थात दूत बनकर तिब्बत को गए थे तो उस वक़्त लामा की उमर कुल अठारह महीने की थी, लेकिन कप्तान साहिब अपनी किताब से लिखते हैं कि मुलाक़ात के वक़्त वह बड़े गौरव और प्रतिष्ठा के साथ मसनद पर बैठा रहा, और बराबर इन की तरफ़ मुतवज्जिह रहा, जब कप्तान साहिब

(१) फ़ग़फ़ूर की असल बगपूर है, अर्थात भगवान का बेटा, बग प्राचीन पारसी भाषा में भगवान को और पूर पुत्र को कहते हैं॥

कुछ बात कहते तो जवाब में वह इस अंदाज़ से गर्दन हिलाता कि जैसे कोई बड़ा आदमी किसी बात को समझकर इशारा करे, जब कप्तान साहिब का पियाला चाय से खाली होता तो वह भवें चढ़ाकर और सिर हिलाकर चिल्लाता और अपने आदमियों को चाय देने का इशारा करता, वरन एक सोने के पियाले से कुछ मिठाई निकालकर अपने हाथ से कप्तान साहिब को दी। लामा जो शरीर छोड़ता है सुखलाकर और उसपर चांदी की खोल चढ़ाकर मंदिर में पूजा के वास्ते रखदेते हैं। मुल्क का कारबार उसका नायब जिसे राजा कहते हैं करता है, लेकिन हकीकत में इख़तियार बिलकुल उस सुबेदार का है कि जो चीन के बादशाह की तरफ़ से वहां रहता है। आईन और इंतिज़ाम चीन का एशिया के सब मुल्कों से बिहतर है, वहां का बादशाह चार वज़ीर रखता है, और उन के नीचे छ महकमे हैं, पहले महकमे के हाकिमों का यह काम है कि हर एक ओहदे पर उस के लाइक़ आदमी मुक़र्रर करें और देखें कि हर एक ओहदेदार अपना अपना काम बख़ूबी अनजाम देता है, दूसरे के ज़िम्मे माल का काम है, तीसरे का काम यह है कि लोगों का चाल तरीक़ा और दस्तूर दुरुस्त रखें, चौथे के ज़िम्मे लशकर है, पांचवें के ज़िम्मे सज़ा देना गुनहगारों को, और छठे महकमे के हाकिम इमारत और सड़क दुरुस्त रखते हैं, सिवाय इन महकमों के दारुस्सल्तनत में हानलिन नाम एक बड़ा पाठशाला है, जबतक वे लोग जो

ज़िले के इस्कूलों मे विद्या उपार्जन करते हैं इस मदरसे-वालों के साम्हने परीक्षा मे नही उतरते कोई बड़ा उहदा नही पाते। रिशवत लेने की सज़ा वहां फांसी है। वहां कुछ यह दस्तूर नहीं है कि अमीर ही के लड़के या बादशाह के संबंधी बड़े कामों पर मुक़र्रर हों, बरन जो मनुष्य जैसा पढ़ा लिखा होता है और इस्कूल मे जिस दर्जे की परीक्षा देता है उसी दर्जे का उस को काम मिल जाता है, चाहे वह ग़रीब मे ग़रीब ज़मीदार का लड़का क्यों नहो। यह भी वहां का आईन है कि यदि किसी ने फांसी दिये जाने का अपराध किया हो, और उस्के मा बाप बूढ़े हों, और उन के कोई दूसरा बेटा या पोता सोलह बरस से जियादः का न हो, तो उस का अपराध सर्कार से क्षमा होता है, निदान वहां मा बाप की बड़ी इज्ज़त और क़दर है, एक आदमी ने अपनी मा पर हाथ चलाया था सो उस ने बादशाह के हुक्म से उसी दम फांसी पाई, और उस्का घर ढाहा गया, और उस की स्त्री और उस ज़िले के हाकिम को भी सज़ा मिली, सच मा बाप का ऋण लड़का लड़कियों पर ऐसा ही है कि यदि हम लोग अपनी जान तक भी उन की नज़र करें तो उन के ऋण से कदापि अदा न हों। वहां का यह भी आईन है कि जब साल पूरा होने को एक दिन बाकी रहे तो सब लोग अपना हिसाब किताब फ़ैसल करके जिस किसी का जो कुछ देना दिलाना हो दे ले डालें, यदि कोई उस दिन अपना क़र्ज़ अदा न करे तो लेनदार को

इख़तियार है जो चाहे उस पर ज़ियादती करे, बादशाह उस की नालिश फ़र्याद हर्गिज़ नहीं सुनता, इसी वास्ते वहां के आदमी किफ़ायती होते हैं, वाहियात मे रुपया नही उड़ाते। यह भी वहां का एक दस्तूर है कि यदि कोई बात किसी आदमी से बेजा या गुनाह की बनजावे तो उस आदमी के साथ उस ज़िले के हाकिम को भी थोड़ी बहुत सज़ा मिलती है, क्योंकि बादशाह कहता है कि यदि हाकिम उस आदमी को नीति और धर्मशास्त्र अच्छी तरह समझा देता तो वह ऐसा अपराध क्यों करता, बरन यदि कभी किसी हाकिम के ज़िले मे कुछ ज़ियादः ख़राबी पड़जाती है तो उस महकमे के हाकिम तक बादशाह की ख़फ़गी मे पड़ते हैं कि जिस्के ज़िम्मे हर एक उहदे पर उस उहदे के लाइक़ आदमी मुक़र्रर करने का काम है, और इसी वास्ते गांव गांव के हाकिम प्रत्येक अमावाश्या के दिन लोगों को धर्मशास्त्र पढ़कर सुनाते हैं, और साल मे एक बार ज़िले का हाकिम गांव गांव के हाकिमों को जमा करके इसी तरह उपदेश देता है। इस धर्मशास्त्र की पुस्तक मे चीनियों की आईन बमूजिब पिता माता की सेवा करना, पित्रों को मान्ना, आपस मे मेल मुवाफ़क़त रखना, किसानी और ज़मीदारी कोसब से अच्छा काम जान्ना, किफ़ायत और मिहनत के फ़ाइदे, विद्या अभ्यास का फल, बादशाह की आज्ञाकारी, ऐसी बातें लिखी हैं। उदाहरण के लिये कुछ थोड़ा सा हाल मेल और मुवाफ़क़त रखने के बिषय मे उन के धर्मशास्त्र

के तर्जमा करके इस जगह लिखते हैं, बादशाह तुम लोगों को हुक्म देता है कि आपस में मेल और मुवाफ़क़त रखो जिसमें लड़ाई झगड़े और नालिश फ़र्याद यहां से दूर रहें, इस हुक्म को अच्छी तरह दिल देकर सुनो, तुम्हारे रिश्तेदार और वाकिफ़कारों में बहुतेरे आदमी बूढ़े भी होंगे, और बहुतेरे तुम्हारे हमसबक़ और हमजोली, जब गाम मुल्क तुम बाहर जाते हो यह मुम्किन नहीं किसी से तुम्हारी मुलाकात न हो, या किसी को तुम न देखो, गांव उस को कहते हैं जिस में कई घर बसें, इन में ग़रीब भी होते हैं और दौलतवाले भी, कोई तुम से बड़े हैं कोई छोटे, और कोई बराबर। एक पुराने आदमी ने ख़ूब अक़्लमंदी की बात कही है कि ऐसी जगहों में जहां बूढ़े भी रहते हैं और कमउमर भी वहां मुनासिब है कि कमउमर जियादः उमरवालों की ताज़ीम करें, इस बात का हर्गिज़ ख़याल न करें कि वे ग़रीब हैं या अमीर और पंडित हैं या मूर्ख, केवल उमर का लिहाज़ रखें, यदि दौलतमंद होकर तुम ग़रीब से मुंह फेरोगे अथवा ग़रीब होकर अमीरों पर डाह खाओगे तो इस बात से हमेशा के वास्ते तुम्हारे दिलों में फ़र्क़ बना रहेगा, बादशाह कि जो तुम लोगों को हद से जियादः प्यार करता है, नालिश फ़र्याद और मुआमले मुक़द्दमों से बहुत नाराज है, और जो कि वह दिल से तुमारी ख़ुशी और बिहबूदी अर्थात आपस की मुवाफ़क़त चाहता है, वह आप तुम्हें उपदेश देता है,

कि जिस्से तुम्हारे दर्मियान वैर विरोध न पैदा होवे, तुमलोगों ने बादशाह का इरादा बखूबी समझ लिया, तुम को उचित है कि उस्के अनुसार काम करो, और यदि तुम उस के अनुसार काम करोगे इस आज्ञाकारी से तुम्हारा अनंत उपकार होगा, और मुझे निस्संदेह निश्चय है कि तुम उस्के अनुसार काम करोगे, इसलिये अब तुम घर जाकर बादशाह की अभिलाषानुसार काम करो और अपने पिता अर्थात बादशाह के मन प्रसन्न होने के कारन हो। फौज चीन के बादशाह की गिन्ती के लिये प्राय १०००००० होवेगी, परंतु काम की सिपाह वही ८०००० जंगी और जरार आदमी हैं जो तातार के मुल्क से भरती हुए हैं। आमदनी वहां के बादशाह की ६०००००००० से अधिक नही और इस्से मालूम होता है कि वहां की रऐयत को महसूल बहुत कम देना पड़ता है।

जपान

चीन क पूर्व २६ अंश ३५ कला और ४८ अंश उत्तर अक्षांस के दर्मियान जपान के टापू हैं। नीफ़न सिटकाफ़ और क्यूस्यू ये तीन तो बड़े हैं और बाक़ी छोटे हैं, सब से बड़ा नीफ़न कुछ ऊपर ८०० मील लंबा और ८० से लेकर १७० मील तक चौड़ा है।

बिस्तार तीनों टापुओं का नब्बे हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। आबादी उस मुल्क मे तीन करोड़ आदमी की अनुमान करते हैं। जंगल उजाड़ कहीं कहीं, गांव मे गांव मिल रहे हैं। ज़मीन बहुधा कोहिस्तान और पथरीली है, ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ पड़ी रहती है, और कई एक उन मे से ज्वालामुखी भी हैं। नदी और झीलें बहुत हैं, परंतु छोटी छोटी। धरती यद्यपि उर्बरा नहीं है लेकिन किसानों की मिहनत से अन्न बहुत उपजता है, और उन्हीं प्रकारों का जो चीन मे होता है, चप्पे भर ज़मीन भी खेती से ख़ाली नही है, पहाड़ों पर जहां बैलों का हल नही चल सकता आदमी हाथ से ज़मीन खोदते हैं, खेती बारी की उन्नति के लिये वहांवालों ने यह आईन जारी रखा है कि जो धरती बरस दिन तक जोती बोई न जावे वह सर्कार की ज़ब्ती मे आवे। घोड़े और मवेशी की इस मुल्क मे कमी है, और गधा खच्चर ऊंट और हाथी वहां बिलकुल नही होता, दीमक बहुत हैं। खान से सोना चांदी लोहा और तांबा रांगा सीसा पारा गंधक हीरा अक़ीक़ यशम कोयला निकलता है, समुद्र कनारे मोती और मूंगा बहुत उमदः मिलता है, और अंबर भी हाथ लगता है। मेह वहां बहुत बरसता है, और तूफ़ान अकसर आया करता है। आदमी वहां के चालाक मिहनती निष्कपटी उदार अत्यंत संतोषी सच्चे ईमानवाले वफ़ादार मिलनसार मुतहम्मिल मुहब्बती मिहमांपर्वर होशयार दूरंदेश,

चिहरों पर संतोष की खुशी छाई हुई, चुगली को बहुत बड़ा ऐब समझते हैं, परदेसी का कभी इतबार नही करते, छोटे आदमी भी अदब क़ाइदे और शऊर सलीके के साथ रहते हैं, क्या मक़दूर कि कोई शख़्स गाली या सख़्त बात ज़ुबान पर लावे, या बद ज़ुबान अथवा झिड़क कर बोले। मकफ़ार्लेन साहिब अपनी किताब मे लिखते हैं कि वहां कुली मज़दूर को भी जब तक तुम नर्मी से न पुकारोगे वह तुम्हारी बात का जवाब न देवेगा। बदन उन लोगों का भरा हुआ, पर मोटे कम, क़द मयाना, रंग ज़र्दीमाइल, आखें छोटी चीनियों की तरह, भवें ऊंची, और गरदन तंग, सिर बड़ा, और नाक छोटी और फैली हुई, बाल काले और मोटे तेल से चमकते हुए, डाढ़ी मुंडवाते हैं, हजामत बनवाते हैं, टोपियां सींक की नुकीली जब धूप पानी से बाहर जाते हैं तब पहनते हैं, घोड़े की लगाम हाथ से लेना बेइज़्ज़ती है इसी लिये जब सवार होते हैं लगाम साईसों के हाथ से रहती है। मकान उन के बहुत साफ़ और बड़े क़रीने के साथ, हर चीज़ के वास्ते मुनासिब जगह, और हर जगह के वास्ते मुनासिब चीज़, असबाब कम और सफ़ाई अधिक, यह नही कि सौदागरी दुकानों की तरह भरे हुए। हम्माम सब मकानों से, बदन साफ़, कपड़ा भी साफ़, वक़्त बटा हुआ, व्यर्थ समय किसी का भी नही जाता, पुत्र माता पिता के आज्ञाकारी, जहां लड़के ने होश संभाला और बाप ने उसे अपना घर सौंपा, खुराक इन

को अक्सर चावल, मांस का अहार उन के मत से निषेध है परंतु खाते हैं, मक्खन और दूध का मज़ा बिलकुल नहीं जानते, भोजन ये भी चीनियों की तरह सलाइयों से करते हैं, और बरतन उन के बहुत सुंदर और हलके जप्पानी रोगन से रंगे रहते हैं। सुबह को जो मुलाकाती आता है उस के साम्हने चाय और कागज़ के तख़ते पर कुछ मिटाई रखीजाती है, और दस्तूर है कि मिहमान के खाने से जो मिठाई बचे उसे वह उसी कागज़ मे बांधकर जेब मे रख ले जावे। नाम उमर भर मे तीन दफ़ा बदलते हैं। मुर्दों को जलाते और उन के नाम की छतरियां बनाते हैं, जलते समय उन के मित्र और भाई बंधु पुष्प वस्त्र मिठाई इत्यादि चिता मे डालते हैं। दर्या की सैर का बड़ा शौक़ रखते हैं, संध्या के समय स्त्री पुरुष सब नाव पर चले जाते हैं, शराब पीते हैं और गाते बजाते हैं, नावें बहुत सुंदर और सजीली, रंग बरंग की कंदीलों से रोशन, औरतें वहां की अकसर पतिव्रता, मजलिसों मे तीन तीन दफ़ा कपड़ा बदलती हैं, और बीस बीस गौन तक एक पर एक पहनती हैं। घड़ी के बदल तोड़े सुलगा रखते हैं, एक एक घंटे मे जितना तोड़ा जले उतने तोड़े पर निशान रहता है, और उसी से समय का प्रमाण मालूम करते हैं। मज़हब वहांवालों का बौध। भाषा वहां की निराली, एक ही शब्द के ग़रीब अमीर स्त्री और पुरुष के बोलने से जुदा जुदा अर्थ हो जाते हैं। अक्षर भी स्त्री पुरुष के वास्ते जुदा जुदा दो प्रकार के हैं, और लिखने मे वे भी

चीनियों की तरह खड़ी पंक्ति लिखते हैं, आड़ी नहीं लिखते। पाठशाला वहां लड़का लड़की दोनों के वास्ते बने हैं, गरीब से गरीब जमींदार भी लिखपढ़ सकते हैं, स्त्रियें भी ग्रंथ रचती हैं लोगों को पढ़ने लिखने का शौक है, वहां गर्मियों के मौसिम में अकसर यह बात देखने में आवेगी कि हर जगह नहर के कनारों पर पेड़ों की घनी घनी ठंढी छाया में औरत और मर्द दोनों हाथों में किताब लिये हुए बैठे हैं। कपड़े सूती और रेशमी फौलादी चाकू और तलवार और बरतन चीनी के यहां भी अच्छे बनते हैं, और रौग़न तो जपान का सा कहीं भी नहीं होता, यह संदूक कलमदान इत्यादि जिन को यहां जप्पानी कहते हैं उसी मुल्क से रंग रौग़न होकर आते हैं, वे लोग इस रौग़न को उरुसी के दरख़्त से जो उसी मुल्क में होता है पछना लगाकर निकालते हैं। डच लोगों से सीख कर दूरबीन थर्मामेटर इत्यादि यंत्र भी अब बनाने लगे हैं। एक हिक्मत वहांवालों को ऐसी आती है कि सिवाय चीनियों के और किसी को भी उस्से ख़बर नहीं है, अर्थात तीन इंच लंबी और एक इंच चौड़ी डिबिया के अंदर चील और बांस का पेड़ और आलूचे का दरख़्त कलियों समेत दिखला देते हैं। परदेसी आदमियों को ये भी चीनियों की तरह अपने मुल्क में नहीं आने देते। बनज व्योपार इन का चीन के सिवाय केवल थोड़ा सा और लोगों के साथ है, सो भी निगासकी इत्यादि उन्हीं बंदरों में जो परदेसियों के वास्ते मुकर्रर हैं। चीनियों से चावल चीनी

हाथीदांत फिटकिरी कपड़ा और फ़रंगिस्तान वालों से विलायती असबाब दवा मसाले शोरा इत्यादि लेते हैं, और तांबा सूखी मछली जप्पानी-रोग़न और रौग़नी चीज़ें उन को देते हैं। बादशाह वहां दो हैं, एक दीन का दूसरा दुनिया का। दीनी अर्थात पारलौकिक बादशाह के लिये जागीर मुक़र्रर है, उसी की आमदनी पर गुज़ारा करता है, सल्तनत के काम में दख़ल नही देता, केवल जब कोई भारी मुश्किल आ पड़ती है तो उस्से सलाह पूछी जाती है, अथवा जब दूसरा बादशाह कुचाल चलना चाहता है तो वह उसे ख़बर्दार करदेता है, वह पृथ्वी पर पांव नही रखता आदमी के कंधों पर चलता है, उस के बाल नींद में काटे जाते हैं, सारे दिन ताज पहनकर एक आसन से उसे सिंहासन पर बैठे रहना पड़ता है, बारह बिवाह करता है, और जो वस्त्र आभूषण बरतन इत्यादि उस्के और उस्की स्त्रियों के काम में एक बार आजाते हैं उन्हें फिर उसी दम तोड़ मरोड़कर फेंक देते हैं, न वह दूसरी बार उस के काम में आते हैं और न उन को दूसरा आदमी काम में लासकता। बाल बच्चे सूबेदारों के राजधानी में रहते हैं, और सूबेदारों को भी बारी बारी से एक साल अपने सूबे में और एक साल राजधानी में रहना पड़ता है। दीवान सूबेदारों का बादशाह के यहां से मुक़र्रर होता है। पांच सूबेदारों की एक कौंसल है, यद्यपि उन की बर्तरफ़ी बहाली का बादशाह को इख़्तियार है, पर बिना उन की सलाह के वह कुछ भी काम नही कर-

सकता, और न उन को बिना कसूर मौकूफ़ कर सकता है, नहीं तो मुल्क से तुरंत बलवा होजावे, यदि कौंसल और बादशाह की राय से कभी कुछ फ़र्क़ पड़े, और बादशाह कौंसल के तजबीज़ी कागज़ पर दस्तख़त न करे तो उस का अपील बादशाह के भाई बेटों से तीन शाहज़ादों के साम्हने पेश होता है, पर ऐसा काम बहुत कम पड़ता है, क्योंकि इस अपील से कौंसल की राय ठीक ठहरे तो बादशाह तख़्त से ख़ारिज होजाता है, और जो बादशाह की राय ठीक ठहरे तो फिर वज़ीर समेत सारी कौंसल का पेट चाक होता है। वहां का यह आईन है कि जब तक पुराने पड़ौसियों से नेकमआशी का सर्टीफ़िकट और नए पड़ौसियों से रहने की इजाज़त न मिले कोई आदमी अपने रहने का मकान नहीं बदलसकता। चोरी वहां बहुत कम होती है, सौदागर सोने चांदी से बैल भर कर अकेले चलते हैं। सज़ा अकसर कतल की, क्योंकि वहां-वालों की समझ से कतल के सिवाय और कोई सज़ा गरीब अमीर को बराबर नहीं पहुंच सकती, और इसी लिये वहां जुर्माना कभी नहीं लियाजाता। फ़ौज वहां की एक लाख पैदल और बीस हज़ार सवार अनुमान करते हैं। आमदनी इस बादशाहत की अठाईस करोड़ रुपया साल है। दारुस्सल्तनत जेडो से जो ३६ अंश उत्तर अक्षांस और ४० अंश पूर्व देशांतर से २२ मील लंबा बसा है पंद्रह लाख आदमी की बस्ती बतलाते हैं। मकान अकसर लकड़ी और बांस के, नदी और नहरें शहर के बीच से

बहती हैं, दुतरफ़ा उनपर सुंदर दरखत लगे ऊये और जगह जगह पर पुल बने ऊए। बादशाह का महल शहर के अंदर आठ मील के घेरे मे बना है, दीवानआम ६०० फुट लंबा ३०० फुट चौड़ा बिलकुल देवदार की लकड़ी का बना है, और उसपर निहायत उमदः जप्पानी रंग रौगन किया है।

एशियाईरूस

एशियाई इस वास्ते कहते हैं कि रूस का मुल्क कुछ तो एशिया से पड़ा है और कुछ युरुप अर्थात फ़रंगिस्तान मे गिना जाता है, इस लिये एशियाई का बयान जो एशिया से पड़ा है एशिया के साथ और यूरुपी अर्थात फ़रंगिस्तान के रूस का वर्णन जो युरुप मे गिनाजाता है फ़रंगिस्तान के साथ किया जावेगा, बरन इस बादशाहत का ज़ियादः बयान फ़रंगिस्तान ही के साथ होवेगा, क्योंकि राजधानी इसकी पीटर्सबर्ग फ़रंगिस्तान मे बसी है। जानना चाहिये कि एशियाईरूस, जो सिवाय ककेसस के कोहिस्तानी ज़िलों के ४८ से ७८ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५८ अंश पूर्व देशांतर से १७० अंश पश्चिम देशांतर तक चलागया है, उत्तर तरफ़ उत्तर समुद्र से, और दक्षिण तरफ़ चीन तरान ईरान और एसियाईरूम से, पूर्व और पासिफ़िक

उत्तर ध्रुव
चीन
अलताई पहाड़
५०
६०
७०
८०
९०
१००
११०
१२०
१३०
१४०
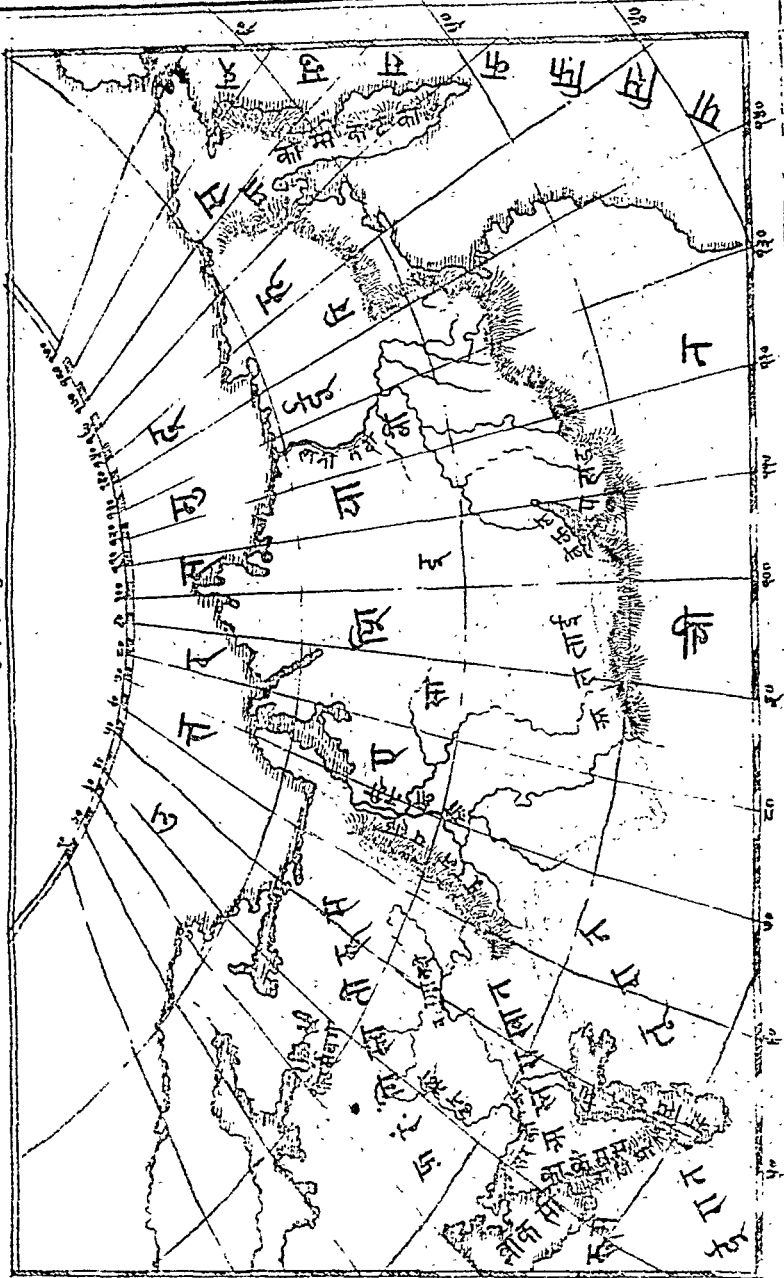
समुद्र से, और पश्चिम फ़रंगिस्तानीरूस से घिरा हुआ है। वह पश्चिम से पूर्व को ५००० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को १५०० मील चौड़ा होवेगा। बिस्तार तीस लाख मील मुरब्बा, और आबादी फ़ी मील एक आदमी अर्थात कुल तीस लाख आदमी की, और १७ सबों मे बांटा गया है, और साइबीरिया इस्तराखान और ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले ये तीन उस्के बड़े हिस्से हैं। साइबीरिया यूरल पहाड़ से पासिफ़िक समुद्र तक चलागया है, उस के नैर्ऋतकोन उन और वलगा नदी और कास्पियनसी के बीच इस्तारखान, उस्के नैर्ऋत-कोन कास्पियनसी और ब्लाकसी के बीच ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले हैं। जंगल उजाड़ बहुत है। दक्षिण भाग मे धरती उपजाऊ है, और घोड़े और मवेशी भी बहुतायत से होते हैं, परंतु उत्तर भाग मे केवल झील और दलदल और बर्फ़िस्तान ही है। पहाड़ों के दर्मियान इस मुल्क मे अलताई और यूरल और ककेसस की श्रेणि-यां प्रसिद्ध हैं, इसी ककेसस को फ़ारसी मे कोहक़ाफ़ कहते हैं, और इसी ककेसस के घाटे को बंद करने के लिये जिस्से रूसवाले ईरानपर हमला न कर सकें सिकंदर ने वह वडी दीवार वनाई थी जिसे फ़ारसी किताबों मे सद्दे इस्कंदरी लिखा है, उस का अलबुर्ज़ नामी एक शिखर प्राय १८००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है। अलताई इस मुल्क को तातार से और यूरल उसे फ़रंगिस्तान से जुदा करता है। सब मे वड़ी नदी इस मुल्क मे ओबी है, वह २५५०

मील लंबी होवेगी। लेना दो हज़ार मील लंबी है, दोनो अलताई से निकलकर उत्तर समुद्र में गिरती हैं, और वलगा इस मुल्क को फ़रंगिस्तानी रूस से जुदा करती हुई कास्पियनसी में गिरती है। भीलल की ३५० मील लंबी और ५० मील तक चौड़ी है, नवम्बर से मई तक सर्दी के सबब जमी रहती है। खान से वहां सोना चांदी प्लाटिनम् तांबा लोहा सीसा सुरमा पारा शोरा गंधक फिटकिरी हीरा लसनिया पुखराज इत्यादि बड़ी बड़ी क़ीमती चीज़े निकलती हैं, लोहा बहुत हैं, पहाड़ के पहाड़ लोहे के चुंबक का स्वभाव रखते हैं! साइबीरिया का इलाक़ा रूस के मुल्क का कालापानी है, जो कोई संगीन मुजरिम या राजद्रोही होता है उसको साइबीरिया में ले जाकर वहां उससे खान खोदने का काम लेते हैं। साइबीरिया के अग्निकोन की तरफ़ कम्सकटका का प्रायद्वीप प्राय ६०० मील लंबा है, और उसमे कई एक ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं, दूसरे तीसरे साल जब वे अपने ज़ोर पर आते हैं तो सैकड़ों हाथ ऊंची ज्वाला उठती हैं, गलीहुई धातु की नदियां जारी होजाती हैं, और उन के अंदर से इतनी राख निकलती है कि तीस तीस मील तक छा जाती है। वहां लकड़ी अच्छी होती है, परंतु सर्दी की शिद्दत से खेती वारी नहीं होसकती। वहां के आदमी शिकार मारकर अथवा दरख़्तों की छाल जंगली फलों के साथ मिलाकर अपना पेट भरते हैं, और नाव की तरह विना पहिये की गाड़ी बनाकर और उस में

कुत्ते जोतकर वर्फ़िस्तान पर चलते हैं। इन कुत्तों का अजब स्वभाव है, गरमी के मौसिम में तो वहां के आदमी उन को जंगलों में छोड़ देते हैं, वहां वे अपनी खुराक आप तलाश करलेते हैं, और फिर जाड़े के आरंभ में खुद बखुद जंगलों से लौटकर अपने अपने मालिकों के पास चले आते हैं। सितम्बर से मई तक वहां जाड़े का मौसिम रहता है। समूर क़ाक़ुम और संजाब इत्यादि पोस्तीन बहुत उमदः होते हैं, और उन को बेचकर वहां के लोग बड़ा फ़ाइदा उठाते हैं। जंगलों के दर्मियान हिरन की क़िस्म से एक तरह के बारहसिंगे भी बहुत होते हैं, और उत्तर के इलाक़ों में लोग उनको मवेशी के तौर पर पालते हैं। आदमी इस मुल्क में रूसी क़ज़ाक़ और तातारी बहुत क़िस्म के बसते हैं, और वे लोग बड़े बीर और साहसी और पराक्रमवाले होते हैं। घोड़े की सवारी और बाज़ के शिकार में बड़ा शौक़ रखते हैं, बहुतेरे उन में क्रिस्तान हैं, और बहुतेरे मुसल्मान और बुतपरस्त। सर्कैशियाकी स्त्रियों का रूप सारी दुनिया में मशहूर है। उत्तर भाग में समुद्र के तटस्थ लोग नाटे, मज़बूत, गर्दन उन की तंग, सिर बड़ा, मुंह चकला, आंखें काली, पेशानी चौड़ी नाक चिपटी, मुंह लंबा, होंठ पतले, रंग गेहुंआं, बाल कड़े और काले कंधों पर लटकते हुए, डाढ़ी बहुत कम, और पैर छोटे होते हैं। जल के जीव मार कर पेट भरते हैं, और वस्त्र की जगह चमड़े पहनते हैं। जाड़ों के मौसिम में जब वहां महीनों की लंबी रातें होती

में (१) तो वे लोग बर्फ़ में गढ़ा खोदकर और उस्के ऊपर बर्फ़ के टोकों से कुटी सी बनाकर उसी के अंदर चुपचाप बैठ रहते हैं, और घास फूस और मछली की चरबी जला-कर उसी की आग तापा करते हैं। इस शिद्दत से सर्दी पड़ती है कि आग जलने पर भी वे बर्फ़ के मकान कदापि नहीं गलते, और जो लोग उस्के अंदर रहते हैं उन को बाहरी हवा की सख़्ती से बचाते हैं। सूरत इन बर्फ़ी कुटियों की औंधी हुई नांद की तरह, धूआं निकलने के लिये ऊपर एक छेद रहता है। साईबीरिया का इलाक़ा पहले तातार के शामिल था, सोलहवें शतक से रूस के शहंशाह ने उस्को फ़तह करके अपने मुल्क से मिला लिया, जार्जिया इत्यादि इलाके भी उसने थोड़े ही दिनों से अपने क़ब्ज़े में किये हैं। जार्जिया के इलाके से कास्पि-यनसी के पश्चिम कनारे दरख़्त और पानी से ख़ाली एक पटपर में बाकू का शहर बसा है, वहां की सारी धरती नफ़्त अर्थात मटियेतेल से तर है, और जहां कहीं छेद या दरार है उस्के अंदर से उसी प्रकार की गैस अर्थात प्रज्वलित वायु निकलती है जैसी यहां कांगड़े के पास ज्वालामुखी से निकलती है, और जिस्से रात्रि के समय कलकत्ते का सारा शहर रोशन रहता है। बाकू के भी लोग इस गैस को नलों की राह अपने मकानों में लेजाकर चराग़ की एवज़ उसी से काम करते हैं, अर्थात जहां कहीं

(१) ध्रुव के समीप महीनों की लंबी रात होने का कारण इस ग्रंथ की दूसरी जिल्द के अंत मे वर्णन होगा।

वह गैस ज़मीन से निकलती है वहां से अपने मकान तक एक नल लगा देते हैं उसी नल की राह धूएं की तरह वह गैस उन के मकान से आ निकलती है, वरन वहां के आदमी अपना खाना भी उसी गैस से पकाते हैं। शहर के पास उस स्थान पर जहां से वह गैस बहुतायत के साथ निकलती है चार नल बहुत बड़े बड़े आतिशदानों के दूदकश की तरह खड़े लगा रखे हैं, उन नलों के अंदर से उस प्रज्वलित वायु की लाटें बड़ी भभक और तेज़ी के साथ दूर तक ऊंची निकलती हैं, उसके चौफेर आध कोस के घेरे से सफ़ेद पत्थरों की ऊंची दीवारें खिची हैं, और उन दीवारों से अंदर की तरफ़ बहुत सी कोठरियां बनी हैं, और उन कोठरियों के अंदर कितने ही हिंदू फ़क़ीर जोगी और जटाधारी बैठे रहते हैं, वे अपना खाना अपने हाथ से पकाते हैं दूसरे का छूआ नहीं खाते, जब मरते हैं तो उन को घी से नहलाकर एक कुंड के अंदर जो इसी काम के लिये बनारखा है उसी गैस से जला देते हैं। जिन दिनों से उस मुल्क के आदमी अग्निहोत्री थे, और गब्र कहलाते थे, उसी समय का वह मंदिर बना है। अब भी जो वहां इस मत के आदमी बच रहे हैं उन की मदद से उसका खर्च चलता है। हिंदूलोग बाकू को महा ज्वालामुखी कहते हैं। नदियों के मुहानों से जो उत्तर हिम समुद्र से गिरती हैं अकसर करारों के टूटने पर अथवा बर्फ़ के गलने पर धरती के अंदर एक प्रकार के हाथियों के दांत बहुतायत

से मिलते हैं, बरन सन १८०३ से वर्फ के करारे के नीचे से एक मकूची लाश निकली थी, नौ फुट चार इंच ऊंची, १६ फुट ४ इंच लंबी, दांत भैंस की सींगों की तरह घूमे हुए, नौ फुट छ इंच लंबे, और साढ़े चार मन भारी, चमड़ा गहरा ऊदे रंग का ज़रा ज़रा लाली झलकती हुई, बदन पर उस्के ऊन की तरह काले काले बाल थे। वहां-वाले इन दांतों को सौदागरों के हाथ बेचते हैं, और उस जानवर का नाम मेमाथ पुकारते हैं। निदान वहां इस जान-वर के दांत और हाड़ ही मिलते हैं, जीताहुआ जानवर अब दुनिया भर में कहीं नहीं है, अर्थात हाथी तो अवश्य होते हैं, परंतु उस प्रकार का हाथी जिस्के वहां दांत मिलते हैं कहीं भी देखने में नहीं आता, और अत्यंत अद्भुत आश्चर्य यह है कि जहां वे दांत मिलते हैं वह तो केवल वर्फिस्तान है, जंगल और चारा बिलकुल नहीं, जो एक हाथी भी वहां ले जाकर छोड़ो मारे सर्दी और भूख के जल्द ही मर जावेगा, यह हज़ारों मेमाथ क्योंकर जीते थे और क्या खाते थे? अकसर विद्यावानों का यह निश्चय है कि पुराने समय में वह मुल्क गर्मसेर और जं-गलों से परिपूर्ण था, काल पाके हवा की तासीर बदल गई और अब सर्दी पड़ने लगी, इस बात के साबित करने के लिये बड़ी बड़ी युक्तियां लाते हैं, जो हो ईश्वर की महिमा अपार, इस्का अंत कोई नहीं पासकता, देखो हज़ारों बरस के पुराने जानवरों की लाशें अद्यावधि वर्फ के तले से निकलती हैं। शराब मेवा कहवा अन्न कपड़ा दवा

के गले से निकलती हैं। शराब मेवा कि हवा अन्न कपड़ा दवा

मती इत्यादि वहां दिसावरों से आता है, और नमक चाय रेशम चमड़ा चरबी जवाहिर मुश्क, समूर संजाव क़ाकुम इत्यादि वहां से दिसावरों को जाता है॥

अफ़ग़ानिस्तान

यह मुल्क हिंदुस्तान और ईरान के बीच से २५ अंश से ३७ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५८ अंश से ७२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। दक्षिण तरफ़ समुद्र, उत्तर तरफ़ तूरान, पूर्व तरफ़ हिंदुस्तान, और पश्चिम तरफ़ ईरान उस्की सीमा है। नौ सौ मील पूर्व से पश्चिम को लंबा और प्राय आठ सौ मील उत्तर से दक्षिण को चौड़ा होवेगा। बिस्तार चार लाख चौरानवे हज़ार मील मुरब्बा है, और आबादी फ़ी मील मुरब्बा २८ आदमी की, अर्थात एक करोड़ चालीस लाख आदमी उस्मे बसते हैं। इस मुल्क के तीन बड़े हिस्से हैं, उत्तर असली अफ़ग़ानिस्तान, दक्षिण बलूचिस्तान, और पश्चिम हिरात अथवा खुरासान। यद्यपि यह तमाम मुल्क अफ़ग़ानिस्तान अथवा काबुल की सलतनत कहलाता है, परंतु इन दिनों से वहां ज़िले ज़िले के हाकिम जुदा जुदा बन बैठे हैं सिर्फ़ नाम-मात्र को काबुल के अमीर के आधीन हैं, तिस्मे हिरात-वाला तो अब जुदा ही बादशाह कहलाता है। इस मुल्क

में पहाड़ और जंगल बहुत हैं, परंतु जो धरती पानी से तर है वह अत्यंत उपजाऊ और उर्वरा है। हिमालय की श्रेणी जो सिंधु के दहने कनारे इस मुल्क के उत्तर भाग में पड़ी है उसे वहांवाले हिंदूकुश कहते हैं, कई चोटियां उस की समुद्र से बीस बीस हजार फुट तक ऊंची हैं, पेड़ उस पर बहुत कम और छोटे छोटे। बलूचिस्तान में रेगिस्तान का बड़ा जंगल ३०० मील लंबा और २०० मील चौड़ा होवेगा। नदीयां हीरमंद और फ़रह दोनों जुरह की झील में जो सीस्तान के दर्मियान प्राय १०० मील लंबी होवेगी गिरती हैं, हीरमंद ६५० मील से अधिक लंबी है। मेवे काबुल के मशहूर हैं, तिस्मे भी सेब नाशपाती खूबानी अनार अंजीर सर्दे और अंगूर तो बहुत ही उमदः होते हैं। अनाज में जो गेहूं चावल इत्यादि और दरख़्तों में चील केलो देवदार बान सर्व अखरोट जैतून सोज तूत बेदमजनू इत्यादि बहुत होते हैं। बलूचिस्तान और हिरात के पहाड़ों में हींग के पेड़ जंगलों में पैदा होते हैं, और वहां के आदमी उनकी तरकारी बनाते हैं। शहतूत इस मुल्क में बहुत होता है, यहां तक कि कंगाल आदमी उसी के आटे की रोटियां पकाते हैं। सोना चांदी लसनिया माणक लाजवर्द सीसा लोहा सुर्मा गंधक हरिताल फिटकिरी नमक और शोरा खान से निकलता है। कुत्ते शिकारी इस मुल्क में अच्छे होते हैं, और बिल्ली भी लंबे बालोंवाली वहां की बहुत खूबसूरत है। दुम्बे की दुम वहां सात सेर तक भारी होती है, और

बिलकुल चरबी से भरी हुई। जंगल में शेर भेड़िये लक-
ड़बघे लोमड़ी खर्गोश रीछ हिरन बंदर सूवर साही के
सिवा भेड़ी बकरी और कुत्ते भी रहते हैं। ऊंट और
बैल वहां बड़ा काम देते हैं। और घोड़े तो उधर
के प्रसिद्ध ही हैं। चिड़ियों में उकाब बाज बगला
सारस तीतर कबूतर बतक मुर्गाबियां इत्यादि सब
होती हैं। सांप और बिच्छू बड़े होते हैं, पर नदियों
में मगर और घड़ियाल नहीं हैं, और मछलियां
भी थोड़ी ही क़िस्म की होती हैं। गर्मी सर्दी उस मुल्क
में बलंदी और पस्ती पर मुंहसर है, अर्थात कोहिस्तान
और ऊंची जगहों में तो बर्फ़ और निहायत सर्दी,
और रेगिस्तान और नीची जगहों में शिद्दत से गर्मी
रहती है। बरसात वहां नहीं होती। सराब अर्थात
मृगतृष्णा इस मुल्क में अंजान आदमी के लिये बड़े
धोखा खाने की जगह है, दूर तक ज़मीन पर पानी ही
पानी नज़र पड़ता है, बरन जिस्तरह सच्चे पानी में तटस्थ
चीज़ों की आभा पड़ती है उसी तरह उसमें भी आस पास
के दरख़्त जानवर इत्यादि झलकते हैं, और समूम ऐसी
एक प्रकार की गर्म हवा गर्मी के दर्मियान वहां के रेगि-
स्तानों में चलती है कि जो कदाचित आदमी के बदन में
लगे वह एक दम में झुलस कर बेदम होजावे। आदमी
इस मुल्क के सुन्नी मुसलमान हैं, हिंदू भी थोड़े बहुत
वहां बसते हैं। अफ़ग़ानी यद्यपि अकसर दुबले होते हैं,
परंतु मज़बूत और मिहनती और गठीले और नाक

उनकी ऊंची और चिहरे लंबूतरे। ये लोग दिल से लाग लालच डाह हठ साहस और स्वच्छंदता बज्जत रखते हैं। बलूची जन्म के लुटेरे हैं. अकसर कम्बल के तंबू तानकर मैदानों में पड़े रहते हैं, और क़ाफ़िलों पर छापा मारते हैं। जुबान अफ़ग़ानिस्तान में कई बोली जाती हैं, दस से कम नहीं हैं, परंतु पश्तो बज्जत जारी है। बलूचिस्तान में तिजारत और सौदागरी बज्जत कम है, निकास तो कुछ भी नहीं होता। अफ़ग़ानिस्तान से ऊन रेशम हिरा-गी क़ालीन तर व खुश्क मेवा हींग मजीठ तमाकू घोड़ा खच्चर फिटकिरी गंधक सीसा जसता इत्यादि चीज़ों का निकाश होता है, और विलायती हथियार कपड़ा शीशे चीनी का बरतन पशमीना नील दवा चमड़ा काग़ज़ हाथीदांत जवाहिर सोना चाय इत्यादि वहां बाहर से आता है। साबिक़ ज़माने में यह मुल्क भारतवर्षीय राजाओं के आधीन था, सिकंदर के समय से यूनानी सूबेदारों के तहत में रहा, फिर धीरे धीरे ईरान के बादशाहों के क़बज़े में आया, और ईरान के साथ वह भी खलीफ़ाओं की सलतनत में शामिल ज्जआ। सन ८६२ में जब इस्माईलसामानी खलीफ़ा के ज्जक्म से निकलकर बुखारे का स्वाधीन बादशाह ज्जआ, तो उस ने इस मुल्क पर अपना क़बज़ा रखा, अलपतगीं इस मुल्क का पहला स्वाधीन बादशाह ज्जआ, और उस्के बेटे के मरने के बाद सबुकतगीं ने ग़ज़नी को उस मुल्क की दारुस्सल्तनत मुक़र्रर किया, उस का बेटा

महमूद ऐसा बड़ा और नामी बादशाह हुआ कि न उस मुल्क में पहले कभी हुआ था और न उस्के पीछे आजतक हुआ है। सन ११८६ में यह सल्तनत गोरियों के घराने में आई, और गोरियों का घराना नाश होने पर थोड़े थोड़े दिनों तातार मुगल और ईरानियों के हाथ में रही, यहां तक कि ईरान के बादशाह नादिरशाह के मारे जाने पर अहमदशाह दुर्रानी अफ़ग़ानिस्तान का स्वाधीन बादशाह हो बैठा, और बरन लाहौर मुल्तान इत्यादि हिंदुस्तान का भी कोना दबाया। सन १८०६ में दोस्तमुहम्मद बारकज़ई ने उस्के पोते शाहशुजा और महमूद को तख़्त से ख़ारिज करके ताज बादशाही का अपने सिर पर रक्खा, और रूसियों से मिलकर हिंदुस्तान की हद पर फ़साद उठाना चाहा, तब नाचार शाहशुजा उस मुल्क के असली मालिक को जिस ने सर्कार से मदद चाही थी तख़्त पर बिठाने और दोस्तमुहम्मदख़ां को वहां से निकालने के लिये सन १८३८ में उस मुल्क के दर्मियान अंगरेज़ी फ़ौज गई लेकिन १८४१ में मुल्कियों ने दोस्तमुहम्मद के बेटे अकबरख़ां की बहकावट से बड़ा बलवा किया, सरअलकज़ंडरबर्निस साहिब और सरविलियम् मिकनाटन साहिब दोनों मारे गए, और फ़ौज भी सर्कारी, प्राय चार हज़ार जंगी सिपाही, अनुमान बारह हज़ार आदमियों की बहीर के साथ, इस अकबरख़ां की दग़ाबाज़ी और फ़िरेब और बर्फ़ की सख़्ती से बिलकुल ग़ारत हुई, केवल जेनरल सेल साहिब उस के मकर के जाल में न आए, और जलालाबाद

के क़िले पर क़ाबिज़ बने रहे। यद्यपि सन १८४२ में सर्कारी फ़ौज ने फिर उस मुल्क में जाकर क़ब्ज़ा किया परंतु जो कि शाहशुजाउलमुल्क भी उस बलवे में मारा गया था, और उस के बेटे सल्तनत की लियाक़त न रखते थे, और सर्कार को वह मुल्क अपने दख़ल में रखना मंज़ूर न था, निदान सर्कारी फ़ौज उस मुल्क को छोड़ कर लौटआई, और दोस्तमुहम्मद को भी जो क़ैद में था छोड़ दिया, अब वह उस मुल्क की बादशाहत करता है। आईन क़ानून वहां मुसल्मानों की शरा अर्थात उनके धर्मशास्त्र बमूजिब चलता है। आमदनी कुछ न्यूनाधिक सत्तावन लाख रुपया साल है, इस्मे चौंतीस लाख तो काबुल कंदहार अर्थात असली अफ़ग़ानिस्तान की, और बीस लाख नक़द और जिंस मिलाकर हिरात की, बलूचिस्तान कुल तीन लाख का मुल्क है। राजधानी काबुल ३४ अंश १० कला उत्तर अक्षांस और ६८ अंश १५ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से कुछ कम साढ़े छ हज़ार फ़ुट ऊंचा काबा नदी के दोनों तरफ़ सुंदर सेवों के बाग़ और फूलों के जंगल के दर्मियान तीन मील के घेरे में अनुमान साठ हज़ार आदमियों की बस्ती है। नैर्ऋतकोन को एक छोटे से पहाड़ पर बालाहिसार का क़िला बना है, और दक्षिण तरफ़ अकबर के दादा बाबरबादशाह की क़बर है। काबुल से ४० मील उत्तर ४०० फ़ुट ऊंचे एक पहाड़ की आलंग में २५० गज़ ऊंचा और १०० गज़ चौड़ा बालू का ढेर पड़ा है, जब कभी उस पर आदमी चढ़ता है अथवा हवा ज़ोर से

लगती है, तो उस वालू के अंदर से नक्कारे और नफ़ीरी की आवाज़ निकलती है (१) वहांवाले उस्को रेगरवां कहते हैं, और उस्के पास एक गुफा है उसे इमाम मिहदी का मकान बतलाते हैं। ग़ज़नी अथवा ज़ाबुल काबुल से ७० मील दक्षिण समुद्र से पौने आठ हज़ार फुट ऊंचा सवा मील के घेरे से खंदक़ और पक्की शहरपनाह के अंदर दस हज़ार आदमियों की बस्ती है, शहर के उत्तर भाग से क़िला है, पुराना शहर तीन मील के तफ़ावत पर ईशानकोन को बस्ता था, सन ११५१ से अलाउद्दीनग़ोरी ने उसे ग़ारत किया, जो लोग उस्में नामवर और दर्जेवाले थे उन्हें वहां क़तल न करके जीता ग़ोर से जो हिरात से १२० मील अग्निकोन को है पकड़ लेगया, और फ़िर छुरों से ज़िबह करके उन के लहू से अपने क़िले और मकान का गारा सनवाया। अब इस पुरानी ग़ज़नी से जिसे महमूद ने हिंदुस्तान उजाड़-कर बसाया था महमूदशाह के मक़बरे के सिवा केवल दो मीनार सौ सौ फ़ुट ऊंचे बाक़ी रहगए हैं। चंदन के किवाड़ों की जोड़ी अठारह फुट ऊंची, जो मह-

(१) कारण इसका जो एशियाटिक जर्नल मे लिखा है, वह विना इल्मी किताबों के पढ़े लोगों की समझ से न आवेगा, इस लिए तर्जमा न करके जों का तों अंगरेज़ी मे लिख देते हैं।

"Cause; reduplication of impulse setting air in vibration in a ocuse of echo."

मूहमाद सोमनाथ के फाटक से उखाड़ लेगया था, इसी
मक़बरे से लगी थी, अंगरेज़ी फ़ौज अपनी बांह का बल
जताने के लिए काबुल से लौटते समय उसे फिर हिंदुस्तान
को लेआई, अब वह आगरे के क़िले में रखी है। कंद-
हार अथवा गंधार काबुल से प्राय २०० मील नैर्ऋतकोण
को समुद्र से साढ़े तीन हज़ार फुट बलंद तीन मील के
घेरे में खाई और कच्ची शहरपनाह के अंदर अनुमान
पचास हज़ार आदमियों की बस्ती है। चौक जिसे
वहांवाले चारसू कहते हैं पचास गज़ चौड़ा गुम्बज़ से पटा
है। हिरात काबुल से कुछ कम ५०० मील पश्चिम खाई
और कच्ची शहरपनाह के अंदर ४५००० आदमियों की
बस्ती है। निहायत ग़लीज़ गलियां तंग बाज़ार मिहराबी
छत से पटाहुआ चौक गुम्बज़ के तले। काबुल से पश्चिम
वायुकोन को झुकता अफ़ग़ानिस्तान की उत्तर हद्द पर
तुर्किस्तान की राह में समुद्र से साढ़े आठ हज़ार फुट
ऊंचे हिंदूकुश के घाटे पर बामियान के पास बहुत से
पुरानी इमारतों के निशान हैं, दो खड़ी मूर्ति कपड़े
समेत एक १८० और दूसरी ११७ फुट ऊंची पहाड़ से
तराशी हैं। वहांवाले उनको संगसाल और शाहमम्मा
कहते हैं। पास ही उस पहाड़ में बड़ी बड़ी गुफा भी
काटकर बनाई हैं। सिवाय इस के उस मुल्क में जो सब
देहगोप और पुराने सिक्के मिलते हैं, उन से यह बात
प्रत्यच प्रगट है, कि मुसल्मानों का दीन फैलने से पहले
वहांवाले भी हिंदुस्तानियों की तरह बुध और वेद को

मानते थे, अब भी उन पहाड़ों से एक कौम सियाहपोशों की बसती है, मुसलमान उन को काफ़िर पुकारते हैं, और वे मुसलमानों के मारने से बड़ा पुण्य समझते हैं, स्त्रियां उन की अति रूपवान होती हैं, परंतु आचार और व्यवहार उन के कुछ अद्भुत से हैं, न इस समय के हिंदुओं से मिलते न मुसल्मानों से न बौधों से न क्रिस्तानों से। किलआत बलूचिस्तान के खां के रहने की जगह काबुल से ४२५ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र से ६००० फुट ऊंचा एक पहाड़ के कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है। पश्चिम तरफ़ किला है। आबादी गिर्दनवाह की भी मिलाकर १२००० से अधिक नहीं है। किलआत से अनुमान २५० मील के लगभग दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता और जहां हिंगुल नदी का समुद्र से संगम हुआ है उस्से २० मील ऊपर उसी नदी के कनारे दो पहाड़ों के बीच एक गुफा सी है, उसी के ऊपर हिंगलाज देवी का छोटा सा कच्चा मंदिर बना है, मूर्ति नहीं है, केवल पिंडी की पूजा होती है। यह स्थान हिंदुओं का बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। हम को उस्का शुद्ध नाम हिंगुला मालूम होता है, क्योंकि हिंगलाज शब्द किसी ग्रंथ से नहीं मिलता, और हिंगुला चूडामणितंत्र में उस पीठ का नाम लिखा है जहां शाक्तमतवालों के निश्चय बमूजिब देवी का ब्रह्मरंध्र गिरा बतलाते हैं। हिंदुस्तान के जो यात्री वहां जाते हैं उन को करांची बंदर से दस मंज़िल पड़ता है।

तूरान।

अथवा तुर्किस्तान, जिसे अंगरेज़ लोग इंडिपेंडेंटटा-टारी अथवा स्वाधीन तातार भी कहते हैं, ३५ अंश से ५१ अंश उत्तर अचांस तक और ५२ अंश से ७४ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। पश्चिम तरफ़ उस के कास्पियनसी अथवा बहरे खिज़र नाम एक झील पड़ी है, अंगरेज़ लोग इस कास्पियन को सी और मुसल्मान बहर अर्थात समुद्र बहुत बड़ा और खारा होने के कारन कहते हैं, परंतु वस्तुतः वह झील ही है, क्योंकि उसका जल चारों तरफ़ थल से घिर रहा है। निदान कास्पियन दुनिया से सब से बड़ी झील है, अढ़ाई सौ मील चौड़ी और साढ़े छ सौ मील लंबी होवेगी। अलताई के पहाड़ की श्रेणी तूरान को उत्तर तरफ़ रूस के मुल्क से, और बिलूरताग़ के पहाड़ उस्को पूर्व तरफ़ चीनी तातार से, और हिंदूकुश के पहाड़ उस्को दक्षिण तरफ़ अफ़ग़ानिस्तान से जुदा करते हैं। ये सब पहाड़ एक दूसरे से जुड़े और हिमालय से मिले हुए हैं, मानों उसी की वे सब शाखा हैं। दक्षिण के रुख़ उस्की सर्हद जैहूं पार बराबर कास्पियन तक ईरान से मिली है। यह मुल्क पूर्व से पश्चिम को १५०० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को ११०० मील चौड़ा है। विस्तार दस लाख मील मुरब्बा। आबादी पांच आदमी फ़ी मील के हिसाब से ५००००००। उत्तर तरफ़ इस मुल्क में बड़े बड़े रेगिस्तान पड़े हैं, कि जिन में कहीं एक पत्ता

घास का भी नहीं जमता। नदियां जैहूं और सैहूं प्रख्यात हैं, जैहूं जिसे अङ्गरेज़ी मे आक्सस और संस्कृत मे चक्षुस् कहते हैं १२०० मील, और सैहूं ६०० बहती हैं। झील अराल की जिसे बहरेख़ारज़म भी कहते हैं २५० मील लंबी और ७० मील चौड़ी है, पर पानी उस का खारा है, जैहूं और सैहूं दोनों बिलूरताग़ पहाड़ से निकलकर इसी झील मे गिरती हैं। पैदाइशें वहां की आसपास के मुल्कों से बहुत मिलती हैं। खान से लसनिया सोना चांदी पारा तांबा और लोहा निकलता हैं। बदख़शां का इलाका इस मुल्क के अग्निकोन से हिन्दूकुश के उत्तर लाल पैदा होने के वास्ते बहुत मशहूर है। जाड़ों मे सर्दी शिद्दत से पड़ती है, पर तौभी आबहवा उस मुल्क की अच्छी है। तातारियों मे चरवाहों की कौम के बहुत हैं, अकसर आदमी केवल मवेशी पालकर अपना गुज़ारा करते हैं, और जहां चराई और पानी का आराम देखते हैं उसी जगह अपने डेरे जा गाड़ते हैं, जो लोग शहर और गांव मे बस्ते हैं वे बनज व्योपार और खेती बारी भी करते हैं। आदमी वहां के सुन्नी मुसलमान हैं, और बादशाह वहां का अमीरुल्मोमिनीन कहलाता है। मुनशी मोहनलाल, जो सरअलकज़ंडरबर्निस-साहिब के साथ बुख़ारा गया था, अपनी किताब मे लिखता है कि वहां का बादशाह कुरान के हुक्म बमूजिब न तो ज़र जवाहिर पहनता है और न सोने चांदी के बरतन काम मे लाता है, एक

रोज़ जब वह बाग़ को गया तो मुनशीसाहिब ने उस की सवारी देखी थी, अच्छे ख़ासे मौलवियों की तरह सादी पोशाक पहने घोड़े पर चला जाता था, दस पंद्रह सवार साथ थे और खच्चरों पर तांबे के देग देगचे रकाब लोटे इत्यादि क़लई किए खाने के बरतन लदे थे। ये लोग डाढ़ी रखते हैं, और आंख की पुतलियां और बाल उन के काले होते हैं। फ़ौज वहां के बादशाह की २५०००। आमदनी अढ़तालीस लाख रुपए साल की। बुख़ारा उस की दारुस्सलतनत सुग़्दनदी के दोनों कनारों पर बसा है, वह बड़ी तिजारत की जगह है, वहां चीन हिंदुस्तान रूस फ़रंगिस्तान सब जगह की चीज़ें आती हैं, बस्ती उस्से प्राय डेढ़ लाख आदमियों की अनुमान करते हैं। मसजिदें शहर से ३६० से कम नहीं, और मदरसे अर्थात् पाठशाला इस्से भी अधिक हैं। वहां के बाज़ार से बर्फ़ और चाय की दूकानें बहुत हैं, वहां के आदमी चाय बहुत पीते हैं। हिंदुओं को हुक्म है कि अपनी टोपियों पर निशान रखें, जिस्से मुसल्मान कभी धोखे से सलामअलैक न कहें, वे लोग सिर्फ़ नाम के हिंदू हैं, आचार उन के बिलकुल भ्रष्ट। बलख़् बुख़ारा से २५० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता बहुत पुराना शहर है, ज़र्दश्त जिस्ने पार्सियों का मत चलाया था इसी शहर के दर्मियान पैदा हुआ था, अब थोड़े दिनों से वह काबुलवालों के दख़ल से जा रहा है। समरकंद बुख़ारा से १५० मील पूर्व सुंदर सजल खेतों के

दरख़्तों के दर्मियान कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है, वह तैमूरशाह की दारुस्सलतनत था कि जिस्की औलाद अबतक दिल्ली के तख़्त पर थी। यद्यपि यह सारा मुल्क बुख़ारा की सल्तनत से गिना जाता हैं, लेकिन उस्के दर्मियान ख़ीवा अथवा ख़ारज़म वायुकोण के, ख़ोकंद अथवा कोकन ईशानकोण के, कुन्दुज़ अग्निकोण के, इन तीनों इलाक़ों के ख़ां अर्थात हाकिम केवल नाम मात्र को बुख़ारा के आधीन हैं॥

ईरान

२५ अंश से ४० अंश उत्तर अक्षांस तक और ४४ अंश से ६५ अंश पूर्व देशांतर तक। उत्तर रूस और तूरान और कास्पियनसी है, दक्षिण ईरान की खाड़ी जिसे वहांवाले दर्याय उम्मां पुकारते हैं, पूर्व अफ़ग़ानिस्तान, और पश्चिम तरफ़ एशियाईरूम से जा मिला हैं। प्राय ६०० मील पूर्व से पश्चिम को लंबा और छ सौ मील उत्तर से दक्षिण को चौड़ा है। बिस्तार ५६०००० मील मुरब्बा। आबादी फ़ी मील मुरब्बा १८ आदमी के हिसाब से एक करोड़ आदमी की अनुमान करते हैं। नीचे इस मुल्क के सूबों के साम्हने उन के बड़े शहरों का नाम लिखते हैं।

नम्बर	नाम सूबों का	नाम शहर का
१	आज़रबायजान वायुकोन की तरफ़ रूम और रूसकी हद पर	तबरेज़
२	गुर्दिस्तान आज़रबायजान के दक्षिण	कर्मांशाह
३	लूरिस्तान गुर्दिस्तान के दक्षिण......	खुर्मावाद
४	खुजिस्तान लूरिस्तान के दक्षिण समुद्र की खाड़ी तक......	दिज़फुल
५	फ़ार्स खुजिस्तान के पूर्व	शीराज़
६	लारिस्तान फ़ार्स के दक्षिण समुद्र की खाड़ी तक	लार
७	कर्मां फ़ार्स के पूर्व	कर्मां
८	खुरासान कर्मां के उत्तर..........	मशहिद
९	इराक़ फ़ार्स के उत्तर	इस्फ़हान तिहरान
१०	माजन्दरां इराक़ के उत्तर	सारी
११	गीलां माजन्दरान के वायुकोन......	रश्द
१२	अस्तराबाद गीलां के उत्तर	अस्तराबाद

ऊर्मज़ और करक इत्यादि कई टापू जो ईरान की खाड़ी मे हैं इसी बादशाहत में गिने जाते हैं। ईरान की खाड़ी से मोती बहुत ज़ियादः निकलता है। रेगिस्तान और पहाड़ों की इस मुल्क मे इफ़रात है, और उन के बीच बीच मे सुंदर रम्य और मनोहर दूनें हैं, कि जिन मे फूल फल आबादी और हरियाली सब कुछ मौजूद हैं। पहाड़ दक्षिण तरफ़ के तो थोड़े बहुत सवृक्ष हैं, बाकी बिलकुल नंगे। वह बड़ा रेगिस्तान जो कर्मां से माज़न्दरां तक चला गया है ४०० मील से कम लंबा नही है। नदी बहुत बड़ी कोई नही। झील ऊर्मिया की कास्पियनसी और पश्चिम सीमा के बीच ३०० मील के घेरे मे निर्मल परंतु खारे जल से भरी है, और उस्के अंदर से गंधक की गंधि आती है। धरती जो पानी से सिंची है खूब उपजाउ। पैदाइश वहां गल्ले और मेवों की अफ़ग़ानिस्तान सी, पर मेवा ईरान का बिहतर सारे जहान से। केसर और सना भी अच्छी होती है। जानवर वहां वेही होते हैं जिनका वर्णन अभी अफ़ग़ानिस्तान मे कर आए। घोड़ा ईरान का यद्यपि अरब सा ख़ूबसूरत और तेज़ नही है, परंतु मज़बूती और क़द मे उस्से बढ़कर होता है, मीयर साहिब लिखते हैं कि एक सवार तिहरान से दस दिन मे बूशहर को जो सात सौ मील से अधिक है खत लेकर पहुंच गया था। जङ्गलों मे गोरखर बहुतायत से हैं। खान से ईरान मे चांदी सीसा लोहा तांबा संगमर्मर नफ़्त गन्धक और फ़ीरोज़ा निकलता है। सोमयाई वहां एक

पहाड़ की गुफा मे पानी की तरह टपकती है, बरसवें दिन ज़िले का हाकिम उस गुफा को खोलता है, जो कुछ मोमयाई इकट्ठी हुई रहती है बादशाह के पास भेज-देता हैं, इस्से घाव बहुत ही जल्द चंगा होजाता है। उत्तर भाग मे सर्दी और दक्षिण भाग मे गर्मी रहती है, आस्मान सदा साफ़ और निर्मल, हवा मे खुशकी, मेह केवल गीलां और माज़न्दरां के सूबों मे जो कास्पियनझील के कनारे हैं बरसता है, बाक़ी और जगहों मे बहुत कम, जो हो आबहवा उस मुल्क की बहुत ही उमदः हैं। आदमी वहां के सुंदर हंसमुख मिलनसार ऐय्याश खुशअ-ख़लाक़ खुशखुराक खुशपोशाक बाअदब मिहमांनवाज़ जवांमर्द साहसी कवि खुशामदपसंद और लालची होते हैं, मिज़ाज उनका नर्म पर गुस्से बहुत जल्द होजाते हैं, काहिल परले सिरे के लेकिन काम के वक़्त मिहनत भी बड़ी करते हैं, बाल उन के काले रहते हैं, डाढ़ी बाज़े मुंडवा डालते हैं, और लाल टोपियां पहनते हैं इसी वास्ते क़ज़लबाश कहलाते हैं, क्योंकि तुरकी ज़ुबान मे क़ज़लबाश का अर्थ लाल टोपी है, औरतें मुंह पर नक़ाब रखती हैं। गाड़ी वहां नहीं होती, सवारी घोड़े की, औरतें ऊंटों पर पर्दे के अंदर अमारी मे बैठती हैं। मज़हब मे वहां के मुसल्मान सब शीआ हैं, और अकसर उन मे से जो सूफ़ी कहलाते हैं वेदांतियों से मिलते हैं। आईन क़ानून वहां कुरान के हुक्म बमूजिब जारी हैं। ज़ुबान ईरानियों की अर्थात फ़ारसी दुनिया की सब

जुबानों से मीठी और प्यारी है, यदि उस को मिसरी और कंद भी कहें तो यथार्थ है। उस मुल्क से इल्म की क़दर है। कालीन रेशमी कपड़ कमखाब शाल बंदूक़ पिस्तौल और तलवारें वहां बहुत उमदः बनती हैं, मीना भी खूब होता हैं। क़ालीन शराब रेशम रूई मोती घोड़े और दवाइयों का वहां से निकास है और शक्कर नील मसाले कपड़ा औज़ार शीशे-चीनी का बरतन सोना रांगा इत्यादि वहां बाहर से आता है। ईरान मे मंदिर मकान इत्यादि के निशान बहुत मिलते हैं, हकीक़त में यह सलतनत बहुत पुरानी है, साबिक़ वहां के आदमी अग्निहोत्री होते थे, अर्थात अग्नि को मानते थे और उसी की पूजा करते थे, अपने मंदिरों मे कुंड के बीच सदा अग्नि को प्रज्वलित रखते थे कभी बुझने न देते, सन ६३६ से कुदसिया की लड़ाई के दर्मियान ईरान के बादशाह यज़्दगुर्द ने अरबों के हाथ शिकस्त खाई, और तभी से ईरानियों को मुसल्मान होना पड़ा। सन १२१८ मे चंगेजखां ने सात लाख तातारियों के साथ ईरान फ़तह किया था, चंगेज़खां मुसलमान न था बरन मूर्तों की पूजा करता था। नादिरशाह, जो हिंदुस्तान से सत्तर करोड़ रुपए का माल लूट लेगया, इसी ईरान का बादशाह था। फ़ौज दवामी दस हज़ार सिपाही और तीन हजार गुलाम, बाकी सब जागीरदारों की भरती, और आमदनी प्राय तीन करोड़ रुपए साल की। तिहरान ईरान की दारुस्सलतनत ३६ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और

५० अंश ५२ कला पूर्व देशान्तर से एक पहाड़ के नीचे खाई और मज़बूत शहरपनाह के अंदर पांच मील के घेरे मे साठ हज़ार आदमियों की बस्ती है, मकान अकसर कच्ची ईंटों के, लेकिन क़िले के अंदर महल बादशाही उ.मदा बने हैं। पुरानी राजधानी इस्फ़हान तिहरान से कुछ ऊपर २५० मील दक्षिण ज़िंदरूद के कनारे दो लाख आदमियों की बस्ती है, बाज़ार पटा हुआ, चौक बहुत बड़ा, दो हज़ार फुट लंबा, बीच मे नहर और हौज़ संगमूसा के बने हुए, और दरख़्त सायादार लगे हुए। शहर के दक्षिण आठ बाग़ बादशाही जुदा जुदा मौसिम के लिये हश्तबिहिश्त नाम नहर और हौज़ों समेत बहुत उ.मदा बने हैं, उन मे से एक बाग़ के अंदर चालीस चालीस फुट ऊंचे, चालिस खंभों का जो शीश महल बना है रंगबरंग के फूलों की आभा से मानो सचमुच रत्नजटित भवन सा मालूम पड़ता है, इस चिहल सुतून के खंभों को संगमर्मर के चार चार शेरों की पीठ पर जमया है। सन १३८७ मे जब तैमूरशाह ने उसे लटा तो एक लाख सत्तर हज़ार आदमी क़तल किये, और शहरपनाह की फ़सीलों पर उन के सिरों के ढेर लगादिये। डेढ़ सौ बरस भी नहीं गुज़रे कि जब चार्डिनसाहिब ने उस शहर को २४ मील के घेरे मे बसा देखा था। उस वक़्त उस मे दस लाख आदमी ७४५ मस्जिद ४८ मदरसे १८०० कार्वांसरा और २७३ हम्माम थे। शीराज़ तिहरान से ५०० मील दक्षिण सुंदर दरख़्तों के झुंड मे दूर से मस्जिदों के मीनार

और गुंबज़ चमकते हुए चालीस हज़ार आदमियों की बस्ती है, मकान छोटे गली तंग लेकिन बाहर बाग़ बहुत सुंदर खुशबूदार फूलों से भरे फव्वारे छूटते हुए, हाफ़िज़ और सादी इसी जगह गड़े हैं। शीराज़ से तीस मील वायुकोन को ईरान की अतिप्राचीन पहली राजधानी इस्तख़र, जिसे अंगरेज़ पर्सिपोलिस कहते हैं, बसता था, सिकंदर ने उसे गारत किया, एक खंडहर, जिसे वहांवाले जमशेद का तख़्त कहते हैं, अब तक भी मौजूद है, उसकी संगमर्मर की सफ़ाई जो आइने की तरह चमकते हैं, उस के खंभों की उंचाई जो इस दम भी कुछ न्यूनाधिक साठ खड़े हैं, उस की सूरत मूरत और नक़्क़ाशियों की बारीकी जो ज़ीनों के दर्मियान बहुत ख़ूबी के साथ बनाई हैं, देखकर बड़ा अचरज आता है, उस खंडहर पर बहुत से प्राचीन पारसी अक्षर तीर के फल की सूरत पर खुदे हैं, अब उन को इस काल में कोई भी न पढ़ सकता था, मेजररालिंसनसाहिब ने दस बरस की मिहनत से उस लिपि का मतलब निकाला, और उन अक्षरों की बर्णमाला भी बना ली, अब उसकी सहाय से उस देश में जहां जहां पुराने मकानों पर उस साय के अक्षर लिखे थे सब पढ़े गए। इस पर्सिपोलिस के खंडहर पर बड़े बादशाह कैखुसरो जिसे प्राय चौबिस सौ बरस गुज़रते हैं और दारा का नाम लिखा है, और लिखा है कि हिंदुस्तान से

मिसर और यूनान तक सारे देश उनके राज मे थे। यह प्राचीन पारसी भाषा जो तीर के फल की सदृश अक्षरों से लिखी है संस्कृत से विशेष करके वेद की वाणी से इतना मिलती है, और पोशाक हथियार सवारी और आकृति उन सूरतों की जो वहां पत्थरों पर खुदी हुई हैं हिंदुस्तान के कई प्राचीन मंदिरों की नक्काशी से ऐसी बराबर होती हैं, कि जिन लोगों ने ईरान और हिंदुस्तान के प्राचीन इतिहास अच्छी तरह देखे हैं उन के मन को दृढ़ निश्चय हो जाता है, कि उस समय हिंदुस्तान और ईरान के चालचलन मत व्योहार इत्यादि मे कुछ बड़ा बीच न था। हिंदुओं का मूल मंत्र गायत्री सूर्य की बंदना है, ईरानी भी पहले मित्र अर्थात सूर्य को मानते थे। हिंदुस्तानियों के कौल बमूजिब अंगिराऋषि ने अग्नि प्रगट की, यज्ञ होम इत्यादि की बुनियाद बांधी, ईरानियों के कहने अनुसार जर्दश्त ने अग्निहोत्रियों का मत चलाया। हिंदुस्तान मे जैनी अथवा बौधों ने हिंसा त्याग की, ईरान के दर्मियान केवल साल मे एक बार बादशाह अपनी सेना लेकर सुद अर्थात तृणचर पशुओं की रक्षा के निमित्त दुट अर्थात मांसाहारी जीवों के नाश करने को चढ़ता था वही मानों शिकार की असल हुई, बाकी वे भी हिंसा को अत्यन्त बुरा समझते थे। समय पाकर देशों के चाल चलन मत व्यवहार इत्यादि मे भेद आगया॥

अरब।

यह प्रायद्वीप एशिया के नैर्ऋतकोन से १२ अंश ३० कला से ३४ अंश ३० कला उत्तर अक्षांस तक और ३२ अंश ३० कला से ६० कला पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उस की उत्तर रूम की सलतनत, पूर्व ईरान की खाड़ी, पश्चिम रेडसी नाम खाड़ी जिसे बहर अहमर भी कहते हैं और स्वीज़ का डमरूमध्य, और दक्षिण अरब का समुद्र है। उत्तर से दक्षिण को १७०० मील लंबा और पूर्व से पश्चिम को १२०० मील चौड़ा है। विस्तार दस लाख मील मुरब्बा। बसती फी मील मुरब्बा १२ आदमी के हिसाब से एक करोड़ बीस लाख की। हिजाज़ का इलाक़ा तो जिस्मे मक्का और मदीना है रूम के बादशाह के ताबे है, और बाक़ी सारा मुल्क जुदा जुदा हाकिमों के तहत में बटा हुआ है। वे हाकिम शेख़ शरीफ़ ख़लीफ़ा अमीर और इमाम कहलाते हैं, बादशाह उन में कोई नहीं। इस मुल्क को मरुस्थल कहना चाहिये, क्योंकि बिलकुल रेगिस्तान है, केवल कहीं कहीं उर्वरा धरती टापू की तरह दिखलाई देती है। निदान बस्ती थोड़ी और उजाड़ अधिक है। पहाड़ समुद्र के कनारे कनारे यद्यपि बहुत ऊंचे नहीं हैं पर फिर भी पहाड़ों मे हवा कुछ मोतदल रहती है, और बाक़ी सब जगह अर्थात रेगिस्तान के पटपर मैदानों मे निहायत गर्म है, वही समूम जिस का अभी अफ़ग़ानिस्तान मे बयान हुआ अरब मे

बड़े जोर शोर के साथ बहती है। नदी और झील वहां कुछ खाने को भी नहीं पहाड़ के बर्साती नालों को हम शुमार में नहीं लाते। रेडसी के उत्तर कनारे में पासही तूर का पहाड़ है, जहां मूसा पैग़म्बर को उस्के मताव-लंबियों के निश्चय अनुसार आकाशवाणी हुई थी। जो सब ज़िले समुद्र के कनारे बसे हैं उन में क़हवा बबूल का गोंद धूप मुसब्बर सुंबुल सना छुहारा कालीमिर्च इत्यादि बहुत प्रकार की चीज़ें पैदा होती हैं। खेतियां भी वहां लोग गेहूं ज्वार बाजरा ऊख तमाकू कपास इत्यादि की करते हैं, चावल नहीं होता। घोड़ा अरब का तमाम दुनिया में मशहूर है, वहां से बिहतर यह जानवर कहीं नहीं होता, दो दो हज़ार बरस तक की बंसावली वहां-वाले अपने घोड़ों की याद रखते हैं, और ऊंट और गधा भी वहां बहुत अच्छा होता है, गधे की सवारी में वहां ऐब नहीं समझते, बरन बड़े चाव से चढ़ते हैं, और ऊंट तो मानों ईश्वर ने उसी देश के वास्ते रचा, जो यह जान-वर न होता तो अरबवालों को उस देश में रहना कठिन पड़जाता, इसका पेट अंदर से ऐसा खानेदार बना है, कि वह सात दिन का पानी इकट्ठा पी सकता है, इस के तलुए इस्पंज की तरह ऐसे नर्म और फूले फूले हैं कि वह रेत में नहीं गड़ते, आंख नाक कान इस जानवर के सब रेगिस्तान के ढौं के बने हैं, सच है ईश्वर ने जहां जिस काम के लिये जिसे पैदा किया वैसा ही उसे सब सामान दिया। शुतुरमुर्ग़ एक चिड़िया वहां आठ फुट ऊंची होती है,

डेढ़ डेढ़ सेर के अंडे देती है, उड़ नहीं सकती, पर भागती बहुत है, आदमी का बोझ बखूबी संभाल लेती है, और कपड़ा लकड़ी लोहे तक भी खा जाती है। टिड्डियों का वह घर है, वहांवाले उनको भूनकर बड़े मज़े से खाते हैं। खान से सीसा लोहा और चांदी निकलती है पर बहुत कम। बहरैन का टापू ईरान की खाड़ी से अरब के साथ गिना जाता है, उस टापू के आदमी समुद्र से मोती निकालते हैं, और सकूतरा के टापू से जो अरब के दक्षिण कनारे से २४० मील दूर और अफ़रीका के पूर्व तट से अति निकट है मूंगा और अम्बर (१) मिलता है। आदमी वहां के मियान:क़द गंदुमरंग जवांमर्द अच्छे-घुड़चढ़े हथियार चलाने से उस्ताद मुसाफ़िरपर्वर मिहमानवाज़ दियानतदार और भलेमानस होते हैं, चिहरे पर उन के बोझभार के साथ एक उदासी सी छाई रहती है. परंतु इन से बहुत आदमी खान:बदोश अर्थात पर्यटक हैं, और तातारियों की तरह डेरों से रहा करते हैं, और मवेशी पालकर और सौदागरों के क़ाफ़िले लूटकर अपना गुज़ारा करते हैं। टोपियां वहां के आदमी रूई अथवा ऊन की एक पर दूसरी पंदरह पंदरह तक रंगबरंग की पहनते हैं, ऊपरवाली सब से बढ़िया रहती है, ग़रीब से ग़रीब भी दो ज़रूर पहनेगा, और फिर उन पर दुपट्टा बांधते हैं। इस मुल्क के आदमी ऊंटका गोश्त और ऊंटनी का दूध बहुत खाते पीते

(१) अम्बर एक जलजंतु का गूह है, समुद्र के जल पर तिरता अथवा कनारे पर पड़ा हुआ मिलता है॥

हैं। मुहम्मद से पहले अरबवाले भी हिंदुस्तानियों की तरह मूरतों की पूजा करते थे और नरबलि देते थे, मुहम्मद ने मूरतो को तोड़कर उन्हें निराकार निरंजन अरूपी सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को पूजने का उपदेश किया। इसी मुहम्मद की गद्दी पर जो बादशाह बैठे वह खलीफ़ा कहलाए। अरबी ज़ुबान संस्कृत की तरह कठिन है, और उस भाषा मे भी बहुत सी पुस्तकें विद्या की मौजूद हैं। कहवा सना गोंद धूप मुसब्बर सुम्बुल इत्यादि वहां से बाहर जाता है, और लोहा फ़ौलाद सीसा रांगा तलवार छुरी शीशे चीनी के बरतन इत्यादि बाहर से वहां आते हैं। मक्का २१ अंश २८ कला उत्तर अक्षांस और ४० अंश १५ कला पूर्व देशांतर से एक छोटी सी रेतल और पथरीलीदून से बसा है, न उस शहर मे कोई बाग़ है न किसी तरफ़ दरख़्त और सब्ज़ा नज़र पड़ता है, बरन पानी भी पीने लाइक़ दस कोस से लाना पड़ता है, शहर क़रीने से बसा है, और बाज़ार भी चौड़ा और पुर रौनक़ है, बस्ती उसमे प्राय ३०००० आदमियों की होवेगी। क़ाबा अर्थात मुसल्मानों का मंदिर मक्के के दर्मियान चौखूंटी चारदीवारी के अंदर जिस्के कोनों पर मीनार बने हैं एक छोटा सा चौखूंटा मकान है, छत्तीस फ़ुट ऊंचा औ तेंतीस फ़ुट चौड़ा काले कपड़े से ढका हुआ, उस्के अंदर एक कोने मे हजरुल्असवद (१) अर्थात कालापत्थर चांदी से मढ़ाहुआ

---

(१) यह पत्थर उसी क़िस्म का है जिसे अंगरेज़ी में वाल्केनिक बासाल्ट (Volanic Basalt.) कहते हैं॥

रखा है, जो यात्री आते हैं पहले इस पत्थर को चूमते हैं। काबा साल भर से तीन दिन खुलता है, एक दिन मर्दों के लिए, दूसरे दिन स्त्रियों के लिए तीसरे दिन धोने और साफ़ करने के लिये। पास ही ज़मज़म् कूआ है, मुसल्मान उस का सोता स्वर्ग से आया बतलाते हैं, और उस्के जल पीने से बड़ा माहात्म्य समझते हैं। मक्का और मदीना मुसल्मानों का बड़ा तीर्थ है, उन के पैगंबर मुहम्मद सन १५६८ मे मक्के के दर्मियान पैदा हुए थे, मदीना मक्के से २०० मील उत्तर वायुकोन को झुकता पुरानी सी शहरपनाह के अंदर छ सौ घर की बस्ती है, मस्जिद मुहम्मद की बहुत बड़ी बनी है, चार सौ खंभे संगमूसा के लगे हैं, और तीन सौ चराग़ हमेशः बलते रहते हैं, बीच मे मुहम्मद की क़बर है, उस्के दोनो तरफ़ अबूबक्र और उमर गड़े हैं। अदन का क़िला जो रेडसी के मुहने पर यमन के इलाके मे है कुछ दिनों से सर्कार अंगरेजी के क़बज़ मे आगया है।

एशियाईरूम

इस को एशियाई इस वास्ते कहते हैं कि रूम की सल्तनत एशिया और फ़रंगिस्तान दोनों खंडों मे पड़ी है, यहां केवल उसी भाग का बर्णन होता है जो एशिया मे है,

विस्तार पूर्वक इस बादशाहत का बयान फरंगिस्तान के साथ होवेगा, क्योंकि उस्की दारुस्सलतनत कुस्तुंतुनीया उसी खंड में बसी है। फरंगिस्तानवाले इस मुल्क को एशियाटिकटर्की अर्थात एशियाई तुर्किस्तान पुकारते हैं, परंतु इस्मे शाम की सारी विलायत और अरब और ईरान के भी हिस्से हैं। गए तीन हजार बरस के अर्से मे जैसा उलटफेर बादशाहतों का जमीन के इस टुकड़े पर रहा है, कदापि दूसरी जगह सुनने मे नही आया, कभी यूनानियों ने लिया, कभी रूमियों ने दबाया, कभी ईरानियों के अमल मे आया, कभी अरबों के दखल मे गया, कभी तातारियों ने उसे लूटा, कभी फरंगियों ने उस पर चढ़ाव किया, और तमाशा यह कि जब जिसने इस मुल्क को फतह किया नए नए नामों से नए नए सूबे और नए नए जिलों मे बांटा। ईसाइयों की प्राचीन पुस्तकों मे लिखा हैं कि ५८५८ बरस गुजरते हैं ईश्वर ने पहला मनुष्य इसी मुल्क मे पैदा किया, और तूफ़ान के बाद नूह का जहाज इसी मुल्क मे लगा, इसी मुल्क से मनुष्य सारी दुनिया मे फैले, और इसी मुल्क मे पहले प्रतापी राजा हुए। धरती खोदने से अद्यावधि मूर्ति इत्यादि ऐसी ऐसी वस्तु अति प्राचीन निकलती हैं कि जिन से उस देश का किसी समय मे महा पराक्रमी राजाओं से शासितहोना अच्छी साबित है। ईसामसीह इसी देश मे पैदा हुए थे, और इसी कारण वहां उस मतावलंबियों के बड़े बड़े तीर्थ स्थान हैं। निदान यह एशियाईरूम ३० से ४२ अंश उत्तर

अक्षांश और २६ से ४८ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी पूर्व ईरान, दक्षिण अरब, पश्चिम मेडिटरेनियन, और उत्तर डार्डेनल्स मार्मोरा वासफोरस और वाक सी नामक समुद्र की खाड़ियां। पूर्व से पश्चिम को हजार मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को नौ सौ मील चौड़ा चार लाख नव्वे हजार मील मुरब्बा के विस्तार से है। आदमी उस्में अनुमान एक करोड़ बीस लाख होवेंगे, और इस हिसाब से आबादी उस्की पच्चीस आदमियों की भी फ़ी मील मुरब्बा नही पड़ती। शाम का मुल्क फुरात नदी और मेडिटरेनियन के बीच मे पड़ा है, उसी के दक्षिण भाग मे फ़िलिस्तीन है, जहां से ईसाई मत की बुनियाद बंधी, और जिसे ईसाई लोग पवित्र-भूमि कहते हैं। फुरात के पूर्व दियारबक्र है, उस का दक्षिण भाग अरबीइराक और पूर्व भाग कुर्दिस्तान अथवा कुर्दिस्तान कहलाता है, और उस्के उत्तर तरफ़ इर्म का इलाका है, जिसे अंगरेज आर्मिनिया कहते हैं। एशियाईरूम मे पहाड़ बंहुत हैं और मैदान कम। शाम के अग्निकोण मे बड़ा भारी उजाड़ रेगिस्तान है। पहाड़ों मे टारस और अरारात मशहूर हैं, टारस की श्रेणी मेडिटरेनियन के तट से निकट ही निकट खलदूनिया अंतरीप से फुरात नदी तक चली गई है, और आरारात जिसे जूदीका पहाड़ भी कहते हैं इर्म मे रूस और ईरान की सर्हद पर १७००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है, ईसाइयों के मत बमूजिब तूफ़ान के बाद नूह का जहाज़ इसी अरारात पर आकर लगा था। नदियों मे दजला और फुरात जो

अमरे से कुछ दूर ऊपर मिलकर शातुलअरब के नाम से ईरान की खाड़ी से गिरती हैं नामी है। फुरात १५०० मील लंबी है, और दजला ८०० मील। बालबक से अनुमान ४० मील पश्चिम मेडिटरेनियन के तट से निकट जबैल के नीचे इब्रहिम नदी बहती है, उस्का पुराना नाम अडोनिस है, और उस्का पानी गेरू इत्यादि के मिलने से जो अवश्य उस्के कनारे पर कहीं होगा साल मे एक बार लाल हो जाता है, वहां के नादान आदमी खयाल करते हैं कि किसी जमाने से अडोनिस नाम एक आदमी को शिकार खेलते हुए सूवर ने मार डाला था उसी का लहू हर साल उस नदी से आता है। झील डेडसी की जिसे बहरेलूत भी कहते हैं फिलिस्तीन के दक्षिण भाग मे प्राय ५० मील लंबी होवेगी, पानी उस्का निरा खारा, और आसपास के पहाड़ बिलकुल उजाड़ दरख़्त उन से देखने को भी नहीं, क्या ईश्वर की महिमा है कि इस झील के नज़दीक न तो कोइ दरख़्त जमता है, और न उस्मे कोई जीव जन्तु जीता है। आबहवा अच्छी और मोतदल पर सब जगह एक सी नही है, ऊंचे पहाड़ों पर यहां तक सर्दी पड़ती है कि वे सदा बर्फ से ढके रहते हैं, और रेगिस्तानों के दर्मियान समूम चला करती है। आदमी वहां के काहिल और गलीज हैं, इस कारण वबा अर्थात मरी अकसर फैल जाती है। भूंचाल उस मुल्क से बहुत आता है। धरती अकसर जगह उपजाऊ है, पर वहांवाले खेती से मिहनत नहीं करते, जो गेहूं

सब्ज़ी रूई तमाकू क़हवा अफ़यून मस्तकी जिसे लोग रूमी मस्तगी कहते हैं ज़ैतून अंगूर सालिबमिसरी इत्यादि बहुत प्रकार के अनाज मेवे और दवाइयां पैदा होती हैं। बकरियों से वहां एक क़िस्म का पश्मीना हासिल होता है, और रेशम भी वहां की पैदाइशों से गिना जाता है। गधे घोड़े खच्चर ऊंट लकड़बघे रीछ भेड़िये गीदड़ इत्यादि घरेलू और जंगली जानवर इफ़रात से हैं, पर टिड्डियों का दल वहां अरब के रेगिस्तानों से ऐसा बादल सा उमडता है कि बहुधा खेतीबारियां बिलकुल नाश होजाती हैं, यदि अग्निकोण की हवा जो वहां अधिक बहती है उन्हे समुद्र में लेजाकर न डुबाया करे तो वे शायद सारे पृथ्वी के तृण वीरुध को भक्षण कर जावें। खान तांबे की उस मुल्क में एक बहुत बड़ी है। रोडस और सिपरस के टापू मेडिटरेनियनसी में इसी बादशाहत के ताबे हैं। यह वही रोड्स है जहां के बंदर पर किसी ज़माने में एक मूर्ति पीतल की सत्तर हाथ ऊंची खड़ी थी और उस्की टांगों तले से जहाज़ पाल उड़ाए निकल जाते थे, सिपरस को कुपरस भी कहते हैं। आदमी इस मुल्क के तुर्कमान यूनानी अर्मनी कुर्द और अरब मुसल्मान और अकसर ईसाई भी हैं, ज़ुबानें तुर्की यूनानी शामी अर्मनी अरबी ईरानी सब बोली जाती हैं। चीज़ों में वहां रेशमी कपड़े क़ालीन और चमड़े बहुत अच्छे तयार होते हैं, और दिसावरों को जाते हैं। बग़दाद हलब दमिश्क़ अर्ज़रूम समिर्ना बसरा मूसिल और बैतुलमुक़द्दस इस मुल्क

से नामी शहर हैं। बग़दाद ३३ अंश २० कला उत्तर अक्षांश और ४४ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में दजला नदी के दोनों कनारों पर शहरपनाह के अंदर बड़ा मशहूर शहर है, सन ७६२ में मुहम्मद के चचा अब्बास के पड़पोते ख़लीफ़ा मंसूर ने उसे अपनी दारुस्सलतनत ठहराया था, और फिर उस्के जानशीनों के समय में जिन के नाम का खुत्बा (१) गंगा से लेकर नील (२) नदी वरन अटलांटिक समुद्र पर्य्यंत पढ़ा जाता था उस ने ऐसी रौनक़ पाई कि जिस्का बर्णन अल-फ़लैला की महाअद्भुत कहानियों ने किया है। अब उस्मे अस्सी हज़ार आदमियों से अधिक नही बस्ते। सन १२५७ में जब चंगेज़ख़ां के पोते हलाकू ने वहां के ख़लीफ़ा मुस्तासिमबिल्लाह को मारकर शहर लूटा आठ लाख आदमी उस्के अंदर मारे गए थे। सन १४०१ में उसे अमीर तैमूर ने लूटा और जलाया, और सन १६३७ में रूम के बादशाह चौथे मुराद ने, जिसे अंगरेज़ अमूरात कहते हैं, तीन लाख फ़ौज से चढ़ाव करके उसे अपने क़बज़े में कर लिया। हलब बग़दाद से ४७५ मील पश्चिम वायुकोण को झुकता शहरपनाह के अंदर आठ मील के घेरे में अढ़ाई लाख आदमियों की बस्ती बड़ी तिजारत की जगह है, उस्की मसजिदों के सफ़ेद सफ़ेद मीनार और गुम्बज़ बड़े बड़े लंबे सर्व के दरख़्तों से

(१) खुतबा मसजिद में बादशाह के नाम से पढ़ा जाता है।

(२) अफ़रीका में मिसर के नीचे बहती है॥

बहुत भले और सुहावने मालूम होते हैं, बाजार ऊपर से बिलकुल पटे हुए हैं, इस लिये धूप और मेह का बड़ा बचाव है, रौशनी के लिए दुतरफा खिड़कियां खोल दी हैं, किसी समय में वह शाम की दारुस्सलतनत था। दमिश्क बग़दाद से ४७५ मील पश्चिम पहाड़ों से घिरा हुआ एक बड़े मैदान में सुंदर बागों के दर्मियान पारफार नदी के दोनों कनारों पर दो लाख आदमियों की बस्ती है। वहां से पचास मील उत्तर वायुकोण को झुकता बालबक में बाल देवता अर्थात सूर्य का एक मंदिर अति अद्भुत प्राचीन खंडहर पड़ा है, उस के संगमर्मर के खंभों की बलंदी देखकर अकल भी हैरान रह जाती है, एक पत्थर उस के खंभे का जो अब तक नीचे पड़ा है ७० फुट लंबा १४ फुट चौड़ा और चौदही फुट मोटा नापा गया था, बिना कल मालूम नहीं किस बते और बल से इन पत्थरों को उठाते थे। अर्जरूम बग़दाद से ५२५ मील वायुकोण उत्तर को झुकता इर्म के इलाके में, और समिर्ना पश्चिम सीमा पर समुद्र के कनारे है, इन दोनों शहरों में भी लाख लाख आदमी से कम नहीं बसते। बसरा जहां गुलाब का इतर बहुत उमदा बनता है बग़दाद से २८० मील अग्निकोण सात मील के घेरे में शातुलअरब के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर बसा है, और बड़े बेवपार की जगह है, आदमी उस्में अनुमान साठ हज़ार होंगे। मसिल् बग़दाद से २६० मील वायुकोण दजला के दहने

कनारे पैंतीस हजार आदमियों की बस्ती है। उसी के साम्हने जहां अब नूनिया गांव बसा है नैनवा के पुराने शहर का निशान मिलता है, जिस का घेरा किसी समय साठ मील का बतलाते हैं। बैतुलमुक़द्दस, जिसे अंगरेज जरूजलम् अथवा उर्शलीम कहते हैं, फ़िलिस्तीन अर्थात किनआं के इलाक़े से डेडसी झील और मेडिटरेनियन की खाड़ी के बीच में पहाड़ों से घिरा हुआ एक ऊंचे से मैदान में तीस हजार आदमियों की बस्ती है, वह सुलैमान के बाप दाऊद का पायतख़्त था, और उसी जगह सुलैमान ने सर्वशक्तिमान जगदीश्वर का मंदिर रचा था, उसी जगह ईसामसीह सलीब पर खींचे गए, और उसी जगह ईसामसीह की क़बर है। वहां से छ मील दक्षिण बैतुल्लहम् ईसामसीह का जन्मस्थान है। पालमीरा अथवा तदमोर, जो सुलैमान ने बग़दाद से २५० मील पश्चिम वायुकोण को भुकता शाम के रेगिस्तान में जहां पानी भी कठिन से मिलता है और पेड़ों का तो क्या जिक्र है दो हजार आठ सौ अठावन बरस गुजरे बसाया था, अब वहां उस नामी शहर के बदल कोसों तक टूटे फूटे मकानों के पत्थर पड़े हैं, और सुंदर सचिक्कण संगमर्मर के खंभों के ताड़ के दरख़्तों की तरह मानों जंगल के जंगल खड़े हैं, इन खंडहरों में सुलैमान का बनाया सूर्य का एक मंदिर अब भी देखने योग्य है। हिल्ला में बग़दाद से ५० मील दक्षिण फुरात के दोनो कनारे बाबिल के पुराने शहर का निशान देते हैं, और

मुसल्मान और फ़रंगी दोनों कहते हैं कि दुनिया में सब से पहले वही बसा था, और सबसे पहले वही निमरूद बादशाह की राजधानी ज़ुआ, जैसे हिंदू अयोध्या को बतलाते हैं। जिन दिनों यह शहर अपनी औज पर था ६० मील के घेरे में बसा था, ८७ फुट मोटी और ३५० फुट ऊंची उस्की शहरपनाह थी, गिर्द ख़ंदक़, दर्वाज़े पीतल के लगे ज़ुए, महल बादशाही साढ़े सात मील के घेरे में तीन दीवारों के अंदर अच्छे ख़ासे बने ज़ुए, बाग़ महल के गिर्द पुश्ता पाटकर इतना ऊंचा बना ज़ुआ कि उस्मे से सारे शहर की सैर होती रहे। इस शहर को ईरान के बादशाह कैख़ुसरो ने ग़ारत किया था। कर्बला बग़दाद से पचास मील नैर्ऋतकोण को फ़ुरात पार है, वहां मुसल्मानों के पैग़म्बर मुहम्मद के नवासे अर्थात दौहित हसन और ज़ुसैन मारे गए थे। डार्डनल्स के तटस्थ ३०४७ बरस गुज़रे ट्राय का वह प्रसिद्ध क़िला था जिसे यूनानियों ने बारह बरस की लड़ाई में तोड़ा था, इस घोर युद्ध का वर्णन होमर नाम एक यनानी कवि ने बड़ी कबिताई के साथ किया है। वहां से १५० मील पर्व बर्सा में एक तप्तकुंड है नहाने के लिये उस्मे सुंदर हम्माम बने हैं॥

इति

नक़्शा एशिया की विलायतों के विस्तार आबादी और आमदनी का वर्णमाला के क्रम से

संख्या	नाम विलायत का	विस्तार मीलमुरब्बा	लंबान मील	चौड़ान मील	आबादी फी मील मुरब्बा	कुल आबादी	आमदनी साल मे	राजधानी
१	अफ़ग़ानिस्तान	४६४०००	१०००	८००	२८	१४००००००	५७०००००	काबुल
२	अरब	१००००००	१७००	१२००	१२	१२००००००		मक्का
३	ईरान	५६००००	९००	६००	१८	१००००००००	३००००००	तिहरान
४	एशियाई रूम	४९००००	१०००	९००	२५	१२००००००		
५	एशियाई रूस	३००००००	५०००	१५००		३००००००		
६	कोचीन	१५००००			९३	१३९५००००		ह्यू
७	चीन	५००००००	४७००	२०००	६०	३००००००००	६००००००००	पेकिन
८	जपान	९००००					२८०००००००	जेडो
९	तूरान	१००००००	१५००	१०००	५	५००००००	४८०००००	बुख़ारा
१०	बर्मा	१९४०००	१०००	६००	७४	१४००००००		आवा
११	मलाका		८००	१२०				मलाका
१२	स्याम	१५५०००	६५०	३६०	१९	२९४५०००		बंकाक
१३	हिंदुस्तान	१२०००००	१८००	१६००	११६	१४००००००००	३०००००००००	कलकत्ता

अइन्वा, ३१८ ॥ (आवा)
अक्टरलोनी,१३५,१४०, २२६,
अकवर, ४१, ६७, ७६ ॥ ७७.८०, ८१,६१,८४,६५, ६६,६८, १०१,१०३, १०५, १२५, १२७,१३५,१३७, १४६,१७०, १७३,१७५, १७७,१८७, २५२,२६०, २७२,३७६,
अकबरखां,३७५,
॥ अकबराबाद,१२५,२५२, (आगरा)
॥ अक्षयबट, ११३ ॥
अग्निकुण्ड, २३० ॥
अग्निबर्ण, ६३ ॥
अङ्गिराऋषि, ३६०,
अचलेश्वर, २६८ ॥
अजन्ती, २६५ ॥
अजमेर, ४६, १३४ ॥ १३५, २६६, २७५, २८२, २८४, ३०६,
अजयगढ़, २५१ ॥ २५२,३११,
॥ अज़ीमाबाद,१६०॥ (पटना)
अज़ीमुश्शान, २७०,
अटक, ८६, १७५, १८८ ॥
अटककादर्या, २०, ३३ ॥
अटलाण्टिक, ५,६८, ४००,
अडोनिस, ३६८,
अदन, ३६५,
अनङ्गपाल, ७३,
अनङ्गभीमदेव, १५३,
॥अन्तरबेद, ३७, ८४,३०६॥
अन्नागुण्डी, २०० ॥
अन्तिओकस, २६४, २६५,
अबदुलहकीमखां,३० ॥
अबुल्फ़ज़ल, ७८, १३७, १७०, १६६,
अबूबक्र, ३६५,
अब्बास, ४००,
अफ़ग़ानिस्तान,१८,७०,१६०, १६१, २३१ ३७१ ॥ ३७४, ३७५, ३७६, ३७८, ३८०, ३८३, ३८५, ३६१, ४०४,
अफ़रीका,५, १३, १४ १५,६६ ६१,३६३,४००
अभयकुण्ड, ३४,
अमरकण्टक, १७२ ॥

आमरनाथ, २३५ ॥
आमरदुर, ३१७ ॥ ३१८,
आमरिका, ५,१३,१४,४१, ४२, ६८,७०,८२, २४७,
॥ आमरोहा, ६७,
अमीरखरीद, २८४,
आमूरात, ४०० ॥
॥ अमृतसर, १८५ ॥ १८६, १८७,
अम्बरीष, ७५,
॥ अम्बाला, १७८ ॥ १७६, २४८,
॥ अम्बालेकी अजरण्टी, २८५ ॥ ३०८
॥ अयोध्या, ७१,७२,८१, १८५ ॥ ४०३,
अरगांव, ८४,
अरब, १८, ६८, ७०, ३८५, ३८१ ॥ ३८२, ३८३, ३८४, ३८६, ३८७, ४०४,
अरबीइराक, ३८७ ॥
अरस्तू, ६३,
अरामराय, २६३, (रामडा)
अरारात, ३८७ ॥
अराल, ३८१ ॥
अरुकटि, २०१, (आर्काडु)
अर्काट, २००, (आर्काडु)
अर्ज़रूम, ३८८ ॥
अर्जुन, ७२,
अर्बलीपहाड़, १३४, २६८, ३०६,
अर्बुदाचल, २६८, (आबू)
अलखनंदा, १३२,
अलताई, ३३२, ३६५, ३६६, ३८०,
अलपतगीन, ३७४,
अलमोरा, १३२ ॥ १३३, १३४,
अलवर, २७५, २७८, २८१, ॥ २८२, ३०६, ३०८,
अलाउद्दीन, २७२, २७८, ३७७,
॥ अलीगढ़, १३० ॥
॥ अलीपूर, १४२,
अलीमर्दांखां, १३१,
अल्बुर्ज़, ३६५ ॥
॥ अवध, ८१, ११२, १८२, ॥ १८५, २२८, ३०६,
॥ अवन्ती, २५४, (उज्जैन)

अवीतवेला, १८८,
अशोक, ११२, ११५, २६४, २६५, २७८,
असाई, ८४, २८५,
असीरगढ़, २२१ ॥
अस्तराबाद, २८४,
॥ अस्सी, ११७,
अहमदनगर, २२०॥
अहमदशाह, ६८,
अहमदशाहदखनी ८४,
अहमदशाहदुर्रानी, ८१, १७७, १७८, २७५,
अहमदाबाद, ८०, २२३ ॥ २६५,
अहिल्याबाई, २५८, २६४,
आकयाब, २२३,
आक्सस, २८१, (जैहूं)
॥ आगरा, ४२, ६६, ८१, ८१, १०८, १२५ ॥ १२७, १२८, १३५, २६४, २७८, २८१, ३०६, ३७८,
॥ आज़मगढ़, १२२ ॥
आज़रबायज़ान, ३८४,
आदम, २१६,
आदमकाशिखर, २१६, (हमालल)
आदिनाथसभा, २८२,
आबू, २६८ ॥ २६८,
आमुर, ३३५,
॥ आमेर, २७८,
आरा, १६१ ॥ १६२,
आर्काड़, २०० ॥ २०१, २०२, २०५,
आराकान, ३२३,
आर्मिनिया, ३८७, (रूम)
॥ आर्यावर्त, १११,
आवा, ३१८ ॥ ३२२, ३२३, ४०४,
आशाम, ४४, ४६, ४८, १६३॥ १६५, १६७, १७१, २८८,
आसिफुद्दौला, ५०, ८१, १८३, १८५,
आसेरगढ़, २२१॥(असीरगढ़)
आस्ट्रेलिया, ५,
॥ ओङ्कारनाथ, २५८ ॥
ओबी, २६५॥
औरंगज़ेबआलमगीर, ८१, ८८, १०३, ११८, १२८,

१७४, २७१, २८६, २६१, २६४,
औरंगाबाद, २८८, २६० ॥ २६१, २६५, ३०२,

इ

इक्ष्वाकु, ७१, ७२,
इङ्गलिस्तान, ११, १६, ४०, ६७, ७०, ७८, ८०, १०१ १०८, २१५, २२६, २६६, ३१५, ३४७,
इजर्टन साहिब, १२६,
इटाली, २७६,
॥ इटावा, ३३, १२३ ॥ १२५,
इराडस, १६, ३३ ॥
इरिडपेरडराटटार्टारी, ३८०, (तूरान)
इरिडया, १६,
इयलरेड, ७८,
॥ इन्दौर, २५३, २५७॥२५८, ३०६,
इन्द्र, २१७,
इन्द्रतअल्लु के दार, १६६,
॥ इन्द्रप्रस्थ, ७१, १७३, ॥
इन्द्रसभा, २६३,
इन्द्रानी, २१७,
॥ इन्द्रासन, १६३ ॥
इबराहीमआदिलशाह, २१६,
इबराहीमलोदी, ७६, १७७,
इबरिम, ३६८,
इमाममिहदी, ३७७,
इराक, ३८४,
इर्म, ३६७, ४०१,
इलचपूर, १७०,
॥ इलाहाबाद, ३१, ४२, ११२ ॥ ११४, ११७, १२१, १२२, १२३, १२५, १२८, १२६, १३०, १३२, १३४, १३५, १३६, १५८, १७६, २५०, २५१, २७८, ३०६,
इलूरू, २६२ ॥ २६४,
इलोरा, २६२ ॥ (इलूरू)
इल्लौर, १८६ ॥ २०१ ॥
इस्तखर, ३८६,
इस्तराखान्, ३६५ ॥
इस्फहान, ३८४, ३८८ ॥
इस्माईलसामानी, ३७४,
इसलामाबाद, १४५ ॥
ईन्नौर, २०४,

ईरान, १८, २१, २२, ५१, ६४, ६८, ७०, ७३, ७४, ७६, ८२, ६२, १६८, २१५, २६४, २६५, २७१, २७४, २७५, २८०, २८३ ॥ २८५, २८७, २८६, २६०, २६१, २६३, २६६, २६७, २६८, ४०३, ४०४,
ईसामसीह, १७, ३६६, ४०२,
ईस्टइण्डियाकम्पनी, ७६, ८८,

उ

॥ उज्जयनी, २५४, (उज्जैन)
॥ उज्जैन, ७३, ७४, २५४ ॥ २५५, २७६,
उडेसा, ६६, ८१, १५३, १५४, ३०७,
उतकमन्द, ३६, ३१० ॥
उत्कल, १५२, (कटक)
उत्तमआशाअन्तरीप, ६६, (केपअवगुडहोप)
उत्तरकोशल, १६२,
उत्तराखण्ड, ४३, ४५, ६० १०३, १११, २२७ ॥ ३०४, ३३७,
उदयपुर, २२, ७२, १३४, २५३, २६०, २६८, २६६ ॥ २७०, २७२, २७३, २८२, ३०६, ३०६,
उन्नाव, १६२ ॥
उमर, ३६५,
उमरखिलजी, ६८,
उरछा, २५१ ॥ २५२, ३१०
उरू, ७२,
उर्शलीम, ४०२, (बैतुलमुकद्दस)
ऊच, २८५ ॥
॥ ऊलर, ३८ ॥

ए

॥ एतिमादुद्दौला, १२७,
एमाय, २५१,
एलिफण्टाआइल, २१७, (गोरापुरी)
एशिया, ५, १३, १४ ॥ १५, १७, १८, १६, २१, ७०, ६२, ३१६, ३५३, ३६१, ४०४,

एशियाईरूम, १८, ३६४, ३८३, ३८५ ॥ ३८६,३८७, ४०४,
एशियाईरूम, १८, ३३१, ३६४॥ ४०४,
एशियाटिक्टर्की, ३८६, (एशियाईरूम)
ऐनम्, ३२८, (टाङ्किङ)
ऐरावती, ३४ ॥ ३१७॥ ३१८, ३२३,

क

ककेसस, ३६४, ३६५,
कङ्कईनदी, २२७, २४३,
काङ्गन, २१४ ॥
कचार, १४६ ॥ १६७,
कच्छ, १८८, २६५ ॥ २६७, ३०८,
कच्छी, ४४, २८८, (कोच्ची)
कटक, ३६, ३८, ८४, ८६, १५२ ॥ १५३, १५४, १६८, १७५, १८७, २६५,
कडप, १८८ ॥ २००,
काडालर, २०२ ॥
कनारक, १५४ ॥
॥ कनावर, ४३, ५६, २४८ ॥
कन्दहार, २०, १११, ३७६, ३७८ ॥
॥ कन्नौज, ६३, ७१, ७४, ७५, १२४ ॥
कपिलमुनि, २८,
कपिला, २६३,
॥ कपरथला, २८७ ॥ २८८, ३०८,
कप्तान टर्नर, ३५२,
कप्तान हजसन् साहिब, ३१,
कबीरवड, ४६,
कमलागढ़, २४६ ॥
कमाऊं, ७२, २२७,
कमाऊंगढ़वाल, १३२ ॥ १६३,
कम्बोज, ३१७, ३२४, ३२८ ॥
कम्बोज की नदी, ३२८ ॥
कम्बोडिया, ३१७, ३२८ ॥
कम्सकटका, ३६६ ॥
करक, ३८५,
करतोया, ३२ ॥ १४७,
करदला, २८०,
॥ करनाल, १७८ ॥
करांचीवन्दर, २०,८६, २२४ ॥

२२५, ३७६,
करौली, २५२, २७५, २७६ ॥
३०६,
कर्ण, २६१,
कर्णाट, ३८, ६५,
कर्नफूलीनदी, १४५,
कर्नाटक, ३८, ६६, २०१,
२०३, ३०७,
॥ कर्मनाशा, ३२॥ १११, १६१,
कर्बला, ४०२ ॥
कर्मा, ३८४, ३८५,
कर्मांशाह, ३८४,
॥ कलकत्ता, २६, ३०, ४०, ५४,
८०, ८६, १२७, १३७ ॥
१३८, १४१, १४२, १४३,
१४५, १४६, १४७, १४८,
१४६, १५०, १५१, १५२,
१५३, १५५, १५६, १५७,
१६०, १६१, १६२, १६३,
१६७, १६८, १७१, १८६,
१६२, २०३, २०४, २१४,
२१६, ३०२, ३६८, ४०४,
कलन, ६३ ॥
कलिङ्गदेश, १६८,
कल्की, १२६,
कल्याण, ६३ ॥ (कलन)
कल्लीकोट, ६६, २१२ ॥
॥ कश्मीर, २०, ३८, ४२,
४३, ४५, ५२, ५६, ५६,
६०, ६६, ६७, ६५, १०२,
२३१ ॥ २३२, २३८, २३६,
२४०, २४१, २४५, २४७,
२४६, ३०६, ३४६,
॥ कसौली, २४, १८० ॥
॥ कहलूर, ६०, २४८ ॥ ३११,
॥ काङ्गडा, ४५, ६०, ८४,
१४५, १८१ ॥ १८२, २२८,
२४५, २४६, ३६८,
काञ्चीपुर, २०४,
काठमाण्डू, २२६ ॥ २३०,
२३१,
काटियावाड, ५२, २६१ ॥
काण्टन, ३२५, ३४८, ३५०,
३५१,
काण्डी, ३१५ ॥
कानडा, २१२, २६६, ३०३,
कानफ्यूशियस, ३४६,
॥ कान्यकुब्ज, ६५, १२४, (कन्नौज)

॥कान्सटेन्टिया, १८४,
॥कान्हपुर, १२३ ॥ १३६,१८२
कावलेखां, ३४८,
कात्रा, ३८४ ॥ ३८५,
काबुल, २०, ७६, ८६, १११,
१८१, ३७१, ३७२, ३७६ ॥
३७७, ३७८, ३७८, ४०४,
काबुलनदी, १८१,
कामरां, ७६,
कामरूप, १६७ ॥
कामानदी, ३७६,
कामाख्या, १६७,
कारली, २१८,
कारीकाल, ३०२, ३०३,
कारीमलाल, ३०८,
कारोमण्डल, ३०८ ॥
कार्नवालिस, १२२,
॥ कालका, २३, १७८ ॥
१८०, २८६,
कालापानी, ३२८,
कालपी, १३७ ॥
कालावाग़ १८० ॥
॥ कालिञ्जर, ७५, १२३ ॥
॥ कालिन्दी, ३१ ॥
॥ कालियादह, २५५ ॥
॥ कालीनदी, ८४, १३०,
२२७,
कालीसिन्ध, २५६,
कालू मालू पाडा, १६६,
कावेरी, २८, ३६ ॥ ६२,
२०५, २०६, २०७, २८७,
२८८, ३०२, ३०३, ३०७,
काशगर, ३३८ ॥
॥ काशी, ११७, ११८, ११८,
१२०, १२१, १८८, ३४४,
कास्पियनसी, ३६५, ३६६,
३६८, ३८० ॥ ३८३, ३८५,
३८६,
किनआं, ४०२,
किनेरी, ३१४ ॥
किरणवती, ३७२,
किरातदेश, १४८, (मोरङ्ग)
किलआत, ३७८ ॥
॥ किशनगढ, १३४, २७५,
२८० ॥ ३०६, ३०८,
किशननगर, १४२ ॥
कुञ्जवरम्, २०४ ॥
कुडग, २८८ ॥

॥कुण्डलपुर, १६० ॥
॥ कुतबसाहिब, १७५, २१८,
कुतबुद्दीनऐबक, ७५, ७६,
७८,
॥ कुतुबखाना, १८३,
कुर्दसिया, ३८७,
कुन्दुज़, ३८३ ॥
कुपरस, ३९९, (सिपरस)
कुमारीअन्तरीप, २०, २७,
२०८, २१०,
कुम्भ, २७०,
कुम्भाकोलम्, २०७ ॥
कुम्भ घोन, २०७ ॥
॥ कुरुक्षेत्र, १७८,
कुर्दिस्तान, ३९७, (गुर्दिस्तान)
॥ कुव्वतुल्इसलाम, १७५,
कुश, १५
॥ कुसुमपुर, १६०,
कुस्तुन्तुनीया, ३९६,
कृपा, (कडप) १९९,
कृष्णा, ७२, ९१, १२८, २६४,
कृष्णा, २८, ३६॥ ३८, ५५,
१९८, २८९, ३०७, ३०८,
केदारनाथ, १३३ ॥
केपअवगुडहोप, ६८,
केरल, ४४, २११, २१२,
कैखुसरो, ३८९, ४०२,
कैलास, ३३, २९३, २९४,
३३४ ॥ ३३६,
॥ कैसरबाग, १८३,
कोकण, २१४ ॥ २१७,
कोकन, ३८३, (खोकन्द)
कोचीन, १८, २०, २२९,
३२९ ॥ ३३१, ३३२, ४०४,
कोच्ची, २१२ ॥ २९९ ॥ ३००,
३०९,
॥ कोटखाई, १७९,
कोटा, २५३, २७३, २७४॥
२७५, ३०९,
कोडियालबन्दर, २१३ ॥
कोबी, ३३४,
कोमेला, १४४ ॥
कोम्बुकोनम्, २०७ ॥
कोयम्बुत्तूर, २१० ॥ २११,
॥ कोयल, १३० ॥
कोरिया, ३३२, ३३३ ॥
३३४, ३३७,
कोलम्ब, ३१५ ॥ ३१६,

कोलापुर, ३०१ ॥ ३०६,
कोलूर, ५५,
कोलेरू, ३८ ॥
कोसी, २८, ३१ ॥ १६१,
कोहकाफ़, ३६५, (ककेसस)
कोहाट, १६१ ॥
॥ कौशिल्या, २८८,
कौशिकी, ३१ ॥
कूस्सू, ३५७ ॥
क्रा, ३२६,
क्रौञ्च, १५,
क्षाड़व, ८०, १४२,
क्षेमराज, ७२,

ख

खण्डगिर का पहाड़, १५४ ॥
खम्भात, २७, ३६, ८०, २६२. २६५ ॥
खल्दूनिया, ३९७,
खलीफा मन्सूर, ४००,
खसियों का पहाड़, १६३ ॥
॥ख़ाजामुईनुद्दीनचिश्ती,१३५.
ख़ानख़ाना, ७८,
खानगढ, १८६ ॥ १९०,
खानदेस,२२१ ॥ २२२,१५६, २५८,
ख़ारज़्म, ३८३, (खीवा)
ख़ीवा, ३८३ ॥
खुजिस्तान, ३८४,
खुरदा, १५३, ॥ १५४,
खुरासान, ३७१, ३८४, (हिरात)
खुर्रमाबाद, ३८४,
खुसरो, ११५,
खेड़ा, २२३ ॥
ख़ैबर घाटा, १६१ ॥
ख़ोकन्द, ३८३ ॥

ग

गङ्गपारा, २९८ ॥
॥ गङ्गा, २७, २८ ॥ २९, ३०, ३१, ३२, ३५, ४७, ५४, ६०, ७४, ८४, ११२, ११३, ११५, ११७, ११८ १२२, १२३, १२४, १२८, १३०, १३१, १३२, १४१, १४२, १४७, १४९, १५५, १५६, १६०, १६१, १६२, १९२, २२७, २५०, ३०२, ३०६,

॥ गङ्गा की नहर, २७॥
गङ्गोत्री, २८ ॥ २८, ३१,
गज़नी, १११, १२८, २६४, ३७७ ॥
गञ्जाम, १६८, १८७ ॥
गढवाल, २५० ॥ ३०८,
॥ गण्डक, २५, २८, ३२ ॥ ३३, १६१, १६२, २३०,
गतपर्ब, ३६ ॥ २१३,
गन्तूर, १८८ ॥
गन्धार, ३७८, (कन्दहार)
॥ गया, ६७, १५७ ॥ १५८, १५८, २३६,
गर्क, २८१,
गरी, १२८, २८५,
॥ गलता, २७८,
॥ ग़ाज़ीपुर, ४६, ६७, १२२ ॥
गारू, ३३ ॥
गिरनार पर्वत, २६४ ॥
गीलां, ३८४, ३८६,
गुजरात, ५३, ६६, १०६, १८७ ॥ १८८, २६१, २६२, २६३, २६५,
गुडगांवा, १७६ ॥ १७७, २८१,
गुरदासपुर, १८६ ॥
गुर्जरदेश, ६५, २६१,
गुर्दिस्तान, ३८४, ३८७ ॥
॥ गुलाबसिंह, २३१, २४३,
गूङ्गलपट्टन, २२८,
गूजरांवाला, १८७ ॥
गोकाक, २१३ ॥
गोङ्गगोन्द्रपुर, २८८, (गङ्गपारा)
गोण्डा, १८६ ॥
गोदावरी, २८, ३६ ॥ ३८, १८७, २२०, २२१, २८८, २८४, ३०७,
गोन्दवाना, ३६,१७०,२५७,
॥ गोमती १२१, १४४, १८२, १८५, २६३,
गोमुख, २८ ॥
ग़ोर, ३७७,
॥ गोरखडिब्बी, १४५,१८४ ॥ २३१,
गोरखनाथ, १२२, १८१, २३०,
॥ गोरखपुर, १२२ ॥

गोरखा, २३० ॥
गोरापुरी टापू, २१७ ॥
गोलकुण्डा, २८० ॥
गोवा, २१२, ३०१, ३०३ ॥ ३०४,
॥ गोविन्दगढ, १८६ ॥
॥ गोविन्ददेवजी, २७७ ॥
गोविन्दपुर, ८०,
गोविन्दसिंह १६०, १८६, २६५,
गोहाट, १६३ ॥ १६७,
गौड, ६५, १४८ ॥ २२६,
गौडीपार्श्वनाथ, २२६ ॥
ग्रीनिच, ११,
ग्वालपाडा, १६३ ॥
॥ ग्वालियर, २५१, २५२ ॥ २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २७५, २७८, ३०८,

घ

॥ घर्घरा, ३२ ॥
॥ घाघरा, ३२ ॥
घाटक्या, ८८,
घोघा, ८०, २६२,

च

॥ चक, १८६,
चक्रेश्वर, २०७ ॥
चक्षुस, ३८०, (जैहू)
चङ्गेजखा ३४८, ३८७, ४००,
चटगांव, ४८, १४४ ॥ १४५, ३२३,
॥ चनाब, २८, ३३ ॥ ३४, १८७, १८८, २४३, २४५, २८५, ३०७,
॥ चनार, ६७,
चन्द, ६५,
॥ चन्दरनगर, ३०२,
चन्देरी, १३७ ॥
चन्द्रगिरि, २१२, २३० ॥
चन्द्रगुप्त, २२, ८३, ११५, २५६,
॥ चन्द्रभागा, ३४ ॥
चम्पानेर, २५६ ॥ २५७,
चम्पारन, १६२ ॥
॥ चम्बल, २८, ३२ ॥ २७४, २७८,
॥ चम्बा, ४३, ६०, २३१, २४५ ॥ ३०८,

॥ चरणाद्रि, ११७,
॥ चर्नारगढ, ११७ ॥
॥ चर्मखती, २२ ॥
चान्दा, १७२ ॥
॥ चारखाडी, २५१ ॥ २५२,
३१०,
चार्डिनसाहिब, ३८८,
चिकाकूल, १८७,
चिकाबालापूर, २८८ ॥
चितलदुर्ग, २८८ ॥
चित्तूर, २०० ॥
॥ चित्तौडगढ, २७०॥ २७२,
॥ चित्रकोट, २२३ ॥
चितग्राम, ४५, १४४ ॥
चिन्दवारा, १७२ ॥
चिपाक, २०३ ॥
चिलका, ३८ ॥ १५३, १८७,
चीन, १८, २५, ४५, ४६,
६८, ७०, १२०,१२५, १३२,
१४४, १५८, १६३, १६४,
२३१, २४३, २४८, ३१७,
३२८,३३१॥ ३३२, ३३३,
३३५, ३३६, ३३७, ३३८,
३४१, ३४३, ३४७, ३४८,
३५०, ३५१, ३५२, ३५७,
३६१ ३६४, ३८२, ४०४,
चीनङ्गअङती ३३१,
चीनापट्टन, २०२,
चूका, २४५ ॥
चेङ्गलपट्टु, २०२ ॥
चेतसिंह, १२१,
चेरापूंजी, १६३ ॥ १६४,
चोलदेश, २०६ ॥
चौ, ३४८,
चौबीसपर्गना, १३७ ॥ १४२,
चौलमण्डल, ३०८,

छ

छतरपुर, २५१ ॥ २५२,३१०,
॥ छपरा, ३२, ३३, ४७,
१६२ ॥
छिछरौी,ल २८७ ॥
छोटानटी, ८०,
छोटानागपुर, १६७ ॥ १६८,
१६९, १७१,

ज

जगतखूंट, २६२, (द्वारका)
जगन्नाथ, १५३॥ १५४,
(पुरुषोत्तमपुरी)
जगन्नाथसभा, २८३,

जगमन्दिर, २७० ॥
जङ्गबहादुर, २२९ ॥
जनक, ९१,
जनवासा, २९३,
जन्नताबाद, १४९ ॥ (गौड़)
जपान, १८, ३५७ ॥ ३६१,
४०४,
जबैल, ३९८,
जब्बलपुर, १३५ ॥ १३६,
जम्जम्, ३९५ ॥
॥जमना, २५, २८, ३१ ॥
३३, ८४, ११२, ११३,
१२३, १२५, १२६, १२७,
१२८, १३१, १३२, १३६,
१७३, २४८, २५०, ३०६,
॥जमनाकी नहर, ३७॥१७८,
जमनोती, २५, ३१ ॥
॥जम्बू, ६०, २३१॥ २४२, २४३,
जम्शेदका तख़्त, ३८९ ॥
जयचन्द, १२४,
॥जयनगर, २७६, (जयपुर)
जयन्तापुर, १४६॥ १६७,
॥जयपुर, ३८, ६७, ७२,
११८, १२७, १३४, २५३,
२७३, २७४, २७५ ॥ २७६,
२७८, २७९, २८१, २८२,
२८३, ३१०,
जयमल, २७२,
जयसिंह, ११८, १२८, १७६,
२५५, २७६, २७९,
जरह, ३७२,
जरासिन्ध, १५९,
जरूजालम्, ४०२,
(बैतुल्मुक़द्दस)
जुर्दअत, ३८२, ३९०,
जलङ्गी, ३०॥ १४२,
॥जलन्धरदुआब, ८६,
जलालाबाद, ३७५,
जसर, १४२॥ १४७,
जस्वन्तराव, ८४,
जहाज़पुर, १५४ ॥
जहान्गीर, ४१, १०३, १८७,
२४०,
जहान्गीरनगर, १४३ ॥
(ढाका)
॥ जान्हवी, २८,
ज़ाबुल, ३७७ (गजनी)
॥ जालन्धर, १८१ ॥ १८५,

जालिम्सिंह, २७४,
जालौन, १३६॥ १३७,
जार्जिया, ३६८ ॥
जिन्दरूद, २८८,
जीन्द, २८७ ॥ ३०६,
जीराडं साहिब, २६,
॥ जूआ, १२६,
जूदी, ३६७,
जूनागढ, २६३, २६४,
जूलियस, १८६,
जेडो, ३६३ ॥ ४०४,
जेनरलसेल, ३७५,
॥ जेम्स प्रिन्सिप, ११३, १२१, १८८,
ज़ैनुल्आबिदीन, २६४,
जैसलमेर, २८२, २८३, २८४ ॥ ३०५, ३१०,
जैहूं, ३८०, ३८१,
जोधपुर, ३८, ५३, ७२, १२७, १३४, २६८, २६६, २७५, २८२ ॥ २८३, २८४, ३०५, ३०६, ३१०,
॥ जौनपुर, ४६, १२१ ॥ १२२.
॥ ज्ञानबापी, ११८,
॥ ज्वालामुखी, १४५, १८२ ॥ १८५, ३६८,

झ

झङ्ग, ३२, १८६ ॥
झझर, १७६ ॥
झमीकूमा, २४२,
झालता, २१४, (साष्टी)
झालरापाटन, २७४ ॥
झासी, १३६ ॥ १३७, २५१,
झिञ्जी, २०१ ॥
झेलम, २८, ३३ ॥ ५०, १८८, १६०, २३४, ३०७,

ट

टवर्नियर, १७३,
टाङ्किङ्ग, २२६,
टाङ्गस्थान, २४४,
टाडसाहिब, २६६,
टारस, ३६७ ॥
टीपसुल्तान, ८३, २१२,
टीहरी, २५०॥ २५१ ॥ २५२,
टेनासेरिम, ३२२ ॥
टोडलमल, ७८,
टोङ्क, २७५ ॥ ३१०,
॥ टोन्स, १२२, २५१ ॥

टूराव, ४०३ ॥

ठ

टट्टा, ८६, १८८, २२५ ॥

टाणा, २१४ ॥ २१७,

ड

डच, १५२,

डन, १५, ३६५,

डमोइ, १३६ ॥

॥ डल, २३८, २४०,

डाकौर, २६२ ॥

डाक्तरवैट, ४० ॥

डाडैनलस, ३८७, ४०३,

॥ डीग, ८४, २८० ॥

डूङ्गरपुर, २६८, २७२ ॥ ३१०,

डेडसी, ३८८ ॥ ४०२,

डेनमार्क, १५२, ३०२, ३०३,

डोरगडा, १६८ ॥

ढ

ढाका, ६७, १४३ ॥

ढाकाजलालपुर, १४३॥

ढुगड्डार, २७५ ॥

त

तञ्जाउरू, २०६ ॥ २०७, २०८, ३०२,

॥तत्तापानी, २४६ ॥

तदमोर, ४०२, (पालमीरा)

तबरेज, ३८४,

तराई, ४८, ५३, ८४, १६१, १२२, २२८ ॥ ३०५ ॥

तलमि, २६४,

तलमिफिलदेलफसदायोनिसस २६५,

॥ तलावडी, ७५,

तसीसूदन, २४५ ॥

ताङ्ग, ३४८,

॥ताजगञ्जकारौजा, १२५ ॥ २६८,

तातार, ३२२, ३३३, ३३४, ३३७, ३३८, ३५०, ३५७, ३६५, ३६८, ३८०

तानसैन, ७८, १२७, २५४,

तापी, २८, ३६॥ २२१, २२२, २५३, २५६, २८८,

तामल, ६५,

ताम्रपर्णी, ३१२, (लंका)

॥तारागढ, १३४ ॥

॥तारेवालीकोठी, १८३॥

तालचेरी, २१२ ॥

तिब्बत, २०, २२, २५, ७०, १२०, २२८, २३१, २३८, २४४, ३१७, ३३२॥ ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३४०, ३४८, ३५२,
तिरकम्बाडी, ३०२ ॥
तिरहुत, ४२, ६६, १६१ ॥
तिरियाराज,२११,(मलीबार)
तिरुच्चिनापल्ली, ३६, २०५ ॥ २०६,
तिरुनमाली, २०१ ॥
तिरुनेल्लुवलि, २१० ॥ ३००,
तिरुवनन्तपुर, ३००, (त्रिवाङ्कोडू)
तिलङ्गाना, ६६,
तिष्ठा, २८, ३२ ॥ १४७, २४३,
तिहरान, ३८४,३८५,३८७ ॥ ३८८, ४०४,
तीनलोक, २९३,
तुङ्गभद्रा, ३६ ॥ १९९,२००, २८९,
तुलव, ४४, २१२, २१३, (मङ्गलूर)
तुलसीभवानी, २३० ॥
तुर्किस्तान, ३७८, ३८०, ३९६, (तूरान)
तूतिकोरिन, २१० ॥
तूर, २९२,
तूरान, १८, ६८, ७०, १९१, ३३१, ३३२, ३६४, ३७१, ३८० ॥ ३८३, ४०४,
तृष्णा, ३२ ॥
तेजपुर, १६३ ॥
तेल्लिचेरी, २१२ ॥
तेहिच्चूरनदी, २४५,
तैमूर,१८,७६,७८,८१,८३, ३८३, ३८८, ४००,
तैलङ्ग, ६५, २८९,
त्रिपतिनाथ, २०५ ॥
त्रिपुरा,४८, ५०, १४३ ॥ १४४, १४५,
त्रिविकेरा, २०१ ॥
त्रिविन्द्रम्, ३०० ॥
॥ त्रिवेणी,३१ ॥ ११२,११३,
त्रिभुक्ति, १६१, (तिरहुत)
त्र्यम्बक, ३६, २२१ ॥
त्रिवाङ्कोडू, ४४, ४५, २९९,

३०० ॥ ३१०,

तिक्कोता, ३२ ॥

थ

॥थानेसर, ७५, १७८ ॥

द

दखनगढ़बाजपुर, २८ ॥

दजला, ३८७ ॥ ३९८,४००,
४०१,

दण्डकारण्य, २११ ॥

दतिया, २५१, ३१०;

॥दमदमा, १४१,

दमिश्क, ३८८, ४०१ ॥

दमूजङ्ग, २४३, (शिकम)

दर्याबाद, १८६ ॥

दर्यायउम्मा, ३८३,

॥दलीपसिंह, ५५, ८६,

दाऊद, ४०२,

दाक्षिणात्य, १११,

॥दानापुर, १६१ ॥ २४४,

दारागाह, २१, ३८८,

दार्जलिङ्ग, २४४ ॥

दिज़फुल, ३८४,

दिनाजपुर, १४७ ॥ १४८,

दियारबकर, ३८७ ॥

॥ दिलकुशा, १८३ ॥

॥ दिल्ली, ३७, ६७, ७२,
७४, ७६, ७८, ८२, ८४,
८८, ८७,८८,११५, १२४,
१३५,१७२ १७३, १७६,
१८७, २१८, २७८, २८२,
३०६, ३८३,

दुआबा, ३७, ८५, ३०६ ॥

दुआबैबस्तजालन्धर, बारी,
रचनाजच,सिन्धसागर,३०७॥

दुखघर, २८३,

दुग्धकामिनी, १५८,

दुर्योधन, २६१,

देराइस्माईलखां,१९० ॥

देरागाज़ीखां, १९० ॥

देवगढ, १५० ॥ २८२,

देवराजा, २४४,

देवरावल, २८५ ॥

देवला, २७३,

देवा, ३२ ॥

देवास, २५८, २५८ ॥ २६०,
३१०,

देविका, ३२ ॥

देसा, २६३ ॥

देहरा, ४५, १३१ ॥ १३२,
दोस्तमुहम्मद, ३७५, ३७६,
दौलतखाना, १९३ ॥
दौलतराव, ८४, २६०, २६५,
दौलताबाद, २६१ ॥ २६२,
२६४,
दौलीनदी, २५,
द्रविड, ६६,
द्राविडदेश, २११,
द्वारका, २६२ ॥ २६३,

ध

धर्मपत्तन, २३०, (भातगांव)
॥ धर्मशाला, १८२ ॥
धवलगिरि, २५ ॥
धवली, २६५,
धार, २५८, २५९ ॥ ३१०,
धारवार, २१३ ॥
धारानगर, २५९ ॥
धूलिया, २२१ ॥
धैवन, २३० ॥
॥ धौलपुर, २५२, २७९,
२७९ ॥ ३१०,

न

नगर, २०७ ॥ २२५ ॥
॥ नगरकोट, १८२, (कांगडा)
नदिया, १४२ ॥
॥नयनादेवी, २४८ ॥
नयपाल, ४४, ६०, ६६, ८५,
१२२, १३३, १८३, १९२,
२२७ ॥ २२९, २३०, २४३,
३०५, ३१०,
नरवर, ७२, २५६ ॥
नरसिंहपुर, १३६ ॥
नरायनगञ्ज, १४३,
॥नर्मदा, २७, २८, ३५ ॥
४६, ५५, १११, ११५,
१३६, १७२, २२२, २५३,
२५७, २५८, २६०, २८९,
३०७,
नल, २५६,
नवद्वीप, १४२ ॥ (नदिया)
नवाबगञ्ज, ३२,
॥नशात, २३९,
नसराबाद, २१३, (धारवार)
॥ नसीम, २३९,
नसीराबाद, १३५ ॥ १४७ ॥
॥नहरगङ्गा की, ३७ ॥
॥नहरजमना की, ३७ ॥

नागनदी, १७२,
नागपुर, ३६, ४१, ८४, ८६, १६८, १७० ॥ १७२, २८८, २८४, ३०७,
॥नागरनगर, २३८ ॥
नागौर, १५० ॥ २०७ ॥
नाङ्गिङ, ३३५,३३८,३५१,
नाथद्वारा, २७० ॥
नादिर,१८, २१, ८२, ६२, ६८, १०५, १७४, ३७५, ३८७,
नान्देड, २६४ ॥
नाफ़नदी, १४४,
॥नाभा, २८७ ॥
नारायणी, २३०,
नावकोली, १४३ ॥
नासिक, २२० ॥ २२१,
॥नाहन, २४८ ॥
निगासकी, ३६१॥
निङ्पो, ३५१,
निजामुद्दीन, १७५,
निजामुल्मुल्क, ८२,
निच्छीहमा, २३७ ॥
निमरूद, ४०३,
निषधदेश २५६,
नीतिघाटी, २५,
नीफ़न, ३५७ ॥
नीमखार, १८७,
॥नीमच, २५६ ॥
॥नीमखेडा, २७५ ॥
नील, ४००,
नीलकण्ठ, २३१ ॥ २६३,
नीलगिरि, २८ ॥ २१०,
नूनिया, ४०२,
नूरजहां, २४०,
॥नूरपुर, १८२ ॥
नह, १३, ३६६,
नृसिंहदेवकंङ्गोरा, १५४,
॥नेपियर, २२४,
नेल्लूर, १६८ ॥ १६६, २०२,
नैनवा, ४०२ ॥
॥नैनीताल, १३४ ॥
नैमिषारण्य, १६२ ॥ (नीमखार)
नैर्ऋतकोनकी सीमा और सम्भलपूरकी अजण्टी और छोटेनागपूरकी कमिश्नरी, १६७ ॥ १७०,

नोरजैसां, २३५॥

नौकुचियाताल, १३४॥

नौगांव, १६३॥

नौशेरवां, २२, २७०,

प

पञ्चगौड, ६५,

पञ्चद्राविड़, ६५,

पञ्जनद, ३३॥ ३४, २८५,

पञ्जमहल, १८३॥

पञ्जाब, ३३॥ ६१, ६६, ७४, ८६, १०८, १७२, १७६, १८७, २३१, २८४, ३०७,

पञ्जिम, ३०४॥

॥पटना, ३२, ४२, १०५, १६०॥ १६१,

॥पटनेश्वरी, १६०,

पटुच्चेरी, ३०२॥ ३०३,

॥पटियाला, २८३, २८४, २८५॥ २८६, २८७, ३०९,

पट्टनसोमनाथ, २६३॥

पडुआ, १४६॥

पण्डरपुर, २१८॥

पद्मा, २६॥ १४३,

पद्मावती, १६० (पटना)

पन्ना, ५५, २५१॥ २५२, ३११,

पन्नार, १६८,

पबना, १४७॥

पयङ्ग, २३५॥

परतापगढ, १६५॥ २५३, २६६, २७२॥ ३१०,

परशुराम, १२५, १६५,

परशुरामसभा, २६३,

॥परिस्तान, १६३,

पर्सिपोलिस, ३८६, (इस्तखर)

पलक्सी, २३५॥

पलासी, ८१, १४२॥

पलियाकट, ३८॥ (पल्लीकाट)

पल्लीकाट, ३८॥

पवनगढ, २५६, ३०१,

पश्चिमघाट, २८॥ ३६, ४४, ४५, ३०३, ३०७,

पाईघाट, ४३, ३०७,

पाकपट्टन, १८६॥

॥पाटलीपुत्र, १६०, १६१, (पटना)

पाण्डिचेरी, ३०२ (पटुच्चेरी)

॥पानीपत, ७६, १७७॥ १७८,
पामबन, २०६,
॥पामपुर, ४२,
पारखजी, १२८,
पारफ़ार, ४०१,
पार्कर, २२५॥
पार्वती, २७१,
पार्लामिण्ट, १८;
पार्श्वनाथ, १५४,
पाल्मीरा, ४०२॥
पालार, २०१, २०२, २०५,
३०२,
पावरी १३२॥
पासिफ़िक, ५॥ १५, ३३१,
३३२, ३३३, ३६४, ३६५,
॥पिञ्जौर, २८६॥ २८७,
पिण्डदादनखां, १८८॥
पित्ती, २५,
पिनाकिनी, १६६, (पन्नार)
पिनौलगढ ३०१,
पिशौर, ४१, ६८, ७३, १६०,
१६१॥
पीटर, ५१,
पीटर्सबर्ग, ३६१,
पीलीभीत, १२६॥
॥पुण्डरीकाक्ष, १५७,
पुण्यभूमि, १११,
पुरगिल, २५॥ २६,
पुरनिया, ४६, १४८॥
पुरमण्डल, २४२,
पुरी, १५३॥ (खुरदा)
पुरु, ५०, ७२,
पुरुरव, ७२,
पुरुलिया, १६६॥
पुरुषोत्तमपुरी, १५३॥
पुर्टगाल, ६६, ७६, ८०,
२१३, ३०२, ३०८, ३२८;
॥पुष्कर, १४, १३५॥
पुष्पेरी, २७६,
पूना, ६६, ८५, ६८, २१७॥
२१८, २२०,
पूरबन्दर, २६३॥
पूर्णावानदी, १४८,
पूर्वघाट, २८॥ ३०७,
पूलोपिनाङ्ग, ३२८॥
पृथीराज, ६५, ७३, ७५,
१२४, १७५,
पेकिन, ३३५, ३३७,

३३८, ३४६, ३५१, ४०४,
पेन्ना, १९८, (पन्नार)
पैगू, ३१८, ३२३,
पोफम्साहिब, २५३, २५४,
पौञ्जरानदी, २२१,
प्रभुकुठार, १६५,
॥प्रयाग, ३१॥ ७२, १०५,
११२, २६४, (इलाहाबाद)
प्रलयघाट, ३८॥ (पल्लीकाट)
प्रह्लाद, ७५,
प्राग्ज्योतिष, १६७ (कामरूप)
प्राणहत्या, २८९,
प्रियदर्शी, ११२, (अशोक)
प्लच, १५,

फ

॥फ़तहगढ, १२४,
॥फ़तहपुर, १२३॥
फ़तहपूरगूगेरा, १८६॥
॥फ़तहपुरसीकरी, १२७॥
फ़तहमहल, २७०॥
फ़रङ्गिस्तान, ५, १३, १४,
६३, ६४, ६७, ६८, ६९,
७०, ७९, ८३, ९२, १२५,
३१४, ३४७, ३५०, ३६२,
३६५, ३८२, ३९५, ३९६,
फ़रह, ३७२,
॥फ़रहबख़्श, १९३॥
फ़रासीस, ८३, १५२, २४७,
३०२, ३०३,
फ़रीदकोट, २८७॥
फ़रीदपुर, १४३॥
फ़र्रुखसियर, ९८,
॥फ़र्रुखाबाद, ९७, १२३॥
१२४, १२८,
॥फल्गु, १५७॥
फ़ासीसा, ३३३॥
फ़ार्स, ३८४,
फ़िदाईखां, २८६,
फ़िलिस्तीन, ३९७॥ ३९८,
४०२,
॥फ़ीरोज़पुर, १७८॥ १७९,
फ़ीरोज़शाहतुग़लक़, ३७॥
१७६, १७७,
फ़ुरात, ३९७, ३९८, ४०२,
४०३,
फ़ुलर्टन साहिब, २५१,
फ़ुलाली, ३२४,

फूफूक्, २५१,
॥फैजाबाद, १८५ ॥ १८६,
फ़ोर्टमाद्रा, १३२,
॥फ़ोर्टविलियम्, ८०, १४२,
२०२,
फ़ोर्टहेस्टिङ्ग्ज़्, १३३,

ब

बकलेमर, १५०,
॥ बकसर, १६२ ॥
बक्कर, २२५ ॥
बगदाद, ६४, २६४, ३८८,
४०० ॥ ४०१, ४०२, ४०३,
बगुडा, १४७ ॥
बघेलखण्ड, १६८, २५० ॥
३१०,
बङ्काक, ३२५ ॥ ४०४,
बङ्गला, १८५, (फ़ैज़ाबाद)
बङ्गलूर, २८७ ॥ २८८,
बङ्गालहाता, १११, २०४,
बङ्गाला, ३०, ६६, ८०, ८१,
१०८, १३७, १४२, १४८, १५२,
१५६, १५८, २०६, २२६,
२२८, २२८, २८८, ३०६,
३१७, ३२३, ३२४, ३३२,
बटाला, १८६ ॥
॥ बटिण्डा, २८५, २८६ ॥
बडोदा, २५३, २५७, २५८,
२६० ॥ २६२, २६३, २६५,
२६८, २६८, २८२, ३१०,
बदख़्शां, ३८१ ॥
बदरीनाथ, २५, १३३ ॥
॥ बदाऊं, १२८ ॥ १२८,
॥ बनारस, १६, ३२, ४२,
४३, ६७, ८१, १०५, ११७ ॥
१२१, १२२, १५१, १८८,
२५६, २७८,
बन्नास, २६३, २७०, २७५,
बम्बई, ४२, ४३, ८०, ८८,
१०८, २०४, २१४ ॥ २१५,
२१६, २१७, २२०, २२१,
२२२, २२३, २८८, ३०४,
बम्बईहाता, १११, २१३ ॥
२१८,
बम्बादेवी, २१४ ॥
॥बयाना, २८१ ॥
॥बरणा, ११७,
बरदराज, २०५,
बरदा, ३६ ॥ २५२,

बराड, १७०, २६०,
॥ बराबर, १५८॥ १५९,
॥ बरेली, १२६॥ २८८,
॥ बर्द्दवान, १४२, १५१॥ १५५,
१६८, २०६,
बर्नियो ३३६,
बर्म्हा, १८, २०, ७०, १२०,
१४४, १४९, २८८, ३०६,
३१४, ३१६॥ ३२२, ३२३,
३२४, ३२५, ३२६, ३२९,
३३१, ३३२, ३३५, ४०४,
बर्सा, ४०३,
बल्ख, ३८२,
॥ बलन्दशहर, १३०॥ १७२,
बलराम, ७२,
बलहरी, १९९, (बल्लारी)
बलि, ७५,
बलुआ, १४३॥
बलूचिस्तान, ३७१॥ ३७२,
३७४, ३७६, ३७९,
बलेवाकुण्ड, १४५॥
बलेश्वर, ८०, १५२॥ १६९,
३०३,
बल्लभीपुर, ७२,
बल्लारी, १९९॥ २००,
बसतर, १७०॥
बसरा, ३९८, ३९९, ४०१॥
बहराइच, १९६॥
बहराम, ६४,
॥बहरामपुर, १४९,
बहरेअहमर, ३९१, (रेडसी)
बहरेखारज़म, ३८१ (अराल)
बहरेखिज़र, ३८० (कास्पियनसी)
बहरेलूत, ३९८, (डेडसी)
बहरैन, ३९३॥
॥ बहादुरगढ, २८६॥
॥ बहादुरशाह, ७८, २७२,
बहावलपुर, ३४, २२४, २८३,
२८४॥ २८५, २८६, ३०५,
३१०,
बाक़रगञ्ज, १४२॥ १४३,
बाङ्कुडा, १५५॥ १६७,
बाकू, ३६८॥ ३६९,
बाग, २५५॥
बाघमती, २२९, २३०,
बाजगुज़ारमहाल १६८, १६९।
बाज़बहादुर, २६०,

॥ वाजीराव, ८४, ८५,
वाडा, ४१,
वाडी, ३०१॥
॥ वाढ, ४६, १६१ ॥
वादलगढ, १२५, (आगरा)
वानगङ्गा, १७२ ॥
॥ वान्दा, १२२॥ १२३,
वान्सवाडा, २५३, २६६, २७२॥ २७३, ३१०,
वाबर, ७६, १७७, ३७६,
वाविल, २२, २३६, ४०२,
वामियां, ३७८,
वारकनदी, १४६,
॥ वारकपूर, १४१,
वारहभट्टी, १५३॥
॥वाराणसी, ११७, (बनारस)
वारासत, १४२ ॥
वालवक, ३६८, ४०१ ॥
वाल्मीक, १६५,
वालाघाट, ३०७,
वालासोर, १५२, (बलेश्वर)
वालाहिसार, १६१ ॥ ३७६ ॥
वास्फोरस, ३६७,
विछिया, २५१,
॥ विजनौर, १२६ ॥
विजयनगर, ६४, २००॥ २०४,
विजावर, २५१॥ २५२, ३११,
॥ विठूर, ८५, १२३॥
विदर, २८६, २६४ ॥
विदर्भ, २६४, (विदर्भ)
विद्यानगर,२००,(विजयनगर)
॥ विन्दुमाधव, ११८,
॥ विलासपुर, ४३, २४८।
विलूरताग, ३८०, ३८१,
विल्लूर, २०१ (इल्लौर)
विराट, २७८,
॥विसहर, २३१, २४८॥ २५०, ३११,
॥बिहार, ३२, ८१, ११६, १४६, १५६, १५८ ॥ १५६, १६१,१६८,२२८,२५०, ३२२,
विहारी, २७६,
वीकानेर, २७५,२८२,२८३॥ २८४, २८५, ३०५, ३१०,
वीजापूर, ३०, ६६, २१६॥
वीरवल, ७८,
वीरबुक्कराय, २००,
वीरभूम, ५५, १४६ ॥ १५१,

१६८,
बीरसिंहदेव, १२८,
बीहर, २५०॥
बुखारा, २७४, ३८१, ३८२, ३८३, ४०४,
बुद्ध, १४, ७२, १२१, १५६, १६०, २१८, २४४, २६४, ३१६, ३३०, ३७८,
॥बुद्धगया, १५६॥
बुन्देलखण्ड, ५५, ६६, ८४, २५०, २५१॥ २५२,
बुर्हानपुर, २५६॥
बूअलीकलन्दर, १७७,
बूढ़िया, २८७॥
बूढीगङ्गा, १४३,
बूढीबलङ्ग, १५२,
बून्दी, २६६, २७३॥ २७४, २७५, ३११,
बूशहर, ३८५,
॥बृन्दावन, ६१, १२८,
बेकल, ३६६॥
बेणु, ७५,
बेत्वन्ती, २५५, (बेत्वा)
बेत्वा, १३६, २५२, २५५,
बेलगांव, २१३॥ २१४,
बैतरणी, १५४,
बैतुल्मुकद्दस, ३६६, ४०२॥
बैतुल्लहम, ४०२॥
बैतूल, ३६, १३६॥
बैद्यनाथ, १५०,
बैरागढ, १७१,
॥ बैरीनाग, २३५॥
बैरीसाल, १४२॥
बैवस्वतमनु, १२,
॥ बौलिया, १४७॥
ब्यागारू, २०८,
॥ ब्रज, ६६,
ब्रह्मपुत्र, २२, २५, २८, २६, ३५॥ १४३, १४६, १४७, १६३, १६४, १६५, १६७, २८८, ३०४,
ब्रह्मा, १३५, १५६, २१७, ३१७,
ब्राह्मणी, १५, ३६५, ३६७,

भ

भक्कर, २२५, (बक्कर)
भडोंच, ३६, ४६, २२२॥२२३, ३४८, ३६२,

भगद्राग, १७२ ॥
भद्रावत, २५५, (भिलसा)
भरत, २०,
॥ भरथपुर, २७५, २७८ ॥
२८०, २८१, ३११,
भर्तृहरि. ११७, २५५,
भवानेश्वर, १५४ ॥ २६५,
भागनगर, २८०,(हैदराबाद)
॥भागलपुर, २७, ३२, १५५ ॥
१६१, २२१,
॥भागीरथी, २८॥ २८, ३०,
१३७, १३८, १४२, १४८,
१५१,
भातगांव, २३० ॥
भिलसा, ४१,८१,१२०,२५५ ॥
भारतवर्ष, २०, ४१, ११३,
३०४, ३१२,
भीम, ११३, १५८, २७२,
भीमताल, १३४ ॥
भीमा, ३६॥ ५२, २१८,
भुज, २६७ ॥ २६८,
भुटान, ४२,२४३,२४४ ॥ ३११,
भपाल, २५२, २५७ ॥ ३११,
भगुगोग, २२२, (भड़ोंच)
भोज, ८३,२५७, २५८,२६०,
भोट, ६६, २४४, (भुटान)

म

मऊ, २५८ ॥
॥मकफर्सन, १७०,
मकफालैन, २५८,
मकसीको, २४७,
मकसूदाबाद,१४८॥ (मुर्शिदाबाद)
मक्का, २८१,२८४॥ २८५,४०४
मखदूमशाहदौलत, १६१,
मगध, ७४, ११३, १५८ ॥
१६०, २६४, ३२२,
॥मङ्गलपुर, १५०,
मङ्गलूर, २१२ ॥ २१३,
॥मच्छीभवन, २८० ॥
मछलीबन्दर, ३६, १८८ ॥
॥मटन, २३६ ॥
मणिकर्ण, १८२ ॥
मण्डला, १३६ ॥
मण्डलेश्वर, २५८ ॥
मण्डवी, २६८ ॥
मण्डी, २४५ ॥ २४६, ३११,
मत्स्यदेश, १४५ ॥

॥मथुरा, १२७॥ १२८,२०७ ॥
२०८, २१०, २७६, २८१,
३००,
मदुरा, २०७ (मथुरा)
मदीना, ३६१, ३६५ ॥
मद्रदेश, १८८, २४४,
मध्यदेश, ६६, ७४, २२७,
२५०॥ ३०६,
मनीपुर, २०,४४,१६७,२८८॥
३११,
मनु, १३, ७१, १६५, ३२१,
मनेर, १६१ ॥
मन्दरगिर, १५६ ॥
मन्दराज, ८०, ८६, १०८,
१९७, १९८, १९९, २००,
२०२, २०५, २०७, २०८,
२१०, २१२, २१३, ३०२,
३०३, ३१५,
मन्दराजहाता, ४०, १११,
१६८, १९७ ॥ २८९,
मन्नारु, २०९ ॥ २१०,
मन्सूरी,२७, १३१ ॥ १३२,
ममदोत, २८७ ॥
मरकाडा, २९९ ॥
मलवार, ५४, २१२, ३००,
(मलीबार)
मलय, २११, ३२६.
मलयागिर, २७॥ ४४,
मलाका, १८, २०,२१७,३२३
३२६ ॥ ३२८, ४०४,
मलीबार, २११ ॥
॥मलौन, ८४, २२९ ॥
मशहिद, ३८४,
महमूदगज़नवी, ७४, ७५,
९२, १२८,२६३,२६४,३७५
३७७, ३७८,
॥ महाकाल, २५५,
महाचीन, ३३२,
महाज्वालामुखी,३६९,(बाकू)
महादेव, २१७, २७१, २९४,
२९८,
महानदी, २८, ३६ ॥ ५५,
१११, ११५, १५३,
महानन्द, ७४, १४९,
महाबलिगङ्गा, ३१३॥
महाबलिपुर, २०५॥
महाबलेश्वर, ३६, २१८॥
महाराष्ट्र, ६५, २२२॥

महिशासुर, २८६, (मैसूर)
॥ महीदपुर, ८५,
महीनदी, २६५,
महेगर, २५८॥ २५८,
माचेडी, २८१, (अलवर)
माज़न्दरान्, ३८४, ३८५, ३८६,
माञ्झी, ४७,
माणा, ३३६, (मानसरोवर)
मागड, २६०॥
मायाभङ्गा, ३०॥
माधवाचार्य, २००,
मानतलाई, ३३६, (मानसरोवर)
मानधाता, ७५, २५८,
मानभूम, १६८ ॥
॥मानमन्दिर, ११८,
मानसरोवर, ३३, ३५, २२७, ३३६ ॥
मानिकयाला, १२०, १८८ ॥
मामाचम्वेली, २८०,
मामावर्द्दन, २८०,
मामूं, ६४,
मारवाड, ७२, २८२,
मारिस, २७०,
मार्टीन, १८४,
मार्मोरा, ३८७,
मार्शमेन साहिब, २६०.२६८,
मालदह, ४३, १४८॥ १४८,
मालपर्व, ३६ ॥
मालवदेश, २५५,
॥मालवा, ४१, २५३॥ २५५, २५७,
॥मालेरकोटला, २८७॥ ३०८,
मिङ्ग, ३४८,
मिठनकोट, ३३, ३४,
मिथिला, ६५, ८१, १५८, १६१,
मियानी, २२४ ॥
॥मिरजापुर, १६, ११५, ११७, १६८, २५०,
मिसकानर, ३४३,
मिसर, २१, ६३, ६८, ७०, २६५, ३८०, ४००,
मीनम्, २२४ ॥ २२५,
मीनाची, २०७ (मथुरा)
मीयरसाहिब, ३८५,
मीयामीर, १८७,
मीरखां, ८५, २७५,

मीरजुमला, ५५,
मीराबाई, २७१,
मुइज्जुद्दीनकैकुबाद, ६४,
मुक्तिनाथ, ३२, २३० ॥
॥मुगेर, १५६॥ १६१, १८६,
मुचकुन्द, २५६,
॥मुज़फ़रनगर, १३० ॥
मुज़फ़रपुर, १६१ ॥
मुञ्जअन्तरीप, २०, २२४,
॥मुङ्गिर, १५६, (मुगेर)
॥मुन्शीमोहनलाल, ३८१,
॥मुबारकमञ्जिल, १६३ ॥
मुबारकशाह, ६४,
मुमताज़महल, १२५,
मुरली, १४२ ॥
मुराद, ४००,
॥मुरादाबाद, १२६ ॥ १३०, २८८,
मुर्तज़ानगर, १६८, (गन्तूर)
मुर्शिदकुलीखां, १४६,
॥ मुर्शिदाबाद, ६७, ८०, १४२, १४६॥ १५२, १५५,
मुलतान, ३४, ४२, ५३, ५६, ६७, १८६॥ ३७५,
मुल्लापुर, १६६॥
मुस्तासिमबिल्लाह, ४००,
मुहम्मद, ३६४, ३६५. ४००,
मुहम्मदी, १६६॥
मुहम्मदगोरी, ६२,
मुहम्मदगौस, २५४,
मुहम्मदतुग़लक़, ६५, ६८, २६२,
मुहम्मदशाह, ८२, १७५,
मुहम्मदशाहकामक़बरा, २१६,
मुहम्मदशाहदखनी, ६४,
मुहम्मदाबाद, ११७, (बनारस मटी, २०० ॥
मूतानदी, २१७,
मर्चूतिबेत, २८ ॥
मूलूआदिलशाह, ६६,
मूसा, २६०,
मूसापैग़म्बर, ३६२,
॥ मूसाबाग़, १६३,
मूसिल, ३६६, ४०१॥
मेघना, १४३,
मेजररालिन्सनसाहिब, ३८६,
मेडिटरेनियन, १५, ७०, ३६७,

३८८, ४०२,
मेदनीपुर, १५२॥ १६८,
॥ मेरट, १३०॥ १३१,
मेवाड, ७४, २६८॥ २७५,
मेवात, २८१ ॥
॥ मैनपुरी, १२५ ॥
मैमनसिंह,१४६॥ १६५,१६७,
मैसूर, ८३, ८६,२१३,२८५॥
२८६, २८७, २८८, २८८,
३०७, ३११,
मोडवाडा, २२६॥
॥ मोतीडूङ्गरी, २७३,
॥ मोतीमस्जिद, १२७॥
॥ मोतीमहल, १८३॥
मोतीझाडी, १६२॥
मोनिया, १६१, (मनेर)
मोरङ्ग, १४८,
मौलमीन, ३२२॥ ३२३,
मौसलीपट्टन, १८८, (मछली-
बन्दर)

य

यज़्दगुर्द,३८७,
यगड़ाव्, ३२२॥
यदु, ७२,
यमन, ३८५,
॥ यमुना, ३१ ॥
ययाति, ७२, ७५,
याङ्गमीक्रायङ,३२५॥ ३३८,
यार्कन्द, ३३८॥
युधिष्ठिर, ७२, ८३, १७३,
यूनान, ४१, ६८, ३८०,
यूरल, १५, ३६५,
यूरूप, १४, १५, १८, ३६४,
(फरंगिस्तान)

र

रङ्गपुर, ४८, १४७॥ १६७,
रङ्गून, ७८, ३२२, ३२३,
रजपुताना, ६१, ६६, ८५,
१३४, १३५,
रजबसालार, १८६,
रञ्जीतसिंह, १८६, १८७,
रणथम्भौर, २७८॥
रत्नगिरि, २१४॥
रत्नपुर, ११८, (आवा)
रन, २२५,२२६,२६५ ॥ २६६,
२६७,
॥ रनबीरसिंह, ३३१, २४५,
रथिको, ३३५॥

रश्द, ३८४,
राकसताल, ३३६, (मान-
सरोवर)
‖राजग्रह, ११६, १५६‖ १६०,
‖राजमहल, २६, १५५‖
राजमहेन्द्री, ३६, १६७‖१६८,
राजपाल, ७२,
राजपुरा, १३२‖
राजशाही, १४७‖
राजसमुद्र, २७०‖
राजाविजय, ३१४,
राफ़फ़िच, १०५, १२७,
‖रामगङ्गा, १२६,
रामचन्द्र, ७१, ७२, ६१,
६३, १८६, १६५, १६६,
२००, २०६, २१०, २२०,
२७५,
रामडा, २६३‖
रामदास, १८६,
‖रामनगर, १२१‖
‖रामपुर, २४६‖ २८८‖ ३११,
‖रामबाग़, १२७,
‖रामशिला, १५७,
रामस्वामी, २०७, ३०८,
रामेश्वर, ६१, २०८‖ २०६,
रायकोट, २८७‖
रायपुर, १७२,
रायबरेली, १६५‖
रावण, ७५, ८६, ३१२,
रावणहृद, ३३, ३३६‖
‖रावती, १२२,
रावनकीखाई, २६३,
रावलपिण्डी, १८८‖ १६१,
‖रावी, २८, ३३‖ ३४, १८६,
१८७, १८६, २२१, २४५,
२४६, ३०७,
रासमुञ्जरी, २०,
रिहासी, २४३‖
रुकनुद्दीनफ़ीरोज़शाह, ६४,
रुक्मिनी, १६०,
‖ रुरकी, १३१‖
रुहतास, १८८‖
रुहतासगढ, १६२‖
रुसलू, २३७‖
रुहेलखण्ड, १३०‖
रूपबास, २७६‖
रूम, ६८, १२५, १८६, २७०,
३८४, ३६१, ४००,

रूमिया, ३८५,
रूम, ५१, ६८, ३३२, ३६४, ३६५, ३६६, ३६८, ३८०, ३८२, ३८३, ३८४,
रेगरवां, ३७७॥
रेडमी, १५, ७०, ३८१, ३८२, ३८५,
रेवताचल, २६४, (गिरनार)
रेवा, २५१॥
॥ रेवालसर, २४६॥ २४८,
रोडम, ३८८॥
रोडी, २२५॥
रोहतक, १७७॥
रोहिताश्व, १६२, (रुहतास)
रौजा, २८४॥
रौशनाबाद, १४३॥

ल

लक्ष्मण, १८६,
लक्ष्मणावती, १४८॥ १८२॥
॥ लखनऊ, ६१, ६६, ७८, १८२॥ १८४, १८५,
लखमपुर, १६३,
लखीजङ्गल, ५२, २८६॥
लङ्का, २०८, २१०, २८३, २१२॥ २१३,
लद्दाख, २३१, २४४,
लन्दन, ७८, १२४, १४१, १५१,
लन्धौर, १३१॥
ललितपट्टन, २३०॥
ललितेन्द्रकेसरी, १५४,
लव, १८६,
लवकोट, १८६,
लसवारी, ८४,
लार, ३८४,
लारिस्तान, ३८४,
लार्डमेकार्टनी, ३३७,
लार्डवालेन्शिया, ७८,
॥ लाहौर, ५८, ८८, ११२, १७२, १७३, १७६, १७७, १७८, १७८, १८१, १८२, १८५, १८६॥ १८७, १८८, १८८, १८०, १८१, ३७५,
लिसबन, ६८,
लीति, २५,
लीयूकीयू, ३३३॥
॥ लुधियाना, १७८॥ १८१, २८६,

लुहारडग्गा, १६६ ॥
लूरिस्तान, ३८४,
लेक, ८४, १२७, १७४,
लेना, ३६६ ॥
लैया, १६० ॥
लोनीनदी, २२५,
लोहगढ, २१८ ॥
लोह्वघाट, १२२ ॥
ल्हासा, २४४, ३३८ ॥

व

वन्तूरा, १८८,
वलगा, १५, ३६५, ३६६,
वलियस्, ७८,
॥ वलियम् इडवार्डस्, १८०,
वार्करसाहिव, १२१,
वालाजाहनगर, २०५ ॥
वालिचसाहिब, ४० ॥
वास्कोडिगामा, ६६,
वास्सोटाह, २१८ ॥
विक्टोरिया, ५५, ८८, ६७, १०७,
विक्रमादित्य, ७२, ७३, ६३, ११७, २५५, २६०,
विजयपुर, २१६, (बीजापुर)
विजिगापट्टन, १६७ ॥
॥वितस्ता, ३३ ॥ ३८, २३४, २३५, २३८, २३६, २४०, (झेलम)
॥विन्ध्यबासिनी, ११७,
॥विन्ध्याचल, २७॥ २८, ३२, ४५, ११५, ११७, १३५, १५५, २५१, २५३, २५८, ३०६, ३०७,
॥विपाशा, ३४ ॥
विभीषण, ३१२,
विलकिन्सनपुर, १६८ (छोटा-नागपुर)
विलिजली, ७६, ८४, २६५,
विल्वेश, २५५, (भिलसा)
विशनमती, २२६,
विशाखपट्टन, १६७ (विजिगा-पट्टन)
विश्वकर्माकीसभा, २६३,
विश्वमित्र, २६२,
॥विश्वेश्वर, ११८,
विष्णु, २०५,
विष्णुकाञ्ची, २०५ ॥
विष्णुकुञ्जी, २०५ ॥

विष्णुगंगा, १३३,
॥विष्णुपादोदका, १५७,
विमर्त्र, ७२,
वेल्सकाशाहजादा, २२८,
वेटमाहिब, ४०,
वैदेह, १६१, (मिथिला)
॥ व्यासा, २८, ३३ ॥ ३४, १८२, १८५, २४६, २८७, २८८, ३०७,

श

शङ्कराचार्य, ६२,
शङ्कुपार, २६३ ॥
शङ्कुनारायण, २६३,
शङ्खी, ३४८,
॥ शतद्रू, ३४ ॥
शमसुद्दीनइल्तमिश, १७६, २५५,
शरण, १६२, (सारन)
॥ शरयू, ३२ ॥ ३३, २२७,
शहाबुद्दीनमुहम्मदगोरी, ७५, १२४, १७५,
शाइस्ताखां, १४३,
शाक, १५,
शाक्यमुनि, १२०,
शाङ्गे, २५१,
शातुल्अरब, ३८८, ४०१,
शाम, ३८६, ३८७, ४०१, ४०२,
शाम्, ३३४ ॥
॥ शालामार, १८७ ॥ २३८॥
शाल्मलीक, १५,
शास्तर, २१४, (साष्टी)
॥ शाहअजीनी, १६०,
शाहआलम्, ७८, ८१, ८२, ८४,
शाहजहां, ३१, ३७, ५५, ८७, १०३, १०५, १०६, १२५, १२६, १७३,
शाहजहान्पुर, ६७, १२८ ॥
॥ शाहजहानाबाद, १७३, (दिल्ली)
॥ शाहदरा, १८७,
शाहनूर, ३०॥
शाहपुर, १८७॥
शाहमम्मा, ३७८॥
शाहशुजा, ३७५, ३७६,
शाहाबाद, १६१ ॥ १६२,

शिकस, २२७, २४३॥ २४४, ३११,
शिकारपुर, २२४ ॥ २२५,
॥शिमला, २३, २७, १३२, १७६॥ १८०, १८१, २४६, २८५, २८६,
शिव, २१७,
शिवगङ्गा, २६५ ॥
शिवपुर, १६३ ॥
शिवसमुद्र, २६८ ॥
शीराज, ३८४, ३८८॥ ३८६,
॥ शीशमहल, १६३ ॥
शुजाउद्दौला, १६२, १६५,
शूर्पनखा, २२०,
शेख़क़ासिमसुलैमानी, ११७,
शेख़चुहली, १७८,
शेखफ़रीद, १८६,
शेखबहाउद्दीनज़करिया, १८६,
शेख़सलीमचिश्ती, १२७,
॥ शेखावाटी, २७५॥ ३०६,
शेरगञ्ज, २७५, (सीरौंज)
॥ शेरगढी, २३६,
शेरशाह, ७६, १६२,
शेलं, २०५ ॥ २११,
शेखूपुरा, १८७ ॥ १८८,
॥ शोण, २८, ३२ ॥ ३५, १६१, १६२, २५०, ३०७,
शोलापुर, २२० ॥
॥ श्रीनगर, १३२ ॥ २३५, २३६, २३७, २३८ ॥ २४०, २४२, २४३,
श्रीनाथजी, २७० ॥
श्रीरङ्गजी, २०६ ॥ २६७,
श्रीरङ्गपट्टन, ८३, २६७ ॥
श्रीरङ्गराइल, २०४,
श्रीविक्रमराजसिंह, ३१४,
श्रीहट्ट, १४५ ॥ (सिलहट)

स

सई, १६५,
सकूतरा, ३६३ ॥
सक्कर, २२५ ॥
सगर, ७५,
॥ सङ्करा, १२६,
सङ्गसाल, ३७८ ॥
॥सतलज, २५, २८, ३३ ॥ ३४, ४१, ७४, ८६, १७८, १८१, १८६, २१६, २४५,

२४६, २८५, २८७, ३०५, ३०७,
॥ सतलज और जमनाके बीचके रजवाड़े, २४८ ॥ २४९, ३११,
सतीसर, २३२,
सदाशिवरावभाऊ, १७७,
सफ़ेदकोह, १६०,
सफ़ेदोंकापर्गना, २७,
॥ सबाठू, १८० ॥
सबुकतगीन्, ३७४,
समथर, २५१ ॥ २५२, ३११,
समरूकीबेगम, १३०,
समर्कन्द, ७६, ३८२ ॥
समिरना, ३९९, ४०१ ॥
समेतशिखर, १६९ ॥
सम्भल, १२९ ॥
सम्भलपुर, ५५, १३५, १६९,
सरआलक्ज़न्दरबर्निस, ३७५, ३८१,
॥ सरजू, ३२ ॥
॥ सरधना, १३० ॥
सरन्दीप, ३१२ ॥ (लंका)
॥सरविलियममेक्नाटन, ३७५,
॥सरयू, २८, ३२ ॥ ४७, १९५, १९६,
॥सरस्वती, ११२, १७८, २६३, २६४,
॥सरहिन्द, ८२, २४८, २८६ ॥
सर्केशिया, ३६७ ॥
॥सलानी, १३१,
सलोन, १९५ ॥
॥सहसराम, १६२ ॥
सहस्रबाहु, २५८,
॥सहारनपुर, ४०, १३० ॥ १३१, १३२, १७८,
सह्याद्रि, २७ ॥ २८,
साइबीरिया, ३६५ ॥ ३६६, ३६८,
सागर, १३६ ॥
॥सागरकाटापू, २९ ॥
सागरनर्मदा, १३५ ॥ १६३, १६८, २५२, २५७,
साघालिअन, ३३५,
सातपुडापहाड, १७२, २२१,
सादी, ३८९,
साम्भर, ३८ ॥

साभ्रमती, २२२,
साम्पू, ३५ ॥ (ब्रह्मपुत्र)
सारन, १६२ ॥
॥सारनाथ, ११६, १८८, २५६,
सारस्वतदेश, ५६, ६५,
सारी, २८४,
सालग्राम, २२,
सालसिट, २१४, (साष्टी)
सावन्तवाडी, २०१ ॥ २०२, २११,
साष्टी, २१४ ॥ २१५,
॥साहिवगञ्ज, १५७,
सिउडी, १४६ ॥ १५०,
सिउनी, १३६ ॥
सिंहपुर, २२८ ॥
सिंहल, १२०,
सिंहलद्वीप, १५६, २१२ ॥
सिंहलपेटा, २०२, (चेङ्गलपट्टु)
सिकन्दर, २२, ४१, ५०, ६२, ७४, १७५, २६५, २७४, २८६,
सिकन्दरलोदी, ६६, १२५, २८१,
॥सिकन्दरा, १२६, १२७ ॥
सिकन्दराबाद, २६० ॥
सिकाकोलनदी, १६७,
सिटकाफ, ३५७ ॥
सितारा, ३६, ६६, २१८ ॥ २१६, २२०,
सिन्ध, ४२, ४४, ५२, ५६, ६६, ७६, ८६, २२४॥ २६५, २८२, २८४, ३०५,
सिन्धु, १६, २०, २१, २२, २५, २८, ३३ ॥ ३४, ५२, ६१, ७२, ७४, ८२, ८६, १८८, १६०, १६१, २२४, २२५, २३१, २६५, ३०४, ३०५, ३०७, ३७२,
सिन्धुसौवीर, १६० ॥
सिपरस, ३६६ ॥
॥ सिप्रा, ७२, २५४,
सिरगूजाके पहाड, १६८,
॥ सिरमौर, २४८ ॥ ३११,
॥ सिरसा, १७७ ॥
सिराजुद्दौला, ८०, ६८, १४२,
सिरोही, २६०, २६८ ॥ २६६, २८२, २८४, ३०६, ३११,

सिरौंज, २०५ ॥
सिलवार, १४६ ॥
सिलहट, ४३, ४४, ४८, १४५ ॥ १४६, १६३, १६५, १६७, २८८,
सिल्यूक्रस, २२,
सिहोर, २५७ ॥
सीतलदुर्ग, २८८, (चितलदुर्ग)
सीता, १८६,
॥ सीताकुण्ड, १४५ ॥ १५६ ॥
सीतापुर, १८६ ॥
सीतावलदी, १७२,
सीलान, ३१२, (लंका)
सीलोन, ३१२ ॥ (लंका)
सीस्तान्, ३७२,
सुकेत, २४५ ॥ २४६, ३११,
॥ सुखमहल, २७४,
सुखवन्त, ७२,
सुगद, ३८२,
सुगौली, १६३ ॥
सुङ्ग, २४८,
सुदामापुर, २६३, (पूरबन्दर)
॥ सुन्दरवन, २८ ॥ ४८, ५३, १२७, १४२,
सुवर्णरेखानदी, २५४,
सुमित, ७२,
सुमिता, ३२६,
सुमेर, २५६,
सुलैमान, २०, ४०२,
सुलैमानपर्वत, २०,
सुल्तानपुर, १८५ ॥
सुल्तानमसऊदगाजी, १८६,
सुवर्णदुर्ग, २८८ ॥
सुहोयम्, २३७ ॥
सूतजी, १८२,
सूरत, ३६, ७२, ८०, २२२ ॥
सूरसेन, १२७, (मथुरा)
सेण्टउमर, २४७,
सेण्टजार्ज, २०२ ॥ २०४,
सेत, २०८ ॥
सेतबन्धरामेश्वर, २०, ८१, २०८ ॥ ३१२,
सैहूं, ३८१,
॥ सोन, २२ ॥ १७२,
॥ सोनभण्डार, १५८,
सोबारा, १४७,
सोमदेव, ३२३,
सोमनाथ, २६२ ॥ २६४,

३७८,
सौराष्ट्रदेश, २२२ ॥
स्काटसाहिब, ५०,
॥स्थाणुतीर्थ, १७८, (थानेसर)
स्याम, १८, २०, ३१७,
३२६, ३२४ ॥ ४०४,
स्यालकोट, १८७ ॥
स्वीज, १५, ७०, ३६१,

ह

हजरुल्अस्वद, ३६४ ॥
हजारा, १६१ ॥
हजारीबाग, १२५, १६८ ॥
॥ हट्ट, २२ ॥
हनुमान, १६६,
॥ हवडा, १५२, (हौरा)
हमालल, ३१६ ॥
हमिल्टन, २३८, २४४,
हमीर, ३७८ ॥
॥ हमीरपुर, १३६ ॥ १३७,
हरसुखरायकागजी, १७४,
हरिना, २६३,
॥ हरिद्वार, २६ ॥ ३७, ४५,
७०, ३०६,
॥ हरिमन्दिर, १६०,
हरियाना, ३७, ४८, ५३,
१७७ ॥ २८३,
॥ हरीकापत्तन, ३४,
॥ हरिपर्बत, २३६ ॥
हलब, ३६६, ४०० ॥
हलाकू, ४००,
हसन, ४०३,
हस्ति, ७२,
हस्तिनापुर, ७२, १३० ॥
हाङ्‌काङ्, ३५१,
हाजीपुर, १६२ ॥
हाडौती, २७४ ॥
हान, ३४६,
हानलिन, ३४६,
हाफिज, ३८६,
हारूत और मारूत, २३६ ॥
हिङ्गलाज, १८३, ३७६ ॥
हिङ्गुल, ३७६,
हिजाज, ३६१ ॥
हिन्दुस्तान, ४, ५, १७, १८,
१६॥ २०, २२, २३, २५,
३३, ३७, ४१, ४२, ४६,
५६, ५६, ६२, ६३, ६४,
६५, ६६, ६८, ६६, ७१,

७३, ७४, ७५, ७६, ७८, ८१, ८३, ८७, ८८, १११, १२१, १२४, १२५, १२८, १४४, १७३, १७४, १९१, १९४, २०८, २१०, २३१, २४४, २८८, ३०२, ३०६, ३१२, ३१४, ३१६, ३१७, ३७१, ३७५, ३७८, ३७९, ३८२, ३८७, ३८६, ३९०, ४०४,
हिन्दूकुश, ३७२ ॥ ३७८, ३८०, ३८१,
हिमाचल, २३, (हिमालय)
हिमाद्रि, २३, (हिमालय)
हिमालय, ४, २०, २२॥ २३, २५, २७, २८, ३१, ३२, ३४, ३५, ३७, ४१, ४२, ४५, ४८, ५१, ५६, ६०, ७३, ८६, १११, १३२, १३३, १४४, १६३, १६४, १७९, १८०, १८१, १८२, २२७, २२८, २३०, २३१, २३२, २४३, २४३, २४८, २६८, ३०४, ३०६, ३३१, ३३२, ३३५, ३३६, ३७२, ३८०,
हिरात, ३७१ ॥ ३७२, ३७६, ३७७, ३७८,
हिल्ला, ४०२,
॥ हिसार, १७७ ॥
हीबरसाहिब, १२२,
हीरमन्द, ३७२ ॥
हुअङ्गहो, ३३५ ॥
हुगरी, १९९,
॥हुगली, २९, १५१ ॥ १५२,
॥ हुगलीनदी, २९ ॥
हुमायू, ७६, १४९, १७५,
हुमायूंशाह, ९६,
॥ हुशयारपुर, १८१ ॥
हुर्मज, ३८५,
हुसैन, ४०२,
हुसैनशाह, २६०,
॥ हुसैनाबाद १९३ ॥ १९४,
हेरम्ब, १४६ ॥
हेस्टिङ्गज़, ८५,
हैडपार्क, १५१,
हैदरअली, ८३, २१२, २९७,
हैदरबाग, १९३,
हैदराबाद, ८२, ९७, १७०,

२२४ ॥ २२५, २५२, २८८ ॥
२९०, २९१, २९४, २९५,
३०१, ३११,
होमर, ४०२,
होशङ्गाबाद, १३६ ॥
हौनोर, २१२ ॥
हौरा, १४२ ॥
ह्यू, २२८ ॥ ४०४,

(आवश्यक)

शुद्धाशुद्ध पत्र।

(ह्रस्व दीर्घ, अथवा मात्रा और अक्षरों की अशुद्धता जो बहुधा छापने मे हो जाती है और पढ़नेवाले सहज मे मालूम कर लेते हैं इससे नही लिखी गई केवल धोखा पड़ने की जगह शुद्ध कर दी है)

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
इच्छ	इच्छु	१५	२
से ले कर जहां समद्र भी	से	१६	८
काबल	काबुल	२०	१०
रूमिया	रूमियों	२१	१३
जाव	जावें	२२	१६
पहाड़	पहाड़ की	२३	२२
अनजन	अनजान	२३	२४
ढालै	ढाल	२४	१३
हाथ	थाह	२४	२२
खाड़े	खड़े	२७	१८
गोमख	गोमुख	२८	२०
अगरे	आगरे	४२	१६
लङ्गर	लङ्गूर	४७	१०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
झगड	झुगड	४६	२२
उन	उस	५१	१२
चना	चूना	५४	२३
कोग्ली	कोल	५८	१४
वौध	वौद्ध	६२	२१

[इस ग्रंथ मे जहां जहां वौध और वुध लिखा है सब जगह वौद्ध और वुद्ध पढ़ना]

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
गाड़	गौड़	६५	१८
उन्ह	उन्हे	६७	२४
निग-	विग-	७६	४
लिख	लिखे	८७	२
कम्पनी की	की	१०१	८
अच्छी	अच्छा	१०१	६
पंजाव	पंजाव और	१०८	५
कोश	कोस	११८	२०
हजारआदमियों	आदमियों	१२३	२०
वाद	वात	१२४	१६
फिर डी	फिर भी	१२५	१
जंचा	ऊंचा	१२६	४
दन	दून	१३१	२२
नदीयां	नदियां	१४७	१
वर्ल्हा	वर्न्हा	१४८	१५
घर्मामेटर	थर्मामेटर	१५०	१६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
तसफ़	तरफ़	१५२	१७
चेरापुंजी	चेरापूंजी	१६२	१७
उनसे	उन में से	१६८	१७
आबुल-	अबुल-	१७०	१२
घुंघर	घूंघर	१७१	२
जज़	गज़	१७३	१०
हुशियारपुर	हुश्यारपुर	१८१	२४
हवां लाहौर	लाहौर	१८६	१३
तसबीरें	तसवीरें	१९४	६
विल्लर	विल्लूर	२०१	१०
तग़मा	तमग़ा	२०३	६
कम्बुकोनम्	—१५—कोम्बु कोनम्	२०७	११
और दूसी द्रा बिड़ कानाम शास्त्र से दंडका रण्यभीलिखाहै		२११	२ ३
सादी	शादी	२११	१७
टाप	टापू	२१४	६
काव्ये	कावे	२१६	११
सिंधुवड़ी	सिंधु की बड़ी	२२४	२१
सर्कार कम्पनी	सर्कार अंगरेज़	२२६	१४
२५००	२५०००	२३०	८
१२००	१२०००	२३०	१२
सर्ब	सर्व	२३४	२२
जज़ार	हज़ार	२३८	५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
गोग्त	गोश्त	२४४	२०
तसीसद्न	तसीसूद्न	२४५	१
कील	मील	२४६	१८
वेलवटे	वेलबूटे	२४६	२४
मक्सीकोहर	मक्सीको शहर	२४७	१६
भपाल	भूपाल	२५२	२४
वज्ञ	वज्ञ	२५६	४
वुर्हानपर	बुर्हानपुर	२५६	१०
सबे	सूबे	२६१	२
वाज्	बाजू	२६२	८
जनागढ	जूनागढ	२६२	१६
साह	शाह	२६४	५
दावोनिसस	दायो निसस	२६५	४
लसकर	लशकर	२६६	१८
के रों	के कनारों	२६६	२४
घरेल	घरेलू	२६७	१
किदीवार की	की दीवार कि	२७५	५
भाग	उत्तर भाग	२७५	१८
उत्तर आव	आव	२७५	२०
धोहपुर	धौलपुर	२७८	२०
सबा	सूबा	२८८	१२
इल्लरू	इल्लूरू	२८४	८
टाप	टापू	२८८	१८
सखना	रखना	२८८	६
वीरूध	वीरुध	३०५	११

	Page.
KACHH	265
SIROHI'	268
UDAIPUR	269
DU'NGARPUR, BA'NSWA'RA' and PARTA'PGARH ...	272
BU'NDI'	273
KOTA'	274
TONK	274
JAIPUR	275
KARAULI	279
DHAULPUR	279
BHARATHPUR	279
ALVAR	281
KISHANGARH	282
JODHPUR	282
BI'KA'NER	283
JAISALMER	284
BAHA'VALPUR	284
AMBA'LA' AGENCY	285
KAPU'RTHALA'	287
RA'MPUR	288
MANI'PUR	288
HAILDRABA'D	289
MAISU'R	295
KOCHCHI'	299
TRAVINCORU'	300
KOLA'PUR	301
SA'VANTVA'RI	301
POSSESSIONS OF FOREIGN STATES IN INDIA	301
GENERAL REVIEW OF HINDUSTA'N	304
CEYLON	312

Page.

Sultánpur 4—Salon 5—Faizábád 6—Gondá 7 —Bahráich 8—Mullápur 9—Sítápur 10—Daryábád 11—Muhammadí 12 192

Madras—Ganjám 1—Vijigápatam 2—Rajmahéndrí 3—Machhlíbandar 4—Gantúr 5—Nellúru 6—Karap 7—Ballárí 8—Chittúr 9—A'rkádu 10—Chingalpattu 11—Shelam 12—Tiruchchinápallí 13—Tanjáurú 14—Kombukonam 15—Mathurá 16—Tirunelluvali 17—Koyammuttúr 18—Malbár 19—Kallíkot 20—Tellicherí 21 —Manglúr 22—Haunor 23 197

Bombay—Dhárvár 1—Belgáwn 2—Kokan 3—Thànà 4—Bombay 5—Púná 6—Sitárá 7—Sholápur 8—Ahmadnagar 9—Nàsik 10—Khandesh 11—Súrat 12—Bharauch 13—Kherà 14—Ahmadàbàd 15—Sindh 16 ... 213

Naipa'l 227

Kashmi'r 231

Shikam 243

Bhuta'n 244

Chamba', Suket, and Mandi' 245

Hill States 248

Garhwa'l 250

Baghelkhand 250

Bundelkhand 251

Gwa'liyar 252

Bhu'pa'l 257

Indaur 257

Dha'r and Deva's 259

Baroda' ... ... [illegible]

Page.

garh 21—Balandshahar 22—Merat 23—Muzaffarnagur 24—Sáháranpur 25—Dehrádún 26—Kamáún Garhwál 27—Ajmer 28—Ságar Narmadá 29—Jhánsí 30 112

Bengal Presidency—24 Parganás and Calcutta 1—Haurá 2—Bárásat 3—Nadiyá 4—Jasar 5—Bákarganj 6—Náwkolí 7—Farídpur 8—Dháká 9—Tripurá 10—Chitragrám 11—Silhat 12—Kachár 13—Maimansinh 14—Pabná 15—Rájsháhí 16—Bagurá 17—Rangpur 18—Dinájpur 19—Puraniyá 20—Máldah 21—Murshidába'd 22—Bírbhúm 23—Bardwán 24—Huglí 25—Mednipur 26—Baleshwar 27—Katak 28—Khurdá 29—Bankurá 30—Bhágalpur 31—Muger 32—Bihár 33—Patná 34—Tirhut 35—Sháhábád 36—Sáran 37—Champáran 38—A'shám 39—South Western frontier 40—Bájguzár mahál 41—Nágpur 42 137

The Panja'b—Dilhí 1—Gurgáwán 2—Jhajhar 3—Rohtak 4—Hisár 5—Sirsá 6—Pánípat 7—Thànesar 8—Ambálá 9—Lúdhiyáná 10—Fírozpur 11—Shimlá 12—Jálandhar 13—Hoshyárpur 14—Kángra 15—Amritsar 16—Batálá 17—Láhaur 18—Shekhúpurá 19—Syálkot 20—Gujrát 21—Sháhpur 22—Pinddádankhán 23—Rávalpindí 24—Pákpattan 25—Multán 26—Jhang 27—Khángarh 28—Laiyá 29—Derágazíkhán 30—Derá Ismáílkhán 31—Hazárá 32—Peshaur 33—Kohát 34 ... 172

Oude—Unnáon 1—Lakhnaú 2—Ráibarelí 3—

Page.

Sandal wood—Sago—Tea—the famous Banian tree on the banks of the Narmadá 38
ANIMALS—Lion and tiger—Elephants and mode of catching them—Rhinoceros—Musk deer—Yak—Horse—Birds—Fishes—Reptiles &c. ... 47
MINERALS 55
CLIMATE 56
MANNERS and CUSTOMS 56
RELIGION 62
SCIENCE and LITERATURE 63
LANGUAGE 64
MANUFACTURES 66
COMMERCE—Vasco de Gama—Cape of Good Hope—Overland route 67
SKETCH of history to the present time 71
COMPARISON of the present and former Governments with historical anecdotes 87
HOME GOVERNMENT, namely, Secretary of state for India and Council of India—The Indian Governments 107
ARMY 109
INCOME and PUBLIC DEBT 108
NATURAL and POLITICAL DIVISIONS 111
NORTH WESTERN PROVINCES—Iláhábád 1—Mirzapur 2—Banáras 3—Jaunpur 4—A'zamgarh 5—Gázípur 6—Gorakhpur 7—Bándá 8—Fatahpur 9—Kánhpur 10—Itáwá 11—Furrukhábád 12—Mainpurí 13—A'grá 14—Mathurá 15—Badáún 16—Sháhjáhánpur 17—Barelí 18—Murádábád 19—Bijnaur 20—Alí-

Page.

ed in the Puránic system of such divisions as mountains of gold and oceans of milk &c. ... 14

Boundaries of Asia—Its extent—Explanation of square miles (note)—Its population—Advantage of estimating the population per square mile—Its languages—Climate—Religion—Its pristine fame—Its subdivisions into countries—Government—Despotic and limited—Advantages of a limited Government 15

Hindusta'n 19

Hindusta'n—Latitude and longitude—Explanation of the words Hind and Bhárát Varsha—Its former and present boundaries—Its shape—Extent—Population—Causes of its former renown 19

Mountains of Hindusta'n—Scenery of the Himáylaya—Explanation of the measurement of heights from the level of the sea—Line of snow—Passes—Roads and footpaths in the hills ... 22

Rivers—mouths of the Ganges and the Sundarban—Jamnotrí—Trivení and the sacred saw—River Gandak and Sálagrám stones—Ammonites and marine remains—mode of crosssing the rivers in the hills and the Deccan ... 28

Canals 37

Lakes 37

Vegetables—Dr. Wallich's collection of species of wood—Another gentleman's collection of plants at Madras—Botanical gardens—Introduction of Tobacco, potatoes &c.—Saffron—

CONTENTS

OF

The first Volume.

Page.

INTRODUCTION I

INTRODUCTION—Showing that Geography is a very interesting science—Importance of knowing the divisions of land and water—The rotundity of the Earth and its being without support—The absurdity of the notions inculcated in the Purâns regarding it 1

DIVISIONS of WATER—Frozen seas—Icebergs—The whale 5

DIVISIONS of LAND—Artificial globes and maps—Why the Earth is divided into hemispheres—Why the height of mountains is not perceptible in common maps—Latitude and Longitude exemplified by comparison with the divisional lines in the chess and dice tables—Poles and zones—Explanation of the marks in the map representing cities, villages, mountains, rivers &c 6

THE UNIVERSAL FLOOD—The one common origin of mankind—Division into races—Population of the world—Languages—Religions ... 12

ASIA 14

ASIA—Why we have no sanskrit names for such divisions—Absurdity of the notions maintain-

सूचीपत्र।

नक्शे

पृष्ठ

नक्शा हिन्दुस्तानका .... जिल्द के पट्ठे से

नक्शा भूगोलका १

नक्शा एशियाका १४

नक्शा बर्म्हा स्याम मलाका और कोचीन का ३१६

नक्शा चीन और जपान का ३२१

नक्शा एशियाई रूस का ३६४

नक्शा अफ़ग़ानिस्तानका ३७१

नक्शा तूरान का ३८०

नक्शा ईरान का ३८३

नक्शा अरब का ३८१

नक्शा एशियाई रूम का ३८५

—ooo—

Page.
Barmha' (Burmah) 316
Sya'm (Siam) 324
Mala'ka'(Malacca) 326
Kochi'n (Cochin) 328
Chi'n (China) 331
Japa'n 357
Ashiya'i' Ru's (Asiatic Russia) 364
Afga'nista'n 371
Tu'ra'n (Indendent Tartary) 380
Ira'n (Persia) 383
Arab (Arabia) 391
Ashiya'i' Ru'm (Asiatic Turkey) 395